प्रस्तावना.

तव्य परायण मनुष्योंको परमोत्कृष्ट सद् कृतव्यी महा पुरूषों का जीवन व भवान्तरिय वृतान्त जानने की इसलिए परमावश्यकता होती है कि-जिसे जान कर वे तदनुसार स्वय के कृतव्य कर्म मे शुद्धी वृद्धी कर जिस प्रकार वे महापुरुषों भवान्तर कृत्य शुभ व शुद्ध कृत्योद्वारा आत्मोन्नती कर परमेश्वर के पद को प्राप्त हुए और परमेश्वर बन “ यथा नम-स्तथा गुण. ” की लोकोक्तिके अनुसर परम = उत्कृष्ट + ऐश्वर्यता = रक्षकपना व आप्तताका कार्य कर आप्त पुरुष कहलाए और मोक्ष के परमानन्द परम सुख के भोक्ता बने, तैसेही सद् कृतव्योंका यथा शक्ति मैभी समा-चरण कर वर्तमान भवमें नहीं तो क्रमश भविष्य के भव में परमैश्वर्य पद या तद्वत् पद प्राप्त कर मोक्ष सुख का भोक्ता बनू इस अत्युच्च सद्भावना को सफलता प्राप्त करने के लिए यह श्री ऋषभदेव भगवान के भूतकालीन द्वादश भवका वर्णन् तथा खास ऋषभदेव भगवान के किए हुए कृतव्य कर्म पर्याप्त बने यह निश्चयात्म हो समझीए

धर्मका कृतव्यही आत्मोन्नतिका करने वाला होता है. और धर्म का क्रमश. समाचरण करने के चार कृतव्य कहे है.

श्लोक—दानं सुपात्र विशुद्ध-च शील । तपो विचित्र शुभ भावनाच ॥
भवार्णव तारण यान पात्र । धर्म चतुर्धा मुनियो वदति ॥ १ ॥

भावार्थ—महा मुनिश्वरोंका फरमान है कि—प्रथम दान, दूसरा शील, तीसरा तप और चौथा भाव; इन चारों धर्म के कृत्यों की यथाक्रम आराधना पालना स्पर्शना पूर्वक पार पहोंचाने से आत्म इस दुस्तर संसार रूप महा समुद्रसे तीर कर पार हो जाता है मोक्ष रूप परम पद को प्राप्त कर लेता है इन चारों में प्रथम पद (प्रेसीडेन्टपना) दान को दिया है, सो सुखदी है क्योंकि—ऋषभदेव भगवान के आत्माने सम्यक्त्व प्राप्ती उसकी प्रथम धन्ना सार्थवाही के भव में तपस्वी महात्मा साधु जी को अदत्तक घृत का दान दिया, जिसकेही परम प्रताप कर सद्बोध भव्यार्थ द्वारा बोध बीज सम्यक्त्व रत्न की प्राप्ति हुइ और तब सेही उत्तरोत्तर आत्मोन्नती होने लगी दूसरा भव युगलियाका और तीसरा भव देवता का कर, चौथे महाबल राजा के भव में भेद भाव को देख पिता शतबल राजा का वैराग्य भय विचार तथा भोग दुःख महाबल को प्रतिबोधने सुबुद्धी मंत्री द्वय धर्मकृत्य दर्शक वार्ता भविक राजा का प्रत्यक्ष प्रमाण तथा पाप व धर्म फल दर्शक वजङ्घ कुरुचंद्र हरिचंद्र का दृष्टान्त, और समस्त दुःख दर्शक दडक राजा का दृष्टान्त पंचम ललीतांग देव के भव में मोह दुःख दर्शक स्वयंप्रभा देवीका वियोग दारिद्र अवस्था में भी आत्मोन्नति कर्ता निर्नामिका को युगंधर ऋषि द्वय धर्मोपाय छठे वज्रजंघ राजा के भव में दुरवस्था राज कुमार के कपट

पर पडिता दासी की चपट, पूर्व प्रेम से श्रीमति वज्रजघ का मिलाप, साला बेहनोइ का प्रेम, सागरसेन मुनिसेन साधु का साहस, पुत्र की मतलब बुद्धि **सातमा भव युगलिया का, आठवा भाव देवता** का और **नवमां जीवानन्द वैद्य के भव में** पाचों मित्रों के साथ मुनिकी चिकित्सा के लिए विवेक पूर्वक भक्ति और धनदत्त बृद्ध वेपारीने रोगी साधु के सयम की रक्षा क लिए सर्वस्वय त्याग, छहों की दीक्षा. **दश में भव में बारवे स्वर्ग के देव, इग्यारमां वज्रनाभ चक्रवर्ती राजा के भव में** बाहू सुबहू मुनि की की हूइ पाचसो साधु की सेवा, जो बने भरत बाहूबली और पीठ महापीठ मुनि का ज्ञानादि गुण में रमण तथा मात्सर्य (ईष) भाव जो बनी ब्राह्मी सुन्दरी. बज्रनाभ मुनि ने२०बोल में के बोलों की आराधना कर तीर्थंकर गौत्र बन्धा. और बार मे भव में सबी का **सर्वार्थ सिद्ध महा विमान में** गमन. यों बारेही भवों में बने हुए कृतव्यों आत्मोन्नतिच्छु कों को कृतव्य परायण बनाकर तद्वत् पद प्राप्त कराने वाले हेय उपादे अनुकरणिय हैं.

इसही प्रकार तेरवे भव में ऋषभ देव भगवान का अवतार धारण कर मति श्रुति अवधि ज्ञान के धारक प्रभु होने से अवसर्पिणी कालचक्र के फेरे में आकर क्षुधा तृषा शीत ताप झगडे आदि परीताप के दु ख से पीडित बने मनुष्यों पर अनुकम्पा लाकर उन्हे सुखी बना ने अस्सी से क्षत्री, मस्सी से वैश्य, और कस्सीसे कृसी तिनों प्रकार के कर्म से तीन वर्ण की स्थापन कर, पुरुष की ७२, स्त्री की ६४ कला निर्माण से सारे भारतवासी

लोगों को सुख सम्पत्ती के विलासी बना दिए, वेही निर्नामिक कर्म लीलास्थता इस वक्त तक सारे जगत् में प्रसर रही है, जिस के प्रताप सेही लोगों सुखोपभोगी बन रहे हैं और जिस प्रकार इस लोक के सुख का उपाय प्रदर्शित किया वैसेही भविष्य के पर भव में भी जीवों स्वर्ग के मर्यादित या मोक्ष के अनन्त सुख प्राप्त कर सकें, मानों ऐसे परमोत्तम धर्म का प्रसार करने के लियेही प्राप्त राज्य सम्बन्धी सुखोपभोगको त्याग कर, एक वर्ष तक निराहार और हजार वर्ष तक देशाटन में देव दानव मानव से प्राप्त हुए अनेक प्रकार के अनुकूल प्रतिकूल परिषह उपसर्गों क्षमा भाव से सहते हुए, सयम तप ज्ञान ध्यान में निश्चलात्मक बने निजात्म गुणों में ही रमण कर के केवल ज्ञान केवल दर्शन को प्राप्त किया जिस से अनंत अक्षय परमानन्द परम सुख प्राप्ति के उपाय का प्रत्यक्ष ज्ञान किया और बस किया उसही वक्त तीर्थंकर नाम कर्म रूप महा पुण्य पदार्थ के संचित दलों को उदय भाव में आने से३४अतिशय,३५वाणी गुण प्रगट हुए, जिस कर परम प्रमाणिक अनादि निधी जो द्वादशांगी सिद्धान्त रूप भालूट ज्ञान का खजाना था उसे प्रगट कर दिया और साधु साध्वी श्रावक श्राविक इन चारों तीर्थ की स्थापना कर सबी को यथोचित वह खजाना वेमहत कर लक्षों प्राणीयों को मोक्ष पथ में लगा दिए. वही ज्ञान का भंडार अभी तक भरा भारत है जिसकी आराधना पालना स्पर्शना द्वारा अनन्त भव्यात्मा ओं हलुकर्मी भावक बन कर भूत काल में परमानन्दी परम सुखी बने हैं, वर्तमान काल में बन रहे हैं और भविष्य में बनेंगे

तैसेही **श्रीऋषभदेव भगवान के जेष्ट पुत्र भरत जी ओर वाहुबलीजी, और पुत्रीयों ब्राह्मीजी तथा सुंदरजी**, प्रसगानुरेत इनका भी वृतान्त इसमें आयाहै जिस में से भी कृतव्य परायण स्त्रीपुरुषों सम्यक्य प्रकार से स्वय के कृतव्य के अनुभवी बने ऐसा वहुत कथन है भगवान ने आपने पुत्र और पुत्रीयों में किसी भी प्रकार से भाव भेद नहीं रखते हुए, जगत की विद्याका मूरु जो अक्षर (अक़ारादि) ओर अक (१–२आदि) है वह अपनी पुत्रायों कोंही बक्सीस किया है सो ही पुत्रों को राजका समविभाग से सन्तोष कर फिर दीक्षित बने है बाहु साधु जी के भव में ५००साधु को आहार आदिक ला देने के पुण्य प्रताप से भरत जी ने सारे भारतवर्ष (६ खण्ड) का राज प्राप्त किया. वह १३ तेले की तपश्चर्या से स्वाधीन बना १४ रत्न, ९ निधान, १६हजार देव हुक्म में हजार, क्रोडों देव आज्ञावृती, एक लाख बाणवे हजार स्त्रीयों सेकडो पुत्र पोत्राओ. ६० क्रोड मण अन्न नित्य पके, ४० लाख मण निमक नित्य लगे, ७२ मण हींग वगार मे नित्य लगे इत्यादि ऋद्धि का वर्णन वर्तमान जमाने के लोगोंको आश्चर्य चकित बनादे ऐसा है. और सुबाहु के भव में ५०० साधु ओ की प्रतिलेखनादि कार्य तथा पृष्ट चम्पनादि वैयावृत्य के पुण्ण प्रताप से बाहुबलीजी इतना बल पायेकी ४० लाख अष्टापद जितना बल के धारक चक्रवर्ती कों भीं परास्त कर अनहोनी कर दी. और ऐसे बाहुबली होकर भी सर्व ऋद्धि तत्काल त्याग कर लघू भ्राता को नहीं नमने का भाव रख, वर्षभर कायोत्सर्ग का महाकष्ट से भी केवल ज्ञान प्राप्त नहीं कर सके और भाइयों को नमन करने के भाव होते ही सर्वज्ञ बन गए. ऐसे ही भरतजी भी कॉच के महल में

पुद्गलों की अनित्यता का विचार करते २ ही केवल ज्ञान प्राप्त कर लिया और इसही प्रकार भरतजी के पुत्र परपुत्र यों आठ पाट्टी केवल ज्ञान प्राप्त किया इत्यादि वृत्तान्त धर्मध्यान परायण प्राणीयों को बड़ाही विचारणिय और अनुकरणिय है यों इस चरित्र अन्तरगत सबही कथन कितनेक संसार सुधारे के कितनेक धर्म सुधार के और कितनेक आत्मोन्नति के होनेसे प्रत्येक प्राणियों के लिए परमोपयोगी होने से सभी को स्वध्याय करने तथा श्रवण करने योग्य यह ग्रन्थ है

श्री ऋषभदेव भगवान का उक्त प्रकार परमोपकार इस भारत वासी जनोंपर होने से फक्त एक जैनमत वालेही इनें भगवान मानते हैं ऐसा नहीं है किन्तु वेदान्तियों के यजुर्वेद ऋगवेदादि में आदिनाथ ऋषभ देवजी का नाम मन्त्र रूप रखा है और पुराणीयों के श्रीमद्भागवतादि, * पुराण में इनको आवतारिक परमेश्वर रूप मानकर ऋषभ देव तथा आदि नाथजी के गुन ही गुणानुवाद लिखे हैं और मुन ने प्रमाणे इसलामों के कुराने शरीफ

* श्लोक —भगवान् ऋषभ संज्ञ आत्मतन्त्र स्वयं नित्य निर्वृतार्थ परम्पर कैवल्यानन्दानुभव ईश्वर एव विपरीत वत्कर्माण्यारभमाण कालेनानु गत धर्मपरमे नोप शिक्षयनूत द्विदांसम उपशान्ता मैत्र कारुणिका ममाथ यश प्रज्ञानन्दागारो येन गृहेषु लोक नियमयत् ॥ १४ ॥ श्रीमत् भागवत पन्चम स्कन्ध ऋषभ देवानु चरित चतुर्थोऽध्याय ॥

में भी बाबा आदम के नाम की बहुत तारीफ की है. यों भारत वर्ष में चलते हुए तीनों फिर को में जो महा
माननीय महापुरुष बन रहे हैं, उनके सच्चे वृतान्त को जान ने की कितनी परमावश्यकता है, वह पाठक गण अवश्यही
समझ सकते हैं, इसही आवश्यकता को पूर्ण करने जैन ग्रन्थ वर्णित कथन सविस्तार और विविध प्रकार की
प्राचीन अर्वाचीन रागरागणियों में प्राप्त बुद्धि के अनुसार रचाना कीगई है प्रथम के रचित
गद्य पद्य मय ऋषभदेव भगवान के चरित्र में और इस में सम्मास भेद दृष्टीगत होवे जिस का कारण यही है
की--मैने विद्वर्य आचार्यों साधुओं और श्रावकों के मुख से कथन सुना हुआ तथा महासती श्रेय कवर जी के पास
हस्त लिखित मिली हुइ प्रत के अनुसार साधु के आचार में किसी भी प्रकार अडचण नहीं आवे इस प्रकार
कथन यथोचित मालूम पडा, वही ग्रहण किया और रचना में लिया गया है तथापि सर्वज्ञ प्रेक्षित बनाव व
भावों से जो कोई विपरित कथन आया होतो " तस्स मिच्छामि दुक्कड " कर गीतार्थों से प्रार्थना करता हू
कि इसे सुधार कर पठन पाठ न करें करावें और सद् कृतव्यों का पालन कर दोनों लोक में सुखी बने.

विज्ञेषु किमधिक,

हितेच्छु—**अमोल ऋषि.**

प्रसिद्ध कर्ताका संक्षिप्त वृतान्त

मारवाड देशाधिप जोधपुर राजधानी मे साथीणे ग्राम के निवासी बडे साथ ओसवाल वश विभूषित श्रीमान शेठ बालचदजी धोके सम्वत १९२५ के दुष्काळ पीडित अपनी आसामियों को अन्दाज २०००० की सम्पत बॉट, पुनर्पि लक्ष्मी प्राप्त करने अपने सुपुत्र नवलमलजी बालचदजी सुरजमलजी के साथ करनाटक देश के यादागीरी शेह में दुकान लगाइ और सचोटी व प्रामाणिकता पूर्वक व्यापार कर थोडेही काल में श्रीमान बने और सम्पत्ती का भार पुत्रों पे डाल स्वर्गवासी बन गए पश्चात् बुद्धि विशाल तीनों भ्रातों ने व्यपार का विस्तार बढाकर शेठ नवलमल बालचदकी दुकानका नाम देशान्तरों में लुब्धक बनादिया. शेठ नवलमलजी के पुत्र रतनलालजी और पुत्रि केशर बाई की प्राप्ती हूइ. कर्मोदय से कालान्तर में प्रिय पत्नी, मजले भाई. पुन और पुत्री चारोंही का देहोत्सर्ग [मृत्यु] होगया. तब चित्तको वेहलाने व्यापारार्थ बबइ गए, वहा शुद्धाचारी ज्ञानानन्दी महान् तपश्वी दो पुत्र सम्पत्तो के त्यागी महामुनि श्री केवल ऋषिजी महाराज ठा ४ से विराज मान थे. बालब्रह्मचारी पडित मुनिश्री अमोलक ऋषिजी महाराज का व्याख्यान प्रिय लगने से एक महीना रह गए और गुरुधारन करने की अभिलाषा हुइ किन्तु विचार पलटने से शत्रुजय गिरनार की यात्र को चले गए. सर्वस्थान पानी फूल फल पत्ते

रोसनाइ के साथ त्रस जीवों का ममशान देख मन फटगया और पुन समइ आकर श्री अमोलक ऋषिजी महारा के पास सम्यक्त्व धारन कर (गुरुधना) श्रीरूत का स्कन्ध धारण कर अपने घर को आ धर्म ध्यान में मन रमाया और यहाँ २ श्री अमोलक ऋषिजी महाराज का चौमास होता वहाँ२ सह परिवार जा अठाइ तप (८उपवास)करते और अवसरोचित सैकड़ों हजारों रूपे धर्म में लगाते ' ज्ञान शास्त्र भण्डार ", माण्ड कर उसमें के २५ शास्त्र की स्वाध्याय अपने की आपके धर्म प्रेम से ही श्री अमोलक ऋषिजी महाराज ठाणे ३ आप के क्षेत्र और करनाटक देश स्पर्शी, रायपूर बेंगलोर चोमासा कर खून धर्म दीपाया सं० १९८६ के वैशाख में आपको श्वासकी बिमारी हुइ उसे असाध्य जान परिवार को साथ ले गुरुवर्य के दर्शनार्थ धुलिये पधारे ४ दिन सेवा कर फिर घर आए और आपने सुविनित दत्त चित्र पुत्र हिराभाइ जी को गृह भार ,सुमत कर सब प्रपंच से निवृत हो आलोचना संथारा पूर्वक श्रावन शुक्ल५मी को स्वर्गस्थ बनगए ! करनाटक देश का स्तम, अनाथों का पालक,धर्मत्मा के वियोग से शेठ के समागमी को बड़ा भारी दुःख हुआ तो कुटुम्बियों का तो कहना ही क्या ' शेठजी के लघु बन्धव धर्मप्रेमी पुण्यप्रभावक भाइश्री सुरजमलजी अपने धर्ममित्र धर्मात्मा पुण्यप्रभावक शरद स्वभावी दानशूर भाइश्री मूलचन्दजी को साथ में ले धुलिये आए उसवक्त दोनों ने१००-१००रूपे ज्ञान वृद्धी के लिए दिए, और ४ दिन रह मूलचन्द जी तो पधारगए सूरजमलजी सवा महिना रह कर व्याख्यान श्रवण से चित्त की शान्ति होने से

घर को गए और उक्त २००, तथा सुलेखक दृढधर्मी भाइ मेघराज जी के रू. ५०, और धर्मात्मा भाइ जयवत-राज जी के रु २५, यों २७५ भेजे. इस वक्त दक्षिण हैदराबाद (आकोद पुरा) निवासी भाई जी उम्मेद-मलजी बोरा अपनी सुपुत्री धर्मातमा सौ० मिश्रीबाई के साथ अपने गुरुवर्य के दर्शन का लभ लेने धुलिए आए थे. चार दिन रहे और जाति वक्त २५ रुपे ज्ञान बृद्धी लिए जमा कर गए थे. यों सब ३०० रुपे जिस के खरच से इस श्री ऋषभदेव भगवान के चारित्र की ५५० प्रतों मुद्रित कराकर श्रीसघके कर कलम में अर्पन करते हुए अर्ज करते हैं कि इसे दत्त चित्त अद्यन्त पठन मनन पूर्वक कर गुण को ग्रहण कर दोनों लोक में सुखी होइएजी

गुणानुरागी
लालचन्द धोका.

ॐनम सिद्ध.

शास्त्रोद्धारक बालब्रह्मचारी श्रीअमोलक ऋषिजी महाराज प्रणित

॥ श्रीऋषभदेव भगवानका चरित्र ॥

❁ प्रथम खण्ड—द्वादश भवाधिकार ❁

॥ दोहा ॥ प्रणमुं परमेश्वर सदा । चिदानन्द अधिकार ॥ इच्छित अर्पे ध्याता को । शिवसुख सुबुद्धि सार ॥ १ ॥ धर्म प्रचारक विश्वमें । अनन्त चतुष्टय धार ॥ सिद्धान्त वाद सरजित अरह । प्रथम पदे नमस्कार ॥ २ ॥ निरांश भये कर्मांश से । जगतेश्वर सिद्ध देव ॥ द्वितीय पद नमन करूं । सिद्धी साधे अहमेव ॥ ३ ॥ श्री जिन शाशन प्रवर्तक । आचार पंच बर धार ॥ नमु आचार्य तृतिये पदे । वर ते यस उपकार ॥ ४ ॥ आगमोदधी ज्ञानदान दे । उपाध्याय महाराज ॥ लुली २ नमु चौथे पदे । ग्रन्थ रचन दे

साज ॥५॥ साधक जा सिद्ध पथ के। विषय कषाय यस्य मद ॥ पषम पद साधु नमु। वरते सदा आनंद ॥ ६ ॥ अज्ञान हरी शुद्धमति करी। सम्यक्त्व गुण दातार ॥ परमोप कारी सद्गुरू। नमता वारम्वार ॥ ७ ॥ श्रीजिनेन्द्र मुख प्रगटी। सरस्वती कवि मात ॥ बुद्धिवृद्धी कर वाणी द। नम्र भाव से ध्यात ॥ ८ ॥ इत्यादि शरणाधरी। उमटे भक्ति भाव ॥ त साधन सावधान हो। रचत ग्रन्थ उत्साव ॥ ९ ॥ इस अवसर्पिणी काल में। प्रथम धने राजान ॥ मुनिवर जिनेवर केवली । तीर्थंकर भगवान ॥ १० ॥ यह पञ्चक आदि धरा। तैसेही करुण कन्द ॥ त्रास जगत् दु ख हरण को। त्रिविध कर्म प्रचारत ॥ ११ ॥ इससेही आदिनाथजी । ऋषभदेव भगवान ॥ महाउपकारी महापुरुष । तस गुणका यश गान ॥ १२ ॥ जैसे भ्रमरी ध्यान ते । कीटक भ्रमरी बन जाय ॥ तैसे तीर्थकर गुण रमे। सत्ता आत्मा जिन थाय ॥ १३ ॥ तासे अहो मुमुक्षुओं। करने आत्म पवित्र ॥ अपादश भव गठित पद। सुनीयो ऋषभ चरित्र ॥ १४ ॥ विविध बोध विविध कथा। नव रस कस सुस्वाद ॥ निरत्र सुणो गुण ग्रहो। पर हर सब प्रमाद ॥ १५ ॥ * ॥ ढाल १ पहली ॥ उमीया पे भटीयाणि की देशी ॥ श्रीऋषभ देव गुण गावे हो, सुख सम्पत पावे ते सदा। जावे स्वर्ग मोक्ष मझार ॥ आदिनाथ उपकारी हो, बलीहारी तस अनुरागी क। करू चरित्र तास उचार ॥टेर॥ अनन्ताकाश मझारो हा, नराकारो लोक को

पिण्ड यह । पञ्चास्ती काय रूप ॥ त्रिविभाग विविक्षित हो, अधो उर्द्ध नर्करू स्वर्ग है । मध्य दीपोदधी वलीऊप ॥ श्री ॥ १ ॥ सबी के बीच नगिन्द्रो हो, जम्बुद्वीप चउगर्द है । ताके पश्चिम माय ॥ महाविदेह सूक्षेत्रो हो, पवित्रो शाश्वत धर्म से । शोडष विजय सोभाय ॥ श्री ॥ २ ॥ वप्रा विजय के माहीं हो, 'क्षितीप्रतिष्टपुर' सुखदाइ है । भूमण्डे भूषण समान ॥ देव लोक सो सोभे हो, लोभे मन ऋद्धि समृद्धी से । गढ भुवन बजार मंडान ॥ श्री ॥ ३ ॥ 'प्रसन्नजीन' राजिन्द्रो हो, तेज सम्पत्त सुरिन्द्रा समी । चतुरंगी सेना परिवार ॥ न्याय मराल ज्यों ठाने हो, नीति रीति सुख प्रद । पूर्ण कोठार भण्डार ॥ श्री ॥ ४ ॥ इसहीं नगर मझारो हो साहूकार रहे अति धन धणी । 'धन्ना' सार्थ वाह ॥ गम्भीरता उदारता हो, धैर्यतादि गुण घने । परोपकारे उत्साह ॥ श्री ॥ ५ ॥ आश्रीतों को पोषे हो, अरु तोषे सज्जन स्वजनो । रोषे मोषे नहीं कोय ॥ सत्य दत्त व्रत अटलो हो, अचलो सदाचार शील में । यशस्वी श्रीसे सोहय ॥ श्री ॥ ६ ॥ एक वक्त करे तैयारी हो, लेइ वस्तु भारी साथ में । किरियाणा चहू प्रकार × ॥ वसंतपुर को जाने हो, मिलाने महिमा सम्पदा । बहुत संघ ले लार ॥ श्री ॥ ७ ॥ उद्घोषण करावे हो, जावे धनजी वसंतपुरे । धनार्थी जो चले लार । अन्न धन वसनज आपे हो, तस कापे दुःख दारिद्रता । करे रस्तेमें सार संभार ॥ श्री ॥ ८ ॥ द्रव्यार्थी सुखार्थी हो, जन सुन घोषन

× १ मापवाँ—घृतादि, २ तोलवाँ—गुडादि, ३ गणवँ—नालेरादि, और ४ परखवाँ—सुवर्ण रत्नादि, यह ४ प्रकारके किराणे जानना

हर्षावीया । तत्क्षीण भए तैयार ॥ अगुण्यान के माहीं हो, आकर सब मेल भये । रहे सार्थ वाह मार्ग निहार ॥ भी ॥९॥ पश्चात्वाद उसवारे हो, निष्पन्न कर चारों आहार को । आमंत्र्ये सब परिवार ॥ सुखासन बैठाये हो, जीमाये सन्मान दे । वस्त्र भूषण सत्कार ॥ भी ॥ १० ॥ निज विचार दर्शाये हो, समझाये घर निज कुटुम्ब को । संकट पांचसो सजाय ॥ धृतस कुम्भ भराये हो भराये गाडे सर्वही । चले शुभ मुहूर्त के माय ॥भी॥११॥ अगुण्याने आये हो, पोसाए साथीवारने । पूछे कहो क्या सहाय ? ॥ वाहन वसन खान पानज हो, वासन आसन आदि दिया । यथोचित सबे ताँव ॥ भी ॥ १२ ॥ गाडा पाडा गाडीहो, व्यवहार ने सुपेम कन्डा । सबपे यथोचित भरमाल ॥ छकडा पालखी म्याना हो, केई नर पैठे वाहने । केई पयदल रहे चाल ॥ भी ॥ १३ ॥ पाद प्रहार उडाइ हो, रज छाइ जाइ गगन में । ज्यों पदल रवी ढकाय ॥ सुखे मुकाम करता हो, परता तस्सहा मन चिपे । यों योजन महसही जाय ॥ भी ॥ १४ ॥ गहन वनमें आया हो, गिरी लघाया मानो गगन में । छाया वृक्ष लता विषम घाट ॥ ग्रीषम के परीतापे हो, तब तृषे पशु और मानवी । उद्धुष उजगज घाट ॥ भी ॥ १५ ॥ कङ्कर से पन्हेंही छेदानी हो, भेदानी काँटे चामडी । स्वेदाणी काया अपार ॥ तृपासे जिव्हा सुकाणी हो, रुसाणी देही रजकरी ।

स्वेदे बहे जल धार ॥ श्री ॥ १६ ॥ धन्नाजी साथ के लोग को हो, छोगके दुःखी शोगी भए। सुखी करने के तांय ॥ शीतल छांय निहारी हो, वांरी आंगार तने ढिगे। विश्रांति को उसठाय ॥ श्री ॥ १७ ॥ भूमी साफ कराइ हो, लगाइ डेरा रावटी। तम्बु खडा कराया ॥ विविधासन बीछाया हो, गेहरी छांयां के मायने। गादी तकीया लगाय ॥ श्री ॥ १८ ॥ सबी को तहां बैठाया हो, वाया वाय शीतल तदा। दीनी वरनी गरमी गमाय ॥ झरना का नीर मंगाया हो, बहूत शीतल पाया सब भगी। अंदर की तृषा मिटाय ॥ श्री ॥ १९ ॥ फल आहार मिष्टान जीमाया हो, तृपताया तम्बोल लेयने। पाया चेन तन मन ॥ निद्रा वश केइ थाया हो, बणाय बातों कितने तिहां। शेठ के गुण कथन ॥ श्री ॥ २० ॥ जीव सबी सुख चहावे हो, घबरावे दुःख प्राप्तज भये। ते भुलावे सुख संयोग ॥ श्री ऋषभ देव चरित्रे हो, पवित्र ढाल पहिली भइ। फले ऋषि अमोल मन्योग ॥ श्री ॥ २१ ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ उस अवसर उस वनमें। पर्वत की गुफा मांय ॥ ज्ञानी ध्यानी तपी संयमी। 'धर्म घोष' मुनिराय ॥ १ ॥ मास मास खमण करे। निरंत्र तप उदार ॥ पारणे दिन समाचरे। अभिग्रह विविध प्रकार ॥२॥ जो फले तो भोजन करे। नहीं तो ले फिर तप धार ॥ परभा नहीं तन जन तणी। धर्म वृद्धीये ले आहार ॥ ३ ॥ पारणा आया उस दिने। प्रथम पहर स्वाध्याय ॥ द्वितीये ध्यान शुद्ध में रमें। तृतिय पहर जब

आप ॥ ४ ॥ विरमी ध्यान प्रतिमेंसीपे । वस्त्र मशोपकरन ॥ वनमें मिले ओ भिक्षा प्रह्नु । कर अभिग्रह धारन ॥ ५ ॥ आये गुफा के बाहिरे । चारों दिशि प्रतिलेह ॥ देखे निकट वनने विषे । बहुत छोगसस्नेह ॥ ६ ॥ ताही दिशीमें संचरे । निर्दोष पथ निहार ॥ ऐसा जोग जिसको मिले । ताके पुण्य भेपकार ॥ ७ ॥ ॥ ढाल २ दूसरी ॥ वनरारे छोगी घाणीयां ॥ परदेशी ॥ दान तणी महिमा सुणो । चित्त वित्त पात्र शुद्ध होवे जी ॥ तो संसार भ्रमन फरे । भव भवके दुःख खोवेजी ॥ दान ॥ टेर ॥ सुखासने बैठे तदा । वेरामें धन सार्थ वाहीजी ॥ दृष्टी मार्ग पर पडी तदा । साधुजी आते देखाई जी ॥ दान ॥ १ ॥ तन मन अति उलसित भये । हर्षोत्सहाए उठ धावेजी ॥ उत्तरासणे मुख अच्छादने । नम चरण तत्काले जी ॥ दान ॥ २ ॥ तिक्खुत्ताकी विधिकरी । सविनये कर नमस्कारोजी ॥ कर जोडी नमी अर्जी कर । कृपा कर मुझने तारोजी ॥ ॥ दान ॥ ३ ॥ निर्दोष घृतशुद्ध मुझकने । ग्रहण करो जैसो चहावेजी ॥ मुनिवर पात्र स्थापन कियो । धन्नाजी क्रम उठावेजी ॥ दान ॥ ४ ॥ ता समय प्रथम स्वर्गमें । सौधर्मी सभा मझारो जी ॥ शक्र सिंहासन बिराजीये । शक्रेन्द्रजी सपरिवारोजी ॥ दान ॥ ५ ॥ चौरासी सहस्र सामानिक । अग्रमहेषि वसु इन्द्राणीजी ॥ तीन लाख सहस्र छत्तीस । आत्मरक्षक सुरजानी जी ॥ दान ॥ ६ ॥ सोला चवदा बारा सहस्र है । तीनी परिषदके

देवोजी ॥ त्रयंत्रिशक तेत्रीस हे । लोक पाल चार सेवोजी ॥ दान ७ ॥ इत्यादि त्रिदेश-
तणी । सभा मे मुख अच्छादि जी ॥ कहे इन्द्र सुणो सभी देवता । गुणीजन गुण निर्वि-
वादीजी ॥दान॥८॥ जम्बुद्वीप अपर विदेह ॥ मचला अटवी माहीजी ॥ दान देवे महामुनि
भणी । घन्नावह सार्थवाहीजी ॥ दान ॥ ९ ॥ विरल नर तैसे जगत्मे । अखण्डित दान
दातारोजी ॥ प्रेम भाव तस चला सके । नही कोई सुर नर धारोजी ॥ दान ॥ १० ॥ चिंतुर्थ
परिषदे देवता । सुणी सब धन्य उच्चार जी ॥ किन्तु एक अभीमानीयो । अमर ते वयण
न धारेजी ॥ दान ॥ ११ ॥ धन तन मन मानव तणा । अस्थिर सबही देखावेजी ॥ ताकी
कीर्ती सुराधिप करे । ते किम मानी जावे जी ॥ दान ॥ १२ ॥ धन्नानो मन खण्डित करूं ।
दान थकी क्षीण माहीं जी ॥ फिर चेतावूं इन्द्रको । नर गुण न गावे कदाई जी ॥ दान ॥
॥ १३ ॥ तत्क्षीण मनोगति करी । ते निर्जर तहां आवेजी ॥ नजर बन्धी ऋषिवर तणी ।
घृत पडत नहीं देखावेजी ॥ दान ॥ १४ ॥ कुंभ घृत उंदावता । धन्नाजी पात्र मझारोजी ॥
मुनिवर ना केवे नहीं । तेभी न खंडे धारो जी ॥ दान ॥ १५ ॥ पात्र भर्यो वह कर चल्यो ।
धन्नाजी मन में विचारेजी । घृत जावे ए साधु तणो । म्हारे हाणी न लगारोजी ॥ दान ॥
॥ १६ ॥ लाभ अपूर्व ए बण्यो । सुभाग्ये वन मांहीजी ॥ लाभ न ऐसा वैपार में । ये
दोनों भव सुख दाइजी ॥ दान ॥ १७ ॥ महातपोधन संयमी । मुझने तारण काजोजी ॥

ना कहे नहीं मुख थकी । दवे सुन्न को साजोजी ॥ दान ॥ १८ ॥ ॐ ॥ श्लोक ॥ व्याजे द्विगुणे वित्त स्यात् । व्यापारे च चतु गुणे ॥ शत शत गुण वित्त स्यात् । दानेच अनन्त गुणे ॥ १ ॥ * ॥ ढाल तही ॥ व्याजे दुगणो व्यापारे चौगुणो । सो गुणो खेत कथा भाय जी ॥ दान में लाभ अनन्त गुणो । उभय भव सुख पवसावेजी ॥ दान ॥ ॥ १ ॥ यों शुद्ध मन अति उल्लसे । घट पर घर ऊवायेजी ॥ नाला घह धाला घृत का । तोभी नहीं शकायेजी ॥ दान ॥ २० ॥ अधमा देव आते देख्यके । वणिक की मझालोंमी जासो जी ॥ लामार्थी हो कष्ठ सहे । यह तो अरा न शका तो जी ॥ दान ॥ २१ ॥ शुद्ध मान धारा प्रणाम की । धन्य २ इण तांइजी ॥ स्वरी परसया माधव करी । प्रत्यक्ष पार भी भाई जी ॥ दान ॥ २२ ॥ प्रगट रूप तत्क्षीण कियो । माया सर्व सकेली जी ॥ नजर खुली मरपिवर तणी । मराया घट जैसा पहलीजी ॥ दान ॥ २३ मुनिवर ना बोल्या तदा । व्यपतो सेपिं आयो जाणी जी । धुन्व पक नहीं अभीपर । वनजी विस्मय मन मानीजी ॥ दान ॥ २४ ॥ दशाही दिशा प्रकाशता । धन्य २ देव उचारे जी ॥ देवेन्द्र परसशा सभा विषे । मै ली परीक्षा इणवारे जी ॥ दान ॥ २५ ॥ नमन करी दोनों भणी, विशुद्ध गयो स्वस्थानो जी ॥ ससार प्रत कीयो शेठजी । नरनो आयुवन्धानोजी ॥दान॥२६॥ चित्त शुद्ध दातार का । पात्र उपकारी मानेजी ॥ सविनय सविधि दान दे । अभिमान

चारही प्रकारे आहारोजी ॥
जरा नहीं आनेजी ॥ दान ॥ २७ ॥ वस्त्र पात्र स्थान औषधी । चारही प्रकारे आहारोजी ॥
सुखद गुण वृद्धी करे । ए वित वस्तु शुद्ध धारोजी ॥ दान ॥ २८ ॥ महाव्रत समिति गुप्ति
धरा । निर्दो नरखें आहर लगारोजी ॥ उदर पूर्ण अन्नोदक ग्रहे । पात्र शुद्ध अणगारोजी ॥
दान ॥ २९ ॥ उत्तम पात्र साधु तणा । मध्यम श्रावक का धारीजी ॥ कनिष्ट पात्र समह-
ष्टीका । यह सुपात्र श्रेयकारी जी ॥ दान ॥ ३० ॥ धन्नाजी उत्तम दान से । लाभ अपूर्व
पाया जी ॥ ऋषभ चरित्र ढाल दूसरी । दान फल अमोलक सुनायानी ॥ दान ॥ ३१ ॥ *
॥ दोहा ॥ सुखद अवश्य प्रमाण में । निर्दोष अहार वन माय ॥ प्राप्त करीनें मुनिवरा ।
एकान्त स्थानक आय ॥ १ ॥ इर्यावही ने प्रतिक्रमी । प्रत्याख्यान को पार ॥ संयम पालन
कर्मक्षय करन । देवन तनको आधार ॥ २ ॥ भुजंग पेठे ज्यों बिलाविषे । इत उत तन न
अडाय ॥ तिम आहर्यो ते आहारने । चित्त समाधी अर्थाय ॥३॥ फिर विराजे स्वस्थ तहां ।
देखी सार्थ वाह ॥ आये संघले साथ का । वन्दे सविधि उत्साह ॥ ४ ॥ सुख साता पूछी
तदा ॥ सन्मूख वेठे सब ॥ भव्योध्दारक देशना । देवे ऋषिवर तब ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल ३
तीसरी ॥ थारो गयोरे यौवन पीछो नहीं आवे ॥ एदेशी ॥ भो भव्यो ! सुणो चित्त
लगाए । अत्युत्तम दुर्लभ नर तन पाए । मोक्ष साधन का कारण कहवावे ॥ शुद्ध सम्य-
क्त्वसे जीव सुख पावे ॥ टेर ॥ १ ॥ मोक्ष मार्ग जिनजी चार कहे । ज्ञान दर्शन चारित्र

तप मद्दे। अनुक्रमें आराधे ते मोक्ष आवे ॥ शुद्ध ॥ २ ॥ ज्ञान में श्रुत प्रधान कह्यो। मति ज्ञान तेहने सहाय रह्यो। ये युगल तहां श्रद्धा प्रगटावे ॥ शुद्ध ॥ ३ ॥ श्रद्धासे मिथ्या मोहणी हणे। अनन्तानुबन्धि चतुष्क चुणें। यों पांचों प्रकृति विरलावे ॥ शुद्ध ॥ ४ ॥ मिथ्या मोहनिय सम्यक्त्व मोहनी। उपसमावे इन दोनों भनी। तब क्षयोपशम सम्यक्त्व आवे ॥ शुद्ध ॥ ५ ॥ ते माने देव अरिहत। जो होवे अनन्त चतुष्टय वत। मिथ्यात्वी देव न नहीं ध्यावे ॥ शुद्ध ॥ ६ ॥ निर्ग्रन्थ गुरु चारित्र तेर पाले। त्रिगुप्ति समिति मह्रों व्रत पचाल। जिनाज्ञा में आत्मा रमावे ॥ शुद्ध ॥ ७ ॥ सम्वर निर्जरा की करणी धर्म। स्वपर दया मय ते धर्म। यही श्री तत्त्व तस भावे ॥ शुद्ध ॥ ८ ॥ शम भावे रहे वैरागी। अकृत्य निन्दनिय कम त्यागी। स्वल्प भव में ते मोक्ष सिधावे ॥शुद्ध ॥९॥ शिवमार्ग लगे यों सम्यक्त्व धारी। यथाशक्ति सर्व दशाव्रत स्वीकारी। तेही नर तन सफले लगावे ॥ शुद्ध ॥ १० ॥ इत्यादि धम कथा कही। धनजी समक्ष सत्य रुची भई। अपूर्व धर्म लाभे हर्षावे ॥ शुद्ध ॥ ११ ॥ करी सविनय वदन स्वस्थान आया। धर्म माथे मन रमाया। यों सम्यक्त्वी बने भ्रव्य भावे ॥शुद्ध ॥ १२ ॥ घन प्रमत ज्यों नर मार्ग आये। मच कासा की गिनती थाव। चलते ते अवश्य ग्राम पाव ॥ शुद्ध ॥ १३ ॥ त्यों जीव अनन्त ससार फिरे। भव सकपाकी कौन गिनती करे। भाग्योदय गठी भेदावे ॥ शुद्ध ॥ १४ ॥ ते सम्यक्त्व

रूप मोक्ष पथ आया ॥ तहांसेही भव्य संख्या गिनाया । उत्कृष्ट अर्ध पुद्गल परव्रतावे
॥ शुद्ध ॥ १५ ॥ तैसे धन्नासार्थ वाह रस्ते आया । तेहथी प्रथम भव यह कहलाया ।
यहां से तेरमें भवे मुक्ति पावे ॥ शुद्ध ॥ १६ ॥ सब साथी जन साता पाया । तब लस्कर
आगे चलाया । सुखे २ यों वसंत पुर आवे ॥ शुद्ध ॥ १७ ॥ अंगुध्यान मे सवही रहे ।
शेठजी उत्तम भेट गये । बहुमूल्य भूपति ज्यों रींजावे ॥ शुद्ध ॥ १८ ॥ श्रेष्ट नरों के साथ
परिवरे । आये दरबार में नमन करे । नजराणा राजाजी आगे ठावे ॥ शुद्ध ॥ १९ ॥
आदर दे नृप हर्षाया । सत्कारी पोगासन बैठाया । नाम ग्राम पूछे शेठ दरशावे ॥शुद्ध॥
२०॥ क्षिती प्रतिष्ठपुर से आये । धन्ना सार्थ वाह कहलाये । वैपार करन यहां आना थावे॥
शुद्ध ॥ २१ ॥ हांसल माफ तस कराया । रहने सुखद स्थान वक्साया । सर्वी तहां आय
सुखे रहावे ॥ शुद्ध ॥ २२ ॥ छल कपट परपंच छोडी । सत्य प्रमाणिकता से प्रेम जोडी । कर
नियमित वैपार धन संचावे ॥शुद्ध॥ २३ ॥ सत्य की बन्धी लक्ष्मी कही । सन्तोषी जन सुख
लहे सही । नीति प्रीतिसे धन बहु कमावे ॥ शुद्ध ॥ २४ ॥ लाया माल सो बेच
दिया । लेना था सो खरिद लिया । स्वदेश जावन साज सजावे ॥ शुद्ध ॥ २५ ॥
पुनापि साकटादि सजाया । धन माल किराणा भराया । बन्दोवस्त सब पुक्ता ठावे ॥
शुद्ध ॥ २६ ॥ सुखे मुकाम करते आये । माल सर्वी का संभलाये । सुरक्षित स्वस्थान

परोपकारे ॥ शुद्ध ॥ २७ ॥ धनजी निज सदने आया। धर्म ध्यान में मन विरमाय ॥ या सुखे सुखे आयु पूर्ण पावे ॥ शुद्ध ॥ २८ ॥ प्रथम भवकी ढाल तीन कही। आगे भी धान फल सुणो सही। कथन करी ऋषि अमोल गावे ॥ शुद्ध ॥ २९ ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ उत्कृष्ट दान प्रभाव से। भोग भूमि उत्कृष्ट ॥ देव कुरु सीता तटे। जम्बुमरु पूर्व पृष्ट ॥ १ ॥ युगल पन ते अवतरे। तीन कोसकी काय ॥ आयुष्य पल्योपम तीन का। सुखमें सुख वरताय ॥ २ ॥ गुन पचास दिन पाली ए। मास सात उन ताय ॥ स्वेच्छा फिर फिरने लगे। चन्द्र पर्मी दिव्य काय ॥ ३ ॥ 'मंतग'–मद्य, 'भृंग'–पात्र द। 'तुर्यांग'–वादित्र सुणाय ॥ 'दिप्तांग'–दीपक 'ज्योति'–सूर्य सा। इच्छ–प्रकाशाय ॥४॥ 'चित्रांग' माला, भाजन– 'चित्ररसा'। 'मनवेग'–भूषण देय ॥ 'गिहगार'–घर, 'अनग'–वसने। पूरे इच्छा कल्प वृक्ष एय ॥ ५ ॥ भूख लगे त्रिन दिनमें। जो इच्छे सो पाय ॥ रोग शोग वियोग नहीं। अल्प है विषय कषाय ॥ ६ ॥ मोहो ममत्व भी स्वल्प है। इससे मृत्यु पाय। सबही होवे देवता। आयुष्य तहां तेताय ॥ ७ ॥ * ॥ ढाल ४ थी ॥ दया धर्म पाये तो कोई पुण्यवन्त पावे ॥ परदेशी ॥ धन्य जो जग निज जन्म सुधारे। मोहममत्व ने टारे जी। पुद्गल आतम स्वरूप निहारे। हितकर पथ स्वीकारे जी ॥ टेर ॥ जम्बुद्वीप मध्य मरूसे पश्चिम। महाविदेह क्षेत्रके मांहिजी ॥ गंधिलावती विजयके

मध्य में। बैताढ्य पर्वत सोभाइजी ॥ धन्य ॥ १ ॥ ता वर गन्धार देशके मांही। 'गन्ध-स्मृद्धी' नगर सोहेजी ॥ 'शतबल' नृप विद्याधर शिरोमणि। गुण गणे जन मन मोहेजी ॥ धन्य ॥ २ ॥ महारूपवती चन्द्रकान्ता राणी। शीलादि गुण श्रृंगारीजी ॥ धर्म कर्म में दम्पती तत्पर। सुख भोगे उस वारी जी ॥ धन्य ॥ ३ ॥ धन्नाजीका जीव स्वर्ग से चवकर। चन्द्रकान्ता उदर आयाजी ॥ शुभ स्वप्न शुभ दोहद देइ। शूभ लग्ने जन्मपाया जी ॥ धन्य ॥ ४ ॥ जन्मोत्सव कर सन्तोषे सबही। दुखियोंके दुःख चूरेजी। कारागृह खाली करदीना। स्वजन मनोर्थ पूरेजी ॥ धन्य ॥ ५ ॥ सबल तन लख 'महाबल' कुमर-अभिधान यह ठाया जी ॥ पंचाधन्नी स्वजन परिजन से। ललित पालित वृद्धी पायाजी ॥ धन्य ॥ ६ ॥ विज्ञान वयमें पढी कला सब। युवावस्था प्रगटाणी जी ॥ जन मन मोहक रूप गुणोंसे। वपु छबी सोभाणीजी ॥ धन्य ॥ ७ ॥ विनयवंत विवेके विचक्षण। रूप सद्गुण अलंकारिजी ॥ समवय समकुलकी उनको। परणाइ तवनारीजी ॥ धन्य ॥ ८ ॥ पांचों इन्द्रियों विशिष्ट सुखको। भोगत काल क्रमाइजी ॥ पुण्य पसाये सामग्री योग्य। सबही सुखद पाइजी ॥ धन्य ॥ ९ ॥ एकदा शतबल भूप एकान्तमें। निजतन छबी निहारे जी ॥ वृद्धता के चिन्ह प्रकट ते देखे। सद्भाव उद्भवे विचारे जी ॥ धन्य ॥ १० ॥ अजब छटा पुद्गल प्रणतीकी। पौषत तोषत भी बिगडे जी ॥ कोमलता रम्य बालावस्था

में । तरूण में विषयके झगडे जी ॥ धन्य ॥ ११ ॥ इच्छित खाये सजाये सिणगट । भो
गाप भोग भोगाये जी ॥ रमणिय गमणिय वमनिय शमनिय । प्यारी से प्यार लगाये
जी ॥ धन्य ॥ १२ ॥ नही यह तन अब वस्तू प्रत्यक्ष । हीनता स्थिति आलगीया जी ॥
एसेही यह नाश भी पावे । ललचाके मामो ठगीया जी ॥ धन्य ॥ १३ ॥जेमी प्रभा मे करी
इसतन की । रक्षणाने रिंआया जी । तेती इसे मुझ मम नाहीं । क्षीणमें बदले स्वभाया
जी॥ धन्य ॥१४॥ मेरा मै माना मेरा न रहिया । पल २ आशा भगो जी ॥करता न डरता
छेतरे मुझ को । करे मुझ शत्रु सगो जी ॥ धन्य ॥ १५ ॥ रोग शत्रु से ओपमे पचाया ।
अब जरा शत्रु से फसाया जी ॥ ऐसेही मृत्यु शत्रु सग करसी । अब समझा तो बणु
वापाजी ॥ धन्य ॥ १६ ॥ प्रमाद किञ्चित करना उचित नहीं । ठग परका पनु
ठगारा जी ॥इससेही मेरा अर्थ सिध्द करू । सा पवित्र पन म्हारा जी ॥ धन्य ॥
१७ ॥ यों चिन्तवी महाबल तेडया । हित मित वचन समझाया जी ॥ राज
समाळन हित शिक्षा दे । सामत मन्त्री बोलाया जी ॥ धन्य ॥१८॥ उत्सव पूर्वक अर्पो
सिंहासन । आज्ञा सबीकी लइ जी ॥ ले दीक्षा शिक्षा मही दोई । एकादश अगपढेइ जी ॥
धन्य ॥ १९ ॥ दुकर करणी दुकर तप करते । आतम ध्यान में लीनो जी ॥ बहुत वर्ष
सयम शुद्ध पाळा । पाप पुज क्षय कीनोजी ॥ धन्य ॥ २० ॥ आयुअन्ते अनशन आराधी।

देवलोक सिधायाजी ॥ ऋषभचरित्रे ढाल चतुर्थी । ऋषि अमोलक गायाजी ॥ धन्य ॥ ॥ २१ ॥ * ॥ दोहा ॥ महाबल नृप राज ऋद्धीमें । भोग विलासे लुब्ध ॥ धर्म करण का नाम सुण । होता मन तस क्षुब्ध ॥ १ ॥ नरवर चारित्र यह देखके । 'स्वयंबुद्ध' प्रधान ॥ चिन्तवे अब कैसे करूं । अवसर लगा ढिग आन ॥ २ ॥ नृप को धर्म रुचावबो । दे उपदेश इसवार ॥ जो यह धर्म समाचरे । तोही सुधरे जमार ॥३॥ मंत्री वही जो भूपके । सुधारे दोनों लोक ॥ प्रचारे उन्मार्ग में । ता मंत्री पर शोक ॥ ४ ॥ सुखेच्छु हूं स्वामिका । सूचव ते हित बात । बुरा लगे तो फिकरना । किन्तु सूधारा थात ॥ ५ ॥ * ॥ ढाल ५मी सुणो चदाजी, सीमंधर परमात्म पासे जावजो ॥ए०॥ सुणो भूपतिजी । हितशिक्षा म्हारी हितेच्छु हो अवधार जो ॥ यह अवसरजी । स्वामि श्रेष्ठ है आत्म काज सुधार जो ॥ टेर ॥ एकान्त में महाबल नृप पास । स्वयंबुद्ध मंत्री आय नमे तास । सन्मानी वैठाइ भूप प्रकाश । कहो कैसे आये क्या इच्छा खास ? ॥ सुणो ॥ १ ॥ करजोडी मंत्री कहे सुणो स्वामी । जगमाहीं जैनधर्म नामी । महापुण्य प्रताप गया पामी । अब आराधनमें न कीजे खामी ॥ सुणो ॥ २ ॥ आप पिताजी राज सुख छिटकाइ । संयम धर्मे आत्म रमाइ । आप कैसे रहे भोगमें लुब्धाइ । यह आश्चर्य मेरे को आइ ॥ सुणो ॥ ३ ॥ भोग रोग खुजली सोजानो । ज्यो कुचरे त्यों वृद्धी ही ठानो । कर्म बिकार सजड

स्यानो । करी सताये भव २ म्यानो ॥४॥ जैसे अग्नि इंधन स नहीं धापे । तिम भोगे भाग तृप्ती नहीं आपे । नामिले इंधन तुम जावे तापे । छोडे भोग तो मिट जाय सन्तापे ॥सुणो॥ ॥ ५ ॥ विषय विटम्बना विषसे भारी । विषतो एक भवमें मारी । विषय भव २ में करे स्वारी । इसलिए तीजे मन को धारी ॥ सुणो ॥ ६ ॥ दुर्लभ मानव भव पाइ । जो विषय साटे गमाइ । वह अनन्त भवमें पस्ताइ । इसलिए रहा मै चेताइ ॥ सुणो ॥७॥ नृपतिजी जरा समझ धरो । मोह गुणी को परिहरो । धर्म कृत्य स्वीकार करो ।जैसे अगावधा स चेतरो ॥ सुणो ॥ ८ ॥ हितेच्छु सेवक हु स्वामी । सम्मती समर्पक हक पामी । जैसे राज काज के कामी । तैसेही आत्म हितकी हामी ॥ सुणो ॥ ९ ॥ स्वपधुत पोप भषण करी । महाबल कहे आश्चर्य धरी । कथन तुमारा सत्यसिरी । किन्तु विन अवसर कस उचरी ॥ सुणो मत्रीश्वर ' भवसरोचित वचन विचारी उचारिये ॥तस प्रतीत विन । कैसे धर्मकी करणी कहो स्वीकारी ये ॥ टेर ॥ १० ॥ रग विनोद आनन्द मांही । गान तान हो रहे त्यांइ । धर्मोपदेश कैसे कहाइ । और कहेतोभी कैसे सुहाइ ॥ सुणो भाणि ॥ ११ ॥ युवावस्था मेहमान परि । स्वल्पकाले आवे नीसरी । पोपी जे इसे भोग करी । लेखे लगे पाइ राज सिरी ॥ सुणो ॥ १२ ॥ मुझे राजा जानी सुख दाता । राणी मित्रादि कृपा चहाता । तस इच्छा पुरु उपजाइ साता । यों तृप्त करू निजपर भ्राता ॥ सुणो ॥ १३ ॥ दृढवय धर्म

समाचारे । अशा तृष्णा मन्द होय जरे । तप संयम भी तेह वरे । सुज्ञभी उपदेश तबही करे ॥ सुणो ॥ १४ ॥ संशय एक है म्हारे मने । परभव है के नहीं पूछु थने । धर्म फल पाप फल सर्वी भने । पण प्रत्यक्ष प्रमाण क्या अपने कने ॥ सु ॥ १५ ॥ इत्यादि सुणी नृप कथन । मंत्री को भयो खेदाश्चर्य मन । मोह मुग्ध नृप भूले सन । समझावूमें अबी करी यतन ॥ सुणो राजा ॥ १६ ॥ कहे मंत्री सुणीये राजा । दाखला आपको कहूं ताजा । भूलगये आप सम्पत्ती माजा । स्मरण करो बालवय काजा ॥ सुणो ॥ १७ ॥ अपन दोनों बचपन माहीं । बैठ विमान क्रीडा तांइ । गये मेरू पे नन्दन वन ठाइ । देव देवी युगल तहां देखाई ॥ सु ॥ १८ ॥ दिव्या कृती वस्त्र भूषण जोड । सहर्षाश्चर्य अपने को होइ ॥ आप को पास बोलाये दोइ । मिष्ट इष्ट वचन कहे सोइ ॥ सुणो ॥ १९ ॥ अहो वच्छ मै अतिबल नाम । था दादा तुमारा खेचर धाम । सदूगुरू सद्बोध वैराग्य पाम । ली दीक्षा शिक्षा ग्रही हित काम ॥ सुणो ॥ २० ॥ अनशन कर समाधि मरण पाया । लांतिक स्वर्गइन्द्र कहलाया । सहज मिले यहां इसालिए चेताया । लुब्धना मत अस्थिर मोह माया ॥सुणो॥२१॥ धर्म करनेसे सुख पावे । स्वर्ग मोक्ष में सिधावे । यों कह के वे स्वर्ग में जावे । क्या कथन यह याद आपको आवे ॥ सुणो ॥ २२ ॥ प्रत्यक्ष प्रमाण यह बतलाया । पिता महा का भी हूकम सुनाया ॥ अब तो पर भवका निश्चय आया । करो धर्म अमोल ढाल

पंच माया ॥ सुणो ॥ २१ ॥ * दोहा ॥ सुनके वचन मन्त्रीशके । चमके चित्त भूपाल । मेक्षी बात स्मरण करी । सावध बने तत्काल ॥ १ ॥ अहो हितेच्छु प्रधानजी । भली कराइ याद ॥ परभवका आस्तिक बना । पाया चित्त समाध ॥ २ ॥ समाचरूगा यथा शक्ति । अपथ्थी जैन धर्म ॥ हम कुल परम्परा यही । तेही करूगा कर्म ॥ ३ ॥ सम्वेगी बने नृपको । देखी तप प्रधान ॥ ताहीकी इच्छा करन । पुन करता बयान ॥ ४ ॥ राजेश्वर आप वंश का । जानूं में वृतान्त ॥ पुण्य पाप फल दोनों का । कहु सुणो बनो शान्त ॥ ५ ॥ * ॥ ढाल ६ छट्टी ॥ आदि नाथ को नन्दन नीको ॥ एदेशी ॥ राजेश्वर निज आत्म सुधारा ॥ स्वयबुद्ध दरशावेजी ॥ धर्म पापका फल सही भोगे । सचित उदय जब आवेजी ॥ रा ॥ टर ॥ सुनो पृथवी नाथ आपके वशमें । भूत काल मझारेजी ॥ कुरुचन्द नाम नृपती हुआ है । 'कुरूमती, राणी सुखकारो जी॥राज॥१॥हरीचन्द्र नामे कुमर जी ध तस।गुणवंत ने बुद्धीवंत जी । और भी ऋद्धि सुख सामग्री । पुण्यप्रसाद पावत जी ॥ राजे ॥ २ ॥ किन्तु नृपती बडा क्रूरकर्मी । पाप कर्मे मद माता जी ॥ निर्दयी यमराज के जैसा । अधर्म म अहो निश जाता जी ॥ राजे ॥ ३ ॥ अति अशक्ति विषयोंप भोगे । तृप्ति क्योंभी नही पावे जी ॥ तास रोग धातु विपर्योप का । उत्पन्न भया सतावे जी ॥ राजे ॥ ४ ॥ प्रत्यक अङ्ग मे दाहा प्रजल । फूट गया तन सारा जी ॥ गलीपके अङ्गोपाङ्ग कुरूप भिन्न । नर्कसी वेदन भयकारा

जी ॥ राजे ॥ ५ ॥ शैय्या कंटक मिष्ट भोजन विष सम ॥सुगन्धी दुर्गन्धी वन जावे जी॥ नृत्य गायन सब क्लेशोत्पादक । स्त्री पुत्र शत्रु देखावे जी ॥ राजे ॥ ६ ॥ उपचार[1] भी विषम हो परिण में । जल विन झंक ज्यों तलमल ताजी ॥ आर्त रोद्र ध्यान दुःख अति वेदत । अकाले मृत्यु पाता जी ॥ राजे ७ ॥ तात की दुर्दिशा देख हरिश्चन्द । धर्मपर श्रध्दा जमाइ जी ॥ भोगे विरक्ती आशक्ति व्रतमें । रहता राज निभाई जी राजे ॥ ८ ॥ सुवुद्धी नामें श्रावक संगरही । ज्ञानाभ्यास ठीक करीयाजी ॥ । दोनों बने धर्म बन्धु प्रेमी । धर्म ध्याने अनुसरीयाजी ॥ राजे ॥९॥ एकद। वाग में 'शीलंधर' मुनि । केवल ज्ञान उपायाजी ॥ देवागम देखी हरिश्चन्द भूपति । केवली वंदन आयाजी ॥ राजे ॥ १० ॥ सुन धर्मोप-देश धर्म में भीना । साविनय जिनजी से पूछेजी ॥ मुझ पिता मर कर गये किस गति में । तस दुःख मुझ मन खूंचे जी ॥ राजे ॥ ११ ॥ सर्वज्ञ कहे सप्तमी नर्के । महा पापे दुःख पावे जी ॥ सुनकर धूजी आत्मा राजा की । वैराग्य उद्भवा घर आवे जी ॥ राजे ॥ ॥ १२ ॥ कहे सुवुद्धि मे दीक्षा लेवूंगा । तुम कुमरको धर्मी बनानाजी ॥ सुवुद्धि कहे मै भी दीक्षा लेवूंगा । यह काम करेगा पुत्र महानाजी ॥ राजे ॥ १३ ॥ पुत्र को राज दे दोनों दीक्षा ले । ज्ञान पढे तप करियाजी ॥ कर्म क्षय कर केवल ज्ञान ले । सिद्ध गति का सुख वरियाजी ॥ राज ॥ १४ ॥ कहे स्वयंवुद्ध मंत्री महाबलसे । विषय रक्त विरक्तो जी ।

निज कुल पिता वृतान्त आप नृप। धना धर्म आराधो जी ॥ राजे ॥ १५ ॥ फिर कहे मंत्री आपके वंश में। 'दण्डक' नामे हुआ राजाजी ॥ महा प्रतापी 'मणि माली' नामे। पुत्र था तस सुन्दर साजाजी ॥ राजे ॥ १६ ॥ दण्डक नृपका राज भण्डारह। स्त्रीपुत्र पे अति प्रेमो जी ॥ प्राणाधिक आप सम्पत्ति ताई। मूला धर्ममे नेमो जी ॥ राजे ॥ १७ ॥ मोहो मुग्ध माया ममत्व वश। ध्याता आर्त ध्यानो जी ॥ मरकर उसके भण्डार में उपना। अजगर दुर्धर विष मानो जी ॥ राजे ॥ १८ ॥ जो जावे कोप म उसे खाजावे। एक दिन मणिमाली आयाजी ॥ उसे देख जाति स्मरण पाया ॥ पुत्र जाणी नहीं गटकाया जी ॥ राजे ॥ १९ ॥ प्रेमोत्सुक हो सन्मुख देखे। मणिमाली सशय छाया जी ॥ कुछभी सम्बन्ध मेरा इसके संग। निर्णय करण उमायाजी ॥ राजे ॥ २० ॥ सा समग ज्ञानी मुनिवर आये। पूछे से भेद फरमावेजी ॥ बाप तुमारा मोह ममत्व कर। मरकर अजगर थावे ॥ राजे ॥ २१ ॥ अजगर पास जाकर मणिमाली। अर्हत धर्म सुनायाजी ॥ महास्पर्शी अजगर मरकर। देवलोक मे सिधायाजी ॥ राजे ॥ २२ ॥ पुत्रप्रेम और गुरु तसमानी। देवलोक से देव आईजी ॥ दिव्यहार दिया मुक्ताफलका। वही हार यह आप कठ माँईजी ॥ राजे ॥ २३ ॥ आप हैं हरिश्चन्द्रके कुल भूषण। मुझे सुबुद्धि के वशज जाणो जी ॥ नृप को धर्मी बनाना मुझ कृतव्य। परम्पराके प्रमाणोजी ॥ राजे ॥ २४ ॥

अवसरोचित्त सूचित्त किये आप को ॥ सो भी सुनलीजे रायाजी ॥ आजही गयाथा
नन्दन वनमांही । तहां चरण मुनि दर्श पायाजी ॥ राजे ॥ २५ ॥ देशना सुन मैने प्रश्न
कीना । मैरे राजाका आयुष्य फरमावोजी ॥ मुनिवर कहा शेष एक माहिनेका । सुन मुझे
भयो घबरावोजी ॥ राजे ॥ २६ ॥ तत्क्षीण आया आपको चेताया । अब शीघ्र कीजे
सुधाराजी ॥ महाबल महा वैरागी बन कहे । तूंही सचा मित्र हमराजी ॥ राजे ॥ २७ ॥
किन्तु आग लगे कूप खिनने सा । मौका अब यह आयाजी॥कहो मुझ कैसे करूं सुधारा।
व्यर्थ सब जन्म गमायाजी ॥राजे॥२८॥ कहे स्वयंबुद्धी चिन्ता नही कीजे । क्षीणेक दीक्षा
मोक्ष दाताजी ॥ तेहीज धारो होय निस्तारो । कहे नृप मैभी यही चहाताजी ॥ राजे ॥ २९
॥ बलधर कुमर को राज समर्पि ।बहूत धन दान मांहे लगाया जी ॥ 'क्षमा सागर' महाराज
पास जा । चरणों में सीस झुकाया जी ॥ राजे ॥ ३० ॥ सविनय वंदी मुनिवेष धारी ।
उभे सम्मुख आईजी ॥ कर जोडी कहे नाथ मुझ तारो । दीक्षा शिक्षा बक्साई जी ॥
राजे ॥ ३१ ॥ सावद्य योग जाव जीव त्यागे । महाव्रत चार स्वीकारे जी ॥ तीव्र बुद्धी बने
तत्वज्ञ तत्क्षीण । किये पादोपगमन संथारे जी ॥ राजे ॥ ३२ ॥ ध्यानस्थ बने स्थिर
त्रियोग स्थापी । धर्म ध्यान के षोडश भेदो जी । सविस्तारे अर्थ परमार्थे । ध्याते तज
सब खेदो जी ॥ राजे ॥ ३३ ॥ सुमेर गिरी ज्यों अडोल एकाग्र । चलित चितरखा स्यानो

जी ॥ बाईस दिन यों सपम सयारा । देव को आयु पन्मानो जी ॥ राजे ॥ ३८ ॥ चोथा भय आदिश्वरजी का । विविध कथा से कथानो जी ॥ ढाल पछी ए ऋषभ चरित्र की । कवि अमोल लोभानो जी ॥ राजे ॥ ३९ ॥ ⊛ ॥ दोहा ॥ अब कहु पचम भव कथन । मीसहाबल मुनीराय ॥ सामाधी मरण मरी । अशुची तन छिटकाय ॥ १ ॥ ऊर्द्ध लोके ज्योतिषी परे । उत्तर दिशी के माय ॥ द्वितीय ईशान स्वर्ग मे । श्रीप्रभ विमान सोभाय ॥ २ ॥ उत्पाद शैय्या के विषे । उत्पन्न भये तत्काल ॥ दीया फुली तत्क्षिणे । शैय्यापाल निहाल ॥ ३ ॥ घटा बजाई ता समय । मोतद जेते विमान ॥ सब में घटारव भया । देव भये सावधान ॥ ४ ॥ देव देवी आये तहां । खड़े रहे दोय्याघेर ॥ नूतन देव वधाविया । जय २ बोल फेरफेर ॥ ५ ॥ ढाल ७ सप्तमी ॥ मानव जन्म रत्न लेने पायोरे । सद्गुरू समजावे ॥ पदेशी ॥ साधिक धर्म पुण्य से सुख पावे जी । ललितांग देव साभावे ॥ टर ॥ मूहुर्त अन्तर साय हाय तन धारी । बैठे भये दव दिव्यता मसारी जी ॥ देव दुष्य वस्त्र ओढा । देखे पव देवी मोडा । सभी नम्र भये दोडा ॥ सधिक ॥ १ ॥ अवधि ज्ञान से भेद सहु पाया । मै महाबल स्वयबुद्ध बसाया जी । हुआ सामानिक देवा । ये सब देव कर सेवा । सत्सग फल पइया ॥ सधिक ॥ २ ॥ सामनिक त्रयर्त्रिंसक लोकपालो । अममबोपि परिषद विशालो जी ॥ देवी स्वयप्रभा सारी । अनूपम रूप धारी

अति तासु लुब्धारी ॥ संचित्त ॥ ३ ॥ लावण्यता अतीव कोमल अंग दीपे । स्तन जघन नयन मन जीपे जी ॥ हांस विलास प्रभासी । अमृताधिक भासा । रमे तन जीव ज्यों पासी ॥ संचित ॥ ४ ॥ ते देवी स्वल्प काल मे मृत्यु पाइ । तेहथी ललितांग देव मुरछाइ जी ॥ करे घणो विलापातो । स्वयंप्रभा गुण गाता । माने नहीं किसकी वातो ॥ सं ॥ ५ ॥ तब एक देव तहां शीघ्रता से आवे । कर धर ललितांग को बोलावे जी ॥ पहचानो मुझतांइ । तुम मंत्री सुखदाइ । स्वयंबुद्ध आया यहांही ॥ सं ॥ ६ ॥ आपका आयुष्य पूर्ण भया उसवारे । मैने लिया संयम धारजी ॥ 'सिद्धार्थ जी' गुरूपास । करा ज्ञानाभ्यास । तप कर पाप पनास ॥ संचित ॥ ७ ॥ इसही ईशान स्वर्ग के मांही । सामानिक देव इन्द्र का थयाइ जी ॥ दृढधर्मि नाम पाया । जाने जान यहां आया । पूर्व प्रेम प्रगटाया ॥ सं ॥ ८ ॥ सखेदाश्चर्य मुझ को आवे । नर देव हो क्यों रुदन मचावे जी । तब ललितांग बोले । देवी स्वयं प्रभा तोले । मिले नहीं जग खोले ॥ सं ॥९॥ ते मर गइ तज गइ मुझ जलता । विरह विपता से मै तलमलता जी ॥ दृढ धर्मी प्रकाशे- तन सबी का विनाशे । रोये पहोंचे क्या आशे ॥ स ॥ १० ॥ ललितांग कहे यह सच्च है भाइ । किन्तु मुझ से न दुःख सहाइ जी ॥ जो इस को मिलावे । सच्चा मित्र सो कहावे । और बात न सुहावे ॥ सं ॥ ११ ॥ दृढ धर्मी कहे मैने ज्ञान से जाना। सुनो कहूं स्वय-

प्रभा बधाना जी ॥ धातकीखण्ड विदह माहं । स्थित 'नन्दीग्राम' आहे । 'नागिल' दरिद्री तहां रहे ॥ स ॥ १२ ॥ 'नागश्री' नामे उसकी नारी । पापोदय तस भारी जी । अशो दक का टोग । मेहनत से न भरे पोटा । ब्यापे दबी ज्यों चोटा ॥ स ॥ १३ ॥ दुःख में दुःख अधिक प्रगटावे । छ कन्या तस पावे जी ॥ तिणसे अति घबराई । नागिल चिन्ते मन माहीं । अब जो पुत्री थाइ ॥ स ॥ १४ ॥ तो घर छोड परदेश में जावू । पीछा मुख नहीं देखावू जी । पुनः गर्भज रहिया । पूंपा जनमज थइया । नागिल पशान्तर गइया ॥ स ॥ १५ ॥ नागश्री जाना पति सिधाया । तनुजा पालन से घबरायाजी अति दुःख सा थाइ । बेटी नाम न ठाइ । निर्नामिका कहवाई ॥ स ॥ १६ ॥ दु ख दुःख ते मुखी पाई । महाकष्ठ पेट भराइ जी ॥ एक दिन किसी स्याल । बनते देखे पकान । मांगे माता से इह तान ॥ स ॥ १७ ॥ क्रोधित जननी कहे पहाड में जारी । काष्ट मोली लइ शीघ्र आरी जी ॥ तो मिष्टान तू पावे । ते डोंगर पे जावे । तहां पुण्य प्रगटावे ॥ स ॥ ॥ १८ ॥ 'अम्बर तिलक' पर्वत पर आये । तहां 'युगधर ऋषि' केवल पाये जी ॥ सुर नर बहु आवे । केवली व्याख्यान सुनावे । तेभी दम्म हर्षावे ॥ स ॥ १९ ॥ नारी धरी लगी वाणी सुणवा । कहे साधु करणी सा कस सुणवाजी ॥ मक्षी उदय समझो ज । कूडा कर्म न कीज । तो आगे न दुःख लीज ॥ स ॥ २० ॥ ब मनोर्थ पूर्ण करण नरवेदी । न करो

चिन्ता धर्म लेइ जी। तप संयम धारो। होवे खेवा पारो। सुनी हर्षी ते वारा ॥ सं ॥ ॥ २१ ॥ ढिग आइ तत्क्षणि नमन कीधाइ। पूछे कर जोडी केवली तांइजी ॥ राव रंक एक सारो। श्रेष्ट आपको आचारो। तो मुझने उचारो ॥ सं ॥ २२ ॥ मूझसम दुःखी कोइ नहीं जगमाइ। कह भगवंत सुण तूं बाइ जी ॥ चारों गति के मझारो। दुःख को न पारावारो। तो किसो दुःख थारो ॥ स ॥ २३ ॥ यम मार क्षेत्र वेदना नर्क केरी। पराधीन महा कष्ट तिर्यंच मेरी जी। दरिद्री नर दु खिया। देव अभोगी की गतिया। सब विस्तारी कथिया ॥ सं ॥ २४ ॥ जो अब दु ख का डर दिल आवे। तो मोक्ष में दु ख नहीं पावे जी। करो साची करणी। जे भवसिन्धु तरणी। ज्ञानादि मुनि वरणी ॥ सं ॥२५॥ निर्नामिका बोध सुन हर्षाइ। कर्म ग्रन्थी भेद तब थाइ जी। व्रत बारे धारे। लुली किया नमस्कारे। मोलीले घर पधारे ॥ स ॥ २६ ॥ तप जप आदि विविध करे करणी। हूइ युवती तो भी नहीं परणी जी। तप से तन सुखाया। अन्ते अनशन ठाया। तुमप्यारी तहां रहाया ॥ सं ॥ २७ ॥ आप जावो उसे रूप बतावो। बने आशक्त नियाणो करावोजी। तुम देवी ते थावे। प्राण प्यारी मिल जावे। दृढधर्मी दरशावे ॥ सं ॥ २८ ॥ ललितांग देव को बात यह भाइ। अति रम्य रूप बनाइ जी ॥ निर्नामिक ढिग आई। सम्मुख उभा रहाइ। प्रेम अधिक जानाइ ॥ सं ॥ २९ ॥ निर्नामिका देखी अति सोहाइ। पूर्व प्रेम उद्-

याइ जी ॥ दिया नियाणा ठाइ । मन में उसी को धाइ । मरकर स्वयप्रभा थाइ ॥ स ॥
३० ॥ दोनों का प्रेम पूर्वपर जुबिया । इड धर्मी का उपकार उच्चरिया जी । भव पचम
धाय । ढाल सप्तमी सुहाय । ऋषि अमोलक गाय ॥ स ॥ ३१ * ॥ दोहा ॥ जम्बुद्वीप
पूर्वदिशी । महाविदेह मझार ॥ उत्तम विजय पुष्कलावती । 'लोहार्गल' नगर सार ॥१॥
'सुवर्ण जय' सुराजवी । लक्ष्मीवती' पटनार ॥ और सायमी बहुलसी । भोगवे सुख
ससार ॥ २ ॥ एकदा ललीताग देवता । श्री जिनदर्शन काज ॥ महाविदेह क्षेत्र में जावता ।
आयुपूर्ण भया गाज ॥ ३ ॥ शुभ भावना के योग से । लक्ष्मीवती उर आय ॥ पुत्र हुआ
शुभ मूहूर्ते । 'वज्रजघ' नाम पाय ॥ ४ ॥ सुखे २ वृद्धी भये । विज्ञान वय मे आय ॥
विद्यापढ पण्डित पने । युवावस्था प्रगटाय ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल ८ मी ॥ पूज्यजी
पधारा हो नगरी हम तणी ॥ ए ॥ पूर्व स्नेही हो मिले सुख सरूपजे । लइ बन्धन
रह आन हो । गुणीजन ॥ ललीतांग स्वयप्रभ जीवका । मिलने का सुणो
बयान हो । गुणी जन ॥ पूर्व ॥ टेर ॥ पुष्कलावती विजय विषे । 'पुडरीकिणि'
नगरी वखाण हो । गुणी जन ॥ 'वज्रसेन' नामें भूपति । 'गुणवती' राणी गुण खाण
हो ॥ गुणी ॥ पूर्व ॥ १ ॥ ईशान देवलोकने विषे । ललीतांगने वियोग हो ॥ गुणी ॥
स्वयप्रभा देवी दुःख धरी । मृत्यु पामी धरती शोग हो ॥ गुणी ॥ पूर्व ॥ २ ॥ गुणवती

कूंखे अवतारी । पूरे मांसे पुत्री प्रसाय हो ॥ गुणी ॥ नाम ' श्रीमति ' स्थापियो । सुखे २ वृद्धी पाय हो ॥ गुणी ॥ पूर्व ॥ ३ ॥ सकल कलामें निपूण वणी । दिव्य रूप युवती थाय हो ॥ गुणी ॥ एकदा वैठी मेहल ग्वाक्ष में । गगन मे दृष्टी लगायहो ॥ गुणी ॥ पूर्व ॥ ४ ॥ देव देवी विमान में । श्रीजिन दर्शने जाय हो ॥ गुणी ॥ ते देखे चित्त चिन्तवे । ये तो मैंने देखे किस ठाय हो ॥ गुणी ॥ पूर्व ॥ ५ ॥ ईहापोह दीर्घ करते हुए । जाति स्मरण पाय हो ॥ गुणी ॥ मुरछाइ धरणी ढली । सीतोपचारे सावध थाय हो ॥ गुणी ॥ पूर्व ॥ ६ ॥ खिन्न चित्त निश्वास न्हाखती । ललितांग मिलन इच्छाय हो ॥ गुणी ॥ प्यारा विन अन्यसे वोलणो । उसको जरा न सुहायहो ॥ गुणी ॥ पूर्व ॥ ७ ॥ मानव्य तस अवलोक ने । स्वजन व्यतर दोष जान हो ॥ गुणी ॥ उपचार करे तोभी न लेवे । तव एक दासी विवेक वान हो ॥ गुणी ॥ पूर्व ॥ ८ ॥ एकांते पूछे अति प्रेमसे । बाईजी दाखो मुझ भेद हो ॥ गुणी ॥ पयत्न करके मिटावूंगा । निश्चयसे तुमारी खेद हो ॥ गुणी ॥ पूर्व ॥ ९ ॥ पण्डिता तस जाणने । कहे कुमरी विचार हो ॥ गुणी ॥ जाति स्मरण मुझ भयो । देखे पूर्व ले भरतार हो ॥ गुणी ॥ पूर्व ॥ १० ॥ ईशान स्वर्ग ललितांगजी । स्वयं प्रभा नाम मुझ कहवाय हो ॥ गुणी ॥ इत्यादि वीतक कथा । दीनी सवही सुणाय हो ॥ गुणी ॥ पूर्ण ॥ ११ ॥ कहे पण्डिता फिकर तजो । हूं मिलावूं पुर्व कंत हो ॥ गुणी ॥

या कहा चित्र बीतयो । बीतक सभी वृतान्त हो ॥ गुणी ॥ पूर्व ॥ १२ ॥ वज्रसेन धन्न
वर्ता मणा । पर्व गाँठ उत्सव हो ॥ गुणी ॥ राज कुमर आदि घणा । आने लगे तहां सब
हो ॥ गुणी ॥ पूर्व ॥ १३ ॥ पण्डिता मार्ग मध्य धरी । छऊ चित्र पट हाथ हो ॥ गुणी ॥
पत्र घटाउ विस्मय घर । खड़े रह मिल साथ हो ॥ गुणी ॥ पूर्व ॥ १४ ॥ दुर्दर्शन राजा
तणा । दुर्दंत नाम कुमार हो ॥ गुणी ॥ चित्रपट दम्भ भर समजोय । मूरछाइ पड्या तिण
वार हो ॥ गुणी ॥ पूर्व ॥ १५ ॥ क्षिणांतर सावध भला । पूछे लोक कहे एम हो ॥ गुणी ॥
आगे स्मरण मैन लिया । देखा जगा पूर्व प्रेम हो ॥ गुणी ॥ पूर्व ॥ १६ ॥ यह देर मैस
लीलांगधा । यह स्वयं प्रभ देवी मोय हो ॥ गुणी ॥ जो जो लिखा था सो सा कहा ।
पण्डिता समझो कपट लोय हो ॥ गुणी ॥ पूर्व ॥ १७ ॥ पूछे भर्म पाता मुनि तणा । राजा
और तपस्वी का नाम हो ॥ गुणी ॥ वासाविध मिलावू अवी । प्यारी तुमारी पास हो ॥
गुणी ॥ पूर्व ॥ १८ ॥ तब कह यहसो भूली गया । तब ठठ्ठा करे सासहो ॥ गुणी ॥ तुम
जीव हो ललीतांग के । स्वयंप्रभा मिलने की आस हो ॥ गुणी ॥ पूर्व ॥ १९ ॥ तो वालिये
नन्दी ग्राममें । जो है धातकी खण्ड माय हो ॥ गुणी ॥ कम दोष से लगडी भइ । ज्ञाते
स्मरण म भी पाय हा ॥ गुणी ॥ २० ॥ चित्र पुर्व भव का लिखा । दिया है मेरे हाथ हो
॥ गुणी ॥ भला हुआ तुम आमिल । अब चीत्र चलो तुम साथ हो ॥ गुणी ॥ पूर्व ॥ २१ ॥

लंगडी सुन वह सुस्त भया। मस्करी मित्र करे तास हो ॥ गुणी ॥ शीघ्र मिले लंगडी प्यारी से। सबी आगे चले करते हांस हो ॥ गुणी ॥ पूर्व ॥ २२ ॥ तदनन्तर उस ही मार्ग से। आया वज्रजंध ' कुमार हो ॥ गुणी ॥ चित्र देख जाति स्मरण लिया। मुरछा पाया उसवार हो ॥ गुणी ॥ पूर्व ॥ २३ ॥ शीतोपचारे सावध किया। मंत्री पूछे मूर्च्छा कारन हो ॥ गुणी ॥ तब कुमर कहे इस चित्र में। मुझ पूर्व भव वर्णन हो ॥ गुणी ॥ पूर्व ॥ २४ ॥ ईशानकल्प श्री प्रभाविमान में। मै था ललितांग देव हो ॥ गुणी ॥ स्वयंप्रभा देवी प्यारी अति। पूर्व भव तस एव हो ॥ गुणी ॥पूर्व॥ २५ ॥ धातकी खणु नन्दी ग्राम मे। निर्नामिका दरिद्रणी यह हो ॥ गुणी ॥ अम्बरतिलक वर गिरीवरे। युगंधर मुनि मिलेह हो ॥ गुणी ॥ पूर्व ॥ २६ ॥ धर्मआराधा संथारा किया। पुन मेरी देवी हुइ यह हो ॥ गुणी ॥ इत्यादि वीती कथा। अथ इति वरणेह हो ॥ गुणी ॥ पूर्व ॥ २७ ॥ सत्य वृतान्त वज्रजंघ मुखे। सुन के पण्डिता हर्षाया हो ॥ गुणी ॥ सच्चा कथन सब कुमर जी। यों कही श्रीमति ढिग आय हो ॥ गुणी ॥ पूर्व ॥ २८ ॥ वीतक बात सब वर्णवी। श्रीमती प्रफूलित होय हो॥ गुणी ॥ प्यारे पतिका पता मिला। अब फलेंगे मनोर्थ सोय हो ॥ गुणी ॥ पूर्व ॥ २९ ॥ वज्रसेन चक्रवर्ती भणी। पण्डिता वृतान्त जणाय हो ॥ गुणी । प्यारी पुत्री की इच्छा पूरवा। वज्रजंघ कुमर बोलाय हो ॥ गुणी ॥ पूर्व ॥ ३० ॥ कहे तुम पाणी

ग्रहण कीजीये । पूर्व भवकी प्रेमला संग हो ॥ गुणी ॥ महोत्सव कर परणा दीधी । हर्षे
उभय प्रेम रंग हो ॥ गुणी ॥ पूर्व ॥ ११ ॥ छोडी सथ धन सेना लइ । मातृगोत्र पुर जाय
हो ॥ गुणी ॥ देखी पुण्याइ पुत्र की । राजा सुवर्णजय हर्षाय हो ॥ गुणी ॥ पूर्व ॥ १२ ॥
राजारोहण कर कुमर का । दीक्षा महि भूपाल हो ॥ गुणी ॥ काम सपमें आत्मा रमी ।
ऋषि अमोल कही अष्टम ढाल हो ॥ गुणी ॥ पूर्व ॥ १३ ॥ * ॥ दोहा ॥ पुंडरिक गणि
नगरी तणा । चक्रवर्ती वज्रसेन' ॥ पृथ्वी वेइ वज्र जय को । पाये मन में चैन ॥ १ ॥
पुष्करपाल' कुमार को । राज तखत बैठाय ॥ दीक्षा अवसर जिन लखी । वर्षी दान
दिराय ॥२॥ स्वयमेव दीक्षा ग्रही । मनःपर्यव ज्ञान पाय ॥ एक मास छद्मस्त रही । केवल
ज्ञान उपाय ॥ ३ ॥ चोतीस अतिशय दीपते । स्थाप तीर्थ चार ॥ द्वादशांगी प्रगट
करी । जग में धर्म प्रसार ॥ ४ ॥ जनपद वधा में विचरते । तार ते भव्य जन तांय ॥
अब वज्रजय श्रीमति तणा । सुणो अधिकार चित्त लाय ॥ ५ ॥ * ॥ ढाल ९ मी ॥ श्रावक
श्री परिक्षा । चम्पाका पालीजी ॥ ए ॥ वज्रजय राजवी । धर्म कर्म दीपावेजी ॥ टेर ॥
लोहार्गल पुरके विषे । सुखे राज करे वज्रजय ॥ श्रीमती प्रेमला संगे । भोग भोगवे चढते
रंग ॥ वज्र ॥ १ ॥ अपने तेजस ताप से । दीये शत्रु जन को धूजाय ॥ कीर्ति फैली चउ
दिशे । काइ सन्मुख होना न चहाय ॥ वज्र । २ ॥ शुभ स्वप्न श्रीमती लइ जी । जन्मा

पाले वृद्धी करे यतन ॥ वज्र ॥ २ ॥ एकदा राज
पुत्र रतन ॥ पुण्यात्म पेखी हर्षि ये जी। सांभलो। पुष्कर पाल नृप
सभा विषे। कोइ दूत आ करे प्रणाम ॥ अर्जी करे स्वामि सांभलो। पुष्कर पाल नृप
सभा विषे। कोइ दूत आ करे प्रणाम ॥ फिर सामंत बने सिरजोर ॥
कहवावे आम ॥ वज्र ॥ ४ ॥ वज्रसेन नृप दीक्षा गृही । फिर सामंत बने सिरजोर ॥
आणा नमाने हम भूप की। करने जंगकर रह्या शोर ॥ वज्र ॥ ५॥ सहायता इच्छे आपकी
। ले सेना पधारो नरनाथ॥ प्रीति वक्त निभाइये। राज रक्षण में दे हाथ ॥ वज्र ॥ ६ ॥ वज्रजंघ
कहे चिन्ता तजो। सेना ले आता मै इसवार ॥ क्या मगदूर सीमाडिया तणी। दवा
सके प्यारे पुष्करपाल ॥ वज्र ॥ ७ ॥ दूत गया खुश होय के। सुनी पुडरिगणिपति
हर्षाय। श्रीमति से वज्रजघ जी। दीनी दूत की बात जनाय ॥ वज्र ॥ ८ ॥ श्रीमती
कहे मै भी संग चलूं। भक्ति करूंगी शक्ति ए सहाय ॥ भाइ से मिलन इच्छा अति।
मानी प्रेमी पति तस वाय ॥ वज्र ॥ ९ ॥ इन्द्र इन्द्राणी से शोभीते। दोनों सज्ज भए दल
बल संग ॥ मार्ग क्रमणकर आवी ये। 'शरकट' वनपास उमंग ॥ वज्र ॥ १० ॥ वन तट
वासी जन कहे। दृष्टी विष अही रहे इसस्थान। मत जावो इस मार्ग से। रखे होना
पडे हैरान ॥ वज्र ॥ ११ ॥ मानी बात अन्य मार्ग से। पुंडारिगिणी नगरी आय ॥ स्वाम्नि
पति ने वधाइया। पुष्करपाल परिवार संगाय ॥वज्र॥१२॥ दोनों दल एकत्र,कर। सीमान्त
अ?, दूत पठाय॥के तो नमो आसम्मुखे ।न तो आवो दें मजा बताय ॥वज्र॥१३॥ते भी सेना

से आवीया विमलय तेज देख सकाय॥ निजबल से वज्रजंघ जी। दीनी वैरी की सेना भगाय ॥ धन्य ॥ १४ ॥ सामंत सब आकर नमें। मानी आणा स्वस्थान जाय ॥ दोनों नृप हर्षोल्लस हुलसर। आये स्वप राजधानी ठाय ॥ धन्य ॥ १५ ॥ पेहन वेन्योइ सन्मानीय। तस जाहिर किया उपकार ॥ भक्ति युक्ति सूबही करी। दम्पती अति प्रेम जणाय ॥ धन्य ॥ १६ ॥ लइ रजा सालक तणी । दम्पती निज सेना सार ॥ निज पुर पथ में संचरे। तही वन तट सुना समाचार ॥ धन्य ॥ १७ ॥ कुशल पुरुष कहे भूपतिजी। इसिही वनके ठाम ॥ दोनो मुनि ध्यानस्थ थे। 'सागरसेन' मुनिसेन नाम ॥ धन्य ॥ १८ ॥ सहोदर संसार पक्षके। महा तपस्वि विचरते आप ॥ अन उपसर्ग हरण करण। निज तारण ध्यान लगाय ॥ धन्य ॥ १९ ॥ भुजग हष्टी विष कोपीया। किन्तु चला नहीं कुछ जोर ॥ निर्विष नाग बना तदा। टूटे ऋषिजी के कर्म कठोर ॥ धन्य ॥ २ ॥ केवल ज्ञान प्रगट भया। देव उत्सव करने आय ॥ श्रवण कर वज्र जंघजी। सजोड़ अति हर्षाय ॥ धन्य ॥ २१ ॥ सपरिवारे तहां पधारके। विधि यवे कर नमस्कार ॥ देव परिषद मध्य में। बैठे धर्म सुणे प्रेमापार ॥ धन्य ॥ २२ ॥ केवली कहे भव्य भूमीए। बोध बीज अति दुर्लभ ॥ सुख सम्पत्ति धारे अनंत लइ। तोही दुःख नहरा समझो अब ॥ धन्य ॥ २३ ॥ अक्षय सुख शिवस्थान का। यह नर भव है दातार ॥ ज्ञान युत तप संयम करी। अब कर दो बेड़ा पार ॥ धन्य ॥ २४ ॥

इत्यादि देशना सुणी। नृप केर विनंती अहो भगवान ॥ आहार शुद्ध हम पास है। ग्रही तारो कृपा निधान ॥ वज्र ॥ २५ ॥ प्रति लाभी परिवार संग। निजपुर जाते करे विचार ॥ धन्य २ दोमुनिवरा ॥किया साथ ही निज उद्धार ॥ वज्र॥ २६ ॥ मेरे पिताजी दीक्षीत बने। मे फंसरहा मोहपास ॥ अब अनुकरण इनका करूं। ज्यों नाश होवे भय त्रास ॥वज्र॥ २७॥ संदने आ राज दे पुत्र को। अब लेना संयम भार ॥ श्रीमती निज प्यारी को। द-र्शाया निज विचार ॥ वज्र ॥ २८ ॥ खुशी हुइ राणी कहे। मैभी आपके साथ तैयार ॥ यों. निश्चय कर दोनों जने। सुखे सुते निज मेहल मझार ॥ वज्र ॥ २९ ॥ राजा गये पीछे कुमर को। राजा बनने की भइ चहाय ॥ प्रधान सामंत को लोभ दे। सब किये आपने वश मांय ॥ वज्र ॥ ३० ॥ पिता राजा को मारने। आया दोनों सूते उसस्थान ॥ जेहरी धूंवा मेहल में किया। महा दावानल के समान ॥ वज्र ॥ ३१ ॥ राजा राणी के घ्राण में। किया विषारी धूंवा प्रवेश ॥ मृत्यु पाया तत्क्षणे। प्रेमला साथ नरेश ॥ वज्र ॥ ३२ ॥ यह रचना जाणी जगत् की। चेतो भव्य करो धर्म स्वीकार ॥ छट्टो भव पूर्ण भयो। ढाल नवमी अमोल उच्चार ॥ वज्र ॥ ३३ ॥ * ॥ दोहा ॥ वज्र जंघ और श्रीमती। शुभ भावे मृत्यु पाय ॥ उत्तम क्षेत्र उत्तर कुरु विषे। युगल पने उपनाय ॥ १ ॥ तीन पल्योपम आयुष्य है। तीन कोस की काय ॥ तीन दिने इच्छा आहारकी। सुखे २ उम्मर वीताय

॥ २ ॥ यों सप्तम भव पूर्ण कर । अष्टम भव के मांय ॥ सौधर्म स्वर्ग उभय
त । मित्र देवता थाय ॥ ३ ॥ आयुष्य कुछ कम तीन पल्य । इच्छित रूप बनाय ॥ देव
देवी आज्ञा में घणा । परस्पर प्रम सवाय ॥ ४ ॥ जिन दर्शन वाणी श्रवण । करे महा
विदह मझार ॥ अनुकरणीय नव में भव का । सुणो भव्य अधिकार ॥ १ ॥ * ॥ ढाल ॥
१० मी ॥ कपूर हाय अति उज्जलोरे ॥ ए० ॥जम्बुद्वीप महाविदेह विषे जी । क्षीति प्रतिष्ठ
नगर मझार ॥ 'ईशानचन्द्र' न्यायी नृपती जी । राणी कनकावती सुखकार ॥ धर्मात्म ।
दया भक्ति गुणधार ॥ टर ॥ १ ॥ 'सुनासिरी' नामे मन्त्रिवी जी । 'लक्ष्मी' नारी गुण
धन ॥ 'सागरदत्त' सार्थवाह रहे जी । 'अभयमति' प्रिया मोहन ॥ धर्म ॥ २ ॥
'धनाशेठ भी तहां वस जी । 'शीलवती' नारी सुखदाय ॥ 'सुविधि' नामे वैद्य भी
रहे जी । 'सुमित्रा' स्त्रीसहाय ॥ धर्मा ॥ ३ ॥ प्रथम स्वर्ग स चवी करी जी । ऋषभजय का
जीव । सुविध वैद्य घर अवतारा जी । नाम 'जीवानन्द' पुण्य अतीव ॥ धर्मा ॥ ४ ॥
उसही व ? उस नगर में जी । उक्त चारों स्थान पुत्र थाय ॥ राजा जी के कुवर तणा जी।
नाम 'महीधर' ठाय ॥ धर्मा ॥ ५ ॥ मन्त्रि पुत्र 'सुबुद्धि' भया जी । सार्थ वाह के
'पूर्णभद्र' ॥ 'शीलपुंज' पुत्र शेठ का जी । यह पांचोंही बधे ज्यों चन्द्र ॥ धर्मा ॥ ६ ॥
भव्य जोग पांचों जणाजी । परस्पर जमा मित्राचार ॥ शीशुक्रीडा करी सग में जी ।

पढे विद्या बने होंशार ॥ धर्म ॥ ७ ॥ 'इश्वरदत्त' शेठ तहां बसे जी । 'मतिश्री' नारी तस कुंख ॥ श्रीमति जीव अवतारा जी । नाम 'केशव कुमर' बधा सुख ॥ धर्म ॥ ८ ॥ वह भी आमिला पांचों विषे जी । जमा खुबही प्रेम ॥ क्षीणंतर चहावे नहीं जी । निरखी पावे सब खेम ॥ धर्म ॥ ९ ॥ एक समय छेही मित्र मिली जी । वनक्रीडा को जाय ॥ ग्राम बाहिर किसी तरू तले जी । ध्यानस्थ देखे मुनि राय ॥ धर्म ॥ १० ॥ तन तस देखी खेदाश्चर्यी बने जी । अहो २ धैर्यता अपार ॥ ऐसी महा वेदना विषे जी । रहे स्थिर समता धार ॥ धर्म ॥ ११ ॥ कृश वदन तप से भया जी । किसी अशुभ कर्म प्रयोग ॥ रक्त झरे कीटक कलबलेजी । क्रमी कुष्ट महारोग ॥ धर्म ॥ १२ ॥ महिंधर कुमार जीवानन्द से जी । कहे तुम कला निकाम ॥ चिकित्त्सा कर्म की दक्षता जी । प्राप्त की क्या बढाने नाम ॥ धर्म ॥ १३ ॥ किन्तु विवेकी पुरुष को जी । धन लोभी न बनना योग्य ॥ दया परोपकार नि स्वार्थमें जी । दीजिये वैद्य कला भोग ॥ धर्म ॥ १४ ॥ महातपो धन संयमी जी । महारोग कष्टसे पीडाय ॥ इनको साता उप जावते जी । सच्चा सार्थक विद्याका थाय ॥ धर्म ॥ १५ ॥ वैद्यराज कहे सच्ची कही जी । मैभी समझू अहो भाग्य ॥ औषधी तो मेरे पास है जी । किन्तु अनुपान मिले करे लाग ॥ धर्म ॥ १६ ॥ लक्षपाक तेल मेरे पास है जी । गौशिर्ष चदन रत्न कम्बल

सहाय ॥ यह योग आप ला दीजीये। तो करूं मै मुनि का उपाय ॥ धर्मो ॥ १७ ॥ पाँचों मित्र मिली करी जी। आये श्रेय पजार ॥ 'धनतन' वृद्ध वैपारी पेअीयावे दोनो वस्तु सिरदार ॥ धर्मो ॥ १८ ॥ शेठ कहे कीमत देरने जी -॥ लीजीये दोनो चीज ॥ सुह मेग दाम अपने लगे जी ॥ तब वृद्ध पूछ क्यों ! यह चीज ॥ धर्मो॥ १० ॥ ते कहे महार्षी कुष्टीयाजी। हम करे उनका उपचार ॥ देखी युवानों की धर्म भावना जी। वृद्ध भाश्चय पाया अपार ॥ धर्मो ॥ २० ॥ साधु की सेवा साधु करेजी। यह साधु का आधार ॥ तुम यह ले जावो वस्तु ओंजी। वे कैसे करेंगे स्वीकार ॥ धर्मो ॥ २१ ॥ अहो धन्य भाग्य है तुम तणाजी। साधु भक्ति का इतना प्रेम ॥ मै भी विभागी इस का बनू जी। ज्यों ,भंगे न मुनिवर नेम ॥ धर्मो ॥ २२ ॥ वृद्धावस्था म्हारीजी। लेसे लगाडु भवतार ॥ आकर मुनिवर क कने जी। कहे दो मुझ सयम भार ॥ धर्मो ॥ २३ ॥ अभिग्रह धारी मुनिवरा जी। उत्तर नहीं दिया तास ॥ तब तिण स्वय सयम लिया जी। वा ज्ञानी गुणी धर्मो व्यास ॥ धर्मो ॥ २४ ॥ ले उपकरण मुनिवर तणाजी। आया छे मित्र के सग ॥ निर्दोष औषधी पावि लेगया जी। छेही देख के हो गये दग ॥ धर्मो ॥ २५ ॥ जीवानन्द जिम दाम्बज्यो जी। तिम मालश किया ते तेल ॥ रमा रग रगे कीटक नीकले जी। तब ऊपर रक दी कम्बेल ॥ धर्मो ॥ २६ ॥ तेल उष्णाता जन्तु घाबरी जी। शीतल कम्बलमें

भराय ॥ धरिसे धावल उतारने जी । मृत्युक पशु ढिग आय ॥ धर्मा ॥ २७ ॥ कलेवर में कीटक झाटकीजी । जैसे वे मरन न पाय ॥ गोशीर्ष चंदन तन लेपीयो जी । शीतलता व्यापी तन माय ॥ धर्मा ॥ २८ ॥ चर्म के कमीतो नीसरेजी । फिर मांस के काढण काम ॥ द्वीतिय दिन तैसेही कियाजी । वेभी निकले तमाम ॥ धर्मा ॥ २९ ॥ तीसरे दिन हड्डी में रहे जी । त्यों ही दीये कीडे निकाल ॥ यत्ना की उक्त प्रकारसे जी ॥ साधु आरोग्य बन तत्काल ॥धर्मा॥ ३० ॥ धन्य साधु धन्य श्रावक को जी ॥ धन्य ऐसी भक्ति करनहार ॥ ढाल दशमी अमोलक कहे जी । विचक्षण मिले पले आचार ॥ धर्मा ॥ ३१ ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ अभिग्रह पूर्णज भया । गया वदन का रोग ॥ तब मुनेश्वर ध्यान पारीय॥ हर्षित चित्त गत शोग ॥ १ ॥ सम्पूर्ण अरोग्य हर्षित मुखी । देखी श्रीमुनिराय ॥ सातोंही वंदन करे । अहो भाग्य माने हर्षाय ॥ २ ॥ धन्य योगिश्वर आप को । ऐसी विपत्ती माय ॥ ध्यान मौन संयम तप । रहे निर्दोष निभाय ॥ ३ ॥ मुनिवर कहे भक्ति तुम तणी । परसंशानिय कहाय ॥ दोष न मुझ लगावी यो । सुखी करी यह काय ॥ ४ ॥ छही कहे धन्य बृद्ध मुनि । ज्ञान ज्ञायक आचार ॥ सेवा काज छत्ती ऋद्धि तजी । लीना संयम भार ॥ ५ ॥ वृद्धि ऋषि कहे उपकारीये । पहिले छही आप ॥ यों परस्पर पर संशते । पूछे मुनिश्वर से तदाप ॥ ६ ॥ इच्छे हम फरमाईयेआपका जीवन वृतन्त ॥ मुनिवर कहे भव्य

सांमला । करके मन तन शान्त ॥ ७ ॥ ❀ ॥ ढाल ११ मी ॥ धन्य चोवीसी जिनराज के । नित्य गुण गावणा ॥ ए० ॥ धन्य छेही मित्र मुनिराज । छेके जन्म लगावीया ॥ टेर ॥ पृथवीपुर पाते पृथवी पाल नृपाउनका था मै पुत्र, गुणकार नाम पावीया॥धन्य॥१॥ सद्गुरु योघे वैराग्य प्रगटा । से ईना सयम धार । जग भोग छिटकावीया ॥धन्य॥२॥ ज्ञानाभ्यास करं । करता तपश्चर्या । निश्चयमें तो कोइ कर्म । उदय मुझ आविया ॥ धन्य ॥ ३ ॥ कर्मो व्यवहारे आपथ्य आहार से । होकर रुधिर विकार । रोग प्रगटाविया ॥ धन्य ॥४॥ कर्मो भिमुख भया कर्म प्रगटिये । आना मै, इसप्रकार । न जरा घबराविया॥धन्या॥५॥ कर्म खपाने कर्जा चुकाने । तनकी ममत्व कर दूर । मन ज्ञान में रमाविया ॥ धन्या॥६॥ वेदना विकाधिक होन लगी जब । फिरता जन पद देश । इधर मै आविया ॥ धन्य ॥ ७ ॥ खिलाते पिलाते, समाल सार करत । वगा देता देखा तन । मोह को मैने हटाविया ॥धन्य॥८॥ जहां लग रोग यह, नाश नहीं पावे । तहां लग नहीं पारू ध्यान, अभिग्रह यह ठाविया ॥ धन्य ॥ ९ ॥ शयनासने ध्यान, धरा इसस्थान में । आशा जीने की छोड, सिद्धपद मै चहाविया ॥ धन्य ॥ १० ॥ अचचिन्त आना, होगया तुम्हारा । कीना यह उपचार, रोग को गमाविया ॥ धन्य ॥ ११ ॥ निश्चय में खपे, वेदनिय कर्म तुम । व्यव

हारमें तुम सहाय, साता तो मै पाविया॥ धन्य ॥ १२ ॥धन्य वृद्ध मुनि, रक्षा संयम मुझ-
धन्य तुम सबी के तांय, ' करूणा घट लाविया ॥ धन्य ॥ १३ ॥ तुमारे संयोगे, वृद्धने ली
दाक्षा । अब कृतव्य तुमारा काय । सोभी समझाविया ॥ धन्य ॥ १४ ॥ लेइ दीक्षा,
शिक्षा ज्ञान तप की । कीजे इनो की सेव, निज हित जो चहाविया ॥ धन्य ॥ १५ ॥
तारो निजात्म, सुधारो जन्म यह । इत्यादि सद्बोध । मुनिश्वर फरमाविया ॥ धन्य ॥
॥ १६ ॥ प्रति बोधित भये । छेही पुण्यात्म । आये निज २ घर चाल ॥
कुटुम्ब को मनाविया ॥ धन्य ॥ १७ ॥ उत्सव पूर्वक, लीनो दीक्षा । मुखपर मुहपत्ती
बाध । साधु लिंग सोभाविया ॥ धन्य ॥ १८ ॥ एकादश अंग, सातो ही पढांगे ।
समझे आचार गोचार, मन तन को जमाविया ॥ धन्य ॥ १९ ॥ तप जप करणी, दुष्कर
करते । गुरूका विनय वैया वृत्य । साता उपजाविया ॥ धन्य ॥ २० ॥ वृद्ध मुनिश्वर, केवल
पाया । स्वल्प काले कर्म खपाय । मोक्ष सिधाविया ॥ धन्य ॥ २१ ॥ नन्तर छेही मुनि,
विचरे भुमंडमें । श्री जिनराज का मार्ग । खूब दीपाविया ॥ धन्य ॥ २२ ॥ अन्तिम समय
छही, कारिया संथारा । शल्लेषणा शुभयोग । समाधी लगाविया ॥ धन्य ॥ २३ ॥ यह
नवमां भव, बोध गम्य भाव । सुणी श्रद्धी करे अनुकरण, सोही सुख पाविया ॥ धन्य ॥
२४ ॥ ढाल एकदश, ऋषभ चरित्र की । अमोलक अणगार, हित चित्त से गाविया ॥

धन्य ॥ २५ ॥ ॥ दोहा ॥ ऊर्द्ध लोक कल्पोत्तपन । स्वर्ग द्वादश क माय ॥ अच्युत नाम सुरेन्द्र है । सब इन्द्रोंमें अधिकाय ॥ १ ॥ छेहों मित्र मुनि तन तजी । पारम स्वर्ग मझार ॥ सामानिक सुर इन्द्रके । भये सम ऋद्धि धार ॥ २ ॥ बाईस सागरोपम आयु है । बाईस पक्ष श्वासोश्वास ॥ बाईस सहस्र वर्षे बीतीये । आहार इच्छा होवे तास ॥ ३ ॥ तत्काल आकर प्रणमें । शुभ पुद्गल रोमसे आहार ॥ उत्कृष्ट शक्ति वैक्रयी । पुद्गलों सुख भेघकार ॥ ४ ॥ विदेह क्षेत्र जिनन्द्रकी । करे सेवा सुने वखान ॥ यह तो भव दशमों कहा । अब एकादशम बयान ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल १२ मी ॥ धनरारे लोभी वाणी या ॥ ए० ॥ जम्बुद्वीप पूर्व विदेह । पुष्कलावती विजय मांही जी ॥ 'पुण्डरिकगिणी' नगरी भेय । स्वर्ग पुरीसी सोभाइजी ॥ १ ॥ प्रणमु जिनवर वज्र सेनजी ॥ टेर ॥ 'वज्रसेन नामे राजवी । तीन ज्ञान के धारीजी । द्रव्य तीर्थंकर पदविपे । रहे राज सुभ्मे पालीजी ॥ प्रणमु ॥२॥ राणी 'धारणी' गुण नीलो । भोगवते सुख भोगोजी । क्रमस पुत्र पंच उप्पने सुणो नाम पुण्य जोगो जी ॥ प्र ॥ ३ ॥ प्रथम जीवानन्द वैद्यका । जीव गर्भ में आया जी ॥ उत्तमोत्तम स्वप्न चउदश । झांका वे पुण्य वधाया जी ॥ प्र ॥ ४ ॥ जन्मो स्सब कर अर्पियो । 'वज्रनाभ' शुभ नामो जी ॥ फिर महिपर जीव उत्पन्न भया । 'बाहु' नाम रखा श्यामोजी ॥ प्र ॥ ५ ॥ सुबुद्धि जीव जन्मा तीसरा । 'सुबाहु' नाम

जी ॥ प्र ॥ ६ ॥ 'पीठ'-
कहाया जी ॥ पूर्णभद्र शीलपुंज भी । जीव क्रम से जन्म पाया जी ॥ प्र ॥ ६ ॥ 'पीठ'-
महापीठ' नाम दे । पांचों सहोदर सोभावे जी॥छट्ठा जीव केशव तणा। सो अन्य राजा घर
जन्म पावेजी॥प्र॥७॥ सुयश नाम उसका हुआ।वज्रनाभ से मैत्री जोडाईजी॥छेइ सदैव संग
में रहे, विविध क्रीडा क्रीडाइ जी॥प्र॥८॥ सर्व कला स्वल्प काल में । पढ कर भये प्रवीनो
जी ॥ साक्षी भूत कलाचार्य थे ।पूर्व प्रयासे ज्ञान लीनो जी ॥ ९ ॥ता समय देव लोकांतिक
।वज्रसेन नृपको चेतावे जी ॥ धर्म तीर्थ प्रवृतावियें ।सावध नृप तव थावेजी॥प्र॥१०॥वज्रना-
भ को राज दे । वर्षी दान को देइजी ॥ महोत्सव युत दीक्षा ग्रही । मनःपर्यव ज्ञान लेइ जी
॥ प्र ॥ ११ ॥ एक मास छद्मस्त रही । घानघातिक कर्म खपाये जी ॥ केवल ज्ञान प्रगट
भया । द्वादशांग फरमाये जी ॥ प्र ॥ १२ ॥ तीर्थ चार स्थापना किये। तीर्थंकर भगवानो
जी ॥ भूमंडलमें विचरते। प्रचारक पथ निर्वानो जी ॥ प्र ॥ १३ ॥ वज्रनाभ चारों भ्रात को ।
देशा धिप बनाये जी ॥ लोक पाल से इन्द्र ज्यों । वज्रनाभ भी सोभाये जी ॥ प्र ॥ १४ ॥
सुयश को मंत्री किया । यों षट जीव प्रेमापारो जी ॥ पुण्य प्रगटे वज्रनाभ के । आयुध-
शाला में तेवारो जी ॥ प्र ॥ १५ ॥ चक्र रत्न प्रगट भया । षट खण्ड विजय के साधे जी ॥
चैादे रत्न नव निधि पति । सोले सहस्र देव आराधे जी ॥ प्र ॥ १६ ॥ कालान्तर में पधा
रीये । वज्रसेन जिनराया जी ॥ वाग के माहें विराजीए । द्वादश परिषद सोभाया जी
॥ प्र ॥ १७ ॥ महामण्ड ने वज्रनाभ जी । प्रभु वंदन को आवे जी ॥ स्वाति नक्षत्र के मेघ-

रूपा। जिन धोषामृत वर्षावे जी ॥ प्र ॥ १८ ॥ इस अपार अगोध्वी से। तारक संयम जानो जी ॥ लेकर मोक्ष प्राप्त करे। ताको जन्म पायो प्रेमानो जी ॥ प्र ॥ १९ ॥ विभूति ऐसी पिता तणी। चक्रवर्ती को वैराग्य आया जी ॥ इस ऋद्धि के मुकपले। मुझ ऋद्धि तुच्छ देखाया जी ॥ प्रणमु ॥ २० ॥ यह प्रत्यक्ष विभूती धर्मकी। निश्चय, कल्याण कारीजी ॥ मैभी दीक्षा अगो करू। हो जाबू भवोदधि पारीजी ॥ प्र ॥ २१ ॥ वशमा नन्तर कुठक। अर्ज करे शिरनाई जी ॥ आप जैसे के सम्बध में। होना चाहाबू आप साईजी ॥ प्र ॥ २२ ॥ स्वस्थान आ पुत्रका। राज साशन समलाय जी ॥ विचार जणाया मात को। ते भी सयमे उमगाया जी ॥ प्र ॥ २३ ॥ महोत्सव कर छही तथा ॥ ली दीक्षा शिक्षा स्वीकारी जी ॥ वज्रनाभ जी मुनिवरा। धने द्वादशाग धारी जी ॥ प्र ॥ २४ ॥ पाँचों मुनी अङ्ग एकादश। पढकर भव पार गामी जी ॥ तीर्थकर की सेवा में। रही तप तप धेरी स्वामी जी ॥ प्र ॥ २५ ॥ श्री अरिहंत वज्रसेन जी। अघाति कर्म खपाइ जी ॥ सिद्ध बुद्ध पारगत भये। सादि अनंत रहाइ जी॥प्र॥२६॥ तिकाण तारीयाण जिनवरा। गुण गण अपरम्परा जी ॥ दास द्वादशामी एदृ। ऋषि करे नमस्कारा जी ॥ प्र ॥ २७ ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ चउ सघ इन्द्रादि मिली। वज्रनाभ ऋषि तांय ॥ जिनजी का पाट अर्पन किया। जिन साशन के न्याय ॥ १ ॥ ज्ञानादि गुणगण निधी। जिन साशन शृगार ॥ सर्व साधु सग परिवरे। करे जनपद में विहार ॥ २ ॥

प्रभाविक दे देशना। तारे वहूत नर नार ॥ तप निरंत्र समाचरे। सूत्रोक्त बीर प्रकार ॥ ३ ॥ फल प्राप्त इच्छा विना। क्षमा विनय गुण युत। तप प्रभावे आठाइस ही। लब्धि भई प्रसूत ॥ ४ ॥ जानी किन्तु फोडे नहीं। गुप्त रखी गुण स्वप्प ॥ तातें गुण व्यय न हुए। रहे आतम सदा दिप्प ॥ ५ ॥ * ॥ ढाल १३ मी ॥ उग्रसेन की लली ॥ ए० ॥ वज्र नाम मुनिराय। शुद्ध करणी कर गौत्र तीर्थंकर उपाय ॥ टेर ॥ श्री अरिहंत श्री सिद्ध भगवंत। प्रवचन आचॅर्य के गुण गावंत ॥ वज्र ॥ १ ॥ स्थविर वहूसूत्री साधु। तपस्वी महाराज ॥ गुण वर्णन करते लीन बने उसमाज ॥ वज्र ॥ २ ॥ सूत्र ज्ञान परावृते। शुद्ध उपयोग ॥ सम्यक्त्व निर्मल पाले। निश्चल त्रिजोग ॥ वज्र ॥ ३ ॥ वयोवृद्ध गुणोवृद्ध जन का निरापक्ष। विनय भक्ति करे। हो के जेह दक्ष ॥ वज्र ॥४॥ पांचों प्रतिक्रमण करे। अर्थात्मक रमाय ॥ सीलादिक व्रत में नहीं दोष लगाय ॥ वज्र ॥ ५ ॥ देवादिके उपसर्ग। धरे समाधी भाव ॥ मानपमान सम। क्षमा भाव ठाव ॥ वज्र ॥ ६ ॥ विचित्र प्रकार तप। करे फल नहीं चहाय ॥ निस्वार्थ बुद्धी खृय दान दिराय ॥ वज्र ॥ ७ ॥ गुरू ग्लानी रोगी तजस्वी। नवी दीक्षित साध ॥ अग्लाने वैयावॅच करे। हरे दुःख व्याध ॥ वज्र ॥ ८ ॥ शॅम सम्वेग रमै वैराग्य में मन। अभिनव ज्ञान नित्यकरे, समाचारन ॥ वज्र ॥ ९ ॥ सूत्र की भक्ति, करे ज्ञान प्रसार ॥ दीपावे श्री जैन धर्म। करे प्रचार ॥ वज्र ॥ १० ॥ इन वीस कामों की। करत अराधन ॥

तर्थिकर गोत्र बन्धे । पके रसायन ॥ धन ॥ ११ ॥ धन्ननाम ऋषिवरा । पीसही स्थान ॥
उत्कृष्ट रसोदय भया प्रणमान ॥ ध० ॥ १२ ॥ जिन नाम कर्म जब हुआ उपार्जन ।
भविष्य के तीजे भवे । होय भई भगवन ॥ धन ॥ १३ ॥ याहू मुनिराज
एक गसामी तपी साध ॥ पांच सो की सेवा सदा करे । निरा बाधा॥धन॥१४॥आहार औषध
पथ्य, जे जे से चहाय ॥ गवेषन करीने देवे, निर्दोष लाय ॥ ध ॥ १५ ॥ साता उपजावी
पुण्य वृद्धि पाय ॥ बाहुबली पद्मी उपार्जी तासु पसाय ॥ ध० ॥ १६ ॥ सु याहू मुनिवर
की ठकू कारणि सत । वैयावच निरन्न, तहामने करत ॥ ध० ॥ १७ ॥ प्रतिलेखन
प्रमार्जन परिठावण काम ॥ पांच सो साधु की करे चहते प्रणाम ॥ध०॥ १८ ॥ महायत्नवंत
होने के उपार्जे सुकर्म ॥ वैयावृत करणी से पुण्य वृद्धि मर्म ॥ ध ॥ १९ ॥ पीठ और
महापीठ दोनो मुनिराय ॥ ज्ञान ध्यान मांही मग्न आतम रमाय ॥ ध० ॥ २० ॥ वाँचन
पृच्छन परिपट्टन अनुप्रेक्षा ॥ भली विधी ज्ञानगुण काल मांसे वेय ॥ ध० ॥ २१ ॥ यातु
सुपात्र मुनि का सब साधु गुण गाय ॥ प्यारा लागे सब के तांई साता जे उपजाय ॥ध०॥
॥ २२ ॥ सुन के यश उनका पीठ महापीठ सत । ईर्षा भाव धरे निज गुण वहत ॥ ध० ॥
॥ २३ ॥ मत्सरभाव माया सघन पसाय । स्त्री वेद उपार्जो दोनो मुनिराय ॥ ध० ॥
॥ २४ ॥ चउदा लाख पूर्व लग संयम पाल ॥ आयु अन्त अनशन किया उजमाल ॥ ध० ॥

॥ २५ ॥ शुद्ध उत्कृष्ट संयम समाधि मरण । प्रतापे सर्वार्थसिद्ध में भये उत्पन्न ॥ व० ॥
॥ २६ ॥ तेंतीस सागरोपम आयु । सुख अनुत्तर ॥ तेंतीससहस्र वर्षे अहार इच्छे तेह सुर
॥ वज्र ॥ २७ ॥ तत्काल रोमसे शुभ पुद्गल प्रणमाय ॥ तेंतीस पक्षमें, श्वासोश्वास आय ॥
वज्र ॥ २८ ॥ चौदा पूर्वादिक ज्ञान चिन्तवन मांय ॥ तल्लीन बने सुख काल क्रमाय ॥ वज्र ॥
॥ २९ ॥ दोसो छप्पन्न मोती थोंका चन्द्रवा सिरपर । सबी मोक्ष जावे एक भव लेकर
॥ वज्र ॥ ३० ॥ छही जीव रहते तहां आणन्द माय । प्रथम खण्ड ढाल तेरे अमोलक गाय
॥ वज्र ॥ ३१ ॥ * ॥ प्रथम खण्डोप संहार–हरी गीत छन्द ॥ धन्नासार्थ वाही सम्यक्त्वी
। उत्तर कुरू में युगल थये । सौधर्म स्वर्ग महाबल कुमर । ईशानस्वर्गे सुरभये ॥ वज्र·
जंघ उत्तर कुरू युगल । सौधर्म स्वर्ग भव अष्टमें ॥ जीवान्द वैद्य द्वादश स्वर्ग वज्रनाभ
सर्वार्थसिद्ध रमे ॥ १ ॥ यों द्वादश भवका वर्णन । विविध बोध पूरित कहा ॥ प्रथम
खण्ड त्रयोदश ढाले । ऋषभ चारित्र सोभित रहा ॥ आगे श्रीऋषभ देवजी का । कथन
भव्य सुणीजीये ॥ जिनेन्द्र गुण वरणत अमोलक । हिरी श्री सुख लीजिये ॥ २ ॥

शास्त्रोद्धारक बाल ब्रह्मचारी श्री अमोलक ऋषि जी महाराज प्रणित
श्रीऋषभदेव भगवान चारित्रस्य प्रथम खण्ड समाप्तम्

द्वितीय खण्ड-कर्म भूमि प्रचार

दोहा ॥ सिद्ध साधु भगवन्त को। विशुद्ध योग नमस्कार ॥ ऋषभदेव चरित्र का। रचुं द्वितीय अधिकार ॥ १ ॥ वर्तमान सर्पिणी विषे। तीसर आरे मांय ॥ ऋषभदेव स्वामी भये। ताते आरे वर्णाय ॥ २ ॥ चार कोडाकोड सागर का। प्रथम आरा होय ॥ सुखमा सुखमी नाम तस। सुखीही सुखी रहे सोय ॥ ३ ॥ तीन सागरे कोडाकोड। दूसरा आरा जान ॥ सुखमी नाम उसका कहा। प्राणी रहे सुख स्थान ॥ ४ ॥ दो कोडाकोड सागरो पमे। तृतीय आरा थाय ॥ सुखमा दुःख मी नाम है। सुख बहु दुःख अल्पाय ॥ ५ ॥ पेंतालीस हजार वर्ष कम। सागर एक कोडाकोड ॥ आरा चौथा दुखमा सुखमी। दुःख घणा सुखी रहे थोड ॥ ६ ॥ एकवीस सहस्र वर्ष का। पंचम आरा वरताय। दुखमी नाम जिनवर कहा। दुःखी जीव तामें रहाय ॥ ७ ॥ दुखमा दुःखमी नाम है। छट्टे आरे महा दुःख। सहस्र इक्वीसही वर्ष का। वरणा श्रीजिनमुख ॥ ८ ॥ इनकाढाळ आगे सुणो। सूत्रोक्त सविस्तार ॥ तीसरे आरे अन्त में। श्रीऋषभ अवतार॥ ९ ॥ ढाळ १ ली ॥

सुखमा सुखम प्रथम आरा मझार । मृदंग तला सम

गर्भ ।चिन्तामणि की देशी में। सुखमा सुखम प्रथम आरा मझार । मृदंग तला सम पृथवी आकार। मणि रत्न तृण से सोभंती ॥ अनेक वृक्ष गुल्म वल्ली छाँय। पत्र पुष्प फल बहू रगमाय। मनुष्य पक्षी पशु लोभती ॥ सब ऋतु के सदा आवे फल फूल । तृण कुश रहित स्वच्छ तस मूल। खग मञ्जुल गायन करे ॥ वावी पुष्करणी कुंड जला गार। स्वभाविक जगत् बडाही मनोहार ॥ थे रचना सुणो छे आरा तणी ॥ टेर ॥ १ ॥

'मतंग' कल्पवृक्ष मद्यसरस देय। 'भिंग[2]' वृक्ष से विविध भाजन लेय। 'तुडियंग[3]' रागणी सुणावता ॥ 'जोई[4]' वृक्ष सूर्यसा करे प्रकाश। 'दीप' वृक्ष करे दीपक सा उजास। 'चितंग[6]' पुष्प हार बकसावता ॥ 'चित्तरसा' मनोज्ञ भोजन कराय। 'मणियंग' रत्न भूषण पहनाय। 'गिहंगार' घर बेचाली भोमीया ॥ 'अनियगीण[10]' इच्छित वस्त्र देय। ए दश कल्पवृक्ष सब इच्छा पूरेय॥ थे ॥ २ ॥

स्त्री पुरुष होवे अतिमनोहार। प्रमाणु पेत दिव्य अंग धार। लक्षण व्यंजन सबही भले ॥ दोसो छपान[256] पृष्ट[3] करंड। तीन गाऊ उर्द्ध वपु[3] रुप्य प्रचंड। सोभित रोम नख निर्मले ॥ सुगंधी तस श्वासोश्वास। चारों कषाय पतली है जास। मृदु कौमल भद्रिक विनय वंता॥ अल्प इच्छा भोगे इच्छित भोग अखण्डित जोड रहे सदा अरोग ॥ थे ॥ ३ ॥

मिश्री मोदक सा पृथ्वी का स्वाद। पुष्प फल भी भोगे रहे अहलाद। चक्रवर्ती की रसवती से श्रेय ॥ तीन दिन में इच्छा आहार

की होय। पृथवी फल फूल भोगवे सोय। प्रणमें सुख आनन्द वेय ॥ वृक्षाश्रय वासी सब नरनार। प्रथम सघपन प्रथम सस्थान घार ॥ वुःख दाता वस्तु तहां नहीं। तीन पल्योपम की स्थिति तास। न कोइ विद्याकला अभ्यास ॥ चे ॥ ४ ॥ आयुष्य के कुणाधिक षवरे मास। रहे तब करे भोग विलास। ऋतु काल तबही निरग में ॥ गर्भवती तब युगलणी थाय। सघानवमासे युगल प्रसुताय। छे मास आयु रहे ता समे ॥ पुत्र पुत्री दोनों के तांय। गुनपचास दिन पालन कराय। नन्तर दोनों स्वेच्छा ए रमे ॥ एक को ऊबासी एक को छींक। दोनो का आयु अन्त होवे ठीक ॥ चे ॥ ॥ ५ ॥ सबही मरकर स्वर्ग में जाय। नर भव जितना आयु तहां पाय। अथवा कुछ कमती रहे ॥ क्षेत्र के अधिष्ठाता देव। निहारण तन का करे तत्खेव। प्रथम आरे के न्यावज कहे ॥ यों चार क्रोडा क्रोड सागर जाय। प्रति समय आयु अवघेणा कम थाय वर्णादि सब्बा अनन्ती घटे ॥ आरे अन्त में दोपल्य आयु देय। अवघेणा दो गाऊ की देय ॥ चे ॥ ६ ॥ फिर दुजा सुखम आरा प्रगटाय। उसकी सब रचना प्रथम आरे साय। विशेष सो आगे कहें ॥ दोपल्य आयु अवघेणा गाऊ दोय। एकसो अठाविसे पांसुली होय। दो दिन बाद आहारज लहे ॥ चौसँठ दिन पाले बचे के साय। तीन क्रोडा क्रोड सागर यों बीताय। समय सभी घटता थका ॥ अन्ते आयु एक पल्य एक गाऊ

काय । दूसरा आरा पूर्ण यों थाय ॥ थे ॥ ७ ॥ फिर प्रगट होय तीसरा आर । उसकी भी
रचना इसही प्रकार । तीन भाग मे के दो भाग में ॥ एक गाऊ तन एक पल्प आय ।
चौसंठ पांसुली करंड रहाय । एक दिनान्तर आहारज गमे । गुन्नयासी दिन बालक को
पाल । युग्म स्वर्ग जावे उसकाल । पश्चात तृतिय हिस्से विषे ॥ चौदे छ कांक * तृतिय दो
भाग । एक रहे जिसका वर्णन आग ॥ थे ॥ ८ ॥ छे संघयन छे संस्थानी नरनार ।
सो धनुष्य उर्द्ध देहाकर । असंख्यात वर्ष स्थिति कही ॥ चारों गतिमें मर कर
जाय । कितनेक तो सिद्धगति भी पाय । वृतान्त आगे सुणो तेही ॥ पल्य के अष्टभाग
आयु रेय । तब पन्दरे कुल करों उपजेय । मर्यादा उत्पन्न करे । जम्बुद्वीप प्रजापत भे
अधिकार । उसहीसे कह देतांहू सार ॥ थे ॥ ९ ॥ सुमति प्रतिश्रुति सीमंकर सीमंधर ।
खेमंकर खेमंधर विमलवाहन सर । चक्षुवत यशःवंत अभिचंन्दजी ॥ चन्द्राभ प्रसेनजित
मरुदेव जान ॥ नाभीराय ऋषभदेव बखान । नीति स्थापे यह राजिन्द जी ॥ काल
प्रभाव रस कस मन्द थाय । कल्पवृक्ष से वरतु कम प्रगटाय । तब ते युगल झगडण
लगे ॥ तेहने उक्त कुलकर समझाय । तेज प्रताप से देवे दबाय ॥ थे ॥ १० ॥ प्रथम पांच
कुल कर के वार । दंड नीति वरते हकार । लडते को है कहता डर भगे ॥ मध्यके पंचोका

* ६६६६६६६६६६६६६६६ इतने सागरोपम तीसरे आरे के रह ते है तब कुलकर उत्पन्न होते है.

दस मकार। मत कहते मिट जावे तकरार। विनीत हो आज्ञा पथ लगे ॥ तृतिय दस
धिक्कार। चिन्ह कहत समझ जावे नर नार। पन्दरवे कुलकर तीर्थंकर भये। रोक रखनेका दस अन्तिम कुलकर। अग छेदन दस स्थाप तस पुतर ॥ ये ॥ ११ ॥ चोथा आरा दुःखमा सुखम माय। छेही संघयण छेही संस्थान रहाय ॥ पाँचों गति ये नर मर जात है ॥ अन्तर मुहूर्त आयुष्य जघन्य। क्रोड पूर्व का उत्कृष्ट मन। पांच सो धनुष्य तन रहात है ॥ बत्तीस होत हैं पृष्ठ करंड। सदैव आहार स पोषे बदन। सुख थोडा दुःख बहु पात है ॥ उतरते आरे सात हाथ तन। झाझेरा सो वर्ष का आयुष्य सुन ॥ ये ॥ १२ ॥दुःखमा पञ्चम आरा इस वार। सो वर्ष कुछ अधिक आयुष्य धार। सात हाथ काया गह ॥ सोला पांसुली दो वक्त करे आहार। उत्तर ते चार आठ पांसुली धार। अवगहणा एक हाथज लहे ॥ वीस वर्ष का आयुष्य जान। चार गति बन्ध पद निशान। इक्कीस हजार वर्ष निर्गमें ॥ छोटे बडे सब दुःखी नर नार। फक्त एक है धर्मका आधार ॥ ये ॥ १३ ॥ छट्ठा आरा दुःखमा दुःखमी होय ॥ भयकर दुःख मय समय सोय। अवघहणा एक हाथ की ॥ आयुष्य तो भोगवे वर्ष वीस। पांसूली आठ होवे घणी रीस। उतर त आरे जग नाथ की ॥ सोला वर्ष आयु। पोण हाथ सरीर। चार पांसूली बिलवासी नर अधीर। नरक तिर्यंच गति सचरे ॥ यह संक्षिप्त छे आरे का बयान। वरणवा यहां सम्बन्ध प्रमान

॥ थे ॥ १४ ॥ यहतो वर्णवा असपर्णवी काल । ऐसाही जाणा उत्सर्पिणी का हाल । किन्तु उलट वखाणिये । पहला आरा छट्टा आरा सा होय । दूसारा पांचम सरीखा जोय ॥ यों छेही आरे जाणिये ॥ दशकोडा कोड सागर सर्पणी एय । दशं कोड कोड उत्सर्पणी तेम ॥ वीस कोडाकोड काल चक्र है ॥ अब आगे सुणो ऋषभ स्वामि वृतन्त । ढाल पहली खण्ड दूजे असोल भणंत ॥ थे ॥ १५ ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ तीसरे आरेके जवी । पूर्व त्रियासी लाख ॥ नवांसी पक्ष बाकी रहे । उस अवसर सूत्र साख ॥ १ ॥ अषाढ मास कृष्ण पक्ष की । तिथी चौदश के दिन । उत्तराषाढा नक्षत्रमें । चन्द्र योग अखिन ॥ २ ॥ नाभी नाम कुलकर तणी । प्रिया मरुदेवी सोह ॥ ऋतु कान्त संयोग नना । उदय भया जब मोह ॥ ३ ॥ तब यान सर्वार्थ सिद्धमे । वज्रनाभ का जीव ॥ तेंतीस सागर आयु पूर्ण कर । भोगव सुख अतीव ॥ ४ ॥ चव कर के आ उपने । मरुदेवी उदर स्थान ॥ मान सरोवर गंगटे । उतरे हंस ज्यों आन ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल २ री ॥ आछा लालकी देशी ॥ मरुदेवी जी सुख भांय।सूती कल्प वृक्ष की छांया।श्रीजिनराय ।उदर में प्रभु जब आवीयाजी॥ प्रकाशा तीनों लोक।सब जीव पाये सुख थोक । श्रीजिना दुःख दोहग दूर नशावीया जी॥१॥ मरुदेवी माताजी तांय ।स्वप्न चउदा प्रगटाय॥श्री॥उत्तम में उत्तम अतिजी॥प्रथम स्वप्न वृषभ जोए। अति उज्वल पुष्ट स्कन्ध सोहय।श्री ।सुन्दराकार उत्तम गति जी ॥२॥ दूसरेमे हाथी

जाण । ध्वज उत्तम पवन समान । श्री । चउदनो मद भरतो हयो जोगीसरे केशरी सिंह । गजवस्या सूर अविद ॥ श्री ॥ लघुल उद्धारे पिस नग शुभा जी ॥ ३ ॥ चोथ दसी लक्ष्मी दृष्य । कमल वासनी दित अभिशेष । श्री । दीनार हार रूप सिरी जी ॥ पचन फूल की माल । पचरग कुसुम सोरम विशाल । श्री । पग पद गुज रह फिरी जी ॥ ४ ॥ छट्ठे देख्या चन्द्र । पूर्ण कला तेज अमन्द । श्री । दशों दिशा प्रकाशता जी ॥ सातमें रवी झल कार । नशाता निशी अन्धकार । श्री । सहस्र किरण कर दीपता जी ॥५॥ आठ में ध्वजा लह काय । पताका फरफरी फराय । श्री । रत्न अडित सुवर्ण दण्डी जी ॥ नव में कुम कलश । जल पूर्ण कमल सरस । श्री । प्रकाशे रत्न के मध्य थी जी ॥ ६ ॥ दशमें पद्म सरोवर । नीर पूरित कमल भ्रमर । श्री । मच्छ कच्छ कलाला करे जी ॥ ग्यारमें क्षीर समुद्र । भरा दुग्ध सम जल कर । श्री । कमलादि सोभा सिरे जी ॥ ७ ॥ बारमें देव विमान । सुवर्णी युत असमान । श्री । तेजस्वी घुघरू झणकार तो जी ॥ तेर में रत्नों की राश । विविध विविध मणि प्रकाश । श्री । उत्तम तेज प्रसार तो जी ॥ ८ ॥ चौद में अग्नि की झाल । निधुम दिस असराल । श्री । फुलिंग उठे प्रति झाला चढे जी ॥ प्रत्येक स्वप्न के बीच । जायत होती आँखों रेती मीच । श्री । यों चौदे ही स्वपना पडे जी ॥ ९ ॥ तत्काल पेगो राय । हर्ष से हृदय उल्लसाये । श्री । स्वप्न सभी फिर समेरे जी ॥ नामी

पति को चेताय । वे भी सुन अति हर्षाय ।श्री। कह कुलकर बडा अवतारे जी ॥१०॥ सुनी खुशी मरु देवी थाय । उसही समय के माय ।श्री । शक्रेन्द्र आसन चलित थया जी ॥ देखा अवधि ज्ञान । जम्बुद्वीप भर्त स्थान । श्री । प्रथम तीर्थंकर उत्पन्न थयाजी ॥ ११ ॥ मरुदेवी को स्वप्न आय । अर्थ दर्शक कोइ नाय । श्री । अकर्म वर्त वर्ती रह्या जी ॥ मैं जा नाभी कुलकर पास । अर्थ करू प्रकाश । श्री । जाने धर्म चक्री होसी हर्ष्यो हियो जी ॥ १२ ॥ सागर अठारा कोडाकोड । पडा अन्तर अनि प्रोड । श्री । आय भरत मे धर्म प्रसार सी जी ॥ आये इन्द्र वन के माय । नाभी मरूदेवी के तांय ॥श्री॥ प्रणमी कहे सुनो स्वप्न सार सी जी ॥ १३ ॥ सब स्वप्न बहूतर प्रकार । तीस उत्तम उस के मझार । श्री । चौदा तो अति उत्तम कहे जी ॥ खुल्ले जिनेश्वर माता जोय । मन्द देखे चक्रवर्ती होय । श्री । सात देख वासुदेव लहे जी ॥१४॥ चार देखे बलदेव माय । एके मांडलिक तथा साधु थाय ॥ श्री ॥ मरूदेवी जी चौदा देखिया जी ॥ होवें गे पुत्र समर्थ । जुदा २ लेहना अर्थ ॥ श्री ॥ सुणिये पुण्य विशेषिये जी ॥ १५ ॥ धर्म धुरा के वहनार । मोह पंक फसे को उद्धार । श्री । वृषभ स्वप्न फल ए लहे जी ॥ लक्षण श्रेष्ट यही रहाय । नाम भी यही प्रगटाय । श्री । प्रथम जिनराज धर्माध्यक्ष कहेजी ॥ १६ ॥ गज चतुरंग दले श्रेष्ट । चारों सधर्मे तुम पुत्र जेष्ट । श्री । गंध हस्ती ज्यों पाषंड भगायगाजी ॥ सिंह सम सूर वीर । वन चर मिथ्या-

स्त्री न धरे धीर । श्री । निज स्थापक मग जन लगायगाजी ॥ १७ ॥ लक्ष्मी से त्रिलोक सिरदार । भव्या के मन हर नार । श्री । ज्ञानादि श्री दाता आणीयेजी ॥ पुष्प माळ ज्यों रूप गुण सामाय । तस आणा कठ मस्तक जन ठाय । श्री । भव्य भ्रमर अकर्षाय आणियेजी ॥ १८ ॥ चन्द्र ज्यों निर्मल श्रियोग । सर्वीको लगेंगे मन्योग । श्री । भव्य गण कुमुद प्रकाशसेजी ॥ सूर्य ज्यों जगमें उद्योत । मिथ्या अन्धकार को खोत । श्री । पापकी ऊल्लूक छिपायस जी ॥१९॥ ध्वजा ज्यों धर्म ध्वज फरोय । मोक्ष द्वीप थान चिन्ह बताय । श्री । धर्मालय शिखरे राजताजी ॥ कुंभ ज्यों सर्व गुण पूर । अतिशय युत दिस नूर । श्री । मुक्ति धनीता सिर छाजता जी ॥ २० ॥ पद्मसर ज्यों शीलादि गुण । जग सरम कमल निपुण ॥ श्री ॥ पाप ताप हरा शांति कराजी ॥ क्षीरसागर सम गम्भीर ॥ सप गुणे उज्वल नीर । श्री ॥ तरग ज्यों धर्म को प्रसारा जी ॥२१॥ देवें विमाने विमानिक देवी देव॥ धारा ही करेंगे सेव ॥ श्री ॥ वृषभी पोष गरणायगाजी ॥ रत्न रासी त्रिरत्न गुण वग ॥ ज्ञान क्रिया युत मुक्ति मग ॥ श्री ॥ द्वादशाग विचित्रता समायगा जी ॥२२॥ निर्धूम अग्नि ज्यों केवल धार ॥ अज्ञान तम हर नार । श्री । भवस्थिति भव्य की पकाय गाजी ॥ भय दुःख शीत को टाल । निपजासी मोक्ष सुख माल । श्री । षट काय जीव सुख पायगा जी ॥ २३ ॥ यह चउदश स्वप्न फल साथ । होवेंगे चउपद रजपुमाथ ॥ श्री । तस नाथ जग

म कोई नहीं जी ॥ इसलिए अहो जुगलेश । सर्व स्वप्न श्रेष्ट विशेष ।श्री। लोगोत्तम तनुज
हावेगे सही जी ॥ २४ ॥ यों हर्ष में हर्ष बढाय । इन्द्र नमे माता के पाय । श्री । स्वर्ग को
गये हर्षावता जी ॥ ढाल द्वीतिय खण्डे दोय । दम्पति प्रफूलित होय । श्री । ऋषि अमो-
लक गुण गावता जी ॥ २५ ॥ * ॥दोहा॥ ज्यों अंकुरे महि विषे । शुभ ही बृद्धी पाय ॥ त्यों
तीर्थंकर गुप्त रहे । उदर को नहीं फूलाय ॥ १ ॥ यद्यपि गर्भ तन मे वशे । तथापि मात
तांय ॥ दुःख कष्ट किंचित नहीं । हर्षानन्द बढाय ॥ २ ॥ गर्भ के पुण्य प्रताप से । नाभी
कुलकर युगल मांय ॥ पित्ता से अधिक पूजा रहे । तेज प्रताप फैलाय ॥ ३ ॥ कल्प वृक्ष
जो तुष्ट हो । पूरण लगे सब आस ॥ शांत सुखी सबी जन बने । रम्य वस्तु चउ पास
॥ ४ ॥ अनन्त पुण्यात्म प्रगटे । जगतोद्धार के काज ॥ तहां कमी किस बातकी । सहजे
बने सुख साज ॥ ५ ॥ * ॥ ढाल ३ री ॥ पोष दशम दिन आणंद कारी ॥ ए० ॥
जिनजी के जन्मकी महिमा भारी । जन्मोत्सब करे छप्पन कुमारी ॥ टेर ॥ सुखही
सुखमें गर्भ वृद्धी पाता । सवा नव महिने होगये पुरारी ॥ चेत कृष्णपक्ष अष्टमी
निशिमें । शुभ योग सब ही तहां मिले आरी ॥ जन्मो ॥ १ ॥ सबही ग्रह उंच्चस्थान
बिराजे । चन्द्र योग उत्तराषाढा से भयारी ॥ तब महाराणी मरूदेवी माता
ने । पुत्र पुत्री का युगल प्रसूतारी ॥ जन्म ॥ २ ॥ मानो आनन्द मे हर्षोलसत्

हो। फूल गइ है वर्षा विशारी ॥ तीनों लोक में प्रकाश भया तब । मानो प्रसरी
रिपुन प्रभारी ॥ ज ॥ ३ ॥ नर्क की मार वेदना सभी उपशमी । ऐसे ही तिर्यच मनुष्य
सब ससारी ॥ तन मन उस से सुखी बने सबे । शुभ प्रमाणु विश्व में प्रसरारी ॥ ४ ॥
दुदुंभी नाद ज्यों गर्जो गगन तब । मानो जिन जन्म से रहा हर्षा री ॥ मन्द २ वायु न
कंकरे दूर किया । सुगन्धी जल वर्षा रही धरणी विकसारी ॥ ज ॥ ५ ॥ उसही अवसर
अधो लोक निवास नी । महत्कल्पित आठ दिशा कुमारी ॥ भोगकरा भोगवती सुभोगा
भोगमालें ना तोयधरो विचित्रा री ॥ ज ॥ ६ ॥ पुष्पमाला और आनिन्दिता । निज २
भुवन निज सिंहासन परारी ॥ चार सहस्र सामानिक देव । चोगुना आत्मरक्ष सत अणि
कारी ॥ ज ॥ ७ ॥ महत्तरिका आदि परिवार बैठी । तब सह आठों का आसन कम्पारी ॥
अवधिज्ञान से जिन जन्मे जान । मन तन रोम राइ गये उलसारी ॥ ज ॥ ८ ॥ जिताचार
निज जन्मोत्सव करने का । जाम के पायक देव बाला री ॥ एक योजन का विमान बनवाया ।
उसमें बैठी सब सग परिवारी ॥ ज ॥ ९ ॥ वार्दित्र नावे गगन गर्जाती । भक्त जिन
भुवन दिग दीनी प्रदक्षणा री ॥ ईशान कोन में अधर विमान स्थम्भ । परिवार सग आइ
जहाँ मरुदेव्या री ॥ ज ॥ १० ॥ जिनेश्वर को और मातेश्वरी को । तीन चक्र सुकी करी
वन्दना री ॥ सिर सावर्त कराञ्जली कर बोले । रत्नकूँखी धारक तुमे नमस्कारी ॥ ज ॥ ११ ॥

धर्म नायक पुरुषोत्तम दर्शका री ॥ जगदीपक जगमंगल कारक । जगचक्षु हितकर मार्ग
जगदीपक जगमंगल कारक । जगचक्षु हितकर मार्ग दर्शका री ॥ अधो लोक की हम दिग् कुमारी,
पेदा किये । धन्य तुम पुण्यात्म कृतार्था री ॥ ज ॥ १२ ॥ अधो लोक की हम दिग् कुमारी,
आइ हैं जिन जन्मोत्सव करवा री ॥ डरी ये नहीं यों कही गइ इशान कौन । वैक्रय संवृ-
तक वायु विकोव्या री ॥ ज ॥ १३ ॥ कचरा अशुची गइ सब दूरी । दशों दिशा में
सुगन्धी प्रसारी ॥ फिर आकर खडी माता जी पासे । मधुर स्वर से रही गुण गारी ॥ ज
॥ १४ ॥ ऐसेही आठ उर्द्ध लोक की । मेघंकरा मेघवती सुमेघारी । मेघमालिनी सुवत्सा
वत्सामित्रा ॥ वारी षेणा और बलाहक कारी ॥ ज ॥ १५ ॥ जिन जी जननी को नमन
करी ने । विकोई बद्दल करी वर्षा री ॥ दबी रज सब तब की कुसुम वृद्धी । सुगन्धी धूपों
दिये सगमघारी ॥ ज ॥ १६ ॥ एक योजन मे देव आने जैसी । अति रम्य दी जगा
बनारी ॥ आइ जनीता ढिग मन उमंगती । खडी रही विषिष्ट गीत गारी ॥ ज ॥ १७ ॥
उसही वक्त दक्षिण रूचक गिरी वासी । सभाहरा सुप्रज्ञा सुप्रबुद्धारी ॥ यशोधरा लक्ष्मी-
वती शेषवती । चित्रगुप्ता ने वसुंधरा री ॥ज॥ १८ ॥ उक्त प्रकार आकर नमी दोनों को ।
दक्षिण दिशी में खडी लेकर झारी ॥ तैसेही पाश्चिम रूचक गिरी से आइ । इलादेवी सुरा-
देवी पृथवीदेवी तहांरी ॥ ज ॥ १९ ॥ पद्मावती एकनाशा नवमिका भद्रा । सीता आइ
नमी जिन जिन की महत्तारी ॥ पश्चिम में खडी रही लेकर पंखा । माताजी के पास

गीत उचारी ॥ ज ॥ २० ॥ बीच रुचककी रूपा रूपांसा । सुरूपा रूपवती चारों यह आरी
नमन करी चार अगुल छोड के । नाभी स नाला का छेदना किधारी ॥ ज ॥ २१ ॥ खड्ड
म गाडा पञ्चरत्नों से पूरा । ऊपर दूबताछ की पीठीका बनारी ॥ फिर पूर्व उत्तर और
दक्षिण दिशि में । तीन कदली घर वैकय किया री ॥ ज ॥ २२ ॥ जिस में
तीन चौशाल बनाइ । तीन सिंहासन विर्ये निठारी ॥ फिर आकर
प्रसूती क घर म । जिनजी को लिर अंकित उठारी ॥ ज ॥ २३ ॥ बाहु पकड माता मरू
देवी की । दक्षिण कदली मह सिंहासन बैठारी ॥ शतपाक सहस्रपाक तेल मर्दती ।
सुगन्धी द्रव्य की पीठी लगारी ॥ ज ॥ २४ ॥ फिर पूर्व के घर में लाकर । सिंहासन बैठाइ
स्नान करारी ॥ गंगोदक पुष्पोदक शुद्धोदक से । देती वसन को विमल बनारी ॥ ज ॥
२५ ॥ फिर मातापुत्र लाए उत्तर सदन । बैठा सिंहासन सुर अभियोगी बोलारी ॥ कहती
लाया चुन हेमवत गिरी से । पावना चन्दन उत्तम तत्काली ॥ ज ॥ २६ ॥ हुक्म प्रमाण
कर लाया तबही । अरणी काष्ठ से अग्नी प्रकटारी ॥ बावन सुगंध जला भूतिकर्म करारी ।
रक्ष पोटली बना बांधती हाथारी ॥ ज ॥ २७ ॥ मणि रत्न के युगल गाल को ।
कर्ण मूल बन्धे टीटी करतारी ॥ दे आशिर्वाद चिरजीवो प्रभुजी ॥ आयुष्य भोगवो पर्वत
जितनारि ॥ ज ॥ २८ ॥ फिर दोनों को लाइ प्रथम सुवन में । सुख शैया पे प्रस्वेषी

वैसारी ॥ जिनराज को स्थापे माजी के खोल । मधुर मंजुल गीत रही ललकारी ॥ ज ॥
॥ २९ ॥ यह महिमा दिग कुमारी महोत्सव की । जम्बुद्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र मझारी ॥
श्रीगणधर महाराज प्रकासी । तस्यानुसार संक्षिप्त उच्चारी ॥ ज ॥ ३० ॥ ऋषभ चारित्रे
खण्ड दूसरे । ढाल तीसरी अमोल ऋषि कहतारी ॥ आगे वर्णन इन्द्रों के उत्सव का ।
सुण जो श्रोता चित्त लगारी ॥ ज ॥ ३१ ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ उस काल उस समय में । शक्रेन्द्र
देव राय ॥ वज्र का आयुध कर धरे । दैत्यों का वण्ड मिटाय ॥ १ ॥ कार्तिक शेठ के भव
विषें । पंचमी प्रतिमा सौवार । श्रावक की आराध के । शत केतु नाव उच्चार ॥ २ ॥
सामानिक देव पांच सो । निरंत्र सेवे तास ॥ हजार नेत्र यों इन्द्र के । कार्य प्रवर्तक
खास ॥ ३ ॥ मेरू गिरीसं दक्षिणे । अर्ध रज्जु पर्यन्त ॥ अखण्डित आणा वहे । दाहि
णार्ध पतिकहंत ॥ ४ ॥ निर्मल वस्त्र मस्तक मुकट । दिव्य कुंडल लटकते हार ॥ महा
ऋद्धि द्युति कांति बल । यश सुख दिव्य धार ॥ ५ ॥ ढाल ४ थी ॥ चन्द्र गुप्त राजा
सुणो ॥ ए० ॥ जन्म महोत्सव करे देवता । भक्ति भावे उमायारे । जीता चार अनुसरी ।
तीर्थंकर पुण्ये प्रेरायारे ॥ जन्न ॥ टेर ॥ प्रथम सौधर्मा स्वर्ग मे । सोधर्मावतंसक विमाणों
रे । सौधर्मी सभाविषे । शक्र सिंहसण शोभाणो रे ॥ ज ॥ १ ॥ शक्रेन्द्रजी स्वर्गपति ।
विराजे सब परिवारो रे ॥ नृत्य वादिंत्र नाद से । अम्बर करे गरजारो रे ॥ ज ॥ २ ॥

चौरासी सहस्र दीपते । जोवी क सामानिक देवो रे ॥ छत्तीस हजार तीन लाख पे । आत्मरक्षक सुरसेवो रे ॥ ज ॥ ३ ॥ त्रय त्रिशक गुरू स्थानिक, । चार लोक पाल महाराजा रे ॥ अग्रमहेषी आठ इन्द्राणियां । सात अणिका आणिका पति साजा रे ॥ ज ॥ ४ ॥ बत्तीस लाख विमान के । अधिपति वय आदि रे ॥ बैठे थे तब आसन चला । अग स्फुरण दिसादि रे ॥ ज ॥ ५ ॥ अवधि ज्ञान से देखते । हृष्टे तुष्टे आणन्द पाये रे ॥ कल्पवृक्ष मेघ धारा ज्यों । मन तन हर्षे विकसाये रे ॥ ज ॥ ६ ॥ तत्काल सिंहासन से उतार क । रत्नों की मोजडी उतारी रे ॥ उत्तरासने मुखे यत्नाकरी । हाथ जोडे सतठपग पधारि रे ॥ न ॥ ७ ॥ सविधि नमोत्थुण देव के । वदन कर फिर आया रे ॥ सिंहासने विराज के । जन्मोत्सव करण चहाया रे ॥ ज ॥ ८ ॥ हिरण गमेषी पायक नायक । बोलाइयों फरमाये रे ॥ सुसर घटा बजा सूचना करो । जन्मोत्सव देव आवे रे ॥ ज ॥ ० ॥ घटा एक बजावतां । बतीस लाख विमाने घटा बाजी रे ॥ सुनी सब देव सावध पने । जान के मेरु जय राजी र ॥ ज ॥ १० ॥ कितनेक देव जिन पद वा । पूजन सत्कार के तांइ र । दर्शने किंतुल प्रेक्षया । शक्रमा के मये अनुयायी र ॥ ज ॥ ११ ॥ पालक अभियोगी देव ने । गमन विमान बनाया रे ॥ गोल योजन एक लक्ष का । सूर्य से अधिक दीपाया रे ॥ ज ॥ १२ ॥ मध्य मडप मणि पीठ का । सिंहासन

विछाया रे ॥ चारों तरफ सिंहासण भला । सब देव देवी का ठाया रे ॥ ज ॥ १३ ॥
वस्त्रालंकार विभूषित सवी । सपरिवारे इन्द्र देवी देवा रे ॥ वैठे विमाने चाली या । गमन
मार्ग लखेवा रे ॥ ज ॥ १४ ॥ आठ मंगल आगे चले । विजय वेजयंती फररावे रे । गज-
गाजी वृषभ रथ पाय्य का । पाचों अणिक संग जावे रे ॥ ज ॥ १५ ॥ वादिंत्र से नभ
गर्जता । सौधर्म स्वर्ग मध्य थाईर ॥ उत्तर के दादर से निकल करी । नन्दिश्वर द्वीप
आइ रे ॥ ज ॥ १६ ॥ रतीकर पर्वत थकी । विमान संकोची चाले रे ॥ जिन जन्म नगर
भुवन नखे । उत्तर आये जिन जननी भाले रे ॥ ज ॥ १७ ॥ दिशा कुमारी जैसे कहा ।
भो रत्न कूक्षी नमस्कारो रे ॥ शक्रेन्द्र हूं मै डरोमति । जन्मोत्सव करूंगा इसवारो॥ ज ॥
॥ १८ ॥ माताजी निश्चिन्त रहे । अवस्थापनी निद्र देवे रे । अन्यको भी वैम होवे नहीं ।
प्रति विम्ब ढिग तस ठेवे रे ॥ ज ॥ १९ ॥ पांच रूप शक्रेन्द्र जी । प्रभु भक्ति करवा
बनावे रे ॥ अन्य लाभ ले सके नहीं । प्रेम भाव उमटावे रे ॥ ज ॥ २० ॥
एक रूप से प्रभु कर तल लिये । दो रूप चमर ढुलावे रे ॥ एक रूप छत्र
ज करे । एक वज्र ले आगे जावे रे ॥ ज ॥ २१ ॥ चारों जाति के । देवता परिवरे मेरू पे
आवे रे ॥ ढाल चौथी द्वीतिय खण्डकी । ऋषि अमोलक गावे रे ॥ ज ॥ २२ ॥
दोहा ॥ मेरू पर्वत के शिखर पर । पंडक वनके मांय ॥ चूलिका से दक्षिण दिशी ॥ पंडू
कम्बल शिला शोभाय ॥ १ ॥ लम्बी पूर्व पश्चिम में । पांच सो योजन माय । चौडी उत्तर

दक्षिण । बाइसे योजन लांय ॥ २ ॥ अर्ध चन्द्राकार में । जाकी योजन चार ॥ सुवर्ण मय
सघाग म । वेदिका वन खण्ड विराय ॥ ३ ॥ चार २ तीन दिशी में । चढने के सोपान ॥
तोरणद्वजा पताकासे । मण्डित द्वार असमान ॥ ४ ॥ सिंहासन मध्य सिलापरे । पांच सो
धनुष्य विस्तार । चौडा धनुष्य है ढाइसो । शाश्वत सब सूत्राधार ॥ ५ ॥ भार्त क्षेत्रे
त्रिकाल के । जिनजीका जन्मोत्सव ॥ इसही स्थान होता सदा । ऋषभ प्रभुका अब ॥६॥
शक्रेन्द्रजी जिनराज को । लेकर आले माय ॥ बैठे उक्त सिंहासने । अन्य इन्द्राका आगम
बरणाय॥७॥ ढाल ९मी॥ सिद्धचक जिन पूजोरे भविका॥ए ॥इन्द्रो की ऋद्धि वखाणुरे भवि
जन ॥ टेर ॥ ईशान स्वर्ग में ईशान इन्द्रजी । सामानिक अस्सी हजारो ॥ तीन लाख बीस
सहस्र आत्म रक्ष । अग्रमहेषी आठ भेष कारो ॥ भविजन ॥ १ ॥ उत्तरार्ध लोक के स्वामी
राज । आठाइस सहस्र विमानो ॥ त्रयत्रिंसक लोक पाल परिषद ॥ अनि का सातही
जानार ॥ भ ॥ २ ॥ आसन कम्पा अवधि प्रयुजा । मार्त वर्ष जिन जन्म जाना ॥ महा
घोष नामे घंटा बजाइ । लघु पराक्रम पायार्क पति मानारे ॥ भ ॥ इ ॥ ३ ॥ पुष्पक नामें
विमान सजाया । दक्षिण मार्ग होकर सिधाया ॥ रतिकर पर्वत से विमान सकोचा । मेरु
पडग वन में आयारे ॥ भ ॥ इ ॥ ४ ॥ ऐसेही तीसरे सनत्कुमारेन्द्र । बारा लाख विमा
न के स्वामी ॥ बहत्तर हजार सामानिक देव हैं । तीन लाख आत्म रक्ष नामीरे ॥ भ ॥

॥ इ ॥ ५ ॥ हरीण गमेषी पायक पति देव । सुघोष घंटा बजाइ ॥ सोमाणस नामे विमान
सजाया । रतकिर से मेरू गिरी आई रे ॥ भ ॥ इ ॥ ६ ॥ महेन्द्रईन्द सत्तर सहश्र सामा-
निक । रक्षक दो लाख अस्सी हजारो ॥ आठ लाख विमान का मालक । श्रीवत्स विमान
मझारो ॥ भ ॥ इ ॥ ७ ॥ ब्रह्मेन्द्रे साठ हजार सामानिक । दो लाख चालीस सहश्र रक्षक
देवा । चार लाख विमान का अधिपति । नन्दी वर्त विमान गमन कहवारे ॥ भ ॥
॥ इ ॥ ८ ॥ लांतक इन्द्र सामानिक सहश्र पचास । दो लाख शरीर रखवारे । पचास हजार
विमान के स्वामी । कामगमन विमान मझा रे ॥ भ ॥ ९ ॥ महा शुक्रेन्द्र चाली सहश्र
सामानिक । रक्षक एक लाख साठ हजार ॥ चाली सहश्र विमान के मालक । प्रीतिगम
विमान है सार रे ॥ भ ॥ इ ॥ १० ॥ सहसारेन्द्र के सामानिक तीस सहश्र । रक्षक बीस
सहश्र एक लाख ॥ छ हजार विमान के स्वामी । मनोरम विमनज भाख रे ॥ भ ॥ इ ॥
११ ॥ पाणेन्द्रं के सामानिक बीस सहश्र । अस्सी हजार रखवाले ॥ चारसो विमान
दो स्वर्ग के मालक । विमल विमाण बैठ चाले रेभ ॥ इं ॥ १२ ॥ अचुतेन्द्र दश सहश्र
सामानिक । आत्मरक्ष चालीस हजारो ॥ तीनसो मालक दो स्वर्ग के । सर्व तो भद्र
विमान श्रेयकारो ॥ भ ॥ इं ॥ १३ ॥ पाहिला तीजा पांच सत नवमा इन्द्र के । हिरण गमे
षीपायक सुघोष घंटा ॥ दूजा चौथा छठा अठ दशवा सुरेद्र के । लघु पराक्रमपायक महा-

घोष घटा रे ॥ भ ॥ इं ॥ १४ ॥ यह तो वैमानिक के दश इन्द्र कहिये । भुवनपति का कहावे ॥ प्रथम नर्क मध्य दश अन्तर में । दश जाति भुवनेश रहावे रे ॥ भ ॥ इ ॥ १५ ॥ प्रत्येक जाति के दक्षिण उत्तर मे । इन्द्र दोय दोय कही जे ॥ असुर कुमार चरेन्द्र दक्षिण । चमर चचा राजधानी रही जे रे ॥ भ ॥ इ ॥ १६ ॥ सौधर्मी सभा चमर सिंहासन । बैठा सपरिवारो ॥ चौसठ हजार सामानिक देवता । दो लाख छप्पन हजार रक्षक धारो रे ॥ भ ॥ इ ॥ १७ ॥ पांच अग्र महेषी तेतीस त्रयत्रिंस । लोक पाल सुरचार ॥ तीन परिषद सात अणिका कहिये । द्रुम पायक घटा ओघसरे ॥ भ ॥ इ ॥ १८ ॥ आसन कम्पा जिन जन्म को जाना । पचास हजार योजन का विमानो ॥ अरुण द्वीप बाहर तीगिछ कूट विश्राम । हुओ मेरूपर आनो रे ॥ भ ॥ इ ॥ १९ ॥ उत्तर बलेन्द्र बलचचा राजधानी । साठ हजार सामानिक देवो ॥ दोलाख चालीस सहस्र आत्म रक्षक । पांच इन्द्राणी और सभी कहवोरे ॥ भ ॥ ॥ रे ॥ २० ॥ महाद्रुम पायक महा अघसरा घटा ॥ यह दोनों असुरके इन्दा ॥ अब नवनी काया के इन्द्रादि वरणु । जैसे सूत्रे कहन्दारे ॥ भ ॥ इ ॥ २१ ॥ नागकुमार के धरणेन्द्र दक्षिण में । भूतेन्द्र उत्तर के जानो ॥ सुवर्ण कुमार के-वेणुदेव वेणुदालि । विद्युत के-हरी हरीसह मानोरे ॥ भ ॥ इ ॥ २२ ॥ अग्नि के-अग्निशिखा अग्निमाणव इन्द्रा द्वीपके-पूर्ण विशिष्ट ॥ उदधी कुमार के-जलकांत

जलप्रभ । दिशाके—अमित्त आमित्तवहन श्रेष्ट रे ॥ भ ॥ इ ॥ २३ ॥ वायुकुमार के—बले प्रभंजन । स्तनित्त के—घोष महाघोष ॥ इन अठराही इन्द्रोंके जुदे जुदे । छसहश्र सामानिक तोष रे ॥ भ ॥ इ ॥ २४ ॥ चौबीस हजार आतमरक्षक सुर । छे छे इन्द्राणी सपरी वारो ॥ पचीस हजार योजन के विमान में । और सब उक्त अधिकारो रे ॥ भ ॥ इ ॥ २५ ॥ मेघसरा हंससरा कोंचसरा, मंजुसरा मंजुघोषा सुसरा महू सरा । नंदी सरा नंदी घोषा नवही जातिके । देव के घंटा देव नाम खरारे ॥ भ ॥ इ ॥२६॥ वाण व्यंतर की सोले है जाति दोनों दिशा के इन्द्र बत्तीस । चार हजार सामानिक चार इंद्राणी । सोले सहश्र आतमरक्षक जीस रे ॥ भ ॥ इं ॥ २१ ॥ पीसाचके—काल महाकाल इन्द्र हे । भूतके—सुरूप प्रतिरूप । यक्षके--पूर्णभद्र माणिभद्रजी । राक्षसके--भीम महाभीम भूप रे ॥ भ ॥ इ ॥ २८ ॥ किन्नरके--किन्नर किंपुरुष । किंपुरुषके--सुपुरुष महापुरुष ॥ महोरागके--आतिकाय महाकाय । गंधर्वके--गीतराति गीतरस रे ॥ भ ॥ इ ॥ २९ ॥ आनपन्नीके--सान्निहित सन्मान । पानपन्नीके--धाता विधाता ॥ इसीवाइके—ऋषीवादी ऋषीपाल । भुइवाइके--इश्वर मरेश्वर ख्याता रे ॥ भ ॥ इ ॥ ३० ॥ कंदीयके—सुवत्स विशाल । महाकंदीके- हास्य हास्यराति ॥ कोहंडगके--श्वेत महाश्वेत इन्द्र । पहंगदेवाके—पवंक पवनपाति रे ॥ भ ॥ इ ॥ ३१ ॥ दक्षिण इन्द्रों की मंजुसराघंटा । उत्तर के मंजु घोषा कहिए । कटकाधिप पालक देव

कहिए। हजार योजनका विमान लहिएरे ॥ म ॥ इं ॥ १२ ॥ ज्योतिषे के दो इन्द्र चन्द्रै और सूर्य। व्यंतर सम इन का परिवारो ॥ दोनों के विमान हजार योजन के। सुस्वरा घटा झणकारो रे ॥ म ॥ इं ॥ १३ ॥ यों चौसठ इन्द्र सभी असंख्य देवो संग ॥ मेरू पर्वत पर आवे ॥ ढाल पंचमी प्रीतिय खण्डकी ॥ ऋषि अमोलक गावे रे ॥ म ॥ इ ॥ १४ ॥❁॥ दोहा ॥ नगिन्द्रवर पंडक वने। श्री जिनवर के पास ॥ चारों जाति के देवता। देवांगना युत खास ॥ १ ॥ आये उमराये हर्ष म। जन्मोत्सव के माय ॥ सब देवों में शिरोमणि। अच्युत इन्द्र कहवाय ॥ २ ॥ अधिकारी प्रथम तेही। जन्माभिषेक के काम ॥ सामग्री मंगाय वा। अभियोगी देव को ताम ॥ ३ ॥ योजाइ प्रकाशता। अभिषेक के ताय ॥ यथोचित जे चाहिये। ते लावो वेगो निपजाय ॥ ४ ॥ नोकर देव हर्षित हो। क्रिया हुक्म प्रमाण ॥ जन्म अभिषेक योग्य सब। करे वस्तु मंडाण ॥ ५ ॥ ❁ ॥ ढाल ६ ठी ॥ धूम धोरी ने, धूम धणेरी ॥ ए० ॥ जन्मोत्सव की महीमा भारी। तीर्थंकर की पुण्याइ सो सुनो नर नारी ॥ टेर ॥ अभियोगी देव ईशान कौन में आया। तक्षिण वैक्रय वस्तु बनाया ॥ जन्मा ॥ १ ॥ सोना रूपा मणि मृतिका केरे। तो तिसही इन के विमाण घणे रे ॥ ज ॥ २ ॥ एक सहस्र आठ कलश बनाये। तो चवन कलश थाल कटोरे मंगराये ॥ ज ॥ ३ ॥ छोटे सुप्रतिष्ठ चिमक करद। तो पत्ते चंगेरी सब सहस्र अठ भद्र

॥ ज ॥ ४ ॥ पुष्प चंगेरी आभरण चंगेरी । तो सिंहासन छत्र पंखे कुडछे भलेरी ॥ ज ॥
॥ ५ ॥ धूपाडे आदि सब सहश्र आठ आठ ॥ तो सूर्याभ देव सम सब जान ना पाठ ॥ज॥
॥ ६ ॥ क्षीर समुद्रसे क्षीरोदक भर लाये । तो उत्पल पद्म सहश्र कमल छाये ॥ ज ॥ ७ ॥
मागधादि तीर्थ गंगादि नदि काइ । तो पद्मादिद्रह चूलहेमादि गिरी राइ ॥ ज ॥ ८ ॥
भद्रसाल सोमानस नंदन वन ॥ तो मृतिका पाणी पुष्प तगर गोशिर्ष चंदन ॥ ज ॥ ९ ॥
मंगलिक वस्तु लेकर आया । तो अचूत इन्द्र के सम्मुख ठाया ॥ ज ॥ १० ॥ तब अचूतेन्द्र
सब परिवारो । तो कळंशादि सामुग्री कर स्वीकारो ॥ ज ॥ ११ ॥ अभिशेप जिनजी
वदन पर करते । तो अन्य वस्तु प्रभु सम्मुख धरते ॥ ज ॥ १२ ॥ उस वक्त अन्य इन्द्र
सघी देवी देवा ॥ तो चउ तरफ जिनजी के खडे करें सेवा ॥ ज ॥ १३ ॥ वज्र त्रिशूला दि
आयुध धारे । तो केइ के छत्र चमर फूल करमारे ॥ ज ॥ १४ ॥ चांदी सोना रत्न भूषण
सुगंध । तो बर्षाते केइ देव उछाल खंध ॥ ज ॥ १५ ॥ केइ गावे बजावे नाचे नचावे । तो
बत्तीस विधि के नाटक रचावे ॥ ज ॥ १६ ॥ अश्व गज रथ सिह चित्तादि केइ । तो रूप
बना हिंसे गर्जे नाद कर गुंजेइ । ज ॥ १७ ॥ शोर मचा अति गगन गर जावे । तो हर्गे
मगे रग रली आनन्द मनावे ॥ ज ॥ १८ ॥ फिर अचुतेन्द्र नम्रासन विराजे । तो पुष्प
धूप आदि से पूजे जिन राजे ॥ ज ॥ १९ ॥ गात्र पूंछ कर वस्त्र भूषण पहनाये । अष्ट

मंगल तहां सम्मुख रचाये॥ज॥२०॥वर्धम मद्रासेन वृद्धमान कलेश। तो श्रीवत्स स्वस्तिक नन्द्रावत युग्ममत्सश॥ज॥२१॥पुनरुक्ति दोष रहित श्लोक शौर्त आठ। तो नवीन बनाये की स्तुती विधिपाठ॥ ज ॥ २२ ॥ नमस्कार कर गुण स्तव गाये। यों लेह इन्द्रका ओत्सव पूर्ण थाय ॥ ज ॥ २३ ॥ जैसे अच्युतेन्द्रका ओत्सव वखानो ।, तो अन्य सब इन्द्रोंका उत्सव जानो ॥ ज ॥ २४ ॥ भुवनवइ वाणव्यन्तर ज्योतिषी विमानिक। तो सभी ने उत्सव किया उक्त विधि ठीक ॥ ज ॥ २५ ॥ फिर ईशानेन्द्र पांच रूप बनाये। तो एक रूप से प्रभु लिये अंकित मांये ॥ ज ॥ २६ ॥ पूर्वाभिमुख अभिशाप सिला पे विराजे । ता एक रूप छत्र दो रूप चमर वीजे ॥ ज ॥ २७ ॥ कर धर त्रिशूल एक रूप खडे आगे। तो शक्रेन्द्रजी उत्सव करने अनुरागे ॥ ज ॥ २८ ॥ अभियोगी देव पास सामग्री मगवाई । तो चार वृषभ रूप स्वय बनाई ॥ ज ॥, २९ ॥ चारां बाजू खडे प्रभु पे सीस झुकाई ॥ तो अष्ट शृंग चक्र रहे अति सोभाई ॥ ज ॥ ३ ॥ क्षीरोदक महक पर छाकर कराये। ता आठों सींग से आठ धारा बहाये ॥ ज ॥ ३१ ॥ एकत्र हो पडे प्रभु मस्तक पे आई ॥ तो स्तुति आदि विधि अच्युतेन्द्रसी कराई ॥ ज ॥ ३२ ॥ शक्रका ज ओत्सव पूर्ण थाया। वंदन नमन सब किया हर्ष भराया ॥ ज ॥ ३३ ॥ फिर शक्रेन्द्रजी पांच रूप बनाए ॥ जैसे लाए तैसे स्वस्थान लेजाए ॥ ज ॥ ३४ ॥ प्रतिबिम्ब सहारा निद्रा दीनी निवार ॥ प्रभुको माताजी

पास दीने सुवाड ॥ ज ॥ ३५ ॥ क्षोम युगल वस्त्र कुंडल जोडी तांइ । तो प्रभुजीके
उसी से दीना ठाइ ॥ ज ॥ ३६ ॥ रत्न मुक्ताफल से जडिया दामो ।
बांधा पालणे पर देखे उसे स्वामो ॥ ज ॥ ३७ ॥ वैश्रमण भंडारी को बोलाया । तो शक्रे-
न्द्रजी हुकुम फर्माया ॥ ज ॥ ३८ ॥ तीर्थंकर जी के भुवन के मांई । तो उत्तमोत्तम वस्तु
रख देवो लाइ ॥ ज ॥ ३९ ॥ बत्तीस क्रोड भरो सौनैया । तो रत्न जवाहर भूषण रुपैया
॥ ज ॥ ४० ॥ कुवेर देव त्रिझमक सुर से कहिया । तो सार २ जिनस तहां लाकर थप-
इया ॥ ज ॥ ४१ ॥ अभियोग देव से उदघोषण कराइ । तो देव दान व मानव सुणजो
सघलाइ ॥ ज ॥ ४२ ॥ श्रीतीर्थंकर जी मात तात इन के । तो बुराभी चिन्तवेगा तो तत्काल
तिनके ॥ ज ॥ ४३ ॥ ताडबृक्ष की मंजरी साइ । तो घडसे सिर देव देंगे उडाइ ॥ ज ॥
॥ ४४ ॥ सुन दौंडी डरे सब आश्चर्य लाये । तो धन माता पुण्येश्वरी पुत्र थें जाये ॥ ज ॥
॥ ४५ ॥ अर्हत अगुष्ट में अमृत संचार ॥ तो इन्द्र देव देवी सब कर नमस्कार ॥ ज ॥
॥ ४६ ॥ सब देव हिल मिल नन्दी श्वरे आये । तो अष्टन्हिक महोत्सव महां मनाये
॥ ज ॥ ४७ ॥ निजस्थान गये रहे सुख माहे सारे । देव कृत जन्मोत्सव यह थयारे ॥ ज ॥
॥ ४८ ॥ षष्टी ढाल खण्ड द्वीतिये की थावे । तो ऋषि अमोलक महिमा जिनवर की
गावे ॥ ज ॥ ४९ ॥ * ॥ दोहा ॥ श्री आदिश्वर भगवान को । आहार की इच्छा

होय ॥ भूखी लेवे अगुष्ठ को। तृप्ति पावे सोय ॥ १ ॥ स्तन पान कभी नहीं करे। माता आश्चर्य पाय ॥ पांच अपस्सरा इन्द्र की। रही जिन सेवा माय ॥ २ ॥ एक मा स्नान करावही। दूजी वस्त्र पहनाय ॥ भूषण सज तीजी करे। चौथी खिलोने खिलाय ॥ ३ ॥ फेर न लेजावे पांच मी। सुख पालन में पोढाय। गावे गीत मिल पांच ही। विविध लाड लडाय ॥ ४ ॥ जैसे सिंह गुफा विषे। बैठा सोभा पाय ॥ मरु देवीकी गोदीमें। बैठे जिन त्यों सोभाय ॥ ५ ॥ ॐ ॥ ढाल ७ मी ॥ आज तो बधाइ राजा नाभी के दरबारजी ॥ यही देशी और यही टेर ॥ प्रात काल मरु देवी। अति हर्ष चित्त धार जी ॥ आज ॥ १ ॥ नाभी कुलकर पतिके आगे। निवेदन करे समाचार जी ॥ आज ॥ २ ॥ महाभाग्य शाली कुमर नाथ यह। मैने निशी में देखा चमत्कार जी ॥ आज ॥ ३ ॥ जन्मोत्सव करने के काजे। आइ देवीयों छप्पन कुमार जी ॥ आज ॥ ४ ॥ स्नान भूति कर्म गीत नृत्यादि। किये सब सुखोपचार जी ॥ आज ॥ ५ ॥ फिर आये थे शक्रेन्द्रजी। साथ घण देवी परिवार जी ॥ आज ॥ ६ ॥ रत्न कुक्षी धारक मुझ बोले। स्तुती किया नमस्कार जी ॥ आज ॥ ७ ॥ फिरतो निद्रा आगइथी मुझ। जानन सकी लगार जी ॥ आज ॥ ८ ॥ जागी तब सुना देवीयों के मुख। लेगये मेरुपर कुमारजी ॥ आज ॥ ९ ॥ अभी ही देव देव गये यहांसे। ये पांचो रही सेवा सारजी ॥ आज ॥ १० ॥

सुनी हकीगत निज नन्दन को। नाभी कुलकर हर्षे अपारजी ॥ आज ॥ ११ ॥
तत्क्षण उठाइ लिया लाडला । अमृत दृष्टीसे किया प्यारजी ॥ आज ॥ १२ ॥
अपूर्व छवी देख प्रभु के वदन की। लक्षण आठ रू एक हजार जी ॥ आज ॥ १३ ॥ साथल
पर देखा बृषभ लक्षण। सर्वो लक्षणों में सिरदार जी ॥ आज ॥ १४ ॥ कहे इसही लक्ष-
णानुसारे। अभीधान करना जहार जी ॥ आज ॥ १५ ॥ तद नन्तर कंन्या को निहारी।
दिव्य स्वरूप सुन्दराकार जी ॥ आज ॥ १६ ॥ बोलाये तब आये मिलकर। युगल युग-
लणी गम उसवार जी ॥ आज ॥ १७ ॥ देखे प्रभु को अपूर्व पुरूषोत्तम। सवही हर्पाश्चर्य
धार जी ॥ आज ॥ १८ ॥ सब परसंशे धन नाभी कुल कर जी। धन्य मरूदेवी वर
नारजी ॥ आज ॥ १९ ॥ जिन के यह युगलोत्तम उप्पना। ऐसा अन्य न जगत् मझारजी
॥ आज ॥ २० ॥ पूछे प्रकाशो नाम क्या इन का। तब नाभी जी करे उचार जी ॥आज॥
॥ २१ ॥ ऋषभ कुमर सुमगला कुमरी। गुण निष्पन्न यही श्रेयकार जी ॥ आज ॥
॥ २२ ॥ सबही अच्छा २ बोले। करते जय २ कार जी ॥ आज ॥ २३ ॥ कल्प वृक्ष
से वर्षे तत्क्षण। युगल इच्छानुसार जी ॥ आज ॥ २४ ॥ फल फूल मेवा वस्त्र भूषण।
अनोपम सहर्ष स्वीकार जी ॥ २५ ॥ कहे विन याचे बूठे कल्प वृक्ष। यही कुमर पुण्य
चमत्कार जी ॥ आज ॥ २६ ॥ आदर भाव सबी के मन में। उत्पन्न भये एक तार जी

आज ॥२७॥ आके पजावे सेवा सय मिल। तात मात मे कुमारकी सार जी ॥आज॥२८॥ वेवी देवता प्रति दिन पहुतही। आवे देखन दीदार जी॥आज॥२९॥सुखे रयों वर्ष एक गया। इन्द्रको हुआ विचार जी ॥ आज ॥ ३० ॥ वंशस्थापन करना भरत में। श्रीजिन जी इच्छा निहार जी ॥ आज ॥ ३१ ॥ खाली हाथ कैसे जाना प्रभु ढिग। धरणी पर देखा स्यार जी ॥ आज ॥ ३२ ॥ भेट इक्षु उन्नत देख कर। लीना साथ उम्माह जी ॥ आज ॥ ३३ ॥ नमन कर आ बैठे प्रभुढिग। प्रभु बाप के खोले मझार ॥ आज ॥ ३४ ॥ इन्द्र के करमें सांठे को देखा। यद्यपि ज्ञाने जाना निरधार जी ॥ आज ॥ ३५ ॥ ईख लेने को प्रभुजी तत्क्षण। दीना हाथ प्रसार जी ॥ आज ॥ ३६ ॥ स्वामि के भाव को लख के शकेन्द्र। किया भेट मस्तक नमाड जी ॥ आज ॥ ३७ ॥ प्रभुने ईख स्वीकारा। इसलिए। 'इक्षाग वंश' किया जहार जी ॥ आज ॥ ३८ ॥ नमन कर गये इन्द्र स्वर्ग में। कही अमोलक सप्तम ढाल जी ॥ आज ॥ ३९ ॥ * ॥ दोहा ॥ ज्यों गिरी झाले चम्पक लता। निर्विघन वृद्धी पाय ॥ त्यों युगलहि नाथ जी। वय देवीसे पोपाय ॥ १ ॥ विमल वपुं स्वेद न हुए। दूपण राग मल रहित। सुन्दर सुगन्धी सुवर्ण वरण। पेखत जागे प्रीत ॥ २ ॥ रक्त मांस गो दूध सा। उज्वल-मिष्ट सुवास ॥ आहार निहार अदृष्ट है। सुगन्धी श्वासोश्वास ॥ ३ ॥ वज्र ऋषभ नाराच है। सघयन बल अनंत ॥ समचतुरस

संस्थान में। अतिही सोभे भगवंत ॥ ४ ॥ गंभीर्यता और मधुरता। चतुरता अलौकिक॥ लोकोत्तर जन तन शिशु। पुरुषोत्तम निर्विक ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल ८ मी ॥ अनोखा भमरजी ॥एदेशी॥युगादि नाथ जी, हो प्रभुजी। रूप गुणे अति शोभाय ॥टेर॥ बाल क्रीडाने कारणे। हो प्रभुजी। देवता बहूला आय ॥ बालक रूप धारण करी। हो प्रभुजी। साथ में रमन लोभाय। युगादि ॥ १ ॥ दिल खुश करन सुरा नर तना। हो प्रभुजी। तस संग रमता धाय ॥ मदमस्त गयंदना वत्स ज्यों। हो प्र०। धूली धूंसर लिप्त काय ॥ युगा ॥ २ ॥ बल विवेक देख ऋषभका। हो प्र०। देव दानव विस्माय ॥ यदि कोई टेंट धारण करे। हो प्र०। उसको देवे दबाय ॥ युगा ॥ ३ ॥ कृपा सम्पादन जिनन्दकी। हो प्र०। विविध रूप देव बनाय ॥ नाचे कूदे भगे आमिले। हो प्र०। वादिंत्र बजा गीत गाय ॥ युगा ॥ ४ ॥ मयुर रूपे षडज स्वर करे। हो प्र। हस रूपे गंधार सुनाय। क्रौंच बन मध्यम स्वर लवे। हो प्र। कोकिल पंचम अलापाय ॥ यु ॥ ५ ॥ अश्व गज रूप धारके। हो प्र। स्कन्धपे लेवे चढाय ॥ मल्ल तथा भेसा बनी। हो प्र। लडकर प्रभुको रिंजाय ॥ यु ॥ ६ ॥ देखी क्रीडा निज कुमार की। हो प्र। नाभी मरु देवी हर्षाय ॥ युगल गण यह देख के। हो प्र। आश्चर्य धर विस्माय ॥ यु ॥ ७ ॥ माता कहे अहो लालजी। हो प्र। करो तुम मुझ पय पान ॥ किन्तु अमृते तृप्तज सदा। हो प्र। कभी न चूंगा थान ॥ यु ॥ ८ ॥ जब अमृत आहार

छोरिया । हो म । तप मनु के भोग काज ॥ उत्तर कुरु कल्प वृक्ष के । हो म ॥ देवता फल देते । स्यांज ॥ पु ॥ ९ ॥ पीमे नीर क्षीर समुद्र का, । हो म । देवता ,देते लाय ॥ यों पाळ पय सुख से अति कमी । हो म । पोयन पय प्रगाय ॥ पु ॥ १० ॥ अनुपम प्रवा खुली तन तणी । हो म । सिर गिरी कुट कार ॥ उन्नत शिखर ज्यों, शिखरीपर । हो म । काले चिक्कने कोमल पाळ ॥ यू ॥ ११ ॥ पूर्णिमा चौदसा अनेन, है । हो । ललाट अर्ध शशी सादिस ॥ तने मनुष्य ज्यों कृष्ण चिकना । हो । सूक्ष्म मम् है चित ॥ यु ॥ १२ ॥ कृष्ण कीकी श्वेत भाग में । हो । रक्त किनारीवार ॥ नेत्र लम्बे पे कर्ण तक । हो । ध्यान पाँफानिया सार ॥ पु ॥ १३ ॥ पिम्पफल से रक्त होट में । हो । कुदकली से बत्तीस दाँत ॥ रक्त जिव्हा स्थूल कोमल पळे । हो । शुक सी नाक सू भाँत ॥ पु ॥ १४ ॥ कान स्कन्ध को स्पर्श ते । हो । भन्वर आसार्ते फर ॥ गाल मांस से भर हुए । हो । पो,अश्न के सेर ॥ यु ॥ १५ ॥ निष्कलंक पूर्णिमा चन्द्रसा । हो । सम्पूर्ण मुखारविन्द ॥ कम्बु सी उन्नत वर्तुला । हो । तीन रेखा मीच सन्ध ॥ पु ॥ १६ ॥ पुष्टस्कन्ध उच्च, पैल सा । हो । दीर्घ बाँह, घुन्ने पर्यन्त ॥ रोम न होवे कांख मे । हो । फणाधर अकृमी धरत ॥यु॥ १७॥ हस्तनख रक्त हैं रक्त स । हो । पुष्ट लक्षण विभिन ॥ चक्र मनुष्य इन्द्र वज्र अकुश । हो । ध्वजा पताका कमल पधित ॥ पु ॥ १८ ॥ श्रीवत्स स्वस्तिक रथ अश्व सिंह । हो । बैल गज मगर, मन्दिर ॥ समुद्र मेहल

शंख तोरणा । हो । द्वीप दिगज छत्तार ॥ यु ॥ १९ ॥ अंगुली अंगुष्ट नख अरुण है ॥ हो ॥
चक्रादि जिन्ह आंकित ॥वक्षस्थल सुवर्ण पट सा । हो । नहीं चंचु श्रीवत्स लिखित ॥ यु ॥
॥ २० ॥ मच्छोदर नाभी गंभीर्य ता । हो । गंगावर्त समान ॥ कमर वज्र सी मध्य
साँकडी । हो । विशाल पुष्ट गुदस्थान ॥ यु ॥ २१ ॥ अश्वसा पुरुष चिन्ह गुप्त है । हो ।
रोम राजी विवर्जित ॥ केली स्थंभ सी कोमल जंघा । हो । स्थूल उतरती शोभित ॥ यु ॥
॥ २२ ॥ घुटने गुप्त भरे मांस से । हो । पिण्ड मृगसी जान ॥ पांव काछवे पृष्ट से । हो ।
नशों गुप्त रोम नहीं ठान ॥ यु ॥ २३ ॥ फणीं पत फणी पर मणि समा । हो । नख
अंगुली पे दीपाय ॥ लाल चरण भू स्थापतां । हो । कुसुम पूंज तले जणाय ॥ यु ॥ २४ ॥
चक्र रू माला पुष्प की । हो । पताका द्वजा अकुंश ॥ भुवन शंख आदे लक्षणे । हो ।
शोभे चरण अवतंश ॥यु॥ २५ ॥ ये शांत राग रूचभी तणा ॥हो॥ जो प्रमाणु विश्वमाय ॥
वे अकर्षित निर्मित तन विषे । हो । ऐसा नर नहीं अन्य जग पाय ॥ यु ॥ २६ ॥ एक
सहस्र आठ लक्षण तणा । हो । स्वभाविक अलंकार ॥ इन्द्र शुची चकित होवे । हो ।
छवी जिनवदन निहार ॥ यु ॥ २७ ॥ प्रज्वलित अग्निरू सूर्य से । हो । अधिक वपुका तेज॥
निरखत तृपत न को हुए । हो । भभ के अन्दर हेज ॥ यु ॥ २८ ॥ अनेक गण देव
देवीयां ॥ हो ॥ नरनारी के बृन्द ॥ प्रभुजी को रहे घेर के । हो । पाते बडा आणन्द

॥ पु ॥ २९ ॥ विविध भोगोपभोग की ॥ हो ॥ अरुणी से अरूणी को पाय ॥
मर सुर तेही लायके । हो। अर्पे श्रीजिनराय ॥पु॥ ३० ॥श्रक्तभृती निर्मिमानसे। हो। येते
तें लयही पाँट ॥ हाल वस्तु अमोलक भणे। हो प्रभूजी। मेक्तो पुण्यके थाट ॥ युगादि ॥
॥ २१ ॥●॥दोहा॥ पचा पची युगलके। एकदा खेलन आय ॥ वैठे ताड वृक्ष तल। अकस्मात
ते ठाय ॥ १ ॥ पक पचा फल तूटके। पचा पचे के सीस। मृत्यू पाया तत्क्षणे। पचा घह
धरणीस ॥ २ ॥ प्रथम मृत्यूक युगलको। ले जाते देव उठाय ॥ डालते उसे समुद्रमें।किन्तु
उसे न कोई ले जाय ॥ ३ ॥ अकाल मृत्युक तना। प्रथमहि यह देख ॥ आश्चर्य पाये अन
सषी। काल प्रभाव विशेष ॥ ४ ॥ बची पची यहांही खडी। मुग्धा मध्यस्त भाव ॥सुस्न
पचा देख सोचती। पौविग देख ते ठाव ॥ ५ ॥ हाल ९ मी ॥ शहरमें जवेरी आयाए। हार
हीरों का लायाए ॥ ५० ॥ हा नहार होय सो पावे हो। पुण्यात्म पुण्यवत पावे हो ॥ टेर ॥
पचीके मा बाप युगल तप। आये ले गये उठाय। सताप में तो कुछ नहीं समझे। पालन
करे उस ताय ॥ होन ॥ ७ ॥ रूप लावण्य सुन्दरता अनोपम। देखी खबकी ताम ॥
पोखाने लगे सभी उसीको। सुनन्दा,' ले नाम ॥ होन ॥ २ ॥ इतने दिन सब जोड से
अ म मे। जोडे से करते काल। आश्चर्य अब क्या करना इसका। अकेली रहगइ पाल॥हो॥३॥
टोले से विछडी हिरणी के सम। विगमुख बनी ते खबकी॥। इत उत फिरती समझे, न

कुछ। अन्य से दूर रहे भड की। हो ॥४॥ पद्म कमल से चरण लाल नरम। करी कर सी
पिण्डि उतार ॥ कदली स्कन्ध जंघ है मंसल। नितम्ब जघन विशाल ॥ हो ॥ ५ ॥ सिंह-
लकी कृपोदरी राजे। चाले गजगजाति चाल। त्रिवली उदर उन्नत हृदय। वहां लक्ष्मी कर
तल लाल ॥ हो ॥ ६ ॥ कम्बु ग्रीवा अनन चंद्र पूर्ण। होष्ट अरूण विम्ब फल। कुरंग
नयनी शुक नाशीका। दांत है श्वेत विमले ॥ हो ॥ ७ ॥ बाल कृष्ण दीर्घ चिकने भलके।
यों सब सुन्दराकार ॥ लावण्यता अंग प्रत्यंग आगे। अपत्सरा जावे हार ॥ हो ॥ ८ ॥
वनदेवी तरह घूमती वन में। युगल वर्ग निहाल। निराधार लख चिन्ते क्या कीजे।
करे कौन संभाल ॥ हो ॥ ९ ॥ ले चलो नाभी कुलकर के ढिग। वे करेगे प्रति पाल।
जची बात तब लेके उसे संग। वहां आये तत्काल ॥ हो ॥ १० ॥ कही हकीगत, बीतक
सारी। यह कन्या निराधार। आपही मालक होजी सबी के। इसकी भी कीजे संभार ॥
हो ॥ ११ ॥ नाभी नरवर देखी सुनन्दा। अनोपम अकृती वान ॥ चिन्ते यह तो
दीसे मुझको। मेरे ऋषभ समान ॥ हो ॥ १२ ॥ कहे सबी से बहुत ठीक है। रहने
दो मेरे पास ॥ वय प्रणमें ऋषभ कुमर की। कर देऊंगा पत्नी यास ॥
हो ॥ १३ ॥ सुन कर युगल सब आनन्द पाये। कहे अहो इसके भाग ॥
ऋषभ कुमरकी बने अर्धांगी। कमी क्या फिर सोहाग ॥ हो ॥ १४ ॥

छुटछुट सब कही तस छोरी । छी नामी नृप स्वीकार ॥ हर्षो ते गुण गाते युगल सब । गये सब वन मझार ॥ हो ॥ १५ ॥ भरमजीके युगल हिग उसको । मेजी नामी कुलकर ॥ । देख प्रभु समक्ष अवधि ज्ञानसे । सरूप उसका जिसपर ॥ हो ॥ १६ ॥ सुनन्दासेम अति हर्षाइ । देवके आपका जोरा ॥ सुमगळा के साथ में रमगइ । अमा प्रेम अखोरा ॥ हो ॥ ॥१७॥ दव मानव सब समझ मनमें । काल प्रभावऐसा पावे । जिसने पुण्य प्रबल्प किये जग । ताके भवसर पद आवे ॥ हो ॥ १८ ॥ सुख २ से सब काल गुजारे । ढाल आठमी माई ॥ ऋपि अमालक कहे आगे अब । रुमोत्सब वरणाइ ॥ हो ॥ २९ ॥ * दोहा ॥ स्वर्गमें रहे शक्रेन्द्रजी । एकदा कर विचार ॥ युवावस्था प्राप्तज भय । श्रीऋषभ देव कुमार ॥ १ ॥ विवाह समय यह आगया । छग्नोत्सव महाण ॥ प्रचारक यही विश्वमें । आदिनाथ भगवान ॥ २ ॥ मैं जाबू बताबू सही । प्रवर्ते कराबू काम ॥ विधि विधान अमानमें । देखु विराबू साज ॥ ३ ॥ सूचित की थी इन्द्राणिय । तेभी हो गइ तैयार । ऋषभ जिनन्द परणावना । उससहा हर्ष अपार ॥ ४ ॥ देव देवी संग परिवरे । इन्द्र इन्द्राणि तत्काल ॥ पायक पर नमी बैठे तहां । अर्ज करे उजमाल ॥५॥ ढाल १ मी ॥ भावीरा देवर लावका रे लाल ॥ प० ॥ लग्नोत्सव ऋषभ देव को रे लालें । वरणु मन्यानुसार हो । लग्नोत्सव ऋषभदेव कोर लाल ॥ टेर ॥ इन्द्र अर्ज करे अवधरीप रे लाल । आप हो जिन वीतराग हो ॥लग्नो॥

विषय भोगे किंचित नहीं रूच रे लाल । तथापि व्यवहार वरतक लाग हो ॥ लग्नो ॥ १ ॥
धर्म के प्रचारक आप हो रे लाल । कर्म के प्रचार कारनार हो ॥ लग्नो ॥ लोक व्यवहार
रावन भणी रे लाल । पाणीग्रहण कीजीये इसवार हो ॥लग्नो॥२॥ सुमंगलाजी ने सुनन्दा
जी रे लाल । परम रूपवती जग सार हो ॥ लग्नो ॥ सामान जोडी मुझ ने तुली रे लाल।
होवो प्रभुजी तैयार हो ॥ लग्नो ॥ ३ ॥ अवधि ज्ञाने श्रीऋषभजी रे लाल । निज भोगा-
वली कर्म जान हो ॥ लग्नो ॥ भोगवे बिन छूटका नहीं रे लाल । जानी मौनस्थ रहे
भगवान हो ॥ लग्नो ॥ ४ ॥ बृद्ध व्यवहार स्वीकार का रे लाल । मौन जान इन्द्र हर्षाय
हो ॥ लग्नो ॥ अभियोगी देवने कही रे लाल । लग्न मंडप बणवाय हो ॥ लग्नो ॥ ५ ॥
सुवर्ण स्थल बणाय के रे लाल । रत्नस्थम्भ खडे कराय हो ॥ लग्नो ॥ चन्द्रवे मणि रत्न
के रे लाल । विचित्र रंगी झलकाय हो ॥ लग्नो ॥ ६ ॥ छबक झुबक माणि मोतिया रे
लाल ॥ स्फटिकरत्न में दिवाल हो ॥ लग्नो ॥ उतंग कामानाकार द्वार
पे रे लाल । माणिरत्न तोरण झाक झमाल हो ॥ लग्नो ॥ ७ ॥ अङ्क रत्न स्थंभ मध्य मे रे
लाल । सौधर्मी सभा अनुहार हो ॥ लग्नो ॥ जाने चन्द्र सूर्य कोटी ऊगीया रे लाल ।
झगामग लगी किरण तार हो ॥ लग्नो ॥ ८ ॥ नर सुर मंडप में पेसतां रे लाल । एक का
अनेक देखाय हो ॥ लग्नो ॥ स्थम्भ २ पर विविध पूतली रे लाल । नाना नृत्य राग रागिणी

गाय हो ॥ लम्रो ॥ ९ ॥ अवर आंगण अलग २ है रे लाल । कोइ छोटी साख रत्न लाल ही ॥ लम्रो ॥ नील रत्न में नीली नीली है रे लाल । पीली पीली सुवर्ण की दीवाल हो ॥ १० ॥ कल्प वृक्ष रत्नों के तहां रच र लाल । स्कन्ध शाखा पत्र फूल फल हो ॥लम्रो॥ सबही दिपे दीपक सारखे रे लाल । सबही स्थान विमल हो ॥ लम्रो ॥ ११ ॥ हीरा पन्ना माणक मोती लगी रे लाल । सब्बी चोकी केइ चवर माल हो ॥ लम्रो ॥ तैसेही विविध रंग की रे लाल । लगाइ चारों तरफ माल हो ॥ लम्रो ॥ १२ ॥ शयनासन विविध प्रकार का रे लाल । चारों ओर दीना बीछाय हो ॥ लम्रो ॥ युगल युगलनी देवी देवता रे लाल । आवे जो आवे सामाय हो ॥ लम्रो ॥ १३ ॥ धमाल लगी यों मण्डप विषे र लाल । केइ नाचे केइ गाय र ॥ लम्रो ॥ अतर अबीर फुलों छांटीयो रे लाल । सुगध रही घम घमाय हो ॥ लम्रो ॥ १४ ॥ देव दुदुभी कसाल नोबतां रे लाल । वार्दित्र चार प्रकार हो ॥ लम्रो ॥ जाति गुन पचास बजायता रे लाल । गरणे गगन झणकार हो ॥लम्रो॥ १५ ॥ सबी के मध्य मणि पीठी का रे लाल । सबी से अधिक दीपाय हो ॥ लम्रो ॥ शाकेन्द्रजी की आठों अग्रसरा रे लाल । सुमगलाजी सुनन्दाजी साथ हो ॥ लम्रो ॥ १६ ॥ कर घर लाइ प्रेमा तुरी रे लाल । करती कितुहल उपहास्य हो ॥ लम्रो ॥ सयोग विधि प्रकासती रे लाल । विषय हृदय में विकास हो ॥ लम्रो ॥ १७ ॥ माणि पीठिका पर बैठाय के रे लाल । शुत

हो ॥ लग्नो ॥ सुगंधी तेल लगाय केरे लाल । कल्दावी चोक
पाक सहस्रपाक लखपाक हो ॥ लग्नो ॥ सुगंधी तेल लगाय केरे लाल । विकास होगया दूर हो ॥ लग्नो ॥
पाक हो ॥ लग्नो ॥ १८ ॥ उगटणा पीठी करीरे लाल । चिकास होगया दूर हो ॥ लग्नो ॥ १९ ॥ गंध
पुष्पोदक सुगंधोदक करीरे लाल । पाखाला तन खुला नूर हो ॥ लग्नो ॥ धूपे धूपित किये उसेरे
कषायिक वस्त्र सेरे लाल । पूछा वपु सिरके बाल हो ॥ लग्नो ॥ २० ॥ कोमल महिन सगन जरी तणारे
लाल । विकसा बदन सुकमाल हे ॥ लग्नो ॥ मांग भरी मोतीयों थकीरे लाल । तामध्य
लाल । लेंगा साडी चोली सजाय हो ॥ लग्नो ॥ गोशीर्ष चंदन तिलक कियेरे लाला । कृष्ण काजल
लालें जमाय हो ॥ लग्नो ॥ २२ ॥ मणि मुकुट शिरपर धरा रे लाल । कंठ में
नयनो में सार हो ॥ लग्नो ॥ मणि का कुंडल ने झूनरा रे लाल ।
अष्टा दश सर हार हो ॥ लग्नो ॥ २२ ॥ मणि मेखला
भुजबंध कंगन कर माय हो ॥ लग्नो ॥ स्तनोंपर बल्ली रचना रचोरे लाल । यों नख शिख
कटि मैं पहनाय हो ॥ लग्नो ॥ २३ ॥ नेपूर पगों में रण झण करेरे लाल । शोभा रूप अनोपम
साज सजाय हो ॥ लग्नो ॥ अपत्सरा लाजी दोनों आगलेरे लाल । इन्द्र सामानिक देव हो ॥
आपार हो ॥ लग्नो ॥ २४ ॥ अन्यस्थान रमणिय विषरे लाल । श्रृंगारे तत्खेव हो ॥ लग्नो ॥ २५ ॥ जरी
लग्नो ॥ ऋषभ कुमर को न्हलाय केरे लाल । अगर तगर कस्तूरी लेपी काय हे ॥ लग्नो ॥ हार तुर्रे
पितास्वर पहनाय करे लाल । अगर तगर कस्तूरी लेपी काय हे ॥

मुगट कुडल करा रे लाल। यथोचित स्थान सजाय हो ॥ लग्नो ॥ २६ ॥ पगमें पन्ही रत्नो तणीरे लाल। दिव्य वाहन पे बैठाय हो ॥ लग्नो ॥ छडीदार चले शक्रन्द्रजीरे लाल। आगे चले जय विजय ललकार हो ॥ लग्नो ॥ २७ ॥ गन्धर्व अणिका के देवतारे लाल। वाजित्र शुभ्रपवास बजाय हो ॥ लग्नो ॥ देव देवी नर नारी सेरे लाल। परवरिये तोरण दिग आय हो ॥ लग्नो ॥ २८ ॥ मगल गीत को गावतीरे लाल। इन्द्राणियों द्वार पे आय हो ॥ लग्नो ॥ सत्कार किया इन्द्र देवकारे लाल। वर राजा को अर्घ्य अर्पाय हो ॥ लग्नो ॥ २९ ॥ वाहन तज पयदल भयेरे लाल। कसुमल पटल डाली गल माय हो ॥ लग्नो ॥ मातृ भुवन में सचारकेरे लाल। रत्नसिंहास बैठाय हो ॥ लग्नो ॥ ३० ॥ हर्षोत्साही दोनों कुवरी रे लाल। लाइ बठाइ प्रभुपास हो ॥ लग्नो ॥ परस्पर प्रेमे निहारता रे लाल। मोह का होगाया विकास हो ॥ लग्नो ॥ ३१ ॥ शमी वृक्ष पिपल वृक्ष की रे लाल। छाल का चूरण जल में घोल हो ॥ लग्नो ॥ लेपन किया कन्या करे रे लाल। बोल ते मगल बोल हो ॥ लग्नो ॥ ३२ ॥ शुभ लग्न चन्द्र जब आवीया रे लाल। तय तस कर मेलन कराय हो ॥ लग्नो ॥ इन्द्र मङ्गल उचारते रे लाल। अग्निशाक अग्नि प्रगटाय हो ॥ लग्नो ॥ ३३ ॥ समिधक्षेप किए ता विधे रे

लाल । गीत वाद्य शब्दे गगनपुरहो ॥ लग्नो ॥ प्रदाक्षिणा कराइ वर वधु भणी रे लाल । लग्न विधि यों किनी तहां सुर हो ॥ लग्नो ॥ ३४ ॥ कर मोचन जय २ सवी बोलीया रे लाल । दुल्हा दुल्हेन के तांय हो ॥ लग्नो ॥ नाभी कुलकर मरू देवी कने रे लाल । इन्द्र इन्द्राणि लाय हो ॥ लग्नो ॥ ३५ ॥ पग लगे तीने मावित्र के रे लाल । मात तात खुशी भये अपार हो ॥ लग्नो ॥ सुखासने तीनों को वैठाय केरे लाल ॥ सबी देव देवी किया नमस्कार हो ॥ लग्नो ॥ ३६ ॥ जय २ करते इन्द्र सुर सबी रे लाल ॥ गये देव लोक मझार हो ॥ लग्नो ॥ ढाल दशमी दूजा खण्डकी रे लाल। ऋषि अमोल कहे ग्रन्थानुसार हो ॥लग्नो॥ २७ ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ अव श्रीऋषभ जिनेश्वर । सुमंगला सुनन्दा साथ ॥ अनाशक्त भोग भोगवे । साता वेदनी वेदन आथ ॥ १ ॥ छे लाख पुर्व अतिक्रमें । ताही समय मझार ॥ बाहु और पीठ मुनि तणे । जीव स्वर्ग से ते वार ॥ २ ॥ सुमंगला की कुंक्षी में । आये चउ दह स्वप्ना देय ॥ प्रभु को सुनाया पद्मनी । तव ऋषभेश्वर केय ॥ ३ ॥ चक्रवर्ती सुत होयगा। नव महिने सवा सुखे जाय ॥ पुत्र पुत्री युगल जन्मीया। "भरत ब्राह्मी नाम" ठाय ॥ ४ ॥ फिर सुबाऊ महापीठका । जीव आये स्वर्ग छोड ॥ सुनन्द कुंक्षे अवतरे । जन्मे तेही सजोड ॥५॥ "बाहूबली" ने "सुंदरी"। अभिधान तस स्थपाय ॥ और भी सुनन्दा

रेवती ॥ ए० ॥ प्रथम राजेश्वर ऋषभ जिन । बने जानी जीताचार रे ॥ राजा रोहण विधि
सुर नर । करा विनय भाव प्रचार रे ॥प्र ॥ टेर ॥ उस अवसर काल प्रभावसे । कल्पवृक्ष
का घटा प्रभावरे ॥ इच्छित वस्तु न मिलनसे । युगलों में हुआ वे वनावरे ॥ प्रथम ॥ १ ॥
क्रोध अग्नि तब प्रगटी । परस्पर करते क्लेश रे । हकार मकार धिक्कार की । नीति
उलंघी करे द्वेष रे ॥ प्रथम ॥ २ ॥ अनुचित वरताव लखी तदा । शाने दाने युगल कर
विचार रे ॥ मिल आये ऋषभ जिनेश ढिग । नरमाइ करत उच्चारे ॥ प्र ॥
॥ ३ ॥ क्लेश के ताप सन्ताप से । पीडित जन की करो सार रे ॥ अवधि ज्ञान से
कारण जानके । ऋषभश्वेर कहे उस वार रे ॥ प्र ॥ ४ ॥ मर्याद भंग करता भणी ।
दंडित करना उचित रे ॥ राजा चाहिये इस कारणे । वही करे परजा का हित रे ॥ प्र ॥
५ ॥ राजापेण योग्य मनुष्य को । आसन ऊंचे बैठाय रे ॥ जलाभिशेष करे सब मिली ।
तब त प्रभाविक थाय रे ॥ प्र ॥ ६ ॥ सेना चतुरंगिणी संग्रह । शाशन जनपद जमाय रे ॥
तब सुखी तुम सब बनो । युगल नरमी कहे जिन तांय रे ॥ प्र ॥ ७ ॥ आपही बनो हम
राजवी । आप सम और न देखाय रे ॥ उपेक्षा न कीजीये हम तणी । लीयिये हम को
निभाय रे ॥ प्र ॥ ८ ॥ प्रभुजी कहे तुम सब मिली । नाभी कुलकर के पास रे ॥ जा कर
अर्ज गुजारीये । पुरुषोत्तम पूरे तुम आस रे ॥ प्र ॥ ९ ॥ अनुसरी आज्ञा प्रभु तणी ।

आए नाभीजी पे करी अरदास रे ॥ किसी अरूप नर को करो राजवी । जो करे छेदा दु ख नाश रे ॥ प्र ॥ १० ॥ अर्ज मानी सभी युगल की । नाभी कुलकर फरमाय रे ॥ ऋषभ राजा थनो तुम तणा । यों सुनी युगल हर्षाय रे ॥ प्र ॥ ११ ॥ तत्क्षीण आये प्रभु जी कने । विज्ञप्ती कर कर जोड़ रे ॥ नाभी कुलकर ने आपी को । राजा किया हम सिर-मोड़ रे ॥ प्र ॥ १२ ॥ हम सब आकर आत अभी । छात अभिशेष मोय रे ॥ यों कही गये सब युगलिए । नीर दुइन लग साय रे ॥ प्र ॥ १३ ॥ आसन हिला तब इन्द्र का । अवधि ज्ञान लगाय रे ॥ अभिशेष समय जान जिनद का । देव संग तत्क्षीण आय रे ॥ प्र ॥ १४ ॥ वेदीका रची सुवर्ण तणी । पांडुक सिला समान रे ॥ ऊपर सिंहासन स्थापिया । मणि मय दिव्य सुभमान रे ॥ प्र ॥ १५ ॥ पूर्वाभिमुख स्वामि मगी । सिंहासन पे बैठाय रे ॥ मागधादि तीर्थज तणा । जल अभियागी से मगाय रे ॥ प्र ॥ १६ ॥ इन्द्रादि देव सब मिल करी । राजाभिशेष किया तत्काल रे ॥ जय जय करे ऊंची वयता । निष्कम्प रहो भूपाल रे ॥प्र॥१७॥ शुभ्र स्वच्छ शशी कला समा । वस्त्र प्रभु को पहनाय रे ॥ भूषण मुकुट कुण्डलादिके । अलकृत किये महा रायरे ॥ प्र ॥ १८ ॥ इसही वक्त पद्म द्रोण में । युगलियों जल ले आय रे । देख महिमा सर्वेश्वर की । हर्षाश्चर्य न समाये रे ॥ प्र ॥ १९ ॥ एकान्त खड़े चित्त चिन्तवे । अपन अभिशेष करें केम रे ॥

मस्तके जल प्रक्षेप ते। भींजे वस्त्र होवे अक्षेम रे ॥ प्र ॥ २० ॥ अभिशेष तो करना सही। खूले चरणों पे दिया जल डाल रे ॥ देख के विनय विचक्षणता। इन्द्र भये आते खुशाल रे ॥ प्र ॥ २१ ॥ धनेन्द्र देव बोलाय के। इन्द्र देवे आदेश रे ॥ राजधानी यहाँ वसाइ ये ॥ देव लोकसे सोभे विशेष रे ॥ प्र ॥ २२ ॥शाश्वत स्वस्तिक माहि परे। गंगा सिन्धु वेताडो दधी मध्यरे ॥ आनादि से प्रथम नगर तहां वसे। वसावो ते सध्य रे ॥ प्र ॥ २३ ॥ नाम अयोध्या अनादिका। किन्तु विनय युगलों का निहाल रे ॥ हर्षित हूआ मेरा मन अति। "विनिता" नाम रखे हाल रे ॥ प्र ॥ २४ ॥ यों कही स्वर्ग माधव गये ॥ वीस लाख पूर्व आयु माय रे ॥ ऋषभ जिनन्द राजा बने। ढाल एकादश अमोलक गाय रे ॥ प्र ॥ २५ ॥

* ॥ दोहा ॥ इन्द्र आज्ञा श्रवण करी। कुवेर अति हर्षाय ॥ प्रथम नगर वसावनो। जो आदर्श जग थाय ॥ १ ॥ देव लोक से विशेषता। यही होवे इसस्थान ॥ यहां है मेहल विचित्रता। वहां एक सरीखे विमान ॥ २ ॥ देव शक्ति से तत्क्षिण। सामग्री जगमांय ॥ नगरी वसाने की सबी। संहरी लीनी मंगाय ॥ ३ ॥ कमी न रहे कोइ वस्तु की। कसर न काढे कोय ॥ तो चतुरता सुद्ध श्रेय। चूंप चित्त यों होय ॥ ४ ॥ देवानु मनसाणु है। लागे कितनी वार ॥ कैसी वसाइ नगरीने। ते सुणजो अधिकार ॥ ५ ॥*॥ ढाल १२ मी ॥

नगरी खूब वणी छे जी। ज्यांरा सिद्ध धणी छे जी॥ए०॥नगरी श्रेष्ठ वनी छे जी।ऋषभेश्वर

उसके धणी के जी ॥ टेर ॥ बारा योजनकी लम्बाइ । नव योजन चौडाई ॥ प्रमाण अगुल प्रथम जिनका । तासु प्रपती लगाई ॥ नगरी ॥ १ ॥ तस चौगिरदा कोट सुवर्ण का । उतग धनुष्याकार ॥ रत्न कगुरे पांच वर्ण के । जगमगते कीर्ण प्रसार ॥ नगरा ॥ २ ॥ नीचे चौडा मध्य में सकडा । उपर पतला कोट । मध्य में स्थान २ पर बुर जों । सयक्षित शस्त्र अरु ओट ॥ नगरी ॥ ३ ॥ उतग द्वार कमानाकार । ऊंचे से आगे चाव ॥ विविध रगी सुवर्ण रत्न में । अरियण के मद तोडे ॥ न ॥ ४ ॥ ऊंडी खाइ कोट बाहिर गिर्द । चर सकडी माय चौडी ॥ पूरित जल दुष्प्रवेश पक्की । पथ पर अच्छादित पोडी ॥ न ॥ ५ ॥ नगरी मध्य में महल प्रभु लिए । बेयालीस मजल बनाया ॥ शिखर उत्तम मणि रत्न में दीपे । जाणे गगन लगाया ॥ न ॥ ६ ॥ महल मध्य करी सभा सौधर्मी । पूर्वोक्त मडप अनुसार ॥ मध्यस्थभ और अन्त में स्थभ है । बेठ मनुष्यों हजार ॥ न ॥ ७ । मणि रयण म कुन्दित तसिया । बऊ रगी क्यों जाजम बिछाई ॥ स्थभ लिंग न्यायसिंहासन । छत्र युक्त चमर ५ जा ॥ न ॥ ८ ॥ पिता पुत्र पौत्रादिक स्वजन । मत्री उमराव सामत सारे ॥ यथोचित सिंहासन भद्रासन । रत्नों के विविध श्रृंगार ॥ न ॥ ९ ॥ चा चोफेर विविध न्याय लय । कमरे बैठन सजाये ॥ महल के प्रत्येक मजलमें । भोगोपभोग साज जमाये ॥ न ॥ १० ॥ चारों ओर मजल २ उतर ते । सात भूमीतक लाये । आवों महल हवेली

हाटों । सामन्य ग्रह बनाये ॥ न ॥ ११ ॥ केइ शिखरी केइ गुमटी केइ । चांदनी छती खपरेलु । चौकोने तीकोने गोल लम्ब केइ । आठादि चौषट पहलु ॥ न ॥ १२ ॥ सबही सोने रूपे रत्न मय ॥ मध्य विभाग योग बटाये ॥ भोजन शयन बैठक गमन । गुप्त चौडे जहां जैसे चहाये ॥ न ॥ १३ ॥ प्रत्येक घरों में उचित्त स्थाने सब । नेहर नीर की वहाई । तैसेही अन्धकार नव्यापे । मणि प्रकाशिक जडाई ॥ न ॥ १४ ॥ तीबारा चौवारा अटारी । ग्वाक्ष जाली आले भंडारे ॥ कोटडी ओटली स्थान नीत निवृतन । सबही घरों में किये सारे ॥ न ॥ १५ ॥ बारी द्वारी अगाडी पीछाडी । सांकल कोंडा कडीयाँ । यत्रिक तैलिक संत्रिक युक्ति । योग्यस्थान में जडियाँ ॥ न ॥ १६ ॥ एकवट द्वविट त्रीविट चौवट । बहुवट गोल बजारो ॥ चौक चौगान पंथ धूल कचरे विन । सुसन्धित वन्धित पारो ॥ न ॥ १७ ॥ गमनागमन नर पशु वाहन के । मार्ग विभक्त बेचाए । मुख्य महल से गोपुर तांई । योग्य सब साज सजाए ॥ न ॥ १८ ॥ निशी समय भी दिन के समानी । सब स्थान मणियों प्रकाशे ॥ मानों विमान पडा टूट स्वर्ग से । देखी धनद का मन विकासे ॥न॥१९॥ वस्त्र भूषण सोनैये रुपैये । द्रव्य ढग तहां लगाये ॥ फिर वैश्रमण ऋषभ देवजी । पास उमंगे आये ॥ न ॥ २० ॥ हाथ जोड नम्र हो करे अर्जी । स्वामी भट यह मेरी स्वीकारो । 'विनिता' राजधानी सुखदानी । कृपाकर माँय पधारो

॥ न ॥ २१ ॥ मानी विनती सभी परिवार सग ॥ नगरी में प्रभुजी आये ॥ अनक युगल गणभी धे साथे । वेस ठाठ विस्माये ॥ न ॥ २२ ॥ सौधर्मा सभा में पधारे । न्याय सिंहासने विराजे ॥ यथोचित आसने सब बैठे । जमा इन्द्रसभा सा साजे ॥ न ॥ २३ ॥ यथायोग्य स्थान प्रभुजी ने । दीने सबीको बक्साई ॥ उसम आये रहने लगे सब । यथेच्छा सुख माई ॥ न ॥ २४ ॥ जगल में फिरते गज गाजी । बैल खचर ने ऊट ॥ लाये पकड़ आप आपकी शालमें । बांधी दिये तस खूट ॥ न ॥ २५ ॥ काष्ट सन्च कर रथ बनाए । करी चतुरंगी सेना तैयार ॥ युगल मनुष्या में योग्य देखी । बनाय होवे दार ॥ म ॥ २६ ॥ महामत्री मंत्री भण्डारी । फोजदार कोटवाल ॥ सुभट पायदल आदि चपरा । स्थापन किये उसकाल ॥ म ॥ २७ ॥ राज काज की सबी व्यवस्था । दीनी प्रभु जमाइ ॥ अपने २ होवे की करतूत । दीनी उनको समजाइ ॥ न ॥ २८ ॥ प्रथम राजधानी की इकीगत । हाल द्रव्यधानी मांइ ॥ कवि अमोलक कहे भोला । अब कर्म भूमिकी प्रवृत्ति पाइ ॥ नगरी ॥ २९ ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ काल प्रभावे कल्प वृक्ष । इच्छा पूरे नाय ॥ तब युगल झगडन लगे । ले नें वस्तु जो पाय ॥ १ ॥ करता फिरीयाद जो आय के । तब प्रतिपक्षी ताप । पकड मंगा ते सुभट से । दोनों को अरे रखाय ॥ २ ॥ दीलक पूछते उन्हें तदा । ऋषभ महाराज उसवार ॥ कबूले कराके उसी मुजब ।

ठेहराते गुन्हेगार ॥ ३ ॥ सजा फरमाते तब उसे । दिलाते फटके मार । बैठाते कारा गृह विषे । घात हुइ यह जहार ॥ ४ ॥ धाक पडी सब लोकमे । अटके करन अन्याय ॥ यों साशन जमा सब परे । झगडा कम कराय ॥ ५ ॥ ❁ ॥ ढाल १३ ॥ श्री सीमंधर स्वाम । साशन स्वामी रे ॥ ए० ॥ कल्प वृक्ष प्रभाव । नष्ट जब पायांरे । तब भारत वासी लोक । क्षुधाए घबराया रे ॥ १ ॥ कंद मूल पत्र फूल । फल मृतिका आदि रे । जो आवे तस हाथ । रहे तस स्वादी रे ॥ २ ॥ कच्ची अपक्व वस्तु । पचन नहीं थावे रे ॥ उदर व्याधी प्रगटाय । समझ नहीं पावे रे ॥ ३ ॥ आवे प्रभुजी पास । फूटे पेट तांइ रे ॥ दुःख का नाम न आय । चिन्ह दरशाई रे ॥ ४ ॥ अवधि ज्ञान पसाय । प्रभुजी भेद पाया रे । साता दाता वृक्ष । वनमें बतायारे ॥ ५ ॥ स्वभाविक ऊगा धान । चौवीस प्रकारो रे ॥ कहे युगल के तांय । इसे तुम आहारो रे ॥ ६ ॥ चांवल गेहू जवार । बाजरा मकाइ रे ॥ चवले तूअर उडद । नाम समझाइ रे ॥ ७ ॥ कांगुणी राला कोद्रव । राजगिरा वरटी रे ॥ तिल चिणा मूगादि जो पाय । खावे योंइ सरटीरे ॥ ८ ॥ फोंतरे तृस फस तास । अटके गले मांइ रे । ताते होष्ट छिलाय । वेदना थाई रे ॥ ९ ॥ प्रभु को आकर बताय । प्रभुजी फरमावे रे ॥ मशलो कर पुट मांय । तब शुद्ध धान थावे रे ॥ १० ॥ उस खाने से पेट भराय । मुह न छोलावेरे ॥ प्रभुजी के कहे प्रमान । ते तब खावे रे ॥ ११ ॥ किन्तु वस्तु

अपक्व । पचन होवे नाहीं रे ॥ तब पुन प्रभुपे आय । उदर दुखाइ रे ॥ १२ ॥ तब बतावे भगवान । पत्र द्रोण माये रे। पाणी में भीजाबो नाज । नरम ते थाये रे ॥ १३ ॥ तैसेही फरके खाय । तोभी पेट दूखरे ॥ आवे प्रभु पास दोड । मत्रिक अन फूकेरे ॥ १४ ॥ जब कहे प्रभुजी तास । भजली कॉम्ब माहिरे ॥ दवा रखी करो उष्ण । फिर जायो म्हाई रे ॥ १५ ॥ अति स्निग्ध रूक्ष काल माय । अग्नि न प्रगटाय रे ॥ थाया मध्यस्त जब काल । योग तैसा थावे रे ॥ १६ ॥ घिसाय परस्पर बाँस । वायु बल योगे रे । प्रगटी तासे अगार । प्रणय शुष्क भागे रे ॥ १७ ॥ देखा उसे चमकाय । युगल नर देखे रे । आना प्रगटा अपर रत्न । खुशी हो विशेषेर ॥ १८ ॥ दोडे उस लेने काज । मकड ते हात रे ॥ दे चम्क अग जलाय । डरे घबराते रे ॥ १९ ॥ कहे पूकार देखो भूत । कैसा पिकारा सोर ॥ दूर न्हाखे रह दख । लिंग आई काले रे ॥ २० ॥ करे जा-प्रभुपे फिरियाद । वन के माहीरे ॥ प्रगटा अपरा भूत । रहा सबे खाइ रे ॥ २१ ॥ तस निग्रह-करो इसबक । नहीं तो शुल्म करसीर ॥ प्रभु समझे ज्ञान मांय । कहे नहीं डरसी रे ॥ २२ ॥ जो दुःखे तुमारा पेट । तस की यह दवाइ रे ॥ ग्रहण करने की युक्ति तास । उनको बताइ रे ॥ २३ ॥ इस में पचा न्हाखो अन्न । सो पचन ज थासी रे ॥ युगल डाले उस में धान्य । पेट तस-पासी ॥ २४ ॥ फिर मांगु अहो अग्नि देव । आहार हमे दीज रे ॥ किन्तु

पुनर्वे नहीं पाय । तब तो ते खीजे रे ॥ २५ ॥ प्रभु से करे अरदास । वह तो अति भूखा रें ॥ देवें सोइ खाजाय । क्या आला सूकारे ॥ २६ ॥ अति भद्रिक जानी तास । प्रभु को दया आई रे ॥ ढाल त्रयोदशमी येह । अमोलक गाईरे ॥ २७ ॥ * ॥ दोहा ॥ देखके दिश मनुष्यों की । क्षुधा वेदनी सन्ताप । दयाद्र हृदय जिनेन्द्रजी । सुख उपाय सोचे आप ॥ १ ॥ शिल्प कला स्थापन किये । सुखोपजीवी थाय ॥ जिताचार जिन प्रथम का । कर्म तासे प्रगटाय ॥ २ ॥ गजारूढ हो नीकले । युगली ये एकत्र थाय ॥ अर्ज करे अहो नाथजी । कल्प वृक्ष रहे रूसाय ॥ ३ ॥ अब तो कल्प वृक्ष आप हो । एकही सुख दातार ॥ सुख उपाय दाखे घणे । पण पूर्ण सुख नहीं थाय ॥ ४ ॥ प्रभुजी कहे चिन्ता तजो । यही अनादी रीत ॥ त्रिविध कर्म अब प्रगट से । सुख कर धरो प्रतीत ॥ ५ ॥ * ॥ ढाल १४ मी ॥ महावीरजी री पालखडी रत्ने जडी ॥ए०॥ ऋषभराय । गजारूढ भये थके । ऋषभराय । युगलों से हुक्म फरमाए ॥ वारी जाऊं ऋषभ जिन राजकी ॥ऋषभ राय । मृतिका पिण्ड मंगावीयो । ऋषभराय । भींजोइ पाणी में खुंदए ॥ वारी जाऊ ऋषभ जिनराजकी ॥ १ ॥ऋ॥ कोमल बनी मट्टी लेय ने । ऋ । गोला कृत्ती बनाय ॥ वारी ॥ऋ॥ कुंभबनायो तेहनो ।ऋ। थापी थेपी यथोचित्त जमाय ॥ वारी ॥ २ ॥ ऋ । अग्नि में तास पचावीयो । ऋ । दीनो युगलिए के हाथ ॥ वारी ॥

॥ ऋ ॥ कहे अर्ध घट उदक पूराय क । ऋ । गरम करीष उसीके तांय ॥ धारी ॥
॥ ऋ ॥ तामहिं अन्न डाली ० । ऋ । अप सप ते सीझ जाय ॥ धारी ॥ २ ॥
ऋ । घट शीतल करी काढ़िए । ऋ । खाने से पेट भराय ॥ धारी ॥ ऋ ॥ उदर व्याधी
फिर न हुए । ऋ ॥देखी सुनी नयी उपाय ॥ धारी ॥४॥ऋ। यह कल। जिनों ने धार न करी
म । लगे वैसे काम बनाय ॥ धारी ॥ऋ। कुम्भकार तेही कह लावीये । ऋ । प्रथम जाति यहं
स्थापाय ॥ धारी ॥ ५ ॥ ऋ । शीत ताप दुःख बचावने ॥ ऋ । मकान की आवश्यकता
जाण ॥ धारी ॥ ऋ । सीलावट सूतार स्थापन किये । ऋ । गृह युक्ति बताइ भगवान ॥
धारी ॥ ६ ॥ ऋ ॥ लज्जा रु तन रक्षा भणी । ऋ । वस्त्र की हुई जरूर ॥धारी॥ऋ॥स्वाभाविक
रुग कपासके । ऋ । स्वाद बताये उनको हजूर ॥ धारी ॥ ७ ॥ ऋ ॥ पींजने कातन बुनने
के । ऋ । उपकरण किये तैयार ॥ धारी ॥ ऋ । बनकर कौम स्थापन करी । ऋ । हुआ
वस्त्रापका बाहिप्पकार ॥ धारी ॥ ८ ॥ ऋ । केश नख वृद्धि होने लगे । ऋ । ताहीं के छेदन
काम ॥ धारी ॥ऋ। नापिक ज्ञाति स्थापित हुइ । ऋ । शस्त्र युक्ति सिखाई ताम॥धारी॥९॥ऋ।
यों पांच शिल्प मुख्य प्रथम भए । ऋ । आगे गाडे को चलाय ॥ धारी ॥ ऋ । प्रत्येक के
बीस,२ भेद हो । ऋ । सो प्रकार शिल्प बन जाय ॥ धारी ॥ १० ॥ ऋ । सारे जग की
उप जीविका । ऋ । तीन कर्म प्रगट किये ताम ॥ धारी ॥ ऋ । मस्सी,

मस्सी, कस्सी नाम तस । ऋ । इन से होवे सब काम ॥ वारी ॥ ११ ॥ ऋ । राजा
अस्सी ते शस्त्र अस्त्र कला । ऋ । धनुर्वेदादि जन को बताया ॥ वारी ॥ ऋ । राजा
से सूभट लगे । ऋ । उपजीवी हो अरी को भगाय ॥ वारी ॥ १२ ॥ ऋ । मस्सी-से लेखन
कला करी । ऋ । वस्तु संग्रह व्यय करन हिंसाब ॥ वारी ॥ वणिक वर्ग ताही ग्रही । ऋ ।
वैश्य वर्ण भए सिताब ॥ वारी ॥१३॥ ऋ ॥ कस्सी-से कृषी कर्म स्थापीया । ऋ । धान्य
वनस्पति सबी प्रकार ॥ वारी ॥ ऋ ॥ उपजावी उपजीवी बने । ऋ सूद्र काम का व्यवहार
॥ वारी ॥ १४ ॥ ऋ ॥ उपजक संचक ने रक्षका । ऋ । यो तीन वर्ण के तीना कर्म ॥ वारी
॥ ऋ । शुद्र वैश्य रू क्षत्री का । ऋ । प्रगट हुआ तब धर्म ॥ वारी ॥ १५ ॥ ऋ । ऐसेही
चार कुल स्थापीए । ऋ । उग्र भोग राज क्षत्री होय ॥ वारी ॥ ऋ । परजाके अधिकार
संचने । ऋ । वरिष्ट जन जान सोय ॥ वारी ॥ १६ ॥ ऋ । उग्रकुल दई अधिकारिया । ऋ ।
न्यायाधिश कोटवाल ॥ वारी ॥ ऋ । अन्याय वारक न्याय पालका ।ऋ।चले चलावे सुनीति
चाल ॥ वारी ॥ १७ ॥ ऋ । भोग कुल मंत्री गण को कहे । ऋ । ज्यों इन्द्र के त्रयत्रिसक
देव॥वारी॥ऋ। गुरू समान पूज्यनीक ये । ऋ । हित शिक्ष सम्मती प्रक्षेव ॥ वारी ॥ १८ ॥
ऋ । राजकुल-प्रभुके सायना । ऋ । उमरावादि के सोभाय ॥ वारी ॥ ऋ । बाकी रहे सो
सबी क्षत्रीय । ऋ । जो करे सबी जन को सहाय ॥ वारी ॥ १९ ॥ ऋ । नीति चार सुचवी

तदा । अ । साम दाम दव और भेद ॥ धारी ॥ अ । सामन से विशेष तक । अ । वशी करण मेटण मन खेद ॥ धारी ॥ २० ॥ अ । साम सो युक्ता प्रयुक्ति से । अ । भेष्ट भाणि समजाय ॥ धारी ॥ अ ॥ दाम-सो लोभी को घनावि दे । अ । कामने लखे चलाय ॥ धारी ॥ २१ ॥ अ । दवसो-निर्यसे दबित करे । अ । दबे निज आज्ञा मनाय ॥ धारी ॥ अ । भेद सो-फूट पराय के । अ । आसी का देवे फसाय ॥ धारी ॥ २२ ॥ अ । प्रजाकी वृद्धी हुइ घणी । अ । तव तास किये दो विभाग ॥धारी॥ अ । भेणि प्रभेणि नाम से ।अ। अठारा २ भेद तस लाग ॥ धारी ॥ २३ ॥ अ । कुभकार मोली कृषी वणंकरा । अ । दरजी चूडीगर चित्रेकार ॥ धारी ॥ अ । कलाल तबंमाली रंगरेज ने ॥ अ । गोपील वरीर कहार ॥ धारी ॥ २४ ॥ अ । तेली धोबी हलवाइ ने । अ । नायिके वर्धारे सीसंगर ॥ धारी ॥ अ । संभ्रही कोली कुचीगेरा । अ । कागजी रेवारी ठठेरे ॥ धारी ॥२५॥ अ । पटवों सोनार मांसमूजीयों । अ । सिर्वार चामारे सुतारे ॥ धारी ॥ अ । धीवरे गिरे सिकलगिरी । अ । कासारी वणिकै छत्तीसं सार ॥ धारी ॥२६ ॥ अ ॥ यों कोम बने परजातने । अ । सबी करे सुख से रूजगार ॥ धारी ॥ अ । शाल चोथमी अमोलक कहे । मयमराप । आगे विद्या को करे प्रचार ॥ धारी ॥ २७ ॥ * ॥ दोहा ॥ विनीता नगरी अनुसार से । ग्रामपुर बसे अनेक ॥ ऐसा देखी सीखीये । कोमकला नर टोष ॥ १ ॥ व्यवसाय फेलातदा । उपजी

विका के काम ॥ आटे साटे वस्तु देवते । लेवते जिसे जोहाम ॥२॥ तथापि विद्या विज्ञान
की । आवश्यकता प्रभु जाण ॥ प्रथम अपने कुटुम्बसे । प्रसारन प्रमान ॥ ३ ॥ भरत अने
बाहु बलीजी ।जेष्ट पुत्र दोय तांय ॥ ब्राह्मी सुंदरी दो पुत्रीयो । चारों को ढिग बैठाय ॥४॥
श्रीऋषभ जिन पभणे । धरिये दत्त चित्त ध्यान ॥ मूल जगत् स्थिति तणा । धारो जो
कह्व विज्ञान ॥ ५ ॥ ढाल १५ मी ॥ बलीहारी हो सद्गुरू जी आपरा ज्ञानकी जी ॥ ए० ॥
बलीहारी हो ऋषभेश्वर प्रभु उपकारीया जी ॥ दइ विज्ञान विद्या दान सुग्व प्रसारीया
जी ॥ टेर ॥ प्रथम पुत्री ब्राह्मी के तांग लिपी सिग्वावता जी । धरकर दक्षिण हाथ अक्षर
बतावता जी ॥ अकरादि सोलास्वर । ककारादि व्यजन अनुसर । बत्तीस, संयुक्त चार
अक्षर । दोनो सयोगे रस्व दीर्घ कर । शब्द पदादि योग ता का उच्चारिया जी ॥ बली ॥१॥
अष्टदश प्रकार लिपी भेद भाखीया जी॥ आगे देशादि भेदो में उपयोगी भासीया
जी ॥ हंस भूतणी यक्ष उदालो । यवनी तुरकी कीरी द्राविडी । सैंधवी मालवी नाडी
नागरी । पारसी अनिमित वणिक लाडली । चाणकी और मूलदेवी लिपी अठारीया जी ॥
बली ॥ २ ॥ दूसरी पुत्री सुदरी तांय हाथ डावा थकी जी । अंक से गणित विद्या पढाई ।
उपयोगी जे सवी जी । एक से नव अंक की अकृति । बिन्दू भेद मिलान प्रकृती । एकसो
चौराण अंककी कृती । उच्चार विचार दर्शाये प्रती ॥ दोनो विद्या सबीका मूल वनिता

स्थंभे मेघवृष्टी के तंत्र। गीतगानं नालमान के जंत्रकलातिष्टि आरामरोपण धर्म विचारियां जी ॥ बली ॥ ९ ॥ अंगगोपनं ने शकुनसार क्रिया कल्पना जी॥ प्रशादनीती धर्म की नीती संस्कृत जल्पना जी ॥ वणिकवृत्ती सुवर्णसुद्धी। सुरभीतेल करण की विधि। लीला संचरण सुवर्णरत्नशुद्धि। गजतुरी नारी नर लक्षण वुद्धि। अष्टादशों लिपी परिछेद वस्तुशुद्धि सारीया जी ॥ बली ॥१०॥ तत्कालसुद्धि वस्तुसिद्धि वैद्यक्रियां करी जी ॥ कामक्रिया घटभ्रमण सार पासा सिरि जी ।। अंजनयोग्य ने चूर्णयोग्य। हस्तलाघव नाचनमंन्योग। भोग विधि वणिजउद्योग। मुखमंडन कथाकथनोग। पुष्प गुथन अन्योक्ति काव्यशक्ति उचारिया जी ॥ बली ॥ ११ ॥ आभरणज्ञान रखन अभिधान भृत्योपचार ने जी। गृहव्यवस्था संचयकरण निराकरण कारणे जी॥शालीखण्डण,धान्यरंधन।वीणानाद केशबंधन। वीतंडवाद अकसंधन। लोकव्यवहार सत्यासत्य साधन॥ अत्याक्षरी प्रश्नप्रहेली आतम विचारिया जी ॥ बली ॥ १२ ॥ अठाणु भाईकों सर्व कला भरत सिखादइ जी। संतती अनियमित ताम सबकि पेदा भइजी। ऋषभ देवजी का जिस प्रकार। लग्न सम्बन्ध किया सुर जहार। वैसेही जग के सब नर नार। परकी कन्या से जोडे व्यवहार। सोई भाइ का भया व्याह परिवार बधारियाजी ॥ बली ॥ १३ ॥ कुल वधु को ब्राह्मी, सुंदरी कला सिख दइजी। यों विद्याकर्म जग माय प्रसिद्ध पाये सहीजी॥ये माता पिता है हमारे

। ये पुत्र पुत्री है प्यारे । परस्पर ममत्व बन्ध हुआ स्यारे । स्वजन सम्बन्धी ऐसा परिवारे ॥ चूडा कर्मादि सोळे संस्कार उत्सव प्रचारियाजी ॥ चली ॥ १४ ॥ यद्यपि आरम्भ के सब काम जिनेन्द्र चलावीये जी । ये संसारी प्रभुजी दया उनकी बतावीये जी ॥ ये तीर्थंकरका जीताचार । प्रथम जिन करते इस प्रकार । जहांतक रहे संसार मझार । । साधुजी का भिन्न आचार ॥ अनादि रीति दर्शाक दास पन्दरे अमोल उच्चारिया जी ॥ चली ॥ १५ ॥ ॐ ॥ द्वीतियखण्ड उपसंहार हरिगीत छन्द ॥ षट आराका अधिकार युगल कुलकर की रीति भणी । ऋषभदेव जन्मोत्सव पाणी ग्रहण विधि आदि गुणी ॥ अनियामित सत्ती जन्म मोह बन्धन प्राम बासाधीया ॥ विद्या कला प्रचार यह अधिकार इसम गावीया ॥ १ ॥ द्वीतिये खण्ड पवरा ढाळ चरित्र रसाळ ऋषभ प्रभुका कहा ॥ अनुकरणीय जे कृतरूप तस प्रही भव्य लेते हैं सदा ॥ अब दीक्षा तपस्या दान धर्म मण्डान मरूप सुणी जी प ॥ जिनेन्द्र गुण वर्णन अमोलक हिरी सिरी सुख लीजी ए ॥ २ ॥

शास्त्रोद्धारक बालब्रह्मचारी श्री अमोलकऋषीजी महाराज प्रणित
श्री ऋषभदेव भगवान् चरित्रस्य द्वीतिय खण्डम् समाप्तम्

अथ तृतिय खण्डनम्--धर्मप्रचार

दोहा ॥ अरिहंत सिद्ध साधु भणी। वारम्वार नमस्कार ॥ श्री ऋषभदेव चरित्र का। कहुं तृतिय अधिकार ॥ १ ॥ श्री आदि नाथ प्रताप से। भारतवर्ष मझार ॥ रचना बनी महाविदेह जिसी। सुखी बना संसार ॥ २ ॥ अब जो स्वामी धर्म की। तासु पूर्ती काम ॥ प्रवर्ती ऋषभदेव की। होवे सब सुख धाम ॥ ३ ॥ राज्याभिशेष हुए पछे। पूर्व त्रेषट[६३] लाख ॥ पालन की परजा भणी। बृद्धी हुइ वट शाख ॥ ४ ॥ देखा देखी वस गये। केई शेहर केई ग्राम ॥ तैसेही प्रेक्षी कर्म की। प्रवर्ती हुइ तमाम ॥ ५ ॥ * ॥ ढाल १ ली ॥ श्रीजिन आजित नमुं जयकारी ॥ ए० ॥ श्रीआदिश्वर परम वैरागी। सज्ज बनने को त्यागी जी ॥ भोगावली में आये भोग खपाये। अब शिव सुख से लव लागी जी ॥ टेर ॥ १ ॥ तिण अवसर वसंत ऋतु प्रगटाणी। सब वनराइ फुलाणी जी ॥ तारुण्य वय के नर नारी ज्यों। बृक्ष लता सोभाणी जी ॥ श्री ॥ २ ॥ मनमथ वृद्धी से जन मन फूले।

वन क्रीडा को उमाए जी ॥ वस्त्रा भूषण सज हो मित्र सग । बाग बगीचे में आए जी ॥ श्री ॥ ३ ॥ ऋषभदेवजी भी रूच्यानुसारे । पुत्र सामत परिवारो जी ॥ आये नन्दन वन के मांही । सोमे मानो बसत अवतारो जी ॥ श्री ॥ ४ ॥ बैठे सिंहासन निरखत क्रीडा । उपना मन में विचारो जी ॥ यह क्रीडा तुच्छ स्वर्ग के आगे । देखो लुब्धे कैसे नर नारोजी ॥ श्री ॥ ५ ॥ मैंभी इन्हीके सग में रह करा बन रहा ससारी जी ॥ किन्तु अब मुझ उचित नहीं है । करना शुनकी ख्वारीजी ॥ श्री ॥ ६ ॥ मोह मुग्ध जग लग रह्यो इसमे । यह है विटम्बना कारीजी ॥ मुझने तो अब शिव साधन की । करना चाहिए तैयारी जी ॥ श्री ॥ ७ ॥ इत्यादि विचार से टूटा । मोह बन्धन तत्कालोजी ॥ परित्याग करना जग जाल का । बनी बुद्धि उजमालो जी ॥ श्री ॥ ८ ॥ ता समय ब्रह्म देव लोक के । रिष्ठ प्रतर के माहीजी । आसन चला लोकांतिक देव का । प्रभु का विचार जाण्याइ जी ॥ श्री ॥ ९ ॥ सारस्वत आदित्य वन्हि , वरुण । गर्दतोय तुषित देवाजी ॥ अव्याबाध मरुत रिष्टे नाम के । करण प्रभुकी सेवाजी ॥ श्री ॥ १० ॥ आया ऋषभ प्रभुजीके सम्मुख । सिरसावर्त 'अजली' ठाइजी ॥ अज करे अहो जिनराजजी । सुणेय विश्व लगाइ जी ॥ श्री ॥ ११ ॥ भारत वर्ष में, नष्ट धर्म - भया । ता को पुनः प्रगटावो जी ॥ धर्म तिर्थकी स्थापना कर । मोक्ष मार्ग भव्य को लगावो जी ॥ श्री ॥ १२ ॥

अहो प्रभुजी आपतो सब जाणो । तद्यपि हम जीताचारोजी ॥ सूचेत्त किए अवधारीये अर्जी । यों कही कर नमस्कारो जी ॥ श्री ॥ १३ ॥ देव सर्वी स्वस्थान पहोंचे । तब श्री ऋषभ जिनन्दो जी ॥ फिरकर आये राज भुवन में । धर ते चित्त आणंदो जी ॥ श्री ॥ भरतादि सो नन्दन बोलाये । ब्राह्मी सुन्दरी आदी परिवारो जी ॥ सन्मुख बैठाइ प्रभु फरमावे । सुनो स्थिरचित्त हृदय धारो जी ॥ श्री ॥ १५ ॥ जो जीव जग में जन्म धरत है । ते निश्चय मृत्यु थावे जी ॥ सग्रहित ममत्व कर रखी वस्तु । न बचावे न साथे आवे जी ॥ श्री ॥ १६ ॥ यहां भी सबी नहीं एक सरीखे । वीचित्रता प्रत्यक्ष देखावे जी ॥ कोइ राजा कोइ सामत प्रजा । कोइ पेटभर अन्न न पावे जी ॥ श्री ॥ १७ ॥ इसका क्या कारण ? तुम जाणो । तब भरत जी करे उच्चारो जी ॥ आपही सिखायो है हम को । पाप दुःख पुण्य सुख कारो जी ॥ श्री ॥ १८ ॥ सच्ची कही पण जन्म से सुखी दुखी । पुण्य पाप क्रिया किसस्थानो जी ? ॥ भरत कहे आप फरमायो हमने । पूर्व भव संचित मानो जी ॥ श्री ॥ १९ ॥ ठीक है यही कारण संसार का । संयोग रूडा सुखदाता जी ॥ छोड जाते दुख बेदे ममत्व वश । पुन उपजे पुन इम थाता जी ॥ श्री ॥ २० ॥ यों संयोग वियोग जन्म मरण । काल अनंत बीताया जी ॥ ममत्व त्यागे तो दुख छूटे । भव भ्रमण मिट जाया जी ॥ श्री ॥ २१ ॥ हिंसा झूठ चोरी मैथुन ने । परिग्रह आश्रव

पायो जी ॥ त्याग मेरी सपम आया । तज मन्दर कपाय की आंयो जा ॥ श्री ॥२२॥ घर
कुटुम्ब सप सग परित्याग ने । पने अप्रतिपध विहारी जी ॥तप जप सपकर आत्म साध।
पन मे अजरामर अधीकारी जी ॥ श्री ॥२३॥ यही पथ स्वीकृत करने का । अवसर अप हमे
आया जी ॥इस लिए भरत यह राज समालो । हम विचरेंगे जनपद मांपाजी ॥श्री॥२४॥
सुण क वचन प्रभुजी का सभी ने । धर्म मर्म पहचानाजी॥इच्छा आचरन की हुइ पनाकी।
परन सुख शिवस्थाना जी ॥ श्री ॥ २५ ॥ अवसराचित धर्म दरशाया । करने जग
निस्ताराजी ॥ लघु कर्मी जन धारेंगे तिरेंग । होये यों धर्म प्रचाराजी ॥ श्री ॥ २६ ॥ तृतिय
खण्ड की ढाल प्रथम यह । ऋषि अमोलक गाये जी ॥ तिसाण तारियाण पन परमेश्वर ।
पूर्व स्थप का परतायेजी ॥ श्री ॥ २७ ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ पिता परमेश्वर वचन सुन । भरत
जी मन मुरझाय ॥ दिग मुढ हो अधा दृष्टी कर । विचारी कहना चहाय ॥ १ ॥तत्क्षीण
उठी नमन कर । गद्‌गद्‌ स्वरे कर जोड़ । कहे अहो प्रभु अवधारीय । जगतेश्वर जनमोड़
॥ २ ॥ राज से अनत सुख पाप नो । आपकी सेवा सुख, स्वाम,॥ आप, से सप यह सो
भी रहे । आप के विना निकाम ॥ ३ ॥ क्षीणतर इच्छु नहीं । इच्छु चरण की छांव ॥ न
चाहिए, राज सन्यदा ॥ नकहो गमन की बाय ॥ ४ ॥ इत्यादि सविनय, प्रेमता।
यह श्री प्रभु जान ॥ मिष्ट इष्ट वचने करी । लगे नीति प्रभु वखान, ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल

२ री ॥ श्री सीमंधर स्वामि। महाविदेह अंतर यामि ॥ ए० ॥ सुनो भरत चित्त लाई।
यह अनादि रीति चली आइ। सबही जिन दीक्षित थाइ हो। भरत राजा अधिक सोहाये
॥ १ ॥ भोगावली उदय जग रहावे। ऋक्षवर्ती ये तेह खपावे। अवसरोचित्त निर्वृत थावे
हो ॥ भरत ॥ २ ॥ जैसे कर्म की रीति चलाइ। तेसे धर्म ही जिन फैलाइ। नहीं ता जन
किम सुखी थाइ हो ॥ भर ॥ ३ ॥ कर्म का धर्म उपचार। उचित्त ते तो करना प्रचार।
प्रथम जिन का यह आचार हो ॥ भर ॥ ४ ॥ हम ने ता तज दिया राज। अब नहीं जग
से कुछ काज। यदि न दे इसे कोइ साज हो ॥ भर ॥ ५ ॥ विनराजा के जग माग। मच्छ
गलागल ज्यों थाए।कोइ किसीको माने नाए हो ॥ भर ॥ ६ ॥ सबल निबल को सहारानब
कौन सुने ताकी पुकारे। यों मच जावे हाहा कारे हो ॥ भर ॥ ७ ॥ राजा की आवश्य-
कता जग मांही। तुम राज योग हो भाई। आगे चक्रवर्ती पद प्रगटाइ हो ॥ भर ॥ ८ ॥
इस लिए न करो आनाकानी। ये कथन मेरा लो मानी। करो राज साज जग प्रानी हो ॥
भर ॥ ९ ॥ यों सुन ऋषभेश्वर वानी। और अवसर भी तैसा जानी। कहे आज्ञा मुझ
प्रमानी हो ॥ भर ॥१०॥ जेष्ट आज्ञा सीस चढावे। यह शिष्टाचार कहवावे। विनीत यो
विनय संचावे हो ॥ भर ॥ ११ ॥ तब सामंत गण बोलाया। आदिश्वर हुक्म फरमाया।
हमने भरत को राजा बनाया हो ॥भर॥१२॥ राजारोहण उत्सव कीजे। सविधि राज इसे

दीजे। पशा स्थापे उस सभी मामी जे हो ॥भर॥१३॥ भरत जी के अभिषेक तार। देवगण भी आय उमाह। उमराप सामत मिलपाइ दो ॥ भर ॥ १४ ॥ मिल निन्याणवे भ्रात। पर्तीस परजा गण सगात। यादिल गगन गरणात हो ॥ भ ॥ १५ ॥ भरत सुवर्ण सिंहासन पैठ। और सबही भउ नम्र इठ। कर उरराथ प्रमें सठ हो ॥ भ ॥ १६ ॥ सुवर्ण रूपक मृतिका नर। कलश सहस्र आठ भले रे। क्षीरोदक भर सब सेरे हो ॥ भ ॥ १७ ॥ अभिशप कर इयराय। जय जयारव नभ गरजाये। दम्मे सबही प्रेम हृपाय हो ॥ भ ॥ १८ ॥ मन पूजी शुभ पस्त्र पहनाए। मुक्ताफल भूषण सजाए। शिर मुकुट कणे कमल मस्काण हो ॥ भ ॥ १९ ॥ सिंहासणारूढ धइय। शिर छत्र अति सोमइय। उभय पाजू चमर दुलइये हो ॥ भ ॥ २० ॥ फिर भरतराजा की दुहाइ। यों भरत को राजा बनाइ। फिर प्रभु निन्याणव पुत्र तारहा ॥ भ ॥ २१ ॥ तक्षसिला नगरी का राज। बाहूबली को दिया सब साज। सोभ तेही भरतजीसे साज हो ॥ भ ॥ २२ ॥ अठाणा भाइ के साँइ। दिया भेरतका भाग पटाइ। दिए सबी को राजा बणाइ हो ॥ भ ॥ २३ ॥ यों सारी पृथवी दी बाँट। जमा सबी का नृप पाट। अलग २ विराजे पाट हो ॥ भ ॥ २४ ॥ फिर ब्राह्मी सुंदरी पालाइ। पूछ प्रभु क्या इच्छा है पाई। फेरे लग सम्बन्ध जोडी मिलाइ हो ॥ २५ ॥ तब दानों सिर नीचा झुकाइ। कहे नाम सुणते शरम आइ। सो काम यह कैसे

सोभाइ हो ॥ भ ॥ २६ ॥ हम कुंवारी रहना चहा वाँ । धर्म में मन तन रमां वाँ । आगे योग अवसर सो पावाँ हो ।भर॥२७॥ हम तो आदरेंगी दीक्षा । पालन कर आपकी शिक्षा । कार्य सिद्ध करेंगी यही इच्छा हो ॥ भर ॥ २८ ॥ सुन दोनो की मधुरी वाणी । ऋषभेश्वर को बहुत सुहाणी । कहे हम कुल दिनमाणि प्रगटाणी हो ॥ भर ॥ २९ ॥ नाभी राजा मरू देवी तांइ । दीक्षा लेवण बात सुणाइ । भाद्रिक भावे आज्ञा बक्साइ हो ॥ भ ॥ ३० ॥ यों सबी को प्रभु ने समझाया । बक्सना सो बक्साया । खण्ड तीन ढाल दो अमोल गाया हो ॥ भरत ॥ ३१ ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ अब तो धर्म वर्ताववा । श्रीजिन भये उजमाल ॥ दान सील तप भाव को । क्रमस लिए संभाल ॥ १ ॥ प्रथम बर्षा दान दे । फिर ले सील संयम सार । फिर तप से कर्म काट के । भावसे खेवा पार ॥ २ ॥ सब ही तीर्थ कर तणा । यही अनादि आचार ॥ ताते बारा मांस लग । देना दान श्रेयकार ॥ ३ ॥ पगले महा पुरूषों तणे । चले जगत् ये रीत ॥ शिष्टाचार वर्ताव वा । उत्तमो की प्रतीत ॥ ४ ॥ अब श्री अरिहंत का । बर्षी दान अधिकार ॥ सूत्र ग्रन्थ कथित कहू । अनुकरणीय हितकार ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल ३ री ॥ दान सुपात्र दिया जिनोंने । सफल किया अवतार ॥ ए० ॥ तीर्थंकर के बर्षीदान का । कहूं सुणो अधिकार ॥ प्रभु ने किया धर्म प्रचार ॥ टेर ॥ प्रथम स्वर्ग स्वामी शक्रेन्द्र का । आसन चला उस वार । लीना अवधि

ज्ञान निहाल ॥ दीक्षा का अवसर आदि जिनन्द्र का। आया जाना उसवार ॥ वार्षि
दान देन का अधिकार। जाना जिनेश्वर का इन्द्र ने। भरने उन के भण्डार। इस वक्त
का है मेरा अपार ॥ झेला ॥ कोषाध्यक्ष कुबेर क तांई। सौधर्म पति लिया बोलाइ। वार्षि
दान देवें जिनर ६ ॥ सम्पन्न मिलाना इक अपनाइ। मिलत । इसलिए धन सहार यहाँ
लाया ऋषभदेवजी द्वार ॥ म ॥ १ ॥ धावा न पावो धस्का न वासो चोरी भी करनी
जाय। कूप स्रोत धुन नहीं कोइ पाय॥ ग्राम नगर पुर पट्टन द्रोणमुख, खेटक आश्रम मांय
पल्ली पर्वत गुफादि ठाय ॥ घाट घट पथ हाट स्मशान रु शून्यस्था वन जाय। समुद्र नदी
सरादि जागाय ॥ झेला ॥ धन बहुत भरा जमीन मांई। मालिक जिसका कोइ नरहाइ।
पारस वश विध्वंस भयाई। इसही धन को लाना उठाई ॥ मि ॥ स्थापन करो जिनश्वर के
फाग में, आशा की सिरोद्धार। म ॥ २ ॥ वैश्रमण देव स्वस्थानक आकर। त्रिजृम्भक देव
बोलाय। शक्रेन्द्र कहा सो हुक्म फरमाय ॥ सविनय आज्ञा मान्य करीके। मनुष्य लोक
में आय। उक्त स्थानों में धन जिस ठाय ॥ समह कर लाये तीर्थंकर सुभवन में। दिये
भण्डार भराय। कमी नरखी कुछ भी उस ठाय ॥ झ ॥ उस धन के सोनैये बनाए। तीनि
नाम उसपर खुदवाए। तीर्थंकर पिताजी और माए। सुवर्ण मोहर के ढग लगाए ॥ मि ॥
फिर उद्घोषण भोषक जी कराइ। बालकर ने को अवसर ॥ म ॥ ३ ॥ भारतवर्ष

ग्राम नगरपुर सर्व वस्ती मझार । थाण व्यंतर सुर कहे पुकार ॥ विनीता नगरी में ऋषभ जिनेश्वर । वार्षि दान देनार । सदैव दिन आवे सवा पहार ॥ लेना हो सो शीघ्र पधारे । सुन के हर्षे नर नार । झुंड के झुड आये हो तैयार ॥ झे ॥ दूर देशके नर नारी तांई । ज्योतिषि देव लाते उठाई । दु ख किंचित मार्गमें न पाई । जिनजी के पुरमें देते पहोंचाइ॥ मि ॥ देख प्रभु के दर्शन होता मनमें हर्ष अपार ॥ प्र ॥ ४ ॥ उंचसुखासन वैठ प्रभुजी । देने लगे जब दान । खडे रहे चार इन्द्र वहां आन ॥ शक्रेन्द्रजी देते कर को सारा । दान देते भगवान । होने नहीं पावे कभी हैरान ॥ इशानेन्द्रजी करे कमी ज्यादा । याचक तगदीर पहचान । धोबे से निकाले प्रक्षेप स्यान ॥ झेला ॥ चमरेन्द्रजी करमें छडी धारी । हटाते अधिक आते नर नारी । बलेन्द्रजी दंगा देते निवारी । छीन न सके दिया धन किस कारी ॥ मि ॥ देते हैं नित्य दान प्रभुजी जैसे वर्षे जल धार ॥ प्र ॥ ५ ॥ प्रातःकाल से सवा प्रहर तक होती है धन वर्षात् । सोनैये क्रोड आठ लाख देवात ॥ जिसका प्रमान यह कहा ग्रन्थमें । चार मधुफलें सरसव थात । पांच सरसव उडद कहलात ॥ दो उडद की रति, पांचरति मासा एक तोलात । सोले मासे का सोनैया जात ॥ झे ॥ तीस सोनेया का सेर जानो । चालीस सेर को मन कहलानो । बीस मन को गाडो बखानो । सवादोसो साकट सुवर्ण मानो ॥ मि ॥ नित्य दान मे देते जिनेश्वर । और कौन है ऐसा उदार ? ॥

प्र ॥ ६ ॥ यों पूरे महिने पारा लग । देते दान जिन राज । जिसकी गिनती है जी याज ॥ तीन अब्ज अठ्यासी क्रोड और अस्सी लाख का साज । इतना द्रव्य जाता दान के माज ॥ पतीस लक्ष चालीस हजार मण । होता सोना सगलाज । इक्यासी सहस्र गाडे आय भराज ॥ झेला ॥ भरत राज दान शाळा स्थापी । भोजन वस्त्र मे भूषण आपी । जो इच्छे सो देवे तदापि ॥ दारिद्र जगत् का दीना कापी ॥ मि ॥ यह २ राजों से रक्त तक लते कीर्ति जगत् प्रसार ॥प्रा॥७॥ दान ग्रहण किए पाद मनुष्यों । जो दूरस्थल से आए । ज्यातिषी दव दस पीछ पहोंचाय ॥ दान ग्रहण कर गये , मनुष्यों ॥ उन्हीं के घर के माप । पहचाने नहीं उन्हीं के सगाय ॥ हर्ष और अपूर्व पोषाक से । आकृति गई पलटाय । देप परि दिव्य रूप सोभाय ॥ झेला ॥ अभव्य के हाथ दान न आवे । कदीक आवे तो रहन न पावे । जिनेन्द्र हाथ का महात्व सोभावे । भव्य की परीक्षा करना चहावे ॥ मि ॥ इसही के लिए राजा सठादि देते हाथ प्रसार ॥ प्र ॥ ८ ॥ श्री तीर्थंकर के दिए हाथ का सानैया जो छाय । उस के घर बारा वर्ष के माय ॥ खाया खरचा धन खुटे नहीं । लक्ष्मी वृद्धी खूब पाय । भंडार रखे सो अखुट भराय । स्वजन स्नेही का वियोग न हुवे । रोग न कोइ मगटाय । पहिले का रोग सो नष्ट हो जाय ॥झेला॥ दान की महिमा अपरम्पारी । फिमत शास्त्र ग्रन्थ से उचारी । धर्मेच्छु को अनुकरण

करनारी। हितेच्छु यथाशक्ति लेवे स्वीकारी ॥ मिलत ॥ तीसरे खण्ड की ढाल तीसरी।
ऋषि अमोल करी उच्चार ॥ प्र ॥ ९ ॥ * ॥ दोहा ॥ त्रिश्व में प्रसरी वारता। ऋषभ विनीता
महाराज ॥ जग तज दीक्षित होंयगे। करन आतम सिद्ध काज ॥ १ ॥ कच्छ महा कच्छादि
क। सामंत अन्य अनेक ॥ दीक्षित होने सज्ज भये। जिनवर संग सुविवेक ॥ २ ॥ चार
हजार नर सज्ज हो। आए जिन जी पास ॥ हम भी दीक्षित होयगें। कारजोडी करे
अरदास ॥ ३ ॥ प्रभु कहे यथा सुख करो। सबही सुण हर्षाय ॥ भरत नरेश्वर सब लिए।
भण्डोपकरण मंगवाय ॥ ४ ॥ मुखपर बन्धनी मुहपति। रजोहरण कॉख मांय ॥ वस्त्र
पात्र सबी रखन की। दीवी विधि समजाय ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल ४ थी ॥ मन ताको हो
नारी विरानी ॥ ए० ॥ धन्य ऋषभ जिनेश्वरराया। धर्म शिव मार्ग वरताया ॥ टेर ॥
तिण अवसर चौषट इन्द्रों का कार्य। सूचक आसन कम्पाया ॥ अवधि ज्ञान से दीक्षा
कल्याणिक। जाना मन हर्षाया। अभियोगिक देव बोलाया ॥ धन्य ॥ १ ॥ घंटा बजवाइ
विमान सजवाइ। सब परिवार संग सोहाया ॥ असंख्यात द्वीप समुद्रों उलध के।
जम्बुद्वीप भरत में आया। विनीता नगरी के मांया ॥ धन्य ॥ २ ॥ सुवर्ण सिंहासने
ऋषभ जिनेन्द्र को। अति आदर वैठाया ॥ सुवर्ण रुपक मृतिका कळश घर।
क्षीरोदक न्हवराया। अभिशेष दीक्षा का कराया। धन्य ॥ ३ ॥ क्षोमयुगल

अत्युत्तम वस्त्र । रत्न भूषण पहनाया ॥ सहस्र पुरुष तोके ऐसी शिवका । भरत हुक्म से लाया । सहस्र पुरुष भी सज्ज आया ॥ धन्य ॥ ४ ॥ अभियोगी देवस रत्न पालखी । धनाने ईरी फरमाया ॥ सिद्धार्थ नामक पालखी को । मनुष्य कृत पालखी में समाया । व्यवहारे सहस्र नरने उठाया ॥ धन्य ॥ ५ ॥ शक्रेन्द्रजी ईशानइन्द्रजी । चमरेन्द्र बलेन्द्र उमाया ॥ चारों दिशिमें चारो इन्द्र उठाई । ते तो अदृश्य रहाया । देव विमानसी दीपाया ॥ धन्य ॥ ६ ॥ मध्य सिंहासने प्रभुजी विराज । सन्मुख मोरा देवी माया ॥ सुम गला सुनन्दा जीमणी । ब्राम्ही सुन्दरी बाया । प्रभु प्रेक्षी मोह उमगाया ॥ धन्य ॥ ७ ॥ एक तरुणी करे छत्र प्रभु शिर । माती झालर लम्काया ॥ दो तरुणी चमर ढोले दो पासे । रत्न पखी शुभ्र वास घुमाया । भिंगार ले बैठी एक पाया ॥ धन्य ॥ ८ ॥ चार हजार पुरुष का भी तैसे । भरत नरेश्वर सजाया ॥ अलग २ सहस्र बाहनी शिविकामें । वैरागी को बैठाया । प्रभुजी पीछे सभी आया ॥ धन्य ॥ ९ ॥ चतुरंगिणी सेनासजी भरतजी । सोही प्रात लगाया ॥ उमराव सामंत मस्री तलवर । शेठ पुर जन और राया । कायों गम नर नारी धाया ॥ धन्य ॥ १० ॥ गज गुल गुलाट । हणणाट अश्वका । झणर रथ झणणाया ॥ पायदल जय जयारव वार्दित्र नादे । अनहद गगन गर जाय । मध्य बजारे सिधाया ॥ धन्य ॥ ११ ॥ हाट हवेली गवाक्ष चावनी । पथ गच्छी वृक्ष ठाया ॥

नर नारी झुंड अकीर्ण भराय ॥ देखे सब अति उमंगाया ॥ धन्य ॥ १२ ॥ भद्रिक भाव
सबही यह रचना । अपूर्व देख विस्माया ॥ जाने सो तो कहे धन्य है प्रभुजी । अन जान
यो ही लोभाया ॥ सिद्धार्थ बागमे आया ॥ धन्य ॥ १३ ॥ पालखी ठाइ भू नीचे उतरे प्रभु
अशोक वृक्ष तल रहाया ॥ क्रोडोंगम नर नारी के वृन्दमे । असंख्य देव गगने छाया ।
मध्यमें खडे जिनराया ॥ धन्य ॥ १४ ॥ ऊंच हाथ कर शक्रेन्द्रजीने । सबी को चुप कराया
॥ मेखोन्मेख सब देखे प्रभुजी को । ऑखे ऑश्रु टपकाया । सबी प्रभु परिग्रह छिटकाया
॥ धन्य ॥ १५ ॥ वस्त्रा भूषण तज नग्न भा जात । जब बनी प्रभूजी की काया ॥ तब चन्द्र
कीर्ण सा देव दुश वस्त्र । जिन स्कन्धे इन्द्र ठाया ॥ किन्तु प्रभुने तो नहीं चहाया ॥ धन्य॥
१६ ॥ चेत कृष्णा अष्टमी को चन्द्र मां । उत्तराषाढा नक्षत्र आया ॥ दिन के पश्चात पहर
मे स्वहस्ते । लोचन करे जिन राया ॥ चार मुष्टि वाल गिराया ॥ धन्य ॥ १७ ॥ वस्त्र
पल्लव मे झेले वाल इन्द्रने । फिर अर्ज करे सीर झुकाया ॥ इतने तो बाल रहने दो स्वामि ।
शिखास्थान अति सोभाया । रखो इतनी मेरी इच्छाया ॥ धन्य ॥ १८ ॥ चोटी के वाल
रहने दिये यों ही । इन्द्र का मन ना दुभाया॥ "णमो सिद्धाणं" कह नमन करी ने । सावद्य-
योग पच्चखाया ॥ सामायिक चारित्री थाया ॥ धन्य ॥ १९ ॥ प्रकाश भया सब लोक मे
तबही । ज्ञानावर्णिय क्षयोपशमाया । मानव क्षेत्र पचेन्द्रीके मन के । ज्ञाता बने जिन

राणा। मन वचन नाना उपाया ॥ धन्य ॥ २० ॥ मन्तर कच्छ महाकच्छादि सबही। चार हजार महाराणा ॥ स्वहस्त लोचकरी लोच तजीया ॥ आणगार लिंग सजाया। सबही नाथ का छिन्द ध्याया ॥ धन्य ॥ २१ ॥ प्रभुजी के मुख स संयम ग्रहण कर। धर्म ध्यान मन रमाया ॥ भरतादि सब धन्य २ कहत। स्वामी भक्ति सरूपा सुम मांया। राणा जी सर्वा पजाता ॥ धन्य ॥ २२ ॥ सविनय वदन किया प्रभुजी को। नाभी नृप मरुदेवीमाया ॥ भरत बाहुबली ब्राह्मी सुन्दरी। हाल उदास घर आया। रह सबही सुख माया ॥धन्या॥ ३॥ इन्द्र इन्द्राणी सबी देव ॥। वन्द आदेश्वर पाया॥नदीश्वर द्वीप आ अष्टान्हिक महोत्सवकर। अपन २ स्वग सिधाया। रहे सबही सुख विलसाया ॥ धन्य ॥ २४ ॥ चार हजार साधुक साथ। भूमह विचरे जिनराया ॥ च्यवह तृतीय पक्ष वाल चतुर्थी। प्रथम ऋषि का स्वरूप दरशाया। ऋषि अमालक गुण गाया ॥ धन्य ॥ २५॥ ॥ दोहा ॥ तट भक्त तपभगा भ। मीना सपम भार ॥ मोह ममत्व सबी परिहरी। करते उग्र विहार ॥ १ ॥ क्षुधा तृषा शीत ताप की। परवा न करे लगार ॥ किंचित प्रमाद न आदरे ॥ निमग्न धाम ध्यान मझार ॥ २ ॥ पारणा करन प्रभु जी। भिक्षा वृती काज ॥ पधारे ग्राम ग्राम में। साथे सबी समाज ॥ ३ ॥ छद्मस्तपने अरिहत जी। रहे मौन निशदीस ॥ महाने फिर ध्याग स्मर। कथा इच्छे है जगीस ॥ ४ ॥ भिक्षुक नहीं कोइ तासमय। न

जाने दान की रीत ॥ आहार आमंत्रे कोइ नहीं । शरल स्वभावी विनीत ॥ ५ ॥ ढाल९मी॥ पधारो पधारो जी । श्री ऋषभ देव महाराज । हम घर पधारो जी ॥ टेर ॥ आये देव आदेश्वर स्वामी । ग्राम के लोगों हर्षाये ॥ धन्य भाग धन्य घडी आज की । ऋषभराय जी आये ॥ पधारो ॥ १ ॥ जो जो सुनते वो वो दोडते । देखके आश्चर्य पाते ॥ राज पाट के ठाठ छोड सब । क्यों प्रभुजी यों धाते ॥ पधारो ॥ २ ॥ नहीं पग पन्ही नहीं वस्त्र पहने । नहीं है वैठन सवारी ॥ किस कारण यह फिरे ग्राम में । क्या है इच्छा यांरी ॥पधारो॥३॥ केइ मुसमली जरी जरतारी । गादी तकीया विछावे॥करे आमंत्रण विराजो प्रभुजी। देखके प्रभु फिर जावे॥पधारो॥ ४ ॥ केइ अच्छी पोपाक को लेइ । प्रभुजी के सन्मुख आवे। पहनो इसे क्यों नग्न फिरत हो । प्रभुजी देख फिर जावे ॥ पधारो ॥ ५ ॥ शाल दूसाला धोंसा दुपट्टा । लाकर प्रभुको बतावे ॥ पसंद होवे सो लेवो स्वामी । प्रभुजी देख फिर जावे ॥ पधारो ॥ ६ ॥ केइ सोनैया माणक मोती । रत्न थाल भर लावे ॥ करे निजराणा नाथ स्वीकारो । प्रभुजी देख फिर जावे ॥ पधारो ॥ ७ ॥ केइ मुकुट कुंडल कडा हार । भूषण विविध भलकावे ॥ ले आवे लेओ प्रभु कृपा कर । प्रभुजी देख फिर जावे ॥ पधारो ॥ ८ ॥ पंचरंग सुगंधी पुष्पके गुच्छे । हार तुर्रे ले आवे ॥ पहना ने कर लम्बा करे तब । प्रभु जी देख फिर जावे ॥ पधारो ॥

॥ ९ ॥ केइ महल हवेली आमन्त्रे । देव भुवन सी सोमावे ॥ इसम विराजे सुख से स्वामी । प्रभु जी देख फिर जावे ॥ पधारो ॥ १० ॥ केइ नव युवती रूप अनोपम । पाडशा शृंगार सजावे ॥ लाकर खडी कर प्रभु साम । प्रभु जी देख फिर जावे ॥ प ॥ ११ ॥ केइ कुरंग सा चपल तुरंग को । सिणगारे पलाण पजगावे ॥ कहे नमी प्रभु इसपर विराजो । प्रभु जी देख फिर आवे ॥ प ॥ १२ ॥ केइ कुंजर अजन गिरीसा । रत्न अम्बारी धरावे ॥ कहे नमी प्रभु इस पर विराजा । प्रभुजी देख फिर आवे ॥ प ॥ १३ ॥ शिविका मेना केइ सब लावे । कहे प्रभु जी पैदल न चलाव ॥ इसमें विराजो हम पर कृपा कर । प्रभुजी देख फिर आवे ॥ प ॥ १४ ॥ आम्र खरबूजा नारंगी मेवा । सचित्त स छाब भरावे । करे भेट आरोगे स्वामी ॥ प्रभुजी देख फिर जावे ॥ प ॥ १५ ॥ या आमन्त्र अकल्पनिय वस्तु । जो साधु के काम न आवे ॥ साधु आचार काइ नहीं जाने । प्रभु बिन कौन बतावे ॥ प ॥ १६ ॥ रांधा आहार आमन्त्रण करते । सारों मन शरमावे ॥ क्या कभी खिलाफी नाथ के । रोटी कैसे दी जावे ॥ प ॥ १७ ॥ भिक्षा काल म सदैव प्रभुजी । ग्राम में चक्कर लगावे ॥ नहीं मिले आहार की जोगवाइ । किंचित नहीं कायरावे ॥ प ॥ १८ ॥ दीन दीन नहीं होवे कदापि । मुख भी नहीं कमलावे ॥ अनंत बली अर्हन्तजी होते । तन भी नहीं सुकावे ॥ प ॥ १९ ॥ सदैव मगन मन तन विपु विपु करे । भूख मरे रे दब्बावे ॥ जिस से अन्य ओलखने न पावे ।

प्रभु भूखे क्यों रहावे ॥ प ॥ २० ॥ चार हजार मुनियों भी प्रभु जिम । सदा निर आहारी रहते ॥ परिषह उपसर्ग सहे प्रभुसंग । धैर्यता दृढता धरते ॥ प ॥ २१ ॥ किन्तु प्रभुजी उनको भी न देखे । न कभी जरा बोलावे ॥ तो भी ऋषियों सब भक्ति भाव में । भेद जरा न बतावे ॥ प ॥ २२ ॥ इसतरे काल कितनाइ गुजारा । ढाल पंचमी मांइ ॥ ऋषि अमोल कहे आगे सुनिये । मतान्तर कैसे प्रगटाइ ॥ पधारो ॥ २३ ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ क्षुधा परिषह दुष्कर अति । प्रथम कहा सब मांय ॥ भूखे वीर कायर बने । कुलीन अकुलीन थाय ॥ १ ॥ वेगारी सबी पेटके । जगत् के मांही देखाय ॥ हीन दीन बने आहार बिन । गुलामी कुकृत्य कराय ॥ २ ॥ क्षुधा तृषा शीत तापादि । साधु चार हजार ॥ दुःख सहता घबराविया । डगमगे मन उसवार ॥ ३ ॥ आश्चर्य अति करते मने । प्रभुजी की वृत्ती निहार ॥ यह तो है समर्थ अति । रखे न किसी की दरकार ॥ ४ ॥ अन्यदा सब साधु मिली । कच्छ महाकच्छ मुनि पास ॥ आये वंदन नमन कर । करने लगे अरदास ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल ६ डी ॥ मोरा स्वामि मन जावोरे बाहला ॥ ए० ॥ क्षुधा का परिषह है अति भारी । जीते धन्य प्रभू ऋषभ अवतारी ॥ टेर ॥ देखा स्वामि प्रत्येक वनके मझारो । वन फल कंद है केइ प्रकारो ॥ मिष्ट इष्ट मुक्ता प्रत्यक्ष देखावे । खाया सुखी होवे दुःख को ना पावे ॥ क्षुधा ॥ १ ॥ किन्तु प्रभू विष फल सम सब जाने । कभी छीते भी नहीं क्यों याने

॥ स्वादिष्ट जल के जलाशय भरिया । क्षार नीर सम प्रभू मस पर हरिया ॥ क्षुधा ॥ २ ॥ शरीर होकर न शरीर की प्रभा । स्नान विलेपन न करे कुम्भ हरखा । वस्त्र भूषणादि देते जन लाइ । उसे भी इच्छते नहीं कदाइ ॥ क्षुधा ॥ ३ ॥ शीत ताप की न जरा परकारो । जानकर सब रहे उसही मझारो ॥ निद्रा भी तो न लेते कदाइ । आवा आसन म करत कहांही ॥ क्षुधा ॥ ४ ॥ भूल गये प्रभुजी तो भूख प्यास ॥ सुख दुःख की समझ नहीं खास ॥ पर्वत सम स्थिति प्रभूकी देखाय । अधिक क्या कथनी हम से कहवावे ॥ क्षुधा ॥ ५ ॥ अधम अनुचर बने प्रभूजीके । किन्तु शक्ति है क्या सोचो ठीक ॥ अपनी जरा न प्रभू को परकारो । इतने दिनमें न सन्मुख निहारो ॥ क्षुधा ॥ ६ ॥ राज मांहे थे सब तो बासाते । पास बैठाके बातें बनाते ॥ किन्तु अब क्या किया अपराध । सुख पूछ न से भी गये साथ ॥ क्षुधा ॥ ७ ॥ समर्थ प्रभू की बराबरी करनी । क्या उन सरीखा जना कोइ जरनी ॥ अपनी शक्ति तो जरा निहारो । प्रभुजी का वरतन विचारो ॥ क्षुधा ॥ ८ ॥ कहां प्रभु जाने न भूख की पीडा । कहां हम हैं जी मक्ष के कीडा ॥ कहां प्रभु जल को कभी नहीं पीत । कहां हम मेंडक जल में जीत ॥ क्षुधा ॥९॥ कहां प्रभु शीतमें जरा न कम्पावे । कहां हम बदर से तन का छिपावें ॥ कहां प्रभु निद्रा को न पहचाने । कहा हम अजगर से पडे ताने ॥ क्षुधा १० ॥ प्रभु की लीला है अपरम्पारो । बराबरी करें क्या बाजो हमारो ॥

समुद्र उलंघ न वायस धारे । हंस की बराबरी करना विचारे ॥ क्षुधा ॥ ११ ॥ तैसे ही घाट बना यह हमारा । नकल करी समर्थ विन इस वारा ॥ कहो जी सोच विचार सब भाई । है यह योग्य क्या अपने तांइ ॥ क्षुधा ॥ १२ ॥ नहीं निभा सकते कठिन यह वृत्ती । आयुष्य निभाने करें क्या कृत्ती ॥ पीछे राज में भी कैसे जावे । राज का स्वामी भरत कहलावे ॥ क्षुधा ॥ १३ ॥ क्या पीछा भरत का शरणा लेवे । जो नमा अपन को उसे कैसे सेवें ॥ यदि सेवा प्रभुजी की छोड जावे । तो फिर आदर कहीं नहीं पावे ॥ क्षुधा ॥ १४ ॥ भृष्ट भये देख भरत कोपावे । तो वह अपनी शान गमावे ॥ गृहस्थ होने में तो सोभा नाहीं । फिटकार पावें दोनो भव मांही ॥ क्षुधा ॥ १५ ॥ इस लिए कृपा कर मार्ग बतावो । दिग मुढ बने हम सूचे न उपावो ॥ प्रभुजी का भेद समझ में न आवे । ज्यों नभ का अन्त न को पावे ॥ क्षुधा ॥ १६ ॥ हम सब खाड कूवे के बिच आए । विना मोत भी मरा नहीं जाए ॥ इसलिए सम्मती ऐसी दीजे । सबी सुख पावें सहु कार्य सीजे ॥ क्षुधा ॥ १७ ॥ कहे कच्छ महाकच्छ मत धबरावो । कमी एक उदर पूर्ण उपावो ॥ तो कमी कुछ वन मे नहीं देखावे । पाणी फल कन्द चाहिये सो पावे ॥ क्षुधा ॥ १८ ॥ किसी के शरण में भी नहीं जाना । किसी का बुरा भी नहीं बताना ॥ ग्रहण किए मार्ग को न छिटकाना । यथो-चित्त सेवा प्रभुजी की बजाना ॥क्षुधा॥१९॥ यह आज्ञा सब सीस चढाइ । निकट ही गंगानदी

तहां आइ ॥ तब उभेय कठ बाग के मांही । गये सब स्वछन्दता स रहाई ॥ क्षुधा ॥
२० ॥ कन्द मूल पत्र पुष्प फल आहारो । कर के करन लगे गुजारो ॥ तप जप करते
ध्यान लगाते । आदिश्वर रूपमदेव गुण गाते ॥ क्षुधा ॥ २१ ॥ अवसरे प्रभु दर्शन को
आई । वदन नमन अग पधों नमाइ ॥ गुण स्तुन गात सेवा पजात ॥ पीछ वन में ते
चले जाते ॥ क्षुधा ॥ २२ ॥ तबसे वनवासी कपि भगवा पे । कद मूल भक्षक जग म
फेलाये ॥ ढाल अमोलक छट्ठी प्रकाशी ॥ अब विद्याधर की उत्पात्ति कहू खासी ॥ क्षुधा ॥
२३॥ * ॥ दोहा ॥ सासन कच्छ महाकच्छ क । प्यार पुत्र विनीत ॥ नमि वनेमि नाम स ।
सुशील रूडी रीत ॥ १ ॥ प्यारे थ ऋषभ देवके । रह ते सेवामाय ॥ किन्तु दीक्षा समय
प्रभु के । गये थ देशाटन तांय ॥ २ ॥ फिर कर घर स जाब ते । आय उस वन माय ॥
तापस रूप निज तात को । देख के अति विस्माय ॥ ३ ॥ चिन्तवन लग चित्त म । ऋषभ
देव से नाथ ॥ होकर हम सिर ऊपरे । य कैसे बने अनाथ ॥ ४ ॥ कहां वस्त्र कोमल गये ।
सजा क्यों वल्कल वेश ॥ कहां मुकुटादि आभरण । कहां जटाजूट केश ॥ ॥ कहा चदन
भूषा सर्वथा । कहां यह धूली लप ॥ कहा गज गाजी वहन क । कहां यह पैदल भेप
॥ ६ ॥यों कल्पना करत बने । निकट आ वन्द पाय ॥ नम्र हो पूछ तात जी । ऐसे बने कारण
कांय ? ॥ ७ ॥ * ॥ ढाल ७ मी ॥ बड़े घर ताल लागी रे । जोबकलारी जोत जागी रे ॥ ए॥

प्रभू भाक्ति है सुख दाता जी। दोनों भव दे सुख साता जी ॥ टेर ॥ नमि विनमि का
वाणी सुणी जी। कच्छ महाकच्छ दर शाय ॥ भगवान श्रीऋषभ देवजी। दिया राज पाट
छिट काय ॥ प्रभु ॥ १ ॥ भरतादिक सो पुत्र को। दीनी सगली भूमि बाँट ॥ स्वयं दीक्षा
लेय के जी। पकडी वन की वाट ॥ प्रभु ॥ २ ॥ संसार मे सेवा करी त्यों। दीक्षा मे सेवा
काम ॥ उन के संग हम नीकले। धरी पर लोक सुख की हाम ॥ प्रभु ॥ ३ ॥ प्रभुजी तो
खाते पीते नहीं। नहीं करते कुछ भी ग्रहण ॥ सोते भी वे कभी नहीं। नहीं बोल ते
कुछ भी वेण ॥ प्रभु ॥ ४ ॥ भूख प्यास शीत तापादि दुःख से। हम अति पाए त्रास ॥
खैर पर संयम भार न्हाख कर। स्वीकारा वनवास ॥ प्रभु ॥ ५ ॥ शरम आई गृह वास
जाने की। प्रभु सम रहने न समर्थ ॥ मध्य का यही पथ ठीक है। करते हैं आतम का
अर्थ ॥ प्रभु ॥ ६ ॥ सुन के कथन तपस्वी तात मुख से। न करी उनकी दरकार ॥ किन्तु
अपने को राज क्यों न दीना। चलें पूछें प्रभु से इसवार ॥ प्रभु ॥ ७ ॥ आये चल ऋषभ
देवजी पासे। ललीरकिया प्रणाम ॥ कर जोडी यों प्रार्थना करते। क्या योग्य था आपको
स्वाम ॥ प्रभु ॥ ८ ॥ हम दोनों को देशान्तर भेजे। भरतादि सबो को दिया राज ॥ पांव
धरे जितनी भी हम काजे। पृथवी न रखी महाराज ॥ प्रभु ॥ ९ ॥ जैसे प्यारे भरतादि
आपको। तैसे ही प्यारे थे हम ॥ उन सबी को तो सुखी कर दीने। हम को क्यों समझे-

काम ॥ प्रभु ॥ १० ॥ कृपा कर हमारे ऊपरे। रहने को दीजीये ठाम ॥ अधिक आप से
कुछ नहीं मंगे । पुरिये हमनी हाम ॥ प्रभु ॥ ११ ॥ उत्तर कछु नहीं दिया प्रभु जी।
फिर बोले कर जोड़ ॥ ऐसा क्या अपराध हमारा । बोलना भी दिया छोड़ ॥ प्रभु ॥ १२ ॥
यों भजीजी बहुत करी। किन्तु प्रभुजी नहीं दे जबाब ॥ तब चिन्ते अब कैसा कीजे ।
अपने रहने को ठाम ॥ प्र ॥ १३ ॥ अब तो एक है आश्रय प्रभुका। कभी ना करग बात ॥
यों निश्चय दोनों मन धारी। रहन लगे प्रभू साथ ॥ प्र ॥ १४ ॥ नित्य त्रिकाल सविनय
वन्दन कर। करते अनक गुण गान ॥ मार्ग चल त ककर कँटक। उठा धरते अन्य स्थान ॥
॥ प्र ॥ १५ ॥ रात्रि को तलवार नगी रख। बन ते प्रहरेदार ॥ कोईभी उपसर्ग आता
उसको। दत तुर्त निवार ॥ प्रभू ॥ १६ ॥ नित्य प्रार्थना तता यहीज करते। देवो प्रभूजी
हमे राज ॥ आश्रय बिन हम जावें कहांपर। दूजे से हमे क्या काज ॥ प्रभु ॥ १७ ॥एकदा
प्रभु पद वन्दन करन। धरणेन्द्रजी नागराय ॥ आए प्रभूपास देखी यह रचना । अतिही
गय विस्माय ॥ प्रभु ॥ १८ ॥ यह मात्रिक पालक हैं किसक। कैसे माग रह राज ॥ इह
मिष्ठ वचनास पूछे। तुम कौन हो ? क्या करो काज ? ॥ प्रभु ॥ १९ ॥ जिसवक्त प्रभूने
वारा माहिने तक। दिया गया वार्षा दान ॥ उसवक्त तुम कहां गए थे। अब क्या देते
भगवान ॥प्रभू॥२०॥ ये हैं त्यागी वैरागी प्रभूजी। निष्परिग्रही निर्ममत्व ॥ न देते न लेते

किसीसे । क्या हाथ आये थाने अब ॥प्रभु॥२१॥ प्रभुका सच्चा सेवक जानी। तस दोनों कहे
समाचार॥ दास हम प्रभुके पुत्रसे प्यारे। हमै भेजे प्रदेश मझार ॥ प्रभु॥२२॥ पीछेसे राजदीना
सबीको। हमको दीये हैं टाल॥अब हम तो राज लेवेंगे इन्ही से। देवेंगे यही दयाल॥प्रभु॥२३॥
इन्द्र कहे जो राज की इच्छा। तो जाओ भरत जी पास॥ पूर्व प्रेम से निश्चय तुमारी। वेही
पुरेंगे आस ॥ प्रभु ॥२४॥ दोनों कहे क्या काम भरतजी से। वे सबी रहो आनन्द माय॥
त्रिलोकी नाथ कल्पवृक्ष से दाता । छोडी कौन बावल पे जाय ॥ प्रभु॥ २५ ॥ यह दाता
हम याचक इनके। हम हैं सेवक यह स्वाम ॥ हमारे इन के बिच में बोलन का । अन्य
का क्या है काम ॥ प्रभु ॥ २६ ॥ सच्ची भक्ति दृढ निश्चय देख तस । धरणेन्द्रजी आति
हर्षाय ॥ कहे धन्य तुम को, प्रभु को तज के। अन्य की न करो इच्छाय ॥ प्रभु ॥ २७ ॥
सच्ची सच्ची इन प्रभुजी की सेवा। महा ऋद्धि सिद्धि दातार ॥ तीन लोक की सम्पत्ती
सबही । करबन्धी खडी इन द्वार ॥ प्रभु ॥ २८ ॥ प्रभु की सेवा अक्षय अनन्त सुख ।
मोक्ष की है दातार ॥ अन्य वस्तु का तो कहनाही क्या है। तुम हो बड भागी सिरदार
॥ प्रभु ॥ २९ ॥ मै भी सेवक तुम भी सेवक। दोनों के स्वामी एक ॥ इन्ही के कृपा से
तुम को देता। दुजाइ जरामत लेख ॥ प्रभु ॥ ३० ॥ बैताढयागिरी की दोनोंही श्रेणिका।
संभालो तुम राज ॥ विद्या धरों के पति बनो तुम । यह भी उत्कृष्ट सम्राज ॥ प्रभु ॥

११ ॥ प्रज्ञाप्ति आदि महा प्रभाविक । विद्या अठचॉलीस हजार ॥ पाठ करने मात्र से सिद्ध होवे । लीजीये यह भी स्वीकार ॥ प्रभु ॥ १२ ॥ विद्या दे कहे अब तुम चालो । वैताढ्य गिरि पे हम साथ । दोनों श्रेणि में नगर बसावें । कमी नहीं कुछ आप ॥ प्रभु ॥ १३ ॥ सविनय प्रभुजी को नमन किया सबी । बैठ के पुष्पक विमान ॥ नाग राजा जी के साथ ही चल दिए । दोनों हर्ष असमान ॥ प्रभु ॥ १४ ॥ यों जिन भक्ति सच्ची अशाकि स । होवे सुख दातार ॥ ऋषि अमोल माकि दर्शक । कही तीजे खण्ड सप्त ढाल ॥ प्रभु ॥ १५ ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ धरणेन्द्रजी के साथ में । नमि विनमि उसवार ॥ ऋषभ महा ऋषभ पास आय के । कहे सबी समाचार ॥ १ ॥ देखो कृपा प्रथम देव की । धरणेन्द्रजी भए सहाय ॥ इच्छा हमारी पूर्ण की । बनाए विद्याधर राय ॥ २ ॥ फिर आए अयोध्यापुरी । भेटे भरत नरेश ॥ वीतक कथन प्रकाशिया । प्रभू सेवा का फल शेष ॥३॥ नुतन सम्पती ऋद्धि युत । मिली प्रभू कृपा पसाय ॥ अब हम जावे वैताढ्य पर । रहेंगे नगर बसाय ॥ ४ ॥ फिर अपना परिवार सब । नोकर चाकर लार॥ बैठ विमाने आविये । वैताढ्य गिरी ते वार ॥ ५ ॥ ढाल ८ मी ॥ धुलला गज चंवर । चाम्बर रतन अकाश ॥ए०॥ भरत क्षेत्र के मध्य । गिरी वैताढ्य शोभाय ॥ उत्तर और दक्षिण । दो विभाग ते कराय ॥१॥ पचीस योजन ऊंचा । चौड़ा योजन पचास ॥ दश हजार सात सो । बीस योजन लम्बास

दश योजन

॥ २ ॥ ते पर्वत ऊपर । दश योजन दोनों पास । है सम भूमी तहां । दश योजन रहनेको नगर

चौडास ॥ ३ ॥ धरणेन्द्रजी साथ । नमी वनमी भ्रात ॥ आए तहां उतरिए । रहनेको नगर

वसात ॥ ४ ॥ बाहुकेतु पुण्डरिक । हरिकेतु सैत्तकेतू जान ॥ सर्पारीकेतू । श्रीबाहू श्रीगृह

मान ॥ ५ ॥ लोहागल अरिंजय । स्वर्गलीला वज्रगल । वज्रविमोक । महीसारपुर भल॥६॥

जयपुर सुकृतमुखी । चतुर्मुखी बहुमुखी सार ॥ रता विरता । अखण्डल सुखकार

॥ ७ ॥ विलासयोनिपुर । अपराजित काचादाम ॥ सुविनय नभपुर । क्षेमंकर सहचिन्ह-

पुर धाम ॥ ८ ॥ कुसुमपुरी संजयंति । शक्रपुर जयंति वैजयंति ॥ विजया क्षेमंकरी ।

चन्द्रभास पुरी दीपंति ॥ ९ ॥ रविभास पुर ॥ सप्तभूतलवास ॥ सुविचित्रा महाघनपुर

। चित्रकूट त्रिकूट खास ॥ १० ॥ वैश्रमणकूट । शशिपुर रवीपुर विमुखी । नित्योद्योतनी

वाहिनी ने सुमुखी ॥ ११ ॥ श्रीरथानुपुर । चक्रवाल ए पचास ॥ यों दक्षण श्रेणिमें । नगर

नगरी किए वास ॥ १२ ॥ सबोंके मध्य में । रथानपुर चक्रवाल । तहां राजधानी रखी ।

किए नमि नृपाल ॥ १३ ॥ उत्तर श्रेणिमें–अर्जुननी । वारुणी वैसंहरणी कैलास ॥ सारुणी

विद्युत्पीठ । किलीकिल चारुचुडामणि निवास ॥ १४ ॥ चन्द्राभाभूषण ।

वशवत कुसुमचूल ॥ हंसगर्भ ने मेघंक । शंकर लक्ष्मीहर्म्य मूल ॥ १५ ॥

चामर ने वीमल । असुमस्कृत शिवमंदिर ॥ वसुमात सर्वशत्रुगम । केतूमालाक इन्द्रकांत

मिर ॥ १६ ॥ महानैंन्दन अशोकै । पिर्नैशोक पिशोकैक सुर्सौछोक ॥ अलकेतिलक । नभैंस्तिलक मर्विरैंबिलोक ॥ १७ ॥ कुमुर्दकुन्द गगनैंपैछम । युर्वतातिलक अर्यनितिलक ॥ सैंगधर्व मुक्ताँहर । भनिर्मिप पिर्छिय रहे पिलक॥ १८॥ अग्निर्ज्वाल गुरूर्ज्वाला । श्रीनीकेत पुर रत्नकुलिश ॥ जर्यश्रीनिवास । षर्पिष्टाभम सर्मर्द्रक ईस ॥ १९ ॥ व्रषिर्णजय फनाशिम्बर । भद्राँशयपूर गिरीशिखर ॥ पाभ्नीरधर शिखर । फनेशिसर र्मेर्पशिर्खर ॥ २० ॥ घरेणी धरणी । सुवर्णनपूर दुर्ग दुर्धर ॥ मर्हेन्द्रविजय सुंगधो । सुरत नागेपुर रत्नपूर ॥२१॥ इन साठ नगरक गगन वल्लमपुर मध्यमाय ॥ पिनमि कुमर फो । पनाये पहां के राप ॥ २२ ॥ फिर फेई पेश स । लाफर सागों पसाय ॥ पुण्य प्रमाण ऋद्धि । यपोपित विपा सिग्याय ॥ ॥ २३ ॥ बिपाधरों विपासे । उनस हान न पाप ॥ इसलिए धरणेन्द्रजी । मयाव नीति स्थापाय ॥ २४ ॥ जो जिनेश्वर न । परम शरीरी जीय ॥ फायोत्सर्ग गत मुनिकी । अशातना फर अतीव ॥ २५ ॥ उन्ह विपा न फलेगी । जान फ यह तकसीर ॥ इस लिए किसी धर्मी फो । पेना नहीं कभी पीर ॥ २६ ॥ तैसेही साधवा के । पति की करगा घात ॥ पालास्कार सील भगे । उस पास विपा न रहात ॥ २७ ॥ यह सपी नियम । भाफेत फिर भीती पर ॥ सुना दिए सपी फो । पने तप से विपाधर ॥ २८ ॥ नमि और पनमि से । प्रेम अधिक जणाय ॥ स्वस्थान सिधाये । स्वधर्मी

वात्सल्य नाग राय ॥ २९ ॥ फिर विद्या धरों मे । सोले जाति स्थापाय ॥ जो विद्या
अधिक फली । वही जाति का कहलाय ॥ ३० ॥ गोरी विद्या से गोरे । मनु से मनु
कह लाय ॥ गंधार विद्यासे । गंधारे जाति प्रगटाय ॥ ३१ ॥ मानवी से मानेव । कोशिक
विद्या से कोशीक । भूमि तुण्ड से भूमितुण्ड । मूलवीर्य से मूलवीर्य ठीक ॥ ३२ ॥
शंकु का से शंकुक । पाण्डुकी से पाण्डुके जान ॥ काली से कालिकेय । श्वपाकी से
श्वपाक कहात ॥ ३३ ॥ मातंगी से मातंग । वंशाली से वंशाले होय ॥ पांसमूले पांसु-
मूलक । वृक्षमूल से वृक्षमूलक जोय ॥ ३४ ॥ प्रज्ञप्ती से प्रज्ञप्ति । यों षोडश जाति के
माय ॥ आठ जाति नमि की । आठ विनमि की कहाय ॥ ३५ ॥ विद्या बुद्धि ने नीति
से । ऋद्धि सिद्धि वृद्धी घणी पाय ॥ देव समा सुख । रहे विद्याधर बिलसाय
॥ ३६ ॥ विद्या प्रभावे । विदेह क्षेत्र मे जाय ॥ सुणे तीर्थंकर वाणी । धर्म में आत्म
रगाय ॥ ३७ ॥ जघा विद्या चारण । मुनिवर के दर्शन पाय ॥ धर्म अर्थ काम मोक्ष ।
जिस से सहज सजाय ॥ ३८ ॥ यों विद्याधर उत्पत्ती । हुइ इस सर्पणी काल ॥ कहे
ऋषि अमोलक । तृतिय खण्ड अष्टमी ढाल॥३९॥*दोहा॥ श्रीऋषभ जिनराय जी । छद्मस्त
पनके माय ॥ आर्य अनार्य देश में । अप्राति बन्ध जाय ॥ १ ॥ एक वर्ष यों बीतीया ।
न मिला आहार का योग ॥ अनन्त वली जिनराय भी । भुगते कर्म फल भोग ॥ २ ॥

गहवास में एकदा । धान्य खला में फिरते पेल ॥ धान्य खाते देखकर । छींकी पनाइ संकल ॥ ३ ॥ ते बन्धी पशु मुखपर । रही घडी से बार ॥ बन्धे कर्म अन्तराय सो । उदय मय इसवार ॥ ४ ॥ इसही भवमें भोगवे । छग मास पारा माय ॥ अन्तराय तूट सयोग मिल । तेरी सुणा चित्तलाय ॥ ५ ॥*॥ ढाल ° मी ॥ सुकृत की पाल तर हाय । अरा नहीं रही रे ॥ ५० ॥ लावणी ॥ धन्य श्रयांस कुमर । इक्षुरस वहराया ॥ ऋषभ जिनन्दको । वर्षीतप पारणा कराया ॥ टर ॥ गजपुर नगर सब नगरो में श्रेष्ठ जाना । बाहूबलीका पुत्र । सोम प्रभ ' रानो ॥ इन क कुमर श्रयांस ' सूत रोया मांहे । स्वप्न लहा मेरु गिरि पे कीट चढाही ॥ दुग्ध क घडोंस अभिषाप उस कराया । हो गया उज्वल । दिरूप तेज प्रगटाया ॥ जाग्रत हो करत विचार मने मनभाया ॥ ऋषभ ॥ १ ॥ सुबुद्धि शेठ को स्वप्न उसी वक्त आया । सूर्य की टूटी किरणा । श्रेयांस चिटकाया ॥ मन्द होता रवी जिस स रूप भलकाया । सोमप्रभ महा राजकन स्वपना पाया । किसी महाराजाको शत्रुन बहुत सताया ॥ श्रयांस कुमर की सहाय स फतवह पाया ॥ प्रात कालमें तीनों मिल एक ठाया ॥ऋषभ॥२॥ स्वप्न का कथन आपसमें तीनों ने सुनाया ॥ इन तीनों का फल श्रेयांस कुमर को अनाया ॥ मध्यान गवाक्ष में बैठे देख मग मांइ । श्री ऋषभदेवजी भीक्षार्थ रहे आइ ॥ पुर जन रहे धाइ निज सदन पालावे । अयोग्य वस्तु अर्पे प्रभुजी फिर जावे ॥ मौन वृत्ती जिन उदार

नहीं बक्साया ॥ ऋषभ ॥ ३ ॥ कोई स्नान को स्वच्छ सुगंधी जल लावे । कोई पीठी चूवा चंदन अर्चना चढ़ावे ॥ कोई पुष्प फल वस्त्र भूषण ले आवे । कोई अश्व गज स्त्री आदि लाकर बतावे ॥ प्रभु मनसे भी नहीं इच्छे तुर्त फिर जावे । क्या चढ़ाते प्रभु, यों सब ही अचंभा पावे ॥ मिलकर मनुष्यों का वृन्द हल्ला मचाया ॥ ऋषभ ॥ ४ ॥ सुन कोलाहल श्रेयांस कुमर ने जोया । श्री ऋषभ देवजी को देख के हर्षित होया ॥ ऐसी सूरत मैंने पहिली भी देखी कहां ही ॥ यों ईहा पोह करते जाति स्मरण पाइ ॥ तब उनने जाना पूर्व महा विदेह मांय । ये भगवान् थे चक्रवर्ती षटखण्ड राय ॥ उसवक्त इनका सार्थी में कहलाया ॥ ऋषभ ॥ ५ ॥ वज्रनाभ चक्री वज्रसेन तीर्थंकर पास । लीनीथी दीक्षा मैं शिष्य भया था तास ॥ वहां शरीर था जिनजी का तैसा यह देखावे । और जिनजी ने कहाथा चक्री प्रथम जिन थावे ॥ भरत क्षेत्र में वेही यह आज देखाया ॥ ऋषभ ॥ ६ ॥ परभव के गुरू इस भव के दादाजी लगते । अहो भाग्य आज आये देखें पुण्य जगते ॥ यों विचारी तत्क्षण प्रभु के सम्मुख आया । उत्तरासने मुह ढक तिक्खुत्त नमी काया ॥ जातिस्मरण ज्ञाने विधि जान कहे शिर नामी । इक्षुरस है शुद्ध कृपाकर लो स्वामी ॥ प्रभु चिन्ते अब खपी अन्तराय योग्य यह पाया ॥ ऋषभ ॥ ७ ॥ प्रभु के कर पात्र मे कुमर जी कुंभ उंडाया । अतिशय जिनजी के बुन्द गिरन नहीं पाया ॥ पारणा किया प्रभु सुर नर सब

सुपात्र । अहो दान-महात्म दुदभी मस्याया ॥ सुगन्धोदक सौनैय रत्न वपोया ॥ मसाम-शुक्ला तीज अक्षय पद कहाया प्रथम दान धर्म श्रेयांस कुमर ने चलाया ॥ऋषभ॥ ८॥ प्रथम दातार श्रेयांस कुमार सर्पणी माह ६ चित्त वित्त और पात्र, तीनों ही उत्कृष्ट पाए ॥ किया भव संसार कर्म बहु खपाए । चिरस्थाई धना नाम, गुण अमी गयाए ॥ ऋषिनाथ जी तहांसे तत्काल सिधाए ॥ दाल नवमी वर्ष तीजे अमोलक गाए ॥ धन्य ऋषभ जिनन्द धन्य श्रेयांस पद पाया ॥ ऋषभ ॥ ९ ॥ * दोहा ॥ महिमा दानोत्सव तणी । वस्त्र रत्न का ढग ॥ दुदभी खुशी नर सुर तणी । सब भए लोग दग ॥ १ ॥ कच्छ महाकच्छ तपस्वीयों । सुन यह समाचार ॥ वे भी आश्चर्य अति भए । आय श्रेयांस द्वार ॥ २ ॥ और भी लोगों आ० घए । जाना सब वृतान्त ॥ आहार इक्षु रस का यहां । किया ऋषभ भगवन्त ॥ ३ ॥ राजा परजा तपस्विया । श्रेयांस को अति सराय ॥ महा भाग्यशाली कुमर यह । प्रभु की इनपर कृपाय ॥ ४ ॥ बारा महिने प्रभु, को भम । फिरे घर घर धन माय ॥ सर्व स्वय लागों अपन लगा । एक न, भाया दाय ॥ ५ ॥ लेना ता दुर दुर रहा । किन्तु न करी वात ॥ जा कि हमने प्रभु के लिए । त्याग खुस स क्षात ॥ ६ ॥ तूठ रतन कुमर पर । परणा किया पधां आए ॥ वीतराग भगवान है । फिर यह कारण काय ॥ ? ॥ ७ ॥ * ॥ ढाल १० मी ॥ कोयल पंचम, बुसलो रे डाल ॥ ए ॥

उत्त
दान की महिमा जग विस्तारी रे लाल । श्रेयंस कुमर के पसाय हो । सुगुण नर ॥ श्री
वातों लोगों की सुणी रे लाल । श्रेयांस यो दरशाय हो । सुगुणनर ॥ दान ॥ १ ॥ अज्ञा-
भगवान वीत राग हैं रे लाल । सबी पर है सम भाव हो ॥ सु॥ ॥ किन्तु अपनी रे
नता रे लाल । समजे नहीं दान का दाव हो ॥ सु० ॥दान॥२॥ अब प्रभु संसारी नहीं है सावद्य
लाल । जो करे शरीर श्रृंगार हो ॥ सु० ॥ फल फूल भूषण इच्छे नहीं रे लाल । करत
योग परिहार हो ॥ सु० ॥ दान ॥ ३ ॥ जो भोग की इच्छा धरे रे लाल । वेही
स्नान हो ॥ सु० ॥ भूषण फूल से तन सजे रे लाल । वे नहीं होवे भगवान हो ॥ सु० ॥
दान ॥ ४ ॥ अब प्रभुजी राजा नहीं रे लाल । जो पालखी पर होवे सवार हो ॥ सु० ॥
स्त्री संघटना प्रभु नहीं करे रे लाल । निर्मोही निराविकार हो ॥ सु०॥ दान ॥ ५ ॥ सजीव
वस्तु सेवा फलादिके रे लाल॥ प्रभु के काम नहीं आए हो ॥ सुन० ॥ निर्दोष निर्जीव
आहार को रे । लेते जब होवे चहायरे ॥ सु० ॥ दान ॥ ६ ॥ निपजाया अपने भोग कारे
लाल । खाद्य पदार्थ काए हो ॥ सु० ॥ मट्टी पाणी अग्नि हरी अन्न सजीवसेरे लाल । दूर
धरा होवे सोय हो॥ सु० ॥ दान ॥ ७ ॥ जब प्रभु पधारे आंगणे रे लाल । तब कर विनय
सत्कार हो ॥ सु० ॥ प्रतिलाभता कर पात्र में रे लाल । कराना इच्छा मुंजब आहार हो
॥ सु० ॥ दान ॥ ८ ॥ फासुक पाणी धोवण तथा रे । उष्णोदक निज लिए बनाय हो ॥सु॥

ऐसे सरवतें होवे सुखतारे लाल । देना सो प्रभु को पिछाप हो ॥ सु० ॥ वान ॥९॥ उपस्त रहे प्रभू जहां सगे रे लाल । नहीं करे प्रभु किस से वात हो ॥ सु० ॥ केवल ज्ञान प्रासज करी रैं लाल । करें गे धर्म प्रख्यात हो ॥ सु० ॥ वान ॥ १० ॥ निर्वेध भक्ति जिन राजकी रे लाल । कीजीए अवसर पाय हो ॥ सु ॥ तो प्रभु थारी स्वीकारसी रे । भेद सवी दर्शाव्यो पाय हो ॥ सु० ॥ वान ॥ ११ ॥ प्रभु भक्ति की विधि सुणी रे लाल । पूण फिर युवरायसे रैं लाल । अथवा हमे पद भाय हो ॥सु॥ वान ॥१२॥ अस्सी मस्सो कस्सी आविदे रे लाल । हम को दीए प्रभू मे समझाय हो ॥ सु ॥ किन्तु दान विधि दाखी नहीं रे लाल ॥ तुमे किम मालुम थाये हो ॥ सु ॥ वान ॥ १३ ॥ श्रेयांस कहे मित्रो सुणो रे लाल । ज्यो शास्त्र पठन से बुद्धि भाय हो ॥ सु ॥ तैस ही प्रभु के दर्शसे रे लाल । जाति स्मरण ज्ञान मे पाय हो ॥ सु ॥ वान ॥ १४ ॥ स्वामि सग सबक रहे रे लाल । स्यों आठ भव से मै हूं साथ हो ॥ सु ॥ गत तीसर भव के विषे रे लाल । महाविदेह, मैं चक्रवर्ती नाथ हो ॥ सु ॥ वान ॥ १५ ॥ तब पिता व तीर्थकर प्रभुजी तणे रे लाल । मै सारथी था उसवार हो ॥ सु ॥ दोनों ही हम दीक्षित भए रे लाल । वह विधि जानी ज्ञान मझार हो ॥ सु ॥ वान ॥ १६ ॥ आज निशी मैं राजा साहब को रे लाल । सुबुद्धि सेठ ने सुख तीय हो ॥ स ॥ स्वप्न बलण २

आवीये रे लाल । उसका फल यह प्रगटाय हो ॥ सु ॥ दान ॥ १७ ॥ मैने कीट मैरू गिरी तणा रे लाल । दूध से धोया किया साफ हो ॥ सु ॥ मैरू सम प्रभु जी तणा रे लाल । इक्षु रस से मिटाया क्षुधा ताप हो ॥ सु ॥ दान ॥ १८ ॥ सुभटों से छोडाया राय को रे लाल । मेंटा दुःख कर सहाय हो ॥ सु ॥ परिषह भट से छोडाये प्रभू भणी रे लाल । भूपत स्वप्न का अर्थ जणाय हो ॥ सु ॥ दान ॥ १९ ॥ सूर्य सम भगवान की रे लाल । शक्ति किरण खिर जाय हो ॥ सु ॥ ते मैं चिपकाइ इक्षु रस थकी रे लाल । शेठ स्वप्न अर्थ सुणाय हो ॥ सु० ॥ २० ॥ आज अहो भाग्य हम जाणीए रे लाल । रत्न जहाज उतरी मुझ गेह हो ॥ सु ॥ वर्षी तप को पारणो रे लाल ॥ अमृत वुठा मेह हो ॥ सु ॥ दान ॥ २१ ॥ कथन सुणी युवराज से रे लाल । सबही जन हर्षाय हो ॥ सु ॥ दान विधि धारी करी रे लाल । खुशी हो ते घर जाय हो ॥ सु ॥ २२ ॥ वात यह प्रसरी सबी जगह रे लाल । जहां २ प्रभु जी जाय हो ॥ सु ॥ तहां २ उचित्त आदर करी रे लाल । अन्नोदक प्रभुने बहराए हो ॥ सु ॥ दान ॥ २३ ॥ भक्ति भाव दान धर्म से रे लाल । बना लोक रसाल हो ॥ सु ॥ अमोलक ऋषि दान धर्म की रे लाल । यह कही दशमी ढाल हो ॥ सुगुणनर ॥ दान ॥ २४ ॥ * ॥ दोहा ॥ श्रीऋषभ जिनराज जी । करते उग्र विहार ॥ नगरपुर ग्राम वन में । रहते अल्पज काल ॥ १ ॥ आए बाहु

पली देश में । तक्षशिलापुर बाहर ॥ मनोरम उद्यान में । समोसरे अणगार ॥२॥ स्पष्ट समय प्राप्त भया । धरा ध्यान स्थिर होय ॥ वन माली आया तहाँ । ओलखे प्रभु को जोय ॥ ३ ॥ हर्षोत्साह सज्ज हो । आया बाहुबल पास ॥ जय विजय बधाय के । कर जोड़ कर अरदास ॥ ४ ॥ बाबासाहेब आदिश्वरजी । ऋषभदेव महाराय ॥ नम्र स्वरूप शुभ बाग में । खड़े हैं ध्यान लगाय ॥ ५ ॥ * ॥ ढाल ॥ ११ मी ॥ बधवं बोल मानो हो ॥ ए ॥ प्रभु आगम बाहुबली सुणी । रोम २ हुलसाया हो ॥ तत्क्षीण सिंघासण छोड़ के । स्वश सीस नमाया हो ॥ १ ॥ सुभाग्ये प्रभु पधाँ पाव हो ॥ टेर ॥ राज चिन्ह को छोड़ के । सब भूषण बगसाया हो ॥ अर्थ तेरे लीधे भण्डार से । सोनैय दिराया हो ॥ सुभाग्ये ॥ २ ॥ तलार बोलाय हुक्म दिया । सब शोहर सजायो हो ॥ देव लोक सी नगरी करो । अरे देर न लगो हो ॥ सु ॥ ३ सेनापति बोलाय के । चतुरग सेना सजाइ हो ॥ हुक्म द सबी परिवारको । चला वदन ताँइ हो ॥ सु ॥ ४ ॥ आज तो दिन थोड़ा रहा । राते किम जवाब हो ॥ प्रांत सब मिल चाल सां । निशी पूरी अब थावे हो ॥ सु ॥ ५ ॥ सुणी हुक्म महाराजका । प्रभु आगम आणी हो ॥ आनन्द प्रसरा सब शोहर में । धन्य घड़ी ते मानी हो ॥ सु ॥ ६ ॥ केवरं धुर का निकाल के । केबार आड़ छिट कामा हो ॥ सुबनु पोता क रगा पीपा । सुवर्ण कळशा भल फाया हो ॥ सु ॥ ७ ॥ गर्जे मुलवाका सञ्जु

किया । नवे तेजी तुरंगा हो ॥ रथ सिणगार्या अणअणे । पायक नाचे मन रंगा हो ॥ सज सु ॥ ८ ॥ निशाण नेजा द्रूजा उडे । वादिंत्र सब सांजे हो ॥ राजा राणी कुमरजी । भये सब राजे हो ॥ सु ॥ ९ ॥ बहू दिन हुए प्रभु दर्श को । आज भाग्य प्रगटाये हो ॥ दीदार देखें साता पुछेंगे । यो केई भावना भावे हो ॥ सु ॥ १० ॥ उत्सूकता जन मन तणी । देखी निन्द्र पलाए हो ॥ चार प्रहर की रात सो । वर्ष जैसी लखाए हो ॥ सू ॥ ११ ॥ लगी श्री श्रेयांस को कथा । तेही प्रभु यहां पधारे हो ॥ दान देने लाभ लेने की । उमंग जगी अपार हो ॥ सु ॥ १२ ॥ अकल्प रहना जान के । पधारे अन्य दिवसोदय होते थके । प्रतिमा स्थित भगवानो हो ॥ चलो २ स्थानो हो ॥ सु ॥ १३ ॥ पुर में वादिंत्र गर्जन लगे । सबी करे जय कारो हो ॥ अंजन गिरी सम कुंजरे । बाहूबली प्रभु दर्श ने । सबी हुए तैयारो हो ॥ सु ॥ १४ ॥ राणीयों पुत्रने विराजे हो ॥ भूषण छत्र चमर ऋद्धि । इन्द्र जैसी छाजे हो ॥ सु ॥ १५ ॥ शेठ सेनापति संत्वी । पुरजन सु सजावो हो ॥ सु ॥१६॥ पोतरे । सामंत उमरावो हो ॥ अबी जा पडू प्रभु चरण में । अति मन यों ठाठ पाट से परिवरे । उस बाग में आए हो ॥ प्रभुजी न देखाए हो ॥ नृप सबारी उत्सुकाए हो ॥ सु ॥ १७ ॥ चउ दिग बाग अवलोकतां । अर्ज करे नीचो झुकी । आज ही प्रातः आइ देखके । माली दोड आए हो ॥ सु ॥ १८ ॥

दाखो हो ॥ दिन थोडे आदिश्वर जी । पधारे हम मांह हो ॥ सु ॥ १९ ॥ आता था खबर देने को । आप गये पधारी हो ॥ सुनी वचन वनपाल के । लगी कलेजे कटारी हो ॥ सु ॥ ॥ २० ॥ ध्यानस्थ जहां होते प्रभु । चरण चिन्ह बताया हो ॥ चक्राङ्कुश लक्षण लखा । रज सीस चढाया हो ॥ सु ॥ २१ ॥ पश्चिम दिशे म गा प्रभु । खबर हम पाइ हा ॥ पोकारे बाहु बलजी । कमा तिहां रहाही दो ॥ सु ॥ २२ ॥ बाबा आदेश्वर जी । कृपा करो इण वारो हो ॥ इस वक्त कहां पधारिये । पीछे यहां पधाराहो ॥ सु ॥ २३ ॥ किन्तु उत्तर न मिलने वक । मन अति पस्तायो हो ॥ सुख माम बाहिर आये प्रभु । मे दर्शन नहीं पाया हो ॥ सु ॥ २४ ॥ धिक मेरी मूर्खता । उसही वक्त न आया हो ॥ चिप पडी बैरन रात्री । पीनी अतराया हो ॥ सु ॥ २५ ॥ सबही विचार निष्फल हुए । रात्रि मैं विचार हो ॥ सभी को दर्शन लेने व । गमाया वक्त मारे हा ॥ सु ॥ २६ ॥ सचीव कर जोडी भणे । स्वामि चिन्ता निवारो हो ॥ यदि प्रभुजी नहीं मिले तो । चरण चिन्ह निहारा हो ॥ सु । २७॥ बाहुबली कहे भव भाग्य सुख । मापा ह्राम मै हारे हो ॥ प्रभुविना यह चरण चिन्ह । क्या गरजने सारे हो ॥ सु ॥ २८ ॥ भतराय हुवे फिर कभी । प्रभुजी जो पधारें हो ॥ तो प्रमाद अब नहीं करूं । सेवा काम तत्कारे हो ॥ सु ॥ २९ ॥ यों विचार पीछे फिर । सुजन सभी परिवारो हो ॥ घर

आइ सुखसे रहे । भगवन गुण संभारो हो ॥ सु ॥ ३० ॥ धन्य ऋषभ जिनरायजी । ममत्व
कुलपर नाहीं हो ॥ ढाल एकादस अमोलक कहे । मुक्ति मार्ग यही हो ॥ सु ॥ ३१ ॥ ❀ ॥
दोहा ॥ यों प्रभु अप्रति बंधक सदा । वायु ज्यों करत विहार ॥ आर्य अनार्य देश में ।
स्पर्शना के अनुसार ॥ १ ॥ देव दानव मानव तणा । उपसर्ग बहु प्रकार ॥ मेरूपर अडग
रही । सहते भाव सम धार ॥ २ ॥ बाह्याभ्यान्तर तप विविध । करते अभिग्रह अनेक ॥
परिषह सम्मुख हुइ । सहते दृढ रख टेक ॥ ३ ॥ विशुद्ध संयम उग्र तप । शांत दांत निहाल
॥ दर्शन गुण लुब्ध भव्य जन । लेते सम्यक्त्व स्वीकार ॥ ४ ॥ एक सहस्र वर्ष इसपरे ।
बीता छद्मस्त काल ॥ घन घाती कर्म स्थिल पडे । मोह का मद दिया गाल ॥ ५ ॥ + ॥
ढाल १२ मी ॥ जल्ला की देशी में ॥ तिण काले महा नगरी विनीता ढिग आया हो ॥
ऋषभ जिनराज ॥ तिण काले महा नगरी विनीता ढिग आया हो ॥ जिनन्द ॥ तहां उप-
नगर पुरमंताल सोभाया हो ॥ ऋषभ जिनराज ॥ तहां उपनगर पुरमंताल सोभाया हो ॥
जिनन्द ॥ १ ॥ ताके उत्तर दिशा नन्दन वन के समानो हो ॥ ऋषभ ॥ ताके उत्तर ॥
जिनन्द ॥ शकटमुख नामे बाग रम्य अति स्थानो हो ॥ ऋषभ ॥ शकट ॥ जिनन्द ॥ २ ॥
विहार करंता प्रभुजी उसमें पधारे हो ॥ ऋषभ ॥ विहार ॥ जिनन्द ॥ अष्टम तप कर वृक्ष
तल ध्यान स्थिर धारे हो ॥ ऋष ॥ अष्टम ॥ जिन ॥ ३ ॥ अप्रमत होते चढी

प्रणाम की धारा हो ॥ ऋप ॥ अप्रमत ॥ जिनन्द ॥ अपूर्व करण कर खपक पथ स्वीकारा
हो ॥ ऋप ॥ अपूर्व ॥ जिनन्द ॥ ४ ॥ पृथक्त्व वीतर्क शुक्ल ध्यान पहिला पाया हो ॥
ऋषभ ॥ पृथक्त्व ॥ जिनन्द ॥ अवेदी अकषाइ होकर मोहो को घाया हो ॥ ऋषभ ॥
अवेदी ॥ जिनन्द ॥ ५ ॥ एकत्व वीतर्क द्वीतिय पाय के मांही हो ॥
ऋषभ ॥ एकत्व ॥ जिनन्द ॥ बाकी रहे तीनों कर्म को दिए भगाइ हो ॥
ऋषभ ॥ बाकी ॥ जिनन्द ॥ ६ ॥ ज्ञाना दर्शना वर्णिय अन्तराय जाणो हो ॥ ऋषभ ॥
ज्ञाना ॥ जिन ॥ पांच नव पांच भेदकी करदी हाणो हो ॥ ऋप ॥ पांच ॥ जिन ॥ ७ ॥
चारों कर्म होते नाश सप तिमिर नशाया हो ॥ ऋप ॥ चारो ॥ जिना ॥ पड़ल फटे ज्या
निर्मल रवि प्रगटाया हो ॥ ऋ ॥ पड़ल ॥ जि ॥ ८ ॥ फाल्गुण कृष्णा एकादशी का दिन
सारा हो ॥ ऋ ॥ फाल्गुन ॥ जिनन्द ॥ उत्तराषाढा नक्षत्र पे चन्द्र पधारा हो ॥ ऋ ॥ उत्तर
॥ जिन ॥ ९ ॥ प्रात काल में केवल ज्ञान प्रगटाया हो ॥ ऋप ॥ प्रात ॥ जिन ॥ युगपत
सब द्रव्य क्षेत्र काल भाव देखाया हो ॥ ऋप ॥ युगपत ॥ १० ॥ द्रव्य ने भावे सर्व ही
लोक प्रकाशाहो ॥ ऋप ॥ द्रव्य ॥ जिन ॥ चारों गति में हुआ सुख मिटी नर्क त्रासा हो॥
ऋप ॥ चारो ॥ जिन ॥ ११ ॥ चौपद ही इन्द्रो का आसन कम्पाया हा ॥ ऋप॥ चौपट ॥
जिन ॥ अवधि ज्ञान से जाना प्रभु केवल पाया हो ॥ ऋप ॥ अवधि ॥ जिन ॥ १२ ॥आभि

योगी देव से गमन विमान बनवाया हो ॥ ऋ ॥ अभियोगी जिन ॥ सवी परिवार से
परवरे प्रभुढिग आया हो ॥ ऋष ॥ सवी ॥ जिन ॥ १३ ॥ उसही समय में
एक योजन के मांहि हो ॥ ऋष ॥ उसही ॥ जिनन्द ॥ वायु कुमार ने कचरा
दिया हटाई हो ॥ ऋष ॥ वायू ॥ जिन ॥ १४ ॥ मेघ कुमार ने वैक्रय जल
छिट काया हो ॥ ऋष ॥ मेघ ॥ जिन ॥ ॥ व्यंतर देवो ने वैक्रय कुसुम निछाया
हो ॥ ऋष ॥ व्यंतर ॥ जिनन्द ॥ १५ ॥ अशोक वृक्ष प्रभु जी के पीछे प्रगटाया हो ॥ऋष॥
अशोक ॥ जिन ॥ प्रभु जी के तन से बारा गुणा उंचा लहकाया हो ॥ ऋष ॥ प्रभु ॥
जिन ॥ १६ ॥ स्फाटिक रत्न सिंहासण प्रभु नीचे दीसे हो ॥ ऋष ॥ स्फटिक ॥ जिन ॥
तापर विराजे पद्मासने जग दीसे हो ॥ ऋष ॥ तापर ॥ जिन ॥ १७ ॥ छत्रपर छत्र यों
तीन सिरपर लटकंता हो ॥ ऋष ॥ छत्र ॥ जिन ॥ मोतीयों की झालर चन्द्र समा दीपंता
हो ॥ ऋष ॥ चन्द्र ॥ जिन ॥ १८ ॥ चारों बाजु चमर रह्या है बींजाई हो ॥ ऋप ॥ चारो ॥
जिन ॥ रत्न जडित दंडीसें बींजाते देखाइ हो ॥ ऋष ॥ रत्न ॥ जिन ॥ १९ ॥ प्रभु मुख
क्रांति को प्रभा मंडल प्रकाशे हो ॥ ऋष ॥ प्रभु ॥ जिन ॥ सूर्य से अधि को बारा गुणों
तेज भासे हो ॥ ऋष ॥ सूर्य ॥ जिन २० ॥ देव दुंदुभी गगन में रही गरणाइ हो ॥ ऋष ॥
देव ॥ जिन ॥ बारा क्रोड मानो गेबी बाजे गगने सुणाइ हो ॥ ऋष ॥ बारा ॥ जिन॥ २१ ॥

चौपट इन्द्रमे देव असंख्य परिवारो हो ॥ ऋप ॥ चौपट ॥ जिन ॥ आए प्रभु सन्मुख
खली २ करे नमस्कारो हो ॥ ऋप ॥ आए ॥ जिन ॥ २२ ॥ विमानिक देवीयों
वचन कर प्रभु तार हो ॥ ऋप ॥ विमानिक ॥ जिन ॥ अग्नि कोण में बैठी जगा
बनाइ हो ॥ ऋप ॥ अग्नि ॥ जिन ॥ २३ ॥ साधु साध्वी दोसी सो इहां विराजे
हो ॥ ऋप ॥साधु॥जिन॥ पहिल से ही विनय सांचवे धर्म के साजे हो॥ऋ॥पहि॥जि ॥२४॥
भुवनपति व्यतर ज्योतिषी की देवी हो ॥ ऋ ॥ भुवन ॥ जिनन्द ॥ नैऋत्य कोन में बैठी
साविनय तेषी हा ॥ ऋप ॥ नऋत्य ॥ जिन ॥२५॥ भुवनपति व्यतर ने ज्योतिषी देवो हो ॥
ऋप ॥ भुवन ॥ जिन ॥ वायव कोन में बैठे करे प्रभु सेवो हो ॥ ऋप ॥ वायव ॥जिन ॥२६॥
वैमानिक देवता मनुष्य मनुष्यणी आया हो ॥ ऋप ॥ विमानिक ॥ जिन ॥ ईशान कोन
में बैठे नम के जिनराया हो ॥ ऋप ॥ ईशान ॥ जिन ॥ २७ ॥ इस तरह भमल चार कोस
का भराया हा ॥ ऋप ॥ इस ॥ जि ॥ तिर्यंच तिर्यंचणी भी वाणी सुणने आया हो ॥ऋप॥
तिर्यंच ॥ जिन ॥ २८ ॥ जाति स्वाभाविक वैर सपीका विरलाया हो ॥ ऋप ॥ जाति ॥
जिन ॥ योगस्थाने तेमी सुणन उमगाया हो ॥ ऋप ॥ योग ॥ जिन ॥ २९ ॥ प्रेमोत्सुक
सव यथोचित स्थाने शोभाया हो ॥ ऋप ॥ प्रेमो ॥ जिन ॥ जिनमुद्रा मे सबी का चित्त
सोभाया हो ॥ ऋप ॥ जिन ॥ जिन ॥३०॥ समव सरण की रचन यह दरशाई हो ॥ ऋप ॥

ऋषि अमोलक गाई हो ॥ ऋषभ ॥ ढाल ॥ जिनन्द ॥
समव ॥ जिन ॥ ढाल द्वादशमी ऋषि अमोलक गाई हो ॥ ऋषभ ॥ ढाल ॥ जिनन्द ॥
जिन दीक्षा ३१ ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ इस पहिले विनीता विषे । राज महल के मांय ॥ ऋषभ जिन दीक्षा
नन्तरे । मरूदेवी जी माय ॥ १ ॥ पुत्र वियोग की बिरा से । अती ही गइ पीडाय ॥
अहो निश आर्त ध्यान वश । नेत्र में नीर वहाय ॥ २ ॥ खान पान रूचे नहीं । नहीं
गमें नृत्य गीत गान ॥ ऊंडा निश्वाश को न्हाखती । ऋषभ २ का ध्यान ॥ ३ ॥ झुर २
कर पिंजर बनी । चक्षु तेज भया नाश ॥ सुन कर परिषह ऋषभ के । पाती अतिहि त्रास
॥ ४ ॥ अन्यदा भरत रायजी ॥ प्रात समय में आय ॥ दादी जी के चरण मे । सविनय
सीस नमाय ॥ ५ ॥ * ॥ ढाल १३ मी ॥मोटी या जगमाहें मोहणी ॥ए० ॥ मोह कर्म
प्रबल अति । तस उदय मे हो प्रणती पलटाय ॥ तेहा क्षिण होवे तदा । तत्कालज
हो जीव शिव सुख पाय ॥ मोह ॥ टेर ॥ ॥ १ ॥ मरू देवी जी इणपर कहे । कोण लागे
हो अवी म्हारे पाय ॥ तब कहे बडा पोतो आप को । ज भरत हो म्हारा नाम कहाय
॥ मोह ॥ २ ॥ आवो भरत भल आवीया । काँई लाया हो तुझ तातरी खबर ॥ अबी
कहां मुझ ऋषभ है । विरह दु ख हो मुझ होय जबर ॥३॥ नाक के श्लेषम की तरह । राज
सरूपदा हो गयो ऋषभ छिटकाय ॥ पीछी खबर कीनी नही । तो भी मरू देवी हो मरी
नहीं अजु तांय ॥ मोह ॥ ४ ॥ संयम क्रिया मैने सुनी । म्हारा मन मे हो सिलगे अंगार॥

अहो कष्ट महारा मापम में । तन उणारा हो है अति सुकुमार ॥ मोह ॥ ५ ॥ इहां तो
सुग्ग शैया पोढतो । उहां सोदे हो ककराली जमीन ॥ इहां सिंहासन पैठे तो ।
उहां पैठ हा तृण ककर छीन ॥ मोह ॥ ६ ॥ इहां तो पेवता अर्पियो,
नित्य करता हा अत्युतम आहार ॥ उहां तो सुक्यो रह तो होसी ।
उहां पासी हो लिए तो हासी कोई वार ॥ मोह ॥ ७ ॥ इहां रम्य छत्र धरावतो ।
उहां फिरता होसी हो कष्टक धूप मझार ॥ इहां ता चमर ढुलाप तो । उहां मत्सर हो
डास पशा चम्कार ॥ मोह ॥ ८ ॥ इहां गज गाजी रथ पालखी । पैठ करतो हो उपवन
की सहल ॥ उहां उगाड पगे फिर । डोंगर झाडी में हो घणी विषम गेल्हे ॥ मोह ॥ ९ ॥
इहां अग रक्षक दास दासीयां । सदैव करते हो तस सार समार ॥ उहां सिंह रींछ चिता
पांधरा । सतासी हो रखे भजगर कंपाल ॥ मोह ॥ १ ॥ इहां अपत्सरा गानतान में ।
उदा रह ता हा पनकर गुलतान ॥ उहां अनार्य लोगो के भिप । सहता होसी हो गाली
ने अपमान ॥ मोह ॥ ११ ॥ शाल दुशाला इहां ओढता । नित्य करता हो अनेक पोषा
क ॥ उहां ता नम तस देहडी । रहती होसी हो लपट धूल खाक ॥ मोह ॥ १२ ॥ कहां
तक दुःख वरणु,मपम का । अन्तर पडा हो आकाश पाताल ॥ कोण पूछे सार मापम
की । माज मजा में हो पेगा गमावो हो काल ॥ मोह ॥ १३ ॥ पक हजार वर्षे पीतीया ।

आज तांइ हो नहीं भेजा समाचार ॥ इहां से भी किसे भेजने । नहीं मंगाई हो ऋषभ
की सार ॥ मोह ॥ १४ ॥ ऐसो कठोर मन किम भयो । घणो कोमल हो थो
ऋषभ स्वभाव ॥ तुम सब घणा विनीत था । पण पाछा हो कोइ पुछा नहीं
भाव ॥ मोह ॥ १५ ॥ इसो करणो युगलो नहीं । थां दोन्या ने हो हुं
कहूं समजाय ॥ वेगी बताय महाराज ऋषभ ने । विन मिलियां हो मुझ
से न रहाय ॥ मोह ॥ १६ ॥ इत्यादि दादीजी मुखे । भरत राजा हो सुणकर सआ-
चार ॥ अर्ज करे कर जोड के । महामाता जी हो चिन्ता करो न लगार ॥मोह॥१७॥ आप
सम स्तव शिरोमणि । माताजी के हो पुत्र हैं मेरे तात ॥ उनका दुःख क्या कर सके ।
क्या गिनती में हो उनके उत्पात ॥ मोह ॥ १८ ॥ दुस्तर संसार समुद्र से । पार होने हो
भरकस परियास ॥ कर रहे पिताजी अहो निशी । लक्ष बिन्दू हो मोक्ष तरफ है तास
॥ मोह ॥ १९ ॥ जो जो दुःख प्राप्त ज होवे । परिषह हो उपसर्ग उन तांय ॥ ते सब इष्टि-
त्तार्थ साधवा । केवल लक्ष्मी को रहे निकटज लाय ॥ मोह ॥ २० ॥ वनचर खेचर दुःख
प्रद । देव दानव हो मानव आजान ॥ प्रभुजी के अतिशय करी । हो जावे हो सब सुख
के स्थान ॥ मोह ॥ २१ ॥ विश्वास कीजे मेरे बचन पे । थोडे दिन में हो पावेंगे केवल
ज्ञान ॥ तब आप को मै बतावूंगा । तनुज आपके हो कैसे है भाग्यवान ॥ मोह ॥ २२ ॥

तप मालुम होगी आप को। यों सुणकर हो माजी धैर्यज लाय॥ बाल तरे सपन्ह तीसरे। कहे अमोलक हो विधे पादीजी समझाय॥ मोह॥ २३॥ ❀॥ दोहा॥ दादी पोता के परस्पर। जब हो रही थी बात॥ पेहरादार कह आय के। भरत जी स भवदात॥ १॥ दो नर आये द्वारपर। यमक समक तस नाम॥ कहे भरतेश्वर आन दो। आ करे दोनों प्रणाम॥ २॥ जय विजय वधाय के। यमक करे अरदास॥ शकटानन उध्यान में। पुरमीताल पुर पास॥ ३॥ आदिनाथ भगवान जी। पाये हैं केवल ज्ञान॥ अलोकीक रचना हो रही। आप महा पुण्यवान॥ ४॥ तब शमक कर जोड कहे। आयुध शाला मांय॥ चक्र रत्न प्रगट भया। अहो महा भाग्य महाराय॥ ५॥ ढाल १४ मी॥ आज आनन्द घन योगीश्वर आया॥ ए०॥ भरत नरेश्वर पाय पधाई। दोनों यमक शमक दीधी बधाइरे लो॥ हर्ष हृदय में रहा उभराइ। क्या करना चिन्ते मन मांहि रे लो॥ भरत॥ १॥ उधर तो पिता भी केवल पाए। इधर चक्र रत्न प्रगटाए रे लो॥ पहिले किसका महोत्सव करना। अधिक कौन दोनों माएरे लो॥ भरत॥ २॥ धर्म मगल प्रथम परधानो। सर्वोत्कृष्ट बखानो रे लो॥ धर्म प्रभावे चक्र प्रकटानो। तो पहिले धर्म दीपानो रेलो॥ भरत॥ ३॥ समव शरण की रचना रचाइ। अपूर्व अलोकीक जणाइ रेलो॥ त पेस॥ प्रथम जाई। फिरे लेख्यु चक्र ने वधाइ रेलो॥ भरत॥ ०॥

घमक झमक दोनों वधाइये तांइ । अंगाभूषण बक्साइरे लो ॥ साडी बारा लक्ष दीनारो विराइ । सुखी किया जन्म पुराइरे लो ॥ भारत ॥ ५ ॥ फिर आए दादी जी पासे । हर्षित नमी करे अरदासे रे लो ॥ आप पुत्र पुरिमताल पधारे । पधारो अब मिलावुं तासेरे लो ॥ सुण भारत ॥ ६ ॥ देखो विभूति ऋषभ जिनेन्द्र की । तैसी नही त्रिलोक मझारे रे लो ॥ पाटवी गज आगम प्यारे पुत्र ऋषभका । मरु देवीजी हर्षी अपारे रे लो ॥ भारत ॥ ७ ॥ चतुरंगदल संग अति ही उमाया । होदे दादीजी बैठाया । स्कन्धे भारत महारायारे लो ॥ माजी के मन।दधी उछली तरंगा । देखूंगी पुर बाहिर चल आयारे लो ॥ भारत ॥ ८ ॥ भूल गयो बेटा माता तांइ । महारी खिसी भी देखूंगी बताइरे उपलभ ऋषभ तांइरे लो ॥ प्रतिहार्य अतिशय देखाए रे लो ॥ लो ॥ भारत ॥ ९ ॥ समव सरण ढिग तत्क्षीण आए । वाहां प्रसारी रहे बताए रे लो ॥ भारत ॥ १० ॥ आप कहे भरत देखो दादी जी सन्मुख । अब लेवो जी यहां ये निरखियारे लो ॥ है कोइ जग मे कहे ते मैरानन्द है दु खीया । विभूति प्रभु की परखी यारे ॥ लो ॥ भारत ॥ ११ ॥ चौषट इन्द्र खडे ऐसा सुखिया । देव देवी असंख्य रयाइरे लो ॥ नर पशुओंसे मेदनी भराई । सबी के मध्य हजारी मांइ । विराजे महाराइ रे लो ॥ भारत ॥ १२ ॥ हाहा क्या छटा अशोक बृक्ष की । स्फटिक सिंहासन कैसा दीपाइ रे लो ॥ छत्र चामर प्रभा मंडल ए । अहो कैसी छटा सोभाइरे लो

॥ भारत ॥ १३ ॥ देव दुंदुभी गगने गरणाट । विद्याधर के युगल रहे आटरे ॥
दिव्य ध्वनी प्रभुजी की वाणी । अहो ! दशोंही दिशामें गुजाइ रे लो ॥ भारत
॥ १४ ॥ इत्यादि सुणी भरत जी की वाणी । दिव्य धुनी देव दुदभी सुणाणी
रे लो ॥ सभी कथनी माजी साची मानी । प्रेम न उमग उभरानी रे लो ॥ भरत ॥ १५ ॥
पुत्र प्रेम हृदय उभराया । नहीं समाते नेत्रद्वार पहाया रे लो ॥ सबही पडल मेल तत्क्षीण
धोवाया । दिव्य नयन तज प्रगटायारे लो ॥ भरत ॥ १६ ॥ अनूपम छटा समव शरण की
निहाली । भरी परिषद भक्ति उजमालीरे लो ॥ निष्परी प्रभु दिशा को भाली । पल
झांकी मन में तस्कासीरे लो ॥ भरत ॥ १७ ॥ अहो ! जिस लिए तन मन मैं तपाया ।
झुरी २ नेण गमायारे लो ॥ जिसे वक्षन मन अति उमगाया । सन्मुख आइ चली हृ
दय ठापारे लो ॥ भरत ॥ १८ ॥ किन्तु अशम को परमा न किंचित । मेर सामे मो
नहीं वखे रे लो ॥ अलौकिक सुख सम्पत्ती में सोभाया । अब मुझी माता किस लेख
रे लो ॥ भरत ॥ १९ ॥ अहा ! माया ममता झुनी आज आणी । मतलब की सगाइ
पहचानीरे लो ॥ मे मूरणी इनमे लुभानी । निश्चय नहीं कोइ किसकानीरे लो ॥
भरत ॥ २० ॥ यों ध्यान धेय ध्याता एकाग्रता । तन्मय बन मोह खपावर लो ॥ क्षायक
भाव अपूर्व करण कर । क्षपक श्रेणि में सिधावरे लो ॥भरत॥२१॥ मोह क्षीण होने तीमा

कर्म तब खपीया। केवल ज्ञान प्रगटियारे लो ॥ तत्काल आयुष्य का अन्त भी आगया। बनी आठोंइ कर्म क्षय कारियारे लो ॥ भरत ॥ २२ ॥ अयोगी बनी मोक्ष तत्क्षीन पधारी। बनी अजरामर अवी कारीरे लो ॥ दादीजी की देही गिरी उसवारी। अचंभी भरत निहारीरे लो ॥ भरत ॥ २३ ॥ आर्त आइ तब देखे देवगण। निर्वाण महोत्सव मनाइरे लो ॥ मरुदेवी की गुण रहे गाइ। तब समझे दादी मोक्ष सिधाइरे लो ॥ भरत ॥ २४ ॥ वियोग उदासी खुशी निर्वाणकी। यों मिश्र भरत मन थइयारे लो ॥ इस अवसर्पिणी काल के मांही। मरु देवीजी प्रथम मोक्ष गइयारे लो ॥भरत॥२५॥अठा १ कोटा कोटी सागर का। अन्तर मोक्ष गमन रहियारे लो॥ धन माता मरुदेवीजी आपने। मार्ग चालू कर दइयारे लो ॥ भरत ॥ २६ ॥ मरु देवीजी के वदन के तांइ। देव क्षीर समुद्रे पधराइरे लो ॥ ढाल चउदमी ऋषि अमोलक। वन्दे मरु देवी माइरे लो ॥ भरत ॥ २७ ॥ ❀ ॥दोहा॥ उत्प्रेक्षा विज्ञयों करे। मरू देवीजी किया विचार ॥ मुक्ति सुंदरी से लुब्ध हो। ऋषभ तजा संसार ॥१॥ लुब्धा ऐसा प्रेम में। प्रभा नहीं करी मोय ॥ देखु कैसी है पुत्र बंधु। पहोंची आगे सोय ॥ २ ॥ पुत्र पनोता विश्व मे। ऋषभ देव सम होय ॥ सहस्र वर्ष महाकष्ट सही। केवल लक्ष्मी ली सोय ॥ ३ ॥ आतेही पहिली मात को। भेट करी उस तांय ॥ परम सुखी जननी करी। एसाही करो सबी भाय ॥ ४ ॥ अब उस वक्त भरत रायजी। जिन

पवनके तांय ॥ गज तज नीचे उतरे। जिन मेम्न उमगाय ॥ ५ ॥ * ॥ ढाल १५ मी ॥ याजू
पन्य खिसर गइ फगना ॥ ए ॥ जय जय प्रभु ऋषभ जिनन्दा। आप प्रगट जग में
दिणन्दा जी ॥ जय २ ॥ टेर ॥ विनय साचवने भरत राया। पञ्च अभिगम साचवन
कराया जी ॥ जय ॥ १ ॥ राज चिन्ह भूषण पर हारया। जैसे शास्त्र नी पूर धरीया जी ॥
जय ॥ २ ॥ सचित्त वस्तु पुष्पादिक जेही। अकल्पनिय दूर धरेइजी ॥ जय ॥ ३ ॥ वाहन
पगरखा दूर धराइ। उत्तरासण स मुख अडणावाइ जी ॥ जय ॥ ४ ॥ देख इन्द्र परिषद
मध्य हाई। आप जिनान हर्ष भर आइ जी ॥ जय ॥ ५ ॥ चन्द्र चकार ज्यों नयन लो
भाया। दर्शी अजब छ्गा मन मलकाया जी ॥ जय ॥ ६ ॥ नमें सविनय मस्तक झुकाई।
करांजली आपनी सिर ठाइ जी ॥ ७ ॥ तिक्खुत्ता की विधि वन्दन कीना। सन्मुख उभ
प्रमे मन भीना जी ॥ जय ॥ ८ ॥ स्तुति पूर युक्ति शब्दापारे। आ प्रत्यक्ष गुण निहारे
हा ॥ जय ॥ ९ ॥ अहो अखिल जगत् के नाथा। अभय दान विश्व के साता जी ॥ जय ॥
१० ॥ प्रथम तीर्थंकर पयाधि पवा। अहो भाग्य स मिल आप सेवा जी ॥ जय ॥ ११ ॥
पेभ्यत आप को भरम विरसाया। वीतराग साक्षात देखाया जी ॥ जय ॥ १२ ॥ प्रत्यक्ष
रचना पर्भी विसमाया। वैर स्वभाविक पशु का विरलाया जी ॥ जय ॥ १३ ॥
हिरन व्याघ्र पन्नग को वाद। बिल्ली मुसा मिलाये न वादे जी ॥ जय ॥ १४ ॥

सर्प नवल के आगे फिरता । कुत्ता चिता से नहीं डरता जी ॥ जय ॥ १५ ॥
यह आप अतिशय का प्रभाव । क्या आश्चर्य नर बने सम भाव जी ॥ जय ॥ १६ ॥ यह
सुबुद्धि मुझ में प्रगटावे । यही यांचु हूं चित्त स्थिर थावे जी ॥ जय ॥ १७ ॥ इन्द्रों को
रत्न कर आगेवानी । आप बैठे सविनय उस स्थानी जी ॥ जय १८ ॥ चार कोस के
मंडल मांही । क्रोडोंगम प्राणी गए समाइ जी ॥ जय ॥ १९ ॥ जिनराज अतिशय प्रभावे।
कोइ दिक्कत जरा नहीं पावे जी ॥ जय ॥ २० ॥ चार जाती के देवी ने देवा । नर नारी
तिर्यच तिर्यंचनी समेवा जी ॥ जय ॥ २१ ॥ इन द्वादश परिषद मांही । प्रभु अमृत
वाणी वर्षाइ जी ॥ जय ॥ २२ ॥ एकयोजन लग आवाज जावे । ढिग दूर सम सूगन ले पावे
जी ॥ जय ॥ २३ ॥ संस्कारी है जिन वाणी । तूच्छता रहित वचन सन्मानी जी ॥ जय ॥
२४ ॥ गंभीर्य मेघ राशी गर्जावे । सूत्र अर्थ तत्त्व रहस्य पूर्ण पावे जी ॥ जय ॥ २५ ॥
प्रति छन्द ध्वनी रो उठे । स्निग्ध वचन दूध शकर से मीठे जी ॥ जय ॥ २६ ॥ छे राग
तीस रागिणी समावे । श्रोता नागपुगीवत् घुमावे जी ॥ जय ॥ २७ ॥ सूत्र रूप वचन सब
जानो । शब्द अल्प अर्थ विस्तारित बखानो जी ॥ जय ॥ ॥ २८ ॥ वचन परस्पर विरोध न
पावे । स्थापे अहिंसा हिंसा न फिर स्थापावे जी ॥ जय ॥ २९ ॥ एक पूरी कर दूजी वार्ता
फरमावे । गड बड भी जरा न करावे जी ॥ जय ॥ ३० ॥ संशय उपजे न सूनत व्याख्यानो

। दोष कहाची न सके विद्वानो जी ॥ जय ॥ २१ ॥ प्यारे वचन चित्त एकाग्र करता । विचक्षण ता पूर्वक उचारता जी ॥ जय ॥ २२ ॥ शृंखला बन्ध अर्थ सन्ध आवे । नव तत्त्व पदार्थ प्रकासाय जी ॥ जय ॥ २३ ॥ असार बात थोडे में पुरी करते । समझे पचा भी वचन ऐसे सिरते जी ॥ जय ॥ २४ ॥ स्वश्लाघा पर निन्दा न करते । पापी तजी पाप निन्दा उचरत जी ॥ जय ॥ २५ ॥ मर्म मोसा किसीके न प्रगटावे । क्रोध बीचमें उठने नहीं पाव जी ॥ जय ॥ २६ ॥ योग्यता से गुण प्रकाशे । खुशामदी न किसी की दासे जी ॥ जय ॥ २७ ॥ गुण उत्पन्न होवे ऐसा ही कहते । छिन्न भिन्न भी अर्थ नहीं करत जी ॥ जय ॥ २८ ॥ व्याकरण से शुद्ध सब वाणी । मध्यस्त वृत्ति से प्रगटाणी जी ॥ जय ॥ २९ ॥ सुनत श्रोता चमत्कार पाव । क्यातोप अन्य ऐसा फरमावे जी ॥ जय ॥ ३० ॥ हुबहु बात सभी पर्याय । बीचमें विश्रांति न लावे जी ॥ जय ॥ ३१ ॥ पृच्छक बिन पूछे उत्तर पाय । स अपक्षा वचन ठस जाय जी ॥ जय ॥ ३२ ॥ अर्थ पद वाक्य जुदा जुदा । शोभित पावडी समक्ष मुदा जी ॥ जय ॥ ३३ ॥ चालू अर्थ सिद्ध कर अन्य करे । दीर्घ काल व्याख्यान देते न थके ब जी ॥ जय ॥ ३४ ॥ जिनवाणी अतिशय यह जाणो । बाल चौदा अमोल सुणी व्याख्यानो जी ॥ जय ॥ ३५ ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ भव्य जीवों को तारने । प्रसार न जग धर्म ॥ चार तीर्थ को स्थापने । विदूस न सब भ्रम ॥ १ ॥ उक्त गुण वे

तीस युक्त । दे देशना जिन राय । भव्य सुणे प्रेमातुरा । वरणु जे उपजाय ॥ २ ॥ ❀ ॥
ढाल १६ मी ॥ गफल मत रहरे ॥ ए० ॥ धर्म दिल धररे । सु जाण, धर्म दिल धररे ।
धर्म है परम सुख दाता । स्वर्गऽपवर्ग मे पहोंचाता ॥ टेक ॥ अनादि इस जगत् के
मांही । जीव पुद्गल ठसी भयांइ । जीव चैतन्य पुद्गल अजीवाइ । दोनों के सम्बन्ध से
संसारो । सोभी अनादि जग मझारो ॥ धर्म ॥ १ ॥ प्रथम तीर्यच गति के मांडे । निगोद
राशी बडी कहवाइ । अनन्तान्त प्राणी उस में रहाइ । पंच अण्डर से वीचारो । आवे
नहीं कभी उसका पारो ॥ धर्म ॥ २ ॥ सुई के अग्र भाग पे आवे । असंख्य श्रेणि[1] तामे
पावे । प्रत्येक श्रेणि प्रतर[2] असंख्य रहावे । प्रत्येक प्रतर असंख्यात गोले[3] । प्रत्येक गोले
शरीर असंख्य बोले ॥ धर्म ॥ ३ ॥ प्रत्येक वपु जीवे है अनन्ता । अनन्त ज्ञानी भाखे
भगवंता । अपना भी उस सेही आवंता । पैंषट हजार पांचसो छत्ती सो । मरण एक
मुहूर्त करी सो ॥ धर्म ॥ ४ ॥ अनन्त वेदनी वहां जीव पावे । तासे अकाम निर्ज्जरा थावे ।
कोइक जीव उबक बाहिर आवे । नदी स्थिति पाषाण के न्याया । प्रत्येक तन वह जीव
पाया ॥ धर्म ॥ ५ ॥ पृथवी पाणी अग्नि हरी वायो । तामें काल असंख्य गमायो ।
परवश्य दुःख वह भी बहुत पायो ॥ पुण्य जिसने अनन्त कमाया । स्थावर
तज बना त्रस काया ॥ धर्म ॥ ६ ॥ बेइन्द्रि तेइदि चौरिन्द्रि । ए तीनों

कहावे पिछेन्द्री । अनत २ पुण्ये पवे एक इन्द्री । योंही असञ्ञी पञ्चन्द्रि मावे । पड पञ्च जीव अनत सरू पाप ॥ धर्म ॥ ७ ॥ पुण्य अनन्त सचय करिया । सञ्ञी पचान्द्रिय मे अवतरिया । पाप कर नर्क में सचरिया । घमा पसा सीला अजना रीठा । मघा माघ वसी म पइठा ॥ धर्म ॥ ८ ॥ असख्यात काल तहाँ पीनाया । तियञ्च नर्क गमनागमन कराया । पुण्य बधे देव पणा भी पाया । सुवन पति व्यतर ज्योतिप देवा । विमानिक जाति चार कहवा ॥धर्म॥९॥ तहाँ भी काल अनत पीताया । नीच देवता में दु ख पाया । उच पपता में सुखी रहाया । यों भव भ्रमण अग म करता । भपतन कर्मे मनुष्य म अवतरता ॥ धम ॥ १० ॥ अकर्म मूमि अन्तर द्वीप माहं । रहा सुखी धर्म नहीं पाए । कर्म मूमि म धर्म हाथ आए । धर्म मिलना मुशकिल जाण । भव स्थिति पञ्चनेका आये गणो ॥ धर्म ॥ ११ ॥ धर्म मूल सम्यक्त्व कहाइ । ते उभेय प्रकार प्रगटाइ । निसर्ग और अधि गमाइ । निसर्ग प्रकृति उपशम में आवे । अधिगम गुरू उपदेशे पाव ॥ धर्म ॥ १२ ॥ कर्म आठ लगे जीव के सगी । काल अनादि से हुआ भवरगी । अप मत्त स्थिति हाये सगी । तप जीव धर्म सम्मुख होवे । आत्मानुभव तहीं जोवे ॥ धर्म ॥ १३ ॥ ज्ञानावर्णी दरशाना वरणी । वेदनी अन्तराय कम सरणी । तीस कोटा कोटी सागर स्थिति पहनी । नाम गोत्र वीस कोडा कोडी सागर । सीतर कोटा कोटी मोहणी की धर ॥ धर्म ॥ १४ ॥ सयस्थिति

सद्भाव से सब स्थिति हरता ।
को एकत्र करता । दो सो कोटा कोटी सागर भरता । सद्भाव से सब स्थिति हरता ।
एक कोटा कोटीसे काम रहावे । तबही जीव धर्म सम्मुख आवे ॥ धर्म ॥ १५ ॥ यथा
प्रवृति करण उसे कहते । गंठी भेद का पंथ वे लेते । किन्तु यहांभी कर्म गोता देते ।
हवा से नाव कंठ आ पीछी जावे । तैसे जीव जग में गोता खावे ॥ धर्म ॥ १६ ॥ राग
रू द्वेष का धक्का भारी । गंठी भेद होना दुष्कर कारी ॥ हलुकर्मी कोइक होवे पारी ।
असंख्य भाग पलका कम थावे । अपूर्व करण तब आवे ॥ धर्म ॥१७॥ सकाम वीर्य उसके
प्रगटावे । दीर्घ पंथ तय तब करावे । तबही ग्रन्थी भेद को पावे । अनिवृति करण वह
पाया । सम्यक्त्व रत्न वहां प्रगटाया ॥ धर्म ॥ १८ ॥ अनन्तानुबन्धी क्रोध मान माया ।
लोभ मिथ्या मोह खपाया । मिश्र समकित मोह उपशमाया । क्षयोपशम सम्यक्त्व
उसे कहिए । गमनागमन असंख्य वक्त करइ ये ॥ धर्म ॥ १९ ॥ जैसे राख मे अग्नि
दबावे । तैसे सातों प्रकृति उपशमावे । सो उपशम सम्यक्त्व कहावे । एक भव मे दो
वक्त यह आती । अनेक भवे पांच वक्त पाती ॥ धर्म ॥ २० ॥ सातों प्रकृति समूल होय
नाश । क्षायिक समकित होय प्रकाश । अनंत काल तक तास निवास । ये तीन समकित
खरी कहिये । संयोगिक भेद अनेक लहिए ॥ धर्म ॥ २१ ॥ सेस्वादन पडवाइ को होवे ।
चढते मिश्रता मिश्र कहे खोवे । अभव्य दीपक समकित सोवे । कारक रोचक आदि

भेदो। समझे रूप मिट भय भेदो ॥ धर्म ॥२२॥ समकितके के लक्षण पांच। शम सम्वेग निर्वेद राच। अनुकम्प आस्तता साच। शाम प्रथम धोक को शमावे। संसार असार सम्वेगी जणावें ॥ धर्म ॥ २३ ॥ विषय विष निर्वेद समावे। दुःखी की अनुकम्पा लावे। आस्तिक को कोइ न डगावे। शुद्ध श्रद्धा स्वधर्मी की भक्ति। दीपावे धर्म जिन आणा मे अशक्ति ॥ धर्म ॥ २४ ॥ नैसर्गिक गुण यों प्रगटावे। सद्भागे सद्गुरु सग पावे। उपदेश आदेश ज्ञान बढावे। तत्त्व नय निक्षेप प्रमाणो। अग उपाग सूत्र को जानो ॥ धर्म ॥२५॥ फिर क्रिया रुचि जब जागे। सो चारित्र पथ में लगे। चारित्राचारित्र श्रावक अनुरागे। द्वादश व्रत प्रतिमा ग्यारा। यथाशक्ति करे जो स्वीकारा ॥ धर्म ॥ २६ ॥ त्रस जीव की हिंसा छोडे। अनर्थ स्थावर हिंसा न करे कोडे। झूठ चोरी से मन मोडे। परस्त्री त्यागे स्वस्त्री मर्यादा। धन प्रमाण से न रखे ज्यादा ॥ धर्म ॥ २७ ॥ उपभोग परिभोग परिमाण। अनर्थ पाप न करे आन ॥ सामायिक नियम यथाव ठान। पौषध करे दान शुद्ध देव। ये द्वादश व्रत श्रावक सेवे ॥ धर्म ॥ २८ ॥ चारित्र पथ महाव्रत धारि। हिंसा झूठ चोरी धन नारि। ए पांचो सर्वथा परिहारी। सर्व सावद्य योग के त्यागी। साधु साध्वी सो बड भागी ॥ धर्म ॥ २९ ॥ अन्तिम सलेखणा कर के। वरे स्वर्ग मोक्ष समाधी धर के। तिरे तिरेंगे ए धर्म आदर के। अनन्त तीर्थंकर का फरमान। यह

धर्म शाश्वता त्रिकाल मयान ॥ धर्म ॥ ३० ॥ सुखेच्छु ओं यही हित कारो। यथेच्छा इस को स्वीकारो। जन्म प्राप्ति का करो सारो। तृतिय खण्ड ढाल षोडश थाइ। अमोलक ऋषि ध्रुव धर्म गाई ॥ धर्म ॥ ३१ ॥ * ॥ दोहा ॥ सुधा समानी देशना। मुद्दा भरी सब बात ॥ क्षुधातुरे भोजन समी। रम गई साते धात ॥ १ ॥ धर्म मर्म भाव भेद युत। समझे नर पशु देव ॥ अलभ्य अद्भूत लाभ पा । पुलकित बने तत्खेव ॥ २ ॥ अपूर्व वाणी सांभली। अपूर्व अवसर मांय ॥ अपूर्व व्रत सभाचारन। अपूर्व इच्छा थाय ॥ ३ ॥ ज्यों अंकूरे मही भरी। जलबृष्टी से प्रगटाय ॥ त्यों भव्य मन बोध बृष्टी से। रहे वैराग्य उभराय ॥ ४ ॥ केइ सम्यक्त्व केइ व्रत को। केइ साधु होने तांय ॥ सज्ज भये तेही वरणवुं। तीर्थ चार स्थापाय ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल १७ मी ॥ भवियण भाव सुणो ॥ ए० ॥ भरत जी के ऋषभसेन नन्द। वाणी सुण पाए आणन्द ॥ हुं वारी चारी तीर्थ की ॥ तत्क्षीण उठ किया नमस्कार। कर जोडी ने करे उच्चार। हूं वारी ॥ १ ॥ अहो स्वामिनाथ दयाल। बोध अमृत बृष्टि हम पर डाल। हूं वारी ॥ विषय कषाय अंगार बुझाइ। करी शांति होगइ ठंडाइ। हुं वारी ॥ २ ॥ भूखा भोजन प्यासा ने पाणी। शीते वन्हीं उष्णे हीमाणी। हुं वारी ॥ रोगी औषधी अपुत्रिया पुत्र। मिले हर्षे त्यों हम बने पवित्र ॥ हुं वारी ॥ ३ ॥ संसारार्णव तारण जहाज। अहो भाग्य मिलगइ हमे आज ॥ हु वारी ॥ तांत मात

प्राणादि जग मांह । भव भ्रमण का दुःख न मिटाइ ॥ छु धारी ॥ ४ ॥ ऐसा जाणी धारण
ऐसे धारा । इमे कर यो भवोदधि पारा ॥ छु ॥ जैसे विधि जग की मिटाइ । तैसे भव
भ्रमण देवो छुडाइ ॥ छु ॥ ५ ॥ दीक्षा शिक्षा देना सा वाजे । हो कर मसम पेडा पार कीजे
॥ छु ॥ यों पांच सो भ्रात सगाते । ऋषभसेनजी प्रभु से फरमाते ॥ छु ॥ ६ ॥ सातसो
पोत्र भरतके आए । सभी दीक्षा लने उमाए ॥ छु ॥ मण्डोपकरण सभी के तिण ठाइ । वेष
सहाय भरतजी मगाइ ॥छु॥७॥ पैठ इशान कौन सब जाइ । गृही वेष ने दिया छिटकाइ ।छु।
स्यहस्त पंच मुष्टि लोच । कर के तज दिया सघलाइ सोच ॥ छु धारी ॥८॥ साधु वेष सज्ज
प्रभु सन्मुख आए । सविधि सविनय अग नमाय ॥ छु ॥ प्रभू सावद्य योग पच
क्खाए । हूए साधु सब अति ही सोभाए हो ॥ छु ॥ ९ ॥ सब ब्राह्मी ने सुधरी पाई ।
दीक्षा लेवण अतिही उमाइ हो ॥ छु ॥ पाच सो राज पुत्री सघाती । भरत जी मे इच्छा
दरशाती हा ॥ छु ॥ १० ॥ सुन्दरी रूपे भरत मोहाय । पट रागिणी करना चहाय ।छु॥
दीक्षा लेते तत अटकाई । अभी श्राविका पणो धताइ ॥ छु ॥ ११ ॥ ब्राह्मी जी सभी परि
वारो । करी लोच साध्वी लिंग स्वीकारो ॥ छु ॥आइ प्रभुजी को नमन करिया । प्रभु दीक्षा
दी सब हर्षे भरिया ॥ छु ॥ १२ ॥ फिर भरता दिक केई राजा । श्रावक होने उमगे सब
साजा ॥ छु ॥ भरत जी समकित स्वीकारी । पचम गुण स्थान न सके धारि ॥ छु ॥ १३ ॥

षट खण्ड का करना राज । उसमें करने पडे केइ काज ॥ हूं ॥ और श्रावक बहुला थइया ।
नारे व्रतादि व्रत नेम गहिया ॥ हू ॥ १४ ॥ सुन्दरी जी व्रत धारे धारे । और श्राविका केइ
बनी उसवारे हो ॥ हू ॥ यों चारों तीर्थ स्थापाया । साधु साध्वी श्रावक श्राविकाया॥ हू ॥
१५ ॥ केइ मनुष्य मनुष्यनी पशु पक्षी । बने श्रावक श्राविका प्रभु समक्षी ॥ हू ॥ देवता
मनुष्य तिर्यंच केई । सम्यक्त्व की शिक्षा लेइ हो ॥ हू ॥ १६ ॥ कच्छ महाकच्छ सिवाय ।
राज तपस्वियो सब तिहां आय ॥ हू ॥ फिर दीक्षा ली प्रभु पास । यों चउ संघ जमा
विकास ॥ हू ॥ १७ ॥ तब प्रभु चउ संघ मझार । प्रग८ कीनो तासु अ.चार ॥ हू ॥
यत्ना से सबही वरती जे । अयत्ना यथा शक्ति तजी जे ॥ हूं ॥ १८ ॥ प्रथम ज्ञानसहित
करे क्रिया । बने आत्म तन्मय तेही तिरिया ॥ हूं ॥ महाव्रतो की भावना बताई । जुदी २
साधु सती ने समझाइ ॥ हूं ॥ १९ ॥ ज्ञान सम्यक्त्व व्रत के अतिचारो । श्रावक श्राविका
को कहे उसवारो ॥ हू ॥ क्रिया साधन विधि विधानो । बताइ ने करायां सहूने मानो ॥
२० ॥ * पोंडारिकादि सब साधुजी तदाइ । ब्राह्मीजी आदि आर्याइ ॥ हूं ॥ भरतादि
श्रावक सारा । सुंदरी आदि श्राविका उसवारा ॥ हु वारी ॥२१॥ साविनय किया नमस्कारो

* जो भरतजी के पुत्र ऋषभसेनजी ने दीक्षा ली उनहीका नाम ' पोंडारिकजी ' स्थापन किया. यही ऋषभ
देव भगवान के पहिले गुणधर हुए,

। प्रभुजी की हित दीक्षा स्वीकारो ॥ हु ॥ साधु साध्वी गुरु गुरुणी परिवारो। पुण्यकरस्याने गये उसधारो ॥ हु धारी ॥ २२ ॥ श्रावक श्राविका और देवी देवा । सभी स्वस्थाने गये तत्क्षणा ॥ हु ॥ अति हर्षोत्सहा मन उमराया । पाले स्वीकृत व्रत सुखे रहाया ॥ हु धारी॥ ॥ २३ ॥ प्रभु साथ ले साधु परिवारो । किये जन पद देश में विहारो ॥हु॥ ग्रामागर नगर पाटण मांहि । विचरे धर्म रह फेलाइ ॥ हु ॥ २४ ॥ जब प्रभु मार्ग क्रमण करते । तब मार्ग आगे सदक जैसे सुधरते ॥ हु ॥ वृक्ष झुकते मानो करे नमस्कार । कांटे ऊंधे पंखे प्रदक्षिणा स्वाद ॥ हु ॥ २५ ॥ शीत ऋतु में उष्णता परशावे । शीतसी उष्ण ऋतु प्रणमावे ॥ हु ॥ वायु अनुकूल चलता । घोर सिंहादि विघन दूर टलता ॥ हु ॥२६॥ योजन पच्चीस मांही। प्राणघातक रोग नहीं थाइ ॥ हु ॥ एसा पहिले उत्पन्न भया होइ । प्रभु पधारे विरला जावे सोइ ॥ हु ॥ २७ ॥ अतिवृष्टि अनावृष्टी न होवे । निपजे सभी धान्य श्रेष्टी सोइवे । ॥ हु ॥ स्व चक्री परजा को नहीं सतावे । पर चक्री आने नहीं पावे । हु ॥ २८ ॥ जघन्य एक क्रोड देव । करे निरन्तर प्रभुजी की सेव ॥ हु ॥ प्रभुजी के अतिशय ऐसे भारी । विचरे तहां सुर्खी होय ससारी ॥ हु ॥ २९ ॥ राजा प्रजा सबही सन्माने । माने साक्षात यही भग वान ॥ हु ॥ नाभी नन्दन की महिमा अपार । ते तो पूरी कोइ सके न उचार । हु ॥ ३० ॥ यों भया प्रथम धर्म प्रचार । उभय भवमें सुख दातार । हु ॥ ढाल पंचमी अमोलक

गाई। ऋषभ चरित्र तृतीय खण्ड थाई ॥ हूं वारी ॥ ३१ ॥*॥ तृतीयखण्ड उपसंहार, हरी गीत छन्द ॥ श्री ऋषभदेव भगवान को लोकांतिक सुर सुचना करी। वर्षिदान दे संयम लियो बारमासे हुइ भिक्षाचरी। श्रेयांस कुवर दिया दान विद्या घरों की उत्पत्ती भइ। केवल ज्ञान प्रभू लिया। मरु देवी जी मुक्ति गइ ॥ १ ॥ चारों तीर्थ स्थापन भए। भारत में धर्म प्रसारी या। अनुकरणीय कथन इतने तृतीय खण्ड माहे किया ॥ आगे खण्ड साधन कथन भरतेश्वर का सुणीजीए ॥ जिनेन्द्र गुण वर्णत अमोलक हिरी सिरी सुख लीजीए ॥ २ ॥

शास्त्रोद्धारक बालब्रह्मचारी श्री अमोलकऋषीजी महाराज प्रणित
श्री ऋषभदेव भगवान चरित्रस्य तृतिय खण्डम् समाप्तम्

॥ अथ चतुर्थ खण्डम्–चक्रवर्त्याधिकार ॥

दोहा ॥ अरिहन्त सिद्ध साधु धर्म । शरण चार सुखकार ॥ चौथा खण्ड आरम्भे । इन चारा का नमस्कार ॥ १ ॥ प्रणमु आदि जिनन्द्र को । जिन किया धर्म प्रचार ॥ भरतेश्वर भरतजी तणा । कहू चक्रवर्त्याधिकार ॥ २ ॥ वैताढ्य गिरी से दक्षिणे । दक्षिणोदधि उत्तरय ॥ गंगा नदी से पश्चिमें । सिन्धु नद पूर्व दिशाय ॥ ३ ॥ शतार्द्धेर योजन चौदा । उन्नीस भाग इग्यारे ॥ उक्त चारों के बीचमें । विनीता राजधानी सार ॥ ४ ॥ पूर्व और पश्चिम दिशी । लम्बी योजन बार ॥ चौड़ी उत्तर दक्षिणे । नव योजन विस्तार ॥ ५ ॥ धनपति द्रव निर्मित मे । सुवर्ण प्रकार सुरग ॥ विविध मणि मय कगूरे । इन्द्रपुरि अनुभाग ॥ ६ ॥ भरत नरेश्वर राजवी । नरों में इन्द्र समान ॥ चक्रवर्त पद पामीया । उसका करू बखान ॥ ७ ॥ ❀ ॥ ढाल १ ली ॥ इन सर दरिया री पाल । कभी दोय नगरी ॥ ए० ॥ नगरी विनीता के माय । भरत जी राजीया । महाराज ॥ भरतजी राजी या ॥ महा हिमवन्त समान । उत्तम गुण साजी या ॥ महाराज ॥ उत्तम ॥ वज्र वृषभ नाराच बल । सम चौरस संस्थान है ॥ महा ॥ सम ॥ उत्पाती आदि चारों । बुद्धि निधान है ॥ महा ॥ बुद्धि ॥ १ ॥ मेघछ दूसेर श्रृंगोर । वर्द्धमान भद्रासेन ॥ महा ॥ वृद्ध ॥ छत्र चामर शाल

ध्रूजे । चंक्र हल मूशल भन ॥ महा ॥ चक्र ॥ रथ स्वस्तिक अंकुश । चन्द्र सूर्य अग्नि जुआ ॥ महा ॥ चन्द्र ॥ समुद्र ने इन्द्रध्रूजे । पृथवी कमल काछुआ ॥ महा ॥ पृथवी ॥ २ ॥ हास्ति सिंह दंड पहाड़ । अश्व मुकट कुंडला ॥ महा ॥ अश्व ॥ नन्दावर्त धनुष्य माल । शत अठ लक्षन भला ॥ महा ॥ शत ॥ सुन्दर कोमल कर पांव । दक्षिणावर्त वाल थे ॥ महा ॥ दाक्षिण ॥ श्रीवत्स हृदय आंकित्त । पद्मसम तल लाल थे ॥ महा ॥ पद्म ॥ ३ ॥ तुरंगसा पुरुष चिन्ह गुप्त । सुगन्धी शरीर था ॥ महा ॥ सुगन्धी ॥ बत्तीस राज गुण युक्त । परजा का पीरथा पर ॥ कुबेर सम उदार । समुद्र से धीर थे ॥ महा ॥ समुद्र ॥ अपराजित जगमांय । सग्राम में वीर थे ॥ महा ॥ संग्राम ॥ ४ ॥ यों शुभोपम युक्त । आनन्द कारी रूप था ॥ महा ॥ आणंद ॥ उत्तमोत्तम गुणालंकृत मांडलिक भूपथा ॥ महा ॥ मांड ॥ निष्कंटक सब राज । काज निष्कंटक सहु ॥ महा ॥ काज ॥ धर्मात्म पुण्यात्म । गुण केता कहू ॥ महा ॥ गुण ॥ ५ ॥ उत्कृष्ट पुण्य पसाय । अवध शाळा माय ने ॥ महा ॥ अव ॥ चक्ररत्न हुआ उत्पन्न । वधाइ तस पाय ने ॥ महा ॥ वधाइ ॥ धर्म को पहिले कियो काम । महिमा केवल ज्ञान की ॥ महा ॥ महिमा ॥ फिर करे संसार संभाल । यह रीति पुण्यवान की ॥ महा ॥ य ॥ ६ ॥ आयुध शाळा पति आय । बधाइ दे राजने ॥ महा ॥ वधा॥ अब लीजीये चक्र बधाय । षट खण्ड राज साज

ने ॥ मह्रा ॥ पद ॥ हर्षोत्सहा से नरिन्द । तत्क्षीण खडे भये ॥ मह्रा ॥ तत्क्षी ॥ सभा में सात आठ पाय । चक्र सम्मुख गये ॥ मह्रा ॥ चक्र ॥ ७ ॥ वाहिण दीक्षण जमी को लगाय । वाया ऊमा ठया ॥ मह्रा ॥ वावा ॥ दोनों हाथ जोडे शिर स्थाप । चक्र को नमन किया ॥ मह्रा ॥ चक्र ॥ राज चिन्ह मूषण वर्जे । सभी दे इनाम में ॥ मह्रा ॥ सभी ॥ हर्षित गृहे ते आय । सुस्नेप जीवी पामने ॥ मह्रा ॥ सुस्नो ॥ ८ ॥ बैठे सिंहासन नरेश । तलार बोलाइया ॥ मह्रा ॥ तलार ॥ करावो नगर शृंगार । हुक्म फरमाइया ॥ मह्रा ॥ हुक्म ॥ कचरा भशूषी कर दूर । गंधोदक छाँटिया ॥ मह्रा ॥ गंधो ॥ लीपे पोते रंगे मकान । बदन कलश स्थापीया ॥ मह्रा ॥ बद ॥ ९ ॥ और भी योग्य प्रकार । सोभा सारी करी ॥ मह्रा॥ सोभा ॥ आज्ञा सोंपी पीछी आय । कोटवाल हर्षे भरी । मह्रा ॥ कोट ॥ मजन घर के मांय । भरतभूप आवीया ॥ मह्रा ॥ भरत ॥ माणि पीठका पर बैठ । स्नान करावीया ॥ मह्रा ॥ स्नान ॥ १० ॥ चूवा चन्दन लगाय । क्षोम युगल भेष पहरिया ॥ मह्रा ॥ क्षोम ॥ मुकुट कुंडल पूर्ण हार । कवचोरादि सज लिया ॥ मह्रा ॥ कव ॥ कल्प वृक्षक समान । विभूषित भूप भये ॥ मह्रा ॥ विभू ॥ कोरट वृक्ष पुष्प हार युत। छत्र शिरपर ठये ॥ मह्रा ॥ छत्र ॥ ११ ॥ चामर चार वींजाय । वधाय बधीजन सभी ॥ मह्रा ॥ वधाय ॥ दंड नायक गण नायक । आदिसे घिरे तभी ॥ मह्रा ॥ आदि ॥

श्वेत बद्दल सेचंद । निकले परवार में ॥ महा ॥ निक ॥ तैसे भरत महाराज । सोभे दर-
बार में ॥ महा ॥ सोमे ॥ १२ ॥ दास दासी बहू साथ । अनेक देश वेश से ॥ महा ॥
॥ अनेक ॥ रत्न कळश पंखा करंड । ले चले पीछे नरेश से ॥ महा ॥ ले ॥ छत्र चमर
धूप कुडछे । कितने धरे हाथ में ॥ महा ॥ चले ॥ १३ ॥ विविध वार्दित्र के नाद । गगन
गर्जाविया ॥ महा ॥ गगन ॥ आगे भरत महाराज । शस्त्र शाळ आवीया ॥ महा ॥
॥ शस्त्र ॥ देखत चक्र करे प्रणाम । मयुर पीछे पूंजीया ॥ महा ॥ मयुर ॥ उदक धारा से
सींच । गोशीर्ष सुकड आर्चिया ॥ महा ॥ गो ॥ १४ ॥ चांदी के चॉवल के आठ । मंगल
अलेखिया ॥ महा ॥ मंगल ॥ स्वस्तिक[1] श्रीवत्स[2] नन्दावर्त[3] । वर्धमान भद्रासन किया
॥ महा ॥ वर्ध ॥ मत्स कळश और दर्पन । सम्मुख चितरिया ॥ महा ॥ सम्मुख ॥ सुगंधी
पुष्प बहू भॉत । तहां बिखेरिया ॥ महा ॥ तहां ॥ १५ ॥ रत्न कुडछे श्रेष्ट धूप । चक्र
धूपित किया ॥ महा ॥ चक्र ॥ सात पांव पीछे सरक । नमन करे गह गिया
॥ महा ॥ नम ॥ फिर उपस्थान शाळ आय । सिंहासन विराजिया ॥ महा ॥ सिंह ॥
अष्टादश श्रेणिप्रश्रेणि । बोला हुकम दिया ॥ महा ॥ बोला ॥ १६ ॥ चक्र रत्न का
उत्सव । आठ दिन कीजिए ॥ महा ॥ आठ ॥ कर हांसल सब बंध । दंड नहीं ली
जी ए ॥ महा ॥ दंड ॥ नृत्य गान वंदित्र । नगर में कराइ ये ॥ महा ॥ नगर ॥ दूजा

पताका माला से । नगर सजाइ पे ॥ महा ॥ नगर ॥ १७ ॥ सुनकर सब हर्षाय । किया सब तैसे ही ॥ महा ॥ किया ॥ वरतु रहा आनन्द । सर्व स्थान वैसेही ॥ महा ॥ सर्व ॥ चौथे खण्ड प्रयल ढाल । अमोल ऋषि कह ॥ महा ॥ अमोल ॥ पूर्व सञ्चित पुण्य योग । ऐसी ऋद्धि लहे ॥ महा ॥ ऐसी ऋद्धि लहे ॥ १८ ॥ * ॥ दोहा ॥ विषयानु राग परिणाम से । भरत जी सुन्दरी मांय ॥ कहे पट राणी तुमें करू । विलसा सुख जग मांय ॥ १ ॥ सुन्दरी कहे अहो राजवी । पट खण्ड साधन काज ॥ पहिले आप पधारी ये । यथा करिये सब राज ॥ २ ॥ फिर आवो जब घर तुमे । तब जासी देखाय ॥ माना कथन यह भरत जी । सुन्दरी मन हर्षाय ॥ ३ ॥ सुन्दरी चित्त में चिन्तवे । क्या काम का यह रूप ॥ दूवे दूवावे उभय भव । पढ़ .. क ..ो.ई अन्ध कूप ॥ ४ ॥ खण्ड साध आवे जहां लग । करू शरीर निसार ॥ जिम तु.. को हावे म्हारो । आवे सयम भार ॥ ५ ॥ वेले वेले पारणा । आंबिल लुख्खा आहार ॥ करे सती समता धारी । काढे शरीर से सार ॥ ६ ॥ ध्यान धरे ऋषभेश का । ब्राह्मी का धन्य देय ॥ अब दिगविजय भरतेश का । सुणो भव्य जन तेय ॥ ७ ॥ * ॥ ढाल २ री ॥ उधवजी सदेशो कह द्यो श्यामने ॥ ए० ॥ चढ़तो तेज प्रताप भरत महाराज को । उत्कृष्ट पुण्यक ऋद्धि नरमी पाय जो ॥ टेर ॥ छत्र् सात रत्न अष शस्त्र शाल में । चक्र रत्न की तरेह तेमी मगटाय जो ॥ चढ़तो ॥ १४ मणि कांगाणी

चरम तीनों रत्नही ए। लक्ष्मी भंडारसे प्रगटे तब सूभाग जो॥सेनापति गाथापति वार्धिक पुरोहित। ए चारों विनीता में मिले पुण्य लाग जो॥ चढता ॥ २॥ यों रत्नों का योग जमा सब आयने। खण्ड साधन मन भरतजी का जब थाय जो॥अष्टान्हिक उत्सब सम्पूर्ण होव ते। आयूध शाळा से चक्र रत्न बाहिर आय जो॥ चढतो ॥ १ ॥ चढा अन्तालिख खडा रहा अधर तहां। सूर्य समा रहा दशही दिशा प्रकाश जो॥ सानिध तस एक सहश्र देव सेवे सदा। सर्व रत्नो में प्रथम पुण्य बिकाश जो॥ चढतो ॥ २॥ वज्र रत्न में नाभी है उस चक्र की। आरा है लोहीताक्ष रत्न रे माय जो॥ धार जम्बु नन्द रत्न में झलकती। विविध रत्न में अन्दर की पडघी जडाय जो॥ चढतो ॥ ३॥ माणि मुक्ताफल जाल करी भूषित है। वादिंत्र नाद ज्यों घुघरीयों घमकाय जो॥ सर्व ऋतू के पुष्पों से अलंकृत है॥ सुदर्शन चक्र अभिधान कहाय जो॥ चढतो ॥ ४॥ विनीता नगरी के मध्य भाग से निकला। देखी जन मन अद्भुत अति विस्माय जो॥ दक्षिण गंगा नदी तट तक आय के। पूर्वाभिमुख गमन का मार्ग जणाय जो॥ चढतो ॥ ५॥ मागध तीर्थ तरफ चक्र जाता लखी। भरत भूपति का मन तन अति हर्षाय जो॥ कोटम्बिक पुरुष बोलाके कहे शीघ्र कीजीए। पाटवी मयंगल लावो इहां सजाय जो॥चढतो॥ ६॥ तैसेही हय गय रथ पायक सहु सज्ज करो। आज्ञा प्रमाणें होगए सब तैयार जो॥ भरत जी भी सज्ज होकर गज

पे विराजिए। सोमे सेना मे देवों में इन्द्र अनुहार जो ॥ चढ तो ॥ ७ ॥ आत्म रक्षक दो हजार क्षिपेश सज्ज भए। चक्रवर्ती को जय २ शब्द बधाय जो ॥ कोरट वृक्ष के पुष्प माल से सोभिता। सिरपर छत्र है चार चमर वींजाय जो ॥ चढतो ॥ ८ ॥ गंगानदी के दक्षिण दिशी के तरफ चले। ग्राम नगर पुर खेड आगर के माय जो ॥ द्रोणमुख पट्टण मडंप जो आवते। वश में करते निजरापे लेते जाय जो ॥ चढतो ॥ ९ ॥ योजन २ अन्तर करते पडाय सो । सुखसेन सेनापति अश्वारूढ आगे चलत जो ॥ दंड रत्न स विशम भूमिको वाम करे। सडक बने तहां सुख से सेना आवत जो ॥ चढतो ॥ १० ॥ चक्र अनुकरण करते गंगा तीरसे। छावणी डाली रहते सुखस्थान जो ॥ पुण्य पसाये सुखद सामग्री सभी तदा । सबको सहजे मिलती तिर्हाइ आन जो ॥ चढतो ॥ ॥ ११ ॥ मागध तीर्थ के पास चलते यों आगए। समुद्र के पूर्व कठे करन मुकाम जो ॥ वार्द्धिक रत्न बोलाइ हुक्म दे राजवी। यहां रहने को बनावो योगा ठाम जो ॥ चढतो ॥ ॥ १२ ॥ कार्य कुशल घणो वार्द्धिक देवके सहाय से। एक मुहूर्त में दीनो नगर बसाय जा ॥ राज मेहल सेना वाछा सामग्री से। छेद विधि विभाग यथोचित मांय जो ॥ चढतो ॥ १२ ॥ बारा योजन लम्बी चौडी नव योजने। विनीता राजधानी के सागे अनुहार सो ॥ मध्य-म मेह्ल किया बयालीस भूमीया । सोलो चौक चउदिशी में चौबट

और भी मेहलायत ने ग्रह हवेलीया। राजा सामंत उमराव द्वार जो॥ चढतो॥ १४॥ सुख से रह सके सबही मुसदी जोग जो॥ गज शाळा घुड शाळा रथ शाळा करी। दुकानो सबही सेनिक लोग जो॥ चढतो॥ १५॥ चोवट त्रिवट राजमार्ग बहुला किया। बाग वाडी अति जो चाहिये सराजाम जो॥ सयनासन वासन वस्तू सब चाहती। हजार रमणिक करण आराम जो॥ चढतो॥१६॥ दो घडी में नगरी सब साजे सजा दिवी। देखी छटा देवता वार्द्धिक रत्न ने सहाय जो॥ आज्ञा शीघ्र ही सोपी श्रीमहाराय ने। पौषध सब हर्षाश्चर्य जन पायजो॥ चढतो॥ १७॥ अभिशेष हास्तिसे नरेन्द्र नीचे ऊतरे। दर्भ बिछोना बिछाया शाळा माहे आये चाल जो॥ वस्त्राभूषण सवी उतार अलगे रखे। अष्टम भक्त तपधारी तत्काल जो॥ चढतो॥ १८॥ मागध तीर्थ पति देव आराधवा। अकेले ही बैठे आसन जमाय जो॥ शम भावे चिन्तन करे मागध पति तणो। और सब सेना सामंत निज २ स्थान ध्यान लगाय जो॥ चढतो॥ १९॥ गान तान नृत्य वादिंत्र खान के। रहते सुख से इच्छित भोग भोगंत जो॥ एक पुण्यातम संग सुखी होवे पान में। काल क्रमत है जावे नहीं कळंत जी॥ चढतो॥२०॥ खण्ड चतुर्थ ढाल द्वीतिय यह हूइ। घणा। जिन तप जप करणी में दीना सहाय जो॥ ऋषि अमोलक पुण्य प्रबल सुख पाय जो॥ चढतो॥ २१॥ *॥ दोहा॥ श्री भरत महा-

राज थी । पौषध शाळा मांय ॥ मगध तीर्थपति ध्यावते । सुखे तीन दिन वीताय ॥ १ ॥ स्वास्थान पौषध करी । उपस्थान शाल आय ॥ सिंहासने बिराज के । कोडुम्बिक बोलाय ॥ २ ॥ दी आज्ञा भरतेशजी । करो सेना तैयार ॥ चतुघंट रथ पाठवी । सजी लाखो हसवार ॥ ३ ॥ सविनय हुक्म स्वीकार के । सबी को दिया सुनाय ॥ तत्क्षीण सेना सज्ज हुइ ॥ रथमी सजा यहां आय ॥ ४ ॥ स्नान मजन कर भरतजी ॥ वस्त्राभूषण सज्ज होय ॥ आ बिराजे महारथ में । मागध साधन सोय ॥ ५ ॥ * ॥ ढाल १ री ॥ करो तुम नवपद का शुध्द ध्यान ॥ ए० ॥ भरत महाराजा महा पुण्यवान । मागध पति सुर ने स्वीकारी आण ॥ टेर ॥ महारथ भरत महाराजका जी । हिमवत गिरी गुफा के माय ॥ निर्विघन काष्ट उत्पन्न भया जी । ताका दिया बनाय ॥ भरत ॥ १ ॥ जम्बू नन्द सुवर्ण मयजी । धूसरी जिसकी जान ॥ कनक मय लघु घट केजी । धारे सु सस्थान ॥ भरत ॥२॥ पुलाक वज्र इन्द्रनील सा सग । प्रवाल रत्न प्रधान ॥ वैडूर्य मणि चन्द्रकान्त इत्यादि । रत्न जडितसु ठान ॥ भरत ॥ ३ ॥ चारे अरे एक चकके । चउ चम्म अठ चालीस हाय ॥ चलत रथ मानो फिर चक्र ज्योतिषी । प्रकाशे सब सोय ॥ भरत ॥ ४ ॥ तपाय रक्त सुवर्ण के पद । नाभी तास लगाय ॥ पोशाख की है जडित परथी । मजबुत नहीं खिस काय ॥ भरत ॥ ५ ॥ तासक कर्कोत इन्द्र नील रत्न की । जाली से रथ चाहिन ॥

बत्तीस प्रकार के विविध शस्त्र से। भरारथ प्रतिष्ठित ॥ भरत ॥ ६ ॥ चन्द्रकला से श्वेत
अश्व को। रक्त सुवर्ण की लगाम ॥ मन पवन सी गति उनो की। जोते हैं अभिराम ॥
भरत ॥ ७ ॥ चमर छत्र धजा पताका घंटा। घुघरीयों से सजाया ॥ संग्रामिक सामाग्री
सबही। चतुर सारथी सहाया ॥ भरत ॥ ८ ॥ उसमें विराजे चक्रवर्ती नृप। चतुरंगी
सेना साथ ॥ वार्दित्र और सेना के शब्द से। क्षोभित नभ चले जात ॥ भरत ॥ ९ ॥
पूर्वाभिमुख तीर्थ के तट से। किया उदधी में प्रवेश ॥ रथ पीजनी भीजे वहांतक आ।
स्थंभा रथ नरेश ॥ भरत ॥ १० ॥ धनुष्य उठाया बालचन्द्र सा। मस्त महिष शृंगका
पृष्ट भाग ॥ नील गली भ्रमर सा काला। निपुण सिल्पी कृत सुलाग ॥ भरत ॥ ११ ॥
मणिरत्न की घुघरियों वेष्टित्त। रक्त सुवर्ण तार बधाया ॥ सिंह केशरो चमरी गो
बाल के। बंधन से सोभाया ॥ भरत ॥ १२ ॥ वज्ररत्न मय बान को सन्धा। करण
पर्यन्त तस ताना। कहे ते अहो असुर नाग सुवर्णादि। देव जो मानते आणा ॥ भरत ॥
१३ ॥ नमस्कार करता हू सबी को। यों कही बाण को छोडा ॥ चांप से टिटकार शरतव।
मन पवन सा दोडा ॥ भरत ॥ १४ ॥ बारा योजन गया देव भुवन में। पडा सुर सन्मुख
जाई ॥ देख बाण कोपातुर हुआ सुर। कोन यह मृत्यु चहाइ ॥ भरत ॥ १५ ॥ धम-
धमाता उठा तत्क्षीण। लीना बान उठाइ ॥ नामांकित देख पडा नाम तस ॥ चित्त में

विस्मय पाइ ॥ भरत ॥ १६ ॥ जम्बुद्वीप के भरत क्षेत्र में । चक्रवर्ती उत्पन्न थइए ॥ जीता धार मागधपति सुर का । निजराना लेकर आइए ॥ भरत ॥ १७ ॥ शान्ति चित्त हुआ महाजन । जीताधार निज जान ॥ निजराना लिया चक्रवर्ती का । उत्सुकता मन आन ॥ भरत ॥ १८ ॥ मुकुट कुंडल कडे बाजुबन्ध । चक्राभरण वह धान ॥ मागध तीर्थ का पानी लेकर । शीघ्रगति प्रयाण ॥ भरत ॥ १९ ॥ घुघरी चमकाता ध्वजा गगन में । पचरंग वर्सेन सामान्य ॥ दोनों हाथ जोडे भरतेश्वर जी को । जय विजय से वधाय ॥ भरत ॥ २० ॥ अहा देवप्रिय आपने । मागध तीर्थ पर्यन्त । भारत वर्ष पर विजय मिलाइ । मैंमी छांया तुमारी वसत ॥ भरत ॥ २१ ॥ मैं तु किंकर आपका स्वामि । पूर्व दिशी का रक्ष पाला ॥ यों कहता आया सन्मुख । भेटणा लेपो कृपाला ॥ भरत ॥ २२ ॥ भरतेश्वर तस्स अति सत्कारा । निजराना स्वीकारा ॥ सन्मान देकर किया विसर्जित । गयावेय उसधारा ॥ भरत ॥ २३ ॥ मोंधे घोडे पीछे फिराये । सेना संग परिवरिया ॥ स्कन्धावर कट घर स्थानक । आप सब हर्ष भरिया ॥ भरत ॥ २४ ॥ देव समर्पित भेटना ताइ । लक्ष्मी भंडारे धरिया ॥ ढाल तीसरी खण्ड चतुर्थ । ऋषि अमोल उचारिया ॥ भरत ॥ २५ ॥ * ॥ दोहा ॥ स्नान गृह में स्नान कर । भोजन मंडपे आय ॥ अष्टम तप का पारणा । किया सुखे भरत राय ॥ १ ॥ श्रेणि प्रश्रेणि अठरसा । बोलाइ हुक्म फरमाय ॥ मागध तीर्थ पति

जय तणा । उत्सब आठ दिन ठाय ॥ २ ॥ कर हांसल सब छोड दो । दुःखिया दाने
पोष ॥ नृत्य गायन मंगल मना । स्वजन पर जन तोष ॥ ३ ॥ उत्सव निर्वृते आयुध
शाळ से । निकला चक्र तब बार ॥ नैऋत्य कौण तरफ चला । व्योमे मग पूर्व प्रकार ॥४॥
हर्षी चक्रवर्तं हुकम दे । चतुरंग सेना सजाय ॥ स्वयं सज्ज हो गज चढे । चक्र के पीछे
चले जाय ॥ ५ ॥ * ॥ ढाल ४ थी ॥ हांरे म्हारे ग्राम नगर ॥ए०॥ हांरे राजा, चतुरंग सेन
सवही दलबल साथ जो । अचला ने चलाता आगे चाली यारे लो ॥ हांरे राजा, ग्रामागर
पुर जो जो मध्य में आए जो । आण मनाता जाता निजर स्वीकारियारे लो ॥ १ ॥
हांरे राजा, इम आगा ते वरदाम तीथे पास जो । वार्द्धिक रत्न ने कहो
तिहां नगर बसावीयोर लो ॥ हांरे राजा, पुर्वोक्त विधि ये अष्टम तपने धार
जो । तीर्थ पति ते देवनो ध्यान लगावीयो रेलो ॥ २ ॥ हांरे राजा, रथ सजायो चोथे
दिन तिमहिज जो । सेना साथे दक्षिण समुद्र में आवता रेलो ॥ हांरे राजा, धनुष्य
चढाइ तैसेही मार्यो बान जो । देव भुवन में जा पड्यो देख्यो देवतारे लो ॥ ३ ॥ हांरेराजा,
कोपातुरहो तैसेही बॉच्यो नाम जो । संतोष पायो निजराणो ले आवतारे लो ॥ हांरे-
राजा, हृदय कंठ के आभरण मुगट कडदोर जो । आकाशे उभा भरतेश्वर ने बधावतारे
लो ॥ ४ ॥ हांरे राजा, भेट देइ कहे रहूं आप वस्ती माय जो । भेटलेई सत्कारो ने तास

क्रियावतार छो ॥ हरि राजा,पीछे आप स्वयकीय प्रायश्ची माय जो ॥ पारणा कर के अठाई
महोत्सव करावतारे लो ॥ ५ ॥ हरि राजा, शाळा से निकली चांपव कीन मझारू जो।
महोत्सव करावतारे लो ॥ हरि राजा चले नरेश्वर प्रभास तीर्थ पास
भालो धम को देख के सेना सजावतारे लो ॥ हरि राजा, रथ सजा आ पश्चिम
जा । नगर वसाया पोपा ठाया छुर च्यावता रे लो ॥६॥ हरि राजा,सन्मानी
समुद्र मझार आ । पाण मारा माती समूह ले देव आया महरि लो ॥ हरि राजा,सन्मानी
पहोंचाया सब स देव आ । फिर कर ताक्षिण स्वस्थान आवे अहरि लो ॥ ७ ॥ हरि राजा,
महोत्सव निपुन सिन्धुनद दक्षिण तीर जा । चक्र पूर्व में चला देवी भूवन नम्म रे लो॥हरि
राजा, नगर वसा रह पापम शाला माय जा । सिंधु देवी सारे चिंतने स्थिर रम्बेरे लो॥८॥
हरि राजा, पौष दिन मात दर्भी आसन कम्पाय जो । अवधि ज्ञान लगाई तत्क्षीण
देखीयार लो ॥ हरि राजा, उत्तर भरत म चक्रवर्ती महाराय जो । आए रहाए सुख सीमा
में हर्षि विसम्भीया र ला ॥ ० ॥ हरि राजा, तीनों काल का मेरा है जीताचार जो । कर
निजराणा लाणा उनको मानना रे लो ॥ हरि राजा, चित्र विचित्र चित्रित एक सहस्र
आठ जो । रत्न कुम्भ और भद्रासन युग्म जानना रे लो ॥ १० ॥ हरि राजा, आभरण
विविध ले आई भरत जी पास जो । कर जोडी सिर नामी कह इ किंकरी रे लो॥हरि
राजा, अर्ज अपधारो स्वीकारो तुच्छ भेट जो । आप विषय में रही हु दी नगर वती रे

स्वीकारी भेट तव स्वस-
लो ॥ ११ ॥ हांरे राजा, भरतेश्वर तस खूब किया सत्कार जो । स्वीकारी भेट तव स्वस-
दने भइ फिरी रे लो ॥ हांरे राजा, चक्रवर्ती आए पौषध शाळा वहार जो । स्नान पारणा
हर्षित सुखे लिया करी रे लो ॥१२॥ हांरे राजा, निवृता महोत्सव चक्र चडा गगन मझार
जो । ईशान कौने गिरी बेताढ्य मग चालीया रे लो ॥ हांरे राजा, भरत महाराजा सह
सेना लार जाय जो । बैताढ्य के दक्षिण दिशी पडाव डालिया रे लो ॥ १३ ॥ हांरे राजा,
पौषध शाला में तेला कर धरा ध्यान जो । बेताढ्यगिरी कुमार देव चिन्तन किया रे लो ॥
हांरे राजा, तप की पूर्ती देव आसन धूजाय जो । अवधी ज्ञाने चक्री आगम जानी
लिया रे लो॥१४॥हांरे राजा, राज्याभिशेषक योग्य आभरण संगलेय जो । तैसाही वस्त्र ले
शीघ्र गति आयो तिहारे लो ॥ हांरे राजा, बधाया दिया निजराणा भरत स्वीकार जो ।
फिर आया स्वथान सुखे रहे जिहां रे लो ॥१५॥ हांरे राजा, अष्टन्हिक उत्सव तास कराय
जो । चक्र चला दिशी पश्चिम तिमिस्त्र गुफा मगे रे लो ॥ हांरे राजा, सेना सह सहर्ष
चक्री महाराज जो । गुफा निकट नगर वसाया सुख जगे रे लो ॥ १६ ॥ हांरे राजा,
पोषध शाला में तेला किया भरत राय जो । कृतमाली देवता का ध्यान लगाइया रे लो ॥
आसन कम्पा अवधि ज्ञाने देव जान जो । स्त्री के भूषण उत्तम चउदे लावीया रे लो॥१७॥
हांरे राजा एकावली[1] कनकावली[2] मुक्तिवली[3] हार जो । रत्नावली[4] अठारेसरा[5] ने नवसरा[6]

रे सा ॥ कपुर कव चेंदित मुंद्रा उर सूंत्र जो। चूवामिटि कुर्वंठे तिलक सव रत्न रारे लो ॥
१८ ॥ हरि राजा आया नृप को जय विजय पधाय जो। सम्मुख रण करे है छु सेवक
राजरा र सा। हरि राजा, सरकारी स्वीकारी भेट फिराय जो। अठाइ उत्सव किया सिद्ध
सप काज रो रे लो ॥ १९ ॥ हरि राजा, फिर सुख सनजी सेनापति बोलाय जो। कह
तुम जावा सिन्धु पार लघु खण्ड मारे लो। हारे राजा आण मनावो लावो तिज राणा
तास जा। हम हैं पर्दा ही आवो शीघ सुखण्ड मारे लो ॥ २० ॥ हरि राजा हुक्म
धराइ सजाइ चतु रंग सेन जा। कवच पहन न अक्र शस्त्र से सज्ज भयारे सा ॥
हारे राजा, मयगलारूढ़ हो छत्र धर चमर विजाय जा। वार्दित्र नाद गगन गर्जाता
सिद्ध धपार लो ॥ २१ ॥ हरि राजा सिन्धुनद ने तट पर किया पधाव जो। चर्म रत्न
धीयत्तस धपूती का सिपर लो ॥ हरि राजा, मुक्ताफल शुभित अर्ध चन्द्राकार जो।
सद्वा नदी सागर को पार जो कर लिपरे लो ॥ २२ ॥ हरि राजा मान्य मशाला शाक्यादि
खाद्य पदार्थ जो। जो चापे सो महर पके निरुपम भपर सा ॥ हरि राजा, कोस आठ्याली
लम्बी छत्तीस चौडारा जो। नाना रूप हा नदी समूद्र पार कर वपर लो ॥२३॥ हरि राजा,
तामी नाया चणाइ सेना पधाय जो। पार हुए तत्काल चले लघु खण्ड में रे लो ॥ हरि
राजा,समुद्र सा वेग मे सिंहनाद ललकार जो।भृजाया सूर वीर म करे घमघमनरे लो ॥२४॥

हांरे राजा, अरब रोमदेश अरखडं पिरकुंड देश जो। कालमुख जोनक देश इत्यादि थे
तिहां रे लों ॥ हांरे राजा, ग्राम नगर पुर द्रोणमुख पाटण खेड जो। पावे आदर अति
घणा जावे जिहां रे लो ॥ २५ ॥ हांरे राजा, दक्षिण पश्चिम नैरूत्य कोण ने माय जो।
फिरकर अत्युत्तम कच्छ देश में आ रहे रे लो ॥ हांरे राजा, नगर पुर पाटण के
राय महाराय जो। सुवर्ण रत्नादि प्रभूत ते धन के धणी रे लो ॥ हांरे राजा,
कर्कैतादि रत्ना भूषण बहू मूल्य जो। ले आये प्रेम उभराये भेट करी घणी रे लो ॥ २६ ॥
हांरे राजा, सिरसावर्त कर अजली नमन कर राय जो। कहे आप स्वामि हम सेवक
सब आप के रे लो ॥ हांरे राजा, सेना पति तस उच्चासन वेठाय जो। सत्कारे सन्माने
प्रीति अति स्थाप के रे लो ॥ २७ ॥ हांरे राजा, सर्व भाषज्ञ अवसर दक्ष विनीत जो।
मिष्टालाप से म्लेछ सबी ने खुषी किया रे लो ॥ हांरे राजा, भरत क्षेत्र के सम विसम
जे स्थान जो। जान सेनापति सर्व स्थान में यश लियारे लो ॥ २८ ॥ हांरे राजा, सबी
के भेटणे आदि योग्य वस्तु लेय जो। सिन्धु नदी उतर भरतेश कने आविया रे लो ॥
हांरे राजा, प्रणमी नम्र हो वीतक सब दर्शाय जो। अखण्ड आणा वरतावी भेटणा
ठावीया रे लो ॥ २९ ॥ हांरे राजा, भरत नरेश्वर सेनापति से सुन हाल जो। माल देख
ने जाण हकीगत खुशी भया रे लों ॥ हांरे राजा, सत्कारी सन्मानी विदा किया तास

जो। निज घरा में आया मन मे गह गया रे लो ॥ १० ॥ हरि राजा, स्नान मजन कर उत्तम भोजन आरोग्य जो। भोगापभोगे रस हो काळ सुखे कर्म र लो ॥ हरि राजा, अनुपम चरित्रे चौथे खण्ड मझार जा। ढाल चोथी यह ऋषि अमोलक अन रम रे लो ॥ ११ ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ मन्यवर श्री भरतराय जी। सेनापति पोलाय ॥ तिमस्र गुफा के द्वार को। खोलन हुक्म फरमाय ॥ १ ॥ सविनय आज्ञा मान्य कर। चित्त में आणन्द पाय ॥ निज आवस पौषध शाळ में। दर्भ आसन बिछाय ॥ २ ॥ तेला का पोषध किया ॥ तजा आहार शृंगार ॥ अशस्त्र ब्रह्मचारी रह। चोथ दिन क सवेर ॥ ३ ॥ कर स्नान शृंगार सज। पूजन सामाग्री लेय ॥ राजा सामंतादि परिवरे। तिमस्र गुफा मग लेय ॥ ४ ॥ वार्दित्र अरु जय जया रवे। चाल उमंग दिल धार ॥ दिधा जान सेनापति। द्वार खोलन उसवार ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल ५ मी ॥ देव वनीता हम भण ॥ ए० ॥ पुण्य प्रबल राजा भरत का। काज सभी सिद्ध थाय हो ॥ राणा सामंत दास दासीया। संग सेनापति के सोभाय हो ॥ पुण्य ॥ १ ॥ द्वार देखत ही नमन किया। मयूर पीछी से प्रमाजे तास हो ॥ दिव्योदक की धार से। प्रक्षा ले उभय पास हो ॥ पुण्य ॥ २ ॥ श्रेष्ठ गोशिष चन्दन तन। पञ्जे ऊपर लगाय हो ॥ पुष्प वस्त्र आभरण तणा। घुटने जितमा ढग ठाय हो ॥ पुण्य ॥ ३ ॥ रत्नमय तांदुल के। अष्ट

मंगल अलेख हो ॥ दंड रत्न लिया हाथ में । प्रणमें विनय विशेख हो ॥ पुण्य ॥ ४ ॥ दंड की मूठ है रत्न में । वज्र मय सर्व अंग हो॥घात करे अरियण तणी । रस्ता बना देवे चंग हो ॥ पुण्य ॥ ५ ॥ उपद्रव हरे शांति करे । हित सुख क्षेम करनार हो ॥ ऐसे उत्तम दंड रत्न का । कवाँड पे किया प्रहार हो ॥ पुण्य ॥ ६ ॥ तीन वक्त दंड ठोकते । जोर से करत ची कार हो ॥ चार शाख से पीछे हटे । दोनों ही पट तत्काल हो ॥ पुण्य ॥ ७ ॥ सब ही मनुष्यों बाजू भए । बाफ से जलन न पाय हो ॥ पूर्णद्वार खुल्ले देख के । सुखसेनजी हर्षाय हो ॥ पुण्य ॥ ८ ॥ भरतेश्वर जी पे आय के । जय विजय बधाय हो ॥ दी बधाइ द्वार खुल गए । अब सुख से पधारो महाराय हो ॥ पुण्य ॥ ९ ॥ चक्रवर्ती सुनकर हर्षिया सेनापति को सन्मान हो ॥ कोटम्बीक नर बोलाय ने । किया शीघ्र फरमान हो ॥ पुण्य ॥ १० ॥ आभिशेष हस्ती रत्न सज्ज करो । सेना सामंतादि सजाय हो ॥ सब सज्ज हो आए तत्क्षिणे । आए गुफा मुख ठाय हो ॥ पुण्य ॥ ११ ॥ मणि रत्न लिया राजवी । लम्बा चार अंगुल जेह हो ॥ दो अंगुल चौडास में । मादल संस्था नी तेह हो ॥ पुण्य ॥१२॥ त्रिकोण पट हांसे ओप तो । सहस्र देव अधिष्टित हो ॥ सब मणियों मे उत्तम अति । वैडूर्य जाति प्रतिष्ट हो ॥ पुण्य ॥ १३ ॥ जो नर धारे तस मस्त के । वह दुःख कभी नहीं पाय हो ॥ आरोग्य तन निरंत रहे । देव दानव उपसर्ग टल जाय ॥ पुण्य ॥ १४ ॥ संग्राम में

र्फवे करें। युवावस्था बनी रेय हो ॥ अशोभित केश नख नहीं वधे। मध नहीं व्यापे क वेप हो ॥पुण्य॥१५॥ ऐसे मणि को भरत जी। गय वर कुम्भ स्थले स्थापा हो ॥चक्र रत्न के पीछे२चले। गुफा में घोर व्यापा हो ॥पुण्य॥१६॥ग्रह नक्षत्र तारा के परिवार से। चन्द्र ज्यों चले भराय यो ॥ त्यों चारों सेना परिवार से। भरतेश्वर गुफा में जाय हो ॥ पुण्य ॥ १७ ॥ वहां कांगणी रत्न कर धरा। छे तला बारे धांसे तास हो। आठ कोने नीचे ऊपरे। सोनारकी एरण सा खास हो ॥ पुण्य ॥ १८ ॥ आठ सोनैया भर वजन में। लम्बाइ अगुल चार हो ॥ ऊचा चौड भी अगुल चार का। गुण भी सुणो नर नार हो ॥ ॥ पुण्य ॥ १९ ॥ स्थावर जगम विष सभी। खिण में करे त दूर हो ॥ मान उन्मान प्रमान का। पारिक्षक है भरपूर हो ॥ पुण्य ॥ २० ॥ चन्द्र सूर्य प्रकाश नहीं कर सके। ऐसे महा अन्धकार स्थान हो ॥ अग्नि मणि वहां क्या करी सकें ? तहां प्रकाश करे असमान हो ॥ ॥ पुण्य ॥ २१ ॥ कांगणी रत्न प्रकाश से ॥ बारा योजन तांय हो ॥ प्रकाश हुआ सूर्य सारिखा। रात्रि दिन एक साथ हो ॥ पुण्य ॥ २२ ॥ ऐसे रत्न के प्रकाश में। सुख से सभी चल जावे हो ॥ योजन २ अन्तर। गुफा की भींत पास आवे हो ॥ पुण्य ॥ २३ ॥ एक पूर्व एक पश्चिमे। क्रमशः मण्डल बनाय हो ॥ गोलाकार धनुष्य पांच सो। गुनपचास मण्डल संघ पाप हो ॥ पुण्य २४ ॥ कांगणी रत्न के मण्डल से। दिन समान

मैं आव ते । दो नदी आडी आइ तवेहो ॥ पुण्य ॥ २५ ॥ घनी गुफा सर्व हो ॥ मध्य गुफा मैं आव ते । दो नदी आडी आइ तवेहो ॥ पुण्य ॥ २५ ॥
उमग्न जला के पानी में । नरपशु वस्तुको पडंत हो ॥ तस तीन वक्त चकाय के । उछाली
बाहिर फैंकंत हो ॥ पुण्य ॥ २६ ॥ निमग्न जलाके जल विषे । नर पशु वस्तु पड जाय
हो ॥ तीन वक्त घुमाय के । देवे तल में वैठाय हो ॥ पुण्य ॥ २७ ॥ गुफा की तराडसे
नीकली । मिली सिन्धु नदी में जाय हो ॥ उसका उल्लंघन करन को । वार्द्धिक रत्न
बोलाय हो ॥ पुण्य ॥ २८ ॥ चक्रेश कहे सेतु बन्धीये । हुक्म करी प्रमाण हो ॥ मजबूत
पुल वन्धा तदा । एकही मूहूर्त के म्यान हो ॥ पुण्य ॥ २९ ॥ विशाल रुन्य पुक्त मार्ग
से । सेना और सबी परिवार हो ॥ उल्लंघी पार सुख से भये । आए उत्तर के द्वार हो
॥ पुण्य ॥ ३० ॥ द्वार स्वयंही उघड गए । चक्रवर्ती के पुण्य विशाल हो ॥ अमोलक
ऋषि ए उचरी । चौथे खण्ड पंच ढाल हो ॥ पुण्य ॥ ३१ ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ चक्रवर्ती राजा
रहे । उतने काल पर्यंत ॥ दोनों तरफ के द्वार सो । निरंत्र खुले रहंत ॥ १ ॥ सेतू दोनों
सलीलो तणा । बन्धा रहे उतनेही काल ॥ गुनपचास ते मंडले । करते रहे उज्वाल
॥ २ ॥ चक्रवर्ती की सेन से । गमन पंथ होय तैयार ॥ उसही मार्गे होय के । गमनागमे
नर नार ॥ ३ ॥ चक्रवर्ती सयंम ग्रहे । अथवा मरे राजमाय ॥ तब द्वार जडे मारग रुके
। सबही कृत्य विरलाय ॥ ४ ॥ यही रीति अनादि की । चक्रवर्ती पुण्य पसाय ॥ अब कथा उत्तर

भरत की। सूत्रानुसार कथाय ॥ ८ ॥ * ॥ ढाल ॥ ६ ॥ हरी ॥ आपरा नारद मुनि तिणवार पांडव पासों घरे रे ला ॥ ८ ॥ सुण जो भविपण उत्तर भरत की कहूं भप वारता रे लो। आपात चिलात नाम म्लेच्छ तहां राज प्रसार ता रे लो ॥ सादि स्मुद्धि भरे भण्डार सेना घणी सायपी रे लो। दीपतो धृतिकान्ति क धार उपजाव अजाम पी रे लो ॥ १ ॥ सूर वीर अजेय भूमक इच्छित कारज करे रे ला। अमोघ शस्त्री करे लक्ष मेघ सिर धारी अचल पर रे लो ॥ प्रामप करी सके नही कोप बल स्हदी प्राक्रम तणा रे ला। हय गय रथ पायक भी अुसार जोम ते रखे घणा रे लो॥२॥ एकदा उन के देश मझार उत्पात केई हाम लग रे ला। अकाले वृक्ष पक्षी मनराय फलित फूलित पय रे लो। देव यक्षादि गगन के माय गीत गा नाची रये रे लो ॥३॥ यह देखी नृप आपात चिलात विस्मय पाये अती रे ला। सर्वा मिल एकत्र हो एक स्यान सला करे निजमति रे लो ॥क्यों यह हो रहा है उत्पात उपद्रव होना दिस रे लो। सकल्प विकल्प हुआ सब चित्त शोक पाया जिसे रे ला ॥ ४ ॥ उस समय चक्र प्रदर्शित पथ से सेना चालती रे लो। निकली तिमस्री गुफा के बाहिर गहनगिरी चालती रेलो।जैसे भूमी से तीव्र चींटी दल समार्पित प्रगट हुए रे लो। सभ्रम पूर क सम कोलाहल शब्दारव तहां मूएरे लो ॥ ५ ॥ आपात चिलात के मार्के पार लस्कर निहालीपारे लो। मसुरत भगधर्गे कोपित रूढ प्रचंड हों भासीयतरे लो ॥

दीने नृपति को समाचार तत्क्षण सब भेले भयेरे लो । कहे यह कोण न्ही श्री धार्जित अकाल मृत्यु चयेरे लो ॥ ६ ॥ आया अपने ऊपर चलाय आने नहीं दीजीयेरे लो । शीघ्र ही दल बल लिया सजाय आये वहां सजी जीयेरे लो । पकडो मारो कहाढो देश बाहिर यों सब ललकारतेरे लो । फिर नहीं आने पावे देश मांय करो यों प्रचारतेरे लो ॥ ७ ॥ सनद्ध बद्ध हुए सब सुभट भूप अस्त्र शस्त्र ग्रहीरे लो । चिन्ह पट लगे हैं सिरपर तास धनूष्य बाण संग्रहीरे लो ॥ पडे अग्रहणी कटक पर आय मथन किया तदारे लो । सहन न कर सका तस आताप बिखरी गया जदारे लो ॥ ८ ॥ सुखसेन सेनापति उस वक्त सुने यह समाचार कोरे लो । अखुरत कोपित हो तत्काल सजे हथीयार कोरे लो । कमल मेल नामे अश्व रतन तत्क्षण सजावीयारे लो । आरूढ उसपर भये सेनाधीश रण तूर घुरावी यारे लो ॥ ९ ॥ अश्व सो अस्सी अंगुल ऊंचा कान से खुर लगेरे लो । उदर स्थान तास परीघ निन्यौंणव अंगुल जगेरे लो ॥ मुख से पूंछ पर्यन्त लम्बाई अंगुल सो आठ है रे लो ॥ नील वरण तन अति सोभित सूर्य तुरी गति ठाठ हे रे लो ॥ १० ॥ बत्तीस अंगुल मुख लम्बास कान अंगुल चार है रे लो । जंघा है अंगुल बीसे ढुटने भी अंगुल चार है रे लो ॥ पींडी हे पोडश अंगुल खुरची अंगुल चार हैं रे लो ॥ यों सब अस्सी अंगुल के माय उंचाइ आकार है रे लो ॥ ११ ॥ रक्त सुवर्ण मय है मुख कोष

भाषाका लगाम है रे लो। मुक्ताफल की जाली शोभित पृष्ट भाग ठाम है रे लो। सुवर्ण तिलक है दीपक ओत गजगाथ सुनाम है रे लो॥ उत्तम जातिवंत अश्वरत्न यों घना अभिराम है र लो॥१२॥स्वामि की आज्ञा सहर्ष पालक चञ्चल चपल घणो रे लो। रेतीस्थल पानी अग्नी मांय गमन सुखे तेह गणो र लो॥ पहाडी खाडी गुफ विषम स्थाम सहजे उल्लङ्घन करे रे लो। निद्रा लघु नीत और निहार होवे स्वस्थान परे रे लो॥ १३॥ स्वय हार न पाये किसी स्थान हारन न देवे स्वार को रे लो॥ ऐसे तुरी रत्ने सेनापति बैठ कर घरी तरवार को रे लो॥ यह खड्ग रत्न निलोत्पल कमलसा कृष्ण रंग दीपता रे लो चन्द्रमण्डल सा घन गोलाकार विकट अरी जीपता रे ल॥ १४॥ सुवर्णमय मजबूत है मूठ विचित्र चित्र चितरी रे लो। वज्र हिरा पोलाद का वज्र इत्यादि के खण्ड वे करी रे लो॥ लम्बाइ म आत्म अंगुल पचास सोले अंगुल चोड कहा रे लो॥ जाडा आधा अंगुल तह अगाध प्रहारे रहा रे लो॥ १५॥ हजार देवता अधिष्टित तास से खड्ग रत्न कर ग्रही रे लो। आपात चिलात भूप सेना सम्हरा मार कर भगा वही रे लो॥ सेनापति का तेज प्रताप सहन कर सके नहीं रे लो। दशों दिशी में गये सब भाग प्राण रक्षा चही रे लो॥ १६॥ आपात चिलात नृप केइ योजन जाय भला भाय रे लो। सिन्धु नन्दी की रेती मांय नग्न हो बिछा पड गया रे

लो । कुल रक्षक देव नाग कुमार को मन में ध्यायी रया रे लो ॥ भूखे प्यासे तीन अहो-
रात ऐसे वितीक्रान्त थया रे लो ॥ १७ ॥ देव का आसन चला अवधि ज्ञानसे वृतान्त
जानीया रे लो । शीघ्र तहां आए चलाय घुघरी नभ घमका रिया रे लो । पांचों वर्ण के
वस्त्र सो भाए कहे अहो राजीया रे लो ॥ जिन को रहे तुम मन में ध्याए ते हम आइ-
गिया रे लो ॥ १८ ॥ कहो किस कारण करते याद क्या काम हम करे रे लो । ऊपर देखी
आपात चिलात हर्ष मन मे धरे रे लो ॥ उठ कर आए देवता पास जय विजय
बधावते रे लो ॥ करांजली मस्तक स्थापे निज चिन्तित दर्शावते रे लो ॥ १९ ॥ कोइ नृप
अकाल मृत्यु इच्छक ही श्री रहित सही रे लो । हरन करन हमारा राज अपक्की आया
यही रे लो॥हराया हम से न हटा सका सोय आप को ध्याइये रे लो॥मारीकूटी कर फजीती
तास शीघ्रही भगाइ येरे लो ॥ १० ॥ हमारे देश से निकालो बाहर काज यही कीजीयेरे
लो । सुनी सुर म्लेच्छ राजा के वचन कहे सो सुनी जीयेरे लो ॥ यह थइ चोथे खण्डे षट
ढाल ऋषि अमोलक कहीरे लो ॥ चक्रवर्ती के पुण्य प्रबल हरा सके कोई नहींरे लो ॥ २१ ॥
॥ ❀ ॥ दोहा ॥ त्रिदश नाग कुमार तब । अवधि ज्ञान लगाए ॥ चक्रवर्ती आगम लखी ।
तस हित लखी चेताय ॥ १ ॥ भो भूपति निश्चय करो । येहैं चक्रवर्ती राय । देव दानव
मानव कोइ । सके न इन को हराय ॥ २ ॥ शस्त्र विष अग्नि तथा । मंत्रादि प्रयोग ॥ बाल

न पौंका करी छके। पुण्य प्रबल पद्द छोग ॥३॥ तथापि तुम हमरे लिए। सहन किया अति कष्ट॥प्रीति निभावन कारने। कुछ न होने दे भ्रष्ट॥४॥ उपसर्ग करे उन ऊपरे। जिम जो हारी पसाय ॥ सुनी वचन यों देव के। म्लेच्छ नृप खुश थाय ॥ ❁ ॥ ढाल ७ मी ॥ देशी निहाल देकी में ॥ पुण्य प्रबल चक्रवर्ती तणा जी। टेर ॥ पुण्य प्रबल चक्रवर्ती तणाजी कोइ। मोजब करी सक नहीं ॥ कष्ट भी कुछ होवे नहीं जी २ कोइ। देवाधिष्ट रत्न जस सहाय ॥ पुण्य ॥ १ ॥ नाग कुमार देव तत्क्षीण जी कोइ। चक्रवर्ती कटक पर आय। महा मेघ वैक्रय किया जी २ कोइ। गगन में घट गइ छाय ॥ पुण्य ॥ २ ॥ गरजारव गण गणारव करे कोइ। विद्युत के मलकार ॥ अन्धी वायु प्रबल्य अती जी२कोई। वरष जल मूसल धार ॥ पुण्य ॥ ३ ॥ अल वर्षा देखी करी जी कोई। सेना सुख के काज ॥ चरम रत्न करम सिपर जी२कोई। नावाकृति पनाज ॥ पुण्य ॥ ४ ॥ नवयोजन लम्बाइ में जी कोई। चौडी याजन वार ॥ पानी पर तिर ने लगी जी। स्थल सम सब ने छत्र कार ॥पुण्य॥५॥ गज गाजी रथ पायका जी कोई। चक्रवर्ती सब परीवार ॥ यथोचित्त प्रथक २स्थान के जी कोई। रहने लग तें मझार ॥ पुण्य ॥ ६ ॥ फिर छत्र रत्न को कर धरा जी कोइ। तत्क्षणि विस्तृत होय ॥ चोबार सम्बाई मथा सामी जी २ कोई। ढकन बन गया सोय ॥ पुण्य ॥ ७ ॥ निम्पाणवे हजार मनसो ऊपरे जी कोई। कारणीयरे चौतरफ केसराय ॥ मध्य द्व

विचित्र रत्ने जडा जी । रंग विरंगं चमकाय ॥ पुण्य ॥ ८ ॥ अच्छादन श्वेत सुवर्ण का
जी कांइ । रक्त सुवर्ण अभ्र मांय ॥ कळश पचरंगी मणियो वणा जी २ कांइ । ज्यों
आभ्र में दामिनी दमकाय ॥ पुण्य ॥ ९ ॥ पिंजरा कार सब बन गया तदा ।फूंवार न सके
मांय जाय ॥ उपद्रव में कोइ समझे नहीं जी । स्वेच्छाचारी सब रहाय ॥ पुण्य ॥ १० ॥
शीतकाल में उष्णता जी कांइ । उष्णकाले शीतलता वरताय ॥ धूप, वायु, वृष्टी आदि
उपसर्गे जी । तिष्टित प्राणी न संताय ॥पुण्य॥११॥ अन्धकार हरण करण भणी जी कांइ ।
मणिरत्न लिया महा राय । छत्र के मध्य में रख दिया जी । ते प्रकाशा बारा योजन
मांय ॥ पुण्य ॥ १२ ॥ गाथापति रत्न तिण अवसरे जी कांइ । चरम रत्नकी भुमीपर ॥
यथा विधिये वावता जी । खाद्य पदार्थ इच्छित धर ॥ पुण्य ॥ १३ ॥ शाली गौधुम चिना
मूंगने जी कांइ । उडिद बाजराने जवार ॥ तूर मठ बटला चॅवला श्रेय जी । धान्य चौवीस
प्रकार ॥पुण्य॥१४॥ अम्ब जाम सीताफलाजी कांई । रामफल और अनार । लिम्बु नारंगी
रायणादि के जी । बृक्ष फल केइ प्रकार ॥ पुण्य ॥ १५ ॥ बदाम पिस्ता इलगोजी याजी
कांई । कतली काजुकली नारेल । मेवा केइ प्रकार का जी । निपजावे ते मेल ॥ पुण्य ॥१६॥
खरबूज तरबूज बीजोरा भलाजी कांइ । काकडी तुरीयां दि शाक ॥ मेथी कोथमीर पाल-
खादी के जी । भाजी निपजावे पाक ॥ पुण्य ॥ १७ ॥ लविंग सुपारी इलायची जी कांई ।

मीरी मिरची मशाला विविध । हिंगवा हलवी जीरा धाणिया जी । इम रस आवे किध ॥ पुण्य ॥ १८ ॥ पान नगरवल्ली तणा जी । चम्पा चमेली गुलाब ॥ नाम कहांतक वर्णवुजी । पर्वों की पवी है आप ॥ पुण्य ॥ १९ ॥ जो जो जिसदिन चाहिये जी कोइ । दिन ऊगत ते थाय ॥ दोपहरे परिपक्ते बने जी । तीजे प्रहर सबी निपजाय ॥ पुण्य ॥ २० ॥ जीमा देवे सबी परिवारको जी कोई । दये जो जो जिसे चहाय ॥ मनुष्य पशु सबी सुसज बने जी । सुखेप्रकास फरमाय ॥ पुण्य ॥ २१ ॥ सात दिन इम गुजरते जी कोई । चक्रवर्ती को हुआ विचार । यह स्वभाविक वृष्टी नहीं जी । हे कोण उपद्रव करनार ॥ पुण्य ॥ २२ ॥ दो सहस्र दो भुजा तन जी कोइ । चउदा रत्न के चौदा हजार ॥ सोले सहस्र देव तत्क्षीणे जी । जान गये चक्री विचार । पुण्य ॥ २३ ॥ प्रगट हो बक्तर सजे जी कोइ । शस्त्र सब लीने हाथ ॥ आने आना ओही कुमार को जी । आये तहां बोले गर्जीत ॥ पुण्य ॥ २४ ॥ रे रे अप्रार्थी के प्रार्थी जी कोइ । हिरी सिरी परि वर्जित ॥ जानता नहीं महारायको जी ॥ चक्रवर्ती पुण्य पवित ॥ पुण्य ॥ २५ ॥ उपसर्ग करत डरत नहीं जी कोइ । क्यों मरने को चहाय ॥ सुन कर हाक डरा घणा जी । मेघाम्बर दीने मिटाय ॥ पुण्य ॥ २६ ॥ आपात चिलात नृपती करमे जी कोइ । नाग कुमार देव आय ॥ कहे हम तुम प्रीति कारगे जी । कियो उपसर्ग महद पर्याप ॥ पुण्य ॥ २७ ॥ किन्तु पुण्य बलीया घणा जी कोइ । रत्न

सुखद तस सहाय ॥ सहश्रों देव सेवा करे जी । कोइ भी न सके हटाय ॥
पुण्य ॥ २८ ॥ इस लिए तुम शीघ्र सज्ज हुई जी कांइ । बहु मूल्य निजराणो
लेय ॥ शरणे जावो तिन तणे जी । जरा न लावो संदेय ॥ पुण्य ॥ २९ ॥
क्षमाशील उत्तम पुरुष होवे जी कांई । धरसी तुमपर प्रेम ॥ यों कही देव स्वस्थाने गये
जी । म्लेच्छ नृप तत्खेम ॥ पुण्य ॥ ३० ॥ स्नान करी भीने वस्त्रसे जी कांइ । छूट्टे रखे सिर
के बाल ॥ उत्तम रत्नों का ले भेटणा जी । चक्रवर्ती पास आए तत्काल ॥ पुण्य ॥ ३१ ॥
जय विजय वधावीया जी कांइ । निज अपराध खमाय ॥ निजराणा सामे ठावीया जी ।
भरत जी लिया ते उठाय ॥ पुण्य ॥ ३२ ॥ आदर मान दियो घणो जी कांइ । कहे मुझ
भुज छांय मांय ॥ सुख से रहो पालो राजेन जी । आपात चिलात हर्षाय ॥ पुण्य ॥ ३३ ॥
रीति नीति की सम्मति करी जी कांइ । प्रीति पूरी जमाय ॥ आज्ञा ले स्वस्थाने आवीया
जी ॥ सुखे २ काल क्रमाय ॥ पुण्य ॥ ३४ ॥ विजय करी उत्तर खण्ड में जी कांइ । पुण्य
प्रतापी राय ॥ चोथे खण्ड ढाल सप्तमी जी २ कांइ । ऋषि अमोलक गाय ॥ पुण्य ॥ ३५ ॥
* ॥ दोहा ॥ वर्षाद उपसर्ग निर्वृते । चमर छत्र रत्न तांय ॥ संकेल लिये भरतेस जी ।
सेना गइ फैलाय ॥ १ ॥ अपूर्व सम्पत्ती सायवी ॥ चक्रवर्ती के अवलोय ॥ आपात चिलात
राजादिक । हर्षाश्चर्य अति होय ॥ २ ॥ एकदा सेनापति भणी । बोलाइ कहे भरत राय ॥

दूसरा सिन्धु खण्ड का। साधन कीजीए आप ॥ ३ ॥ पूर्वे सिन्धु पश्चिमोदधी। दक्षण में वैताढ॥आशा प्रसारो षठ दिशी। उत्तर हेमवंत पहाड॥४॥सेनाधिपा प्रमाण कर। द्वितीय लघु खण्ड समान। चौथे लघु खण्ड में तथा। प्रसारी आए आन ॥ ५ ॥ ❀ ढाल ८ मी ॥ श्री जिन मोहन गारो छे ॥ ए० ॥ भरत जी की तेज पुण्याई है। खेचर सुर पथा में भराई है ॥ टेर ॥चक्र रत्न आयुध शाळ से निकळी। आकाशे ईशान दिशी चाल्या ॥ चूलहेमवंत पर्वत तरफे। जाते भरतेश्वर भाल्या ॥भरत॥१॥ पडाव उठाया दल सजाया। चूलहेम गिरी ढिग आया ॥ पुर बसाया पोषध शाला में। तेलाका तप ठाया ॥ भरत ॥२॥ पूर्ण भए तप रथारूढ होकर। चतुरंग दल परिवारे। चूल हेमवत पर्वत नितम्बे। आये रथ सम्भारे ॥ भरत ॥ ३ ॥ तीन वक्त रथ गिरी भींती को। जोर करी टकराया ॥ धनुष्य बाण ले करके मांही। वैक्रय वचन बनाया ॥ भरत ॥ ४ ॥ पर्वत के परोपरी में आकर। नामांकित बाण चलाया ॥ नमन किया तस सानिध सुर को। सगगग तेह सिधाया ॥ भरत ॥ ५ ॥ बहुत्तर योजन दूरा जाकर। पड़ा देव भुवन के मांही ॥ चूलहेमवत गिरी कुमार देव। ते बाण देख कोपित थाइ ॥ भरत ॥ ६ ॥ उठा बाण समझा भेद बांच के। चक्रवर्ती नृप ढिग आया ॥ राज्याभिषेक की पुष्प माला। गोशीर्ष चन्दन औषधी लाया ॥ भरत ॥ ७ ॥ जय विजय बधा कहे कर जोडी। पूर्ण

भरत ये विजय आप कीनी ॥ मैभी आपके विषय में वासी । नम्र हो नजर दीनी ॥ भरत ॥ ८ ॥ सत्कारी तस विदा करी ने । वहां से रथ फिराया ॥ निकट नितम्ब में ऋषभकूट था । ऊसके निकट फिर आया ॥ भरत ॥ ९ ॥ रथ कोपरा तीन वक्त टकरा कर । खडा किया कूट पास ॥ कागणी रत्न करमांही लेकर । पूर्व सीलापर खास ॥ भरत ॥ १० ॥ अवसर्पिनी तीसरे आरे अन्त में । भरत चक्रवर्ती थइया ॥ सम्पूर्ण भरत पे विजय किया मे । प्रति शत्रु कोइ न रहिया ॥ भरत ॥ ११ ॥ उक्त नाम अंकित कर के तहां । रथा को वहां से फिराया ॥ विजय स्कन्धवरे स्वस्थान में । पारणा किया महाराया ॥ भरत ॥ १२ ॥ अष्टन्हिक महोत्सव करके । सेना सज्ज कराइ ॥ चक्र रत्न जब चला गगन में । दक्षिणे बेताड्ढ ढिग आई ॥ भरत ॥ १३ ॥ उत्तर दिशे बेताढ्य नितम्ब में । आये पडाव कराया ॥ पौषध शाले तेलाकर भरत जी । नमि विनमि ध्याया ॥ भरत ॥ १४ ॥ चोथे प्रात नामि वनमि को । चटपटि चित्त में लागी ॥ स्वभाविक इच्छा हुइ जाग्रत । बने भरत के अनुरागी ॥ भरत ॥ १५ ॥ परस्पर मिले दोनों भाइ । सति प्रेरना से चेताइ ॥ भरत क्षेत्र चक्रवर्ती उपने । बेताढ्य नितम्ब में आ रह्याइ ॥ भरत ॥१६॥ भूत भाविष्य और वर्तमान के । विद्याधरों का आचारो ॥ स्त्री रत्न समपर्ण करना रहना आज्ञा मझारो ॥ भरत ॥१७॥ विनमि खेचराद्रिप की कुमरी । सुभद्रा नाम श्रेय कारो ॥ प्रमाणो

पेत शरीर की धारक। तेजस्वी सुन्दराकारो ॥ भरत ॥ १८ ॥ स्थिर सदैव नवयुवती रहे। नम्न केश सोभिता रेव ॥ स्पर्शमात्र से रोग सब नाशे। नवरोग प्रगटने न देवे ॥ भरत॥ १० ॥ ऋतुके विपरित शरीर स्पर्श रहे। भोगे फल तृप्ती पावें ॥कटी उदर स्वोभा । तीनु पतले। सदा उदरे त्रिवली रहावे ॥ भरत ॥ २० ॥ आंख मूंने अधरोष्ठ योनी रक्त । स्तन जघन योनी तीनों पृष्ठ ॥ नीभी स्वभाव स्वर गम्भीर है । केश भंमूंह आँखों की कीकी कृष्ण ॥ भरत ॥ २१ ॥ दाँत स्मीत आँखें तीनों श्वेत है। वेणी भूजों रू लोचन लम्ब ॥ तीनों पाने चौडे जिस के। श्रेणी चक्र अर्धन नितम्ब ॥ भरत ॥ २२ ॥ इत्यादि ३२ लक्षणे ओपित। सम चतुरस संस्थान॥विचार उच्चार कौशल्य सब कार्य। सभी स्त्रीयों में प्रधान॥ भरत ॥ २३ ॥ कल्याण कारणी स्त्री रत्न को। सब शृंगार सजाई ॥ दोनों बन्धु खेचरों परिवारिये। बैठे विमान के मांह ॥ भरत ॥ २४ ॥ विद्याधरों की उत्कृष्ठ गति स । चक्र वर्ती पासे आए ॥ खडे आकाश में घुघरी यों घमकावे। जय विजय शब्द बधाए ॥ भरत ॥ २५ ॥ सारे भारत वर्ष विजयी। निजराणा यह स्वीकारो ॥ स्त्रीरत्न किया तब अर्पन। नृप लिया प्रेम अपारो ॥भरत॥२६॥ आदरमान दिया दोनों को। करके खुशी पहोंचाए॥ खण्ड की गुफा दास में अमोलक। स्त्री रत्न चक्री पाए ॥ भरत ॥ २७ ॥ * ॥ दोहा ॥ मणि प्रमेणि को हुक्म दे। करो तरसब खूब ठाठ ॥ नमि विनामे खगपति तणा। गावो

गुण गह गाट ॥ १ ॥ आज्ञा प्रमाणे सब किया । मोहछब निर्वृत थाय ॥ चक्र रत्न
अवध शाल से । निकली गगने चढ्याय ॥ २ ॥ गंगासुरी भुवन तरफ । ईशान कौन में
जाय ॥ आज्ञा होते भरतेश की । सेना सज्ज शीघ्र थाय ॥ ३ ॥ आये देवी भुवन ढिग ।
वसाया वहां गाम ॥ रहे सुख से सब तहां । पौषध शाला धाम ॥ ४ ॥ अष्टम तप धारण
करी । पौपध दिया ठाय ॥ गङ्गा देवी का भरत जी । बैठे ध्यान लगाय ॥ ५ ॥ ❀ ॥
ढाल ९ मी ॥ हूंतने पूछुं बात ढोला । पागडल्यारा पेंचा ढीला क्यू पड्या हो राज ॥ ए० ॥
भरतेश्वर के तिणवार राजा, अष्टम तप पूर्ण होता आसन हला हो राज ॥ गंगा देवी
तत्काल राजा, अवधि ज्ञान से देखा चक्रवर्ती आए चला हो राज ॥ १ ॥ त्रिकालका
मैरा आचार राजा, भेट ले जावु बजावूं भक्ति तेमनी हो राज ॥ एक १००८ सहस्र ने
आठ राजा । रत्नों को कुंभ ले चली निजराने भनी हो राज ॥ २ ॥ दो सिंहासन श्रेष्ट
राजा । प्रीति दान में आई भरतेश्वर ने कने हो राज ॥ किंकरी हूं छूं आप की राजा ।
जय विजय बधाइ ने इण परे भने हो राज ॥ ३ ॥ सहस्र वर्ष मेहमान राजा । तहां नित
नवल सुख उपभोग भोगी रहे हो राज ॥ प्रथम दिन का आहार राजा । अन्तिम
आया ते सीख मानी ग्रन्थे कहे हो राज ॥ ४ ॥ उत्सब निर्वृते बाद राजा । चक्र गगन में
चाला दक्षिण दिशा भणी हो राज ॥ सेना- सहित हुए संग राजा । खण्ड प्रपात्ता गुफा

हिग आए तत्क्षीणी हो राज ॥ ५ ॥ तहां रहे नगर वसाय राजा। पोषधशाला में अष्टम का तप ठावीया हो राज ॥ ध्याया मृतमाल देव राजा। चोथे दिन प्रात काले ते पल भविया हो राज ॥ ६ ॥ नमस्कार के मद्द राजा। निजराणा ले आया जय विजय पधारीया हो राज ॥ भेट करी स्वीकार राजा। सत्कारी सन्मानी देव पठावीया हो राज॥ ७ ॥ सुसेन सनापति तांय राजा। चक्रवर्ती बोलाइ हुक्म फरमावीया हो राज ॥ गंगा नदी पूर्व दिश राजा। जावो लघु खण्ड साधो आण मनावीया हो राज ॥ ८ ॥ पश्चिम गंगा नदी जाण राजा। पुर्वोदधी दक्षिण वेताढ्य उत्तर चुलीहेमवत है हो राज ॥ पूर्वोक्त रीति अनुसार राजा। सेना ले सज्ज हो चाले तहां तुरत है हो राज ॥ ९ ॥ नावा चरम रत्न की बणाय राजा, पार हो गंगा लघु खण्ड माहे आवीया हो राज ॥ पुण्य सेना बलादि प्रताप राजा। जमा जोम महाबली मी मन सकावीया हो राज ॥ १ ॥ मानी सवीने आण राजा। भेटणा उत्तमोत्तम ले आवी नम हो राज ॥ फिर कर सब देश मांय राजा। वश किए भूपत सेनापति सवी ने गमे हो राज ॥ ११ ॥ आप पुनः भरतेश्वर पास ते हो राज। साइ नजराणादि उत्तम वस्तू सह भरी हो राज ॥ । कही सब बीतक बात राजा। वीधी ते पयो चित्त कही अर्पन करी हो राज ॥ १२ ॥ रहते सुख मझार राजा। कालां तर सेनापति पुन बोलावीय हो राज ॥ आप प्रणमें

हो राज ॥१३॥ खण्ड प्रपात गुफ द्वार
बधाय राजा। चक्रवर्ती हुक्म तास फिर फरमावीए हो राज ॥ करी आज्ञा प्रमाण राजा। पौषध
राजा। तिमस्र गुफानी परेइ येह उघाडी यो हो राज ॥ १४ ॥ चोथे दिन सज्ज होय, राजा सब परिवार
शाला रें अष्टम तप ते धारियो हो राज ॥ पूजन अर्चन करी तास राजा। दंड रत्न प्रहार
संग गुफा द्वार ढिग आगए हो राज ॥ १५ ॥ पूर्वोक्त रीति प्रमाण राजा। सडडड करते तेही द्वार
उभय पाटे दए हो राज ॥ दीनी बधाइ जाय राजा। चक्रवर्ती ले परिवार शीघ्र आए जहां
उघडे तहां हो राज ॥ १६ ॥ किया गुफा में प्रवेश राजा। गुनपच्चास मंडल रत्न से तहां किए हो
हो राज ॥ मध्यमें नदी दो आय राजा। वार्द्धिक रत्नने सेतु तेहना बांधीए हो राज ॥ १७ ॥
राज ॥ दक्षिण दिशी ना द्वार राजा। कृतमाल देव ने सहज ही उघाडीया हो राज ॥ १८ ॥
दक्षिण दिशी ना द्वार राजा। निकले घटा घन फाटे तेहने बाहिरे हो राज ॥ तैसे चक्री
चन्द्रमा सबी परिवार राजा। खण्ड प्रपात गुफा से निकल सोभाहीरे हो राज ॥१९॥ आये गंगा नदी
महाराज राजा ॥ वस्ती वसाइ सुख साता से तहां रहे हो राज ॥ ऋषभ देव जी का चरित्र
पास राजा। खण्ड चौथे आखण्ड अंकी ढाल अमोलक कहे हो राज ॥ २० ॥ ❀ ॥ दोहा ॥
राजा।
अब चक्रवर्ती राजवी। नव निधि साधन चहाय ॥ जान हैं युक्ति सवी तणी। दी आदि
जिन बताय ॥ १ ॥ पौषध शाळा मांय ने। द्रोवासन विछाय ॥ वैठे पर्यङ्कासने। तन

मन म स्थिर ठाय ॥ २ ॥ स्नान शृंगार शास्त्र तज । सजे स्वच्छ शुभ वेश । भजे निधि नायक तहां । अष्टम मके नरेश ॥ ३ ॥ तप की महिमा अकथ है । सब मत मे विख्यात॥ ऋषि सुख तज कष्ट सहे । ते पामि फल तस पात ॥ ४ ॥ अल्प कष्टे महा ऋद्धी मिले । सुणो श्रोता चित्त लाय ॥ नव निधि की विधि सम्पत्ती । सूत्रोक्त यहां वरणाय ॥ ५ ॥

* ॥ ढाल १० मी ॥ जम्बु कयो मानले रे आया ॥ मत ले संयम भार ॥ ए० ॥ चक्रवर्ती राजी था जी । नव निधि के सिरदार ॥ टेर ॥ गंगा नदी समुद्र समाग मे । तहां सदा रहे नव निधान ॥ तहां से सरक आय तदा । चक्रवर्ती थे उस स्थान ॥ चक्र ॥ १ ॥ पहिला नैसर्प निधान में जी । ग्राम नगर पाटण पुर ॥ वाग सर्वनादि वसाने की । विधि ग्रन्थ द्रव्य प्रचूर ॥ चक्र ॥ २ ॥ पंडुक नाम निधान से । उन्मान प्रमान तोल माप ॥ गणित विभाग वस्तुकी संख्या । ग्रन्थ प्रगट ते आप ॥ चक्र ॥ ३ ॥ नर नारी गज वाजी के जी । भूषण विविध प्रकार ॥ 'पिंगलेक' निधान से प्रगटे जी । सजवा सब शृंगार ॥ चक्र ॥ ४ ॥ 'सर्वरत्न' नामे निधान से जी । रत्न चौदे चक्री के प्रगटाय ॥ अष्टादश जाति आदि सब । जे इच्छे ते रत्न पाय ॥चक्र॥४॥ 'महापद्म' नाम निधान मे । वस्त्र मिले सर्व प्रकार ॥ धोने रंगने की वस्तु सभी । पुस्तक विधि बताव न हार ॥चक्र॥ ५ ॥ 'काल' नाम निधान में । काल ज्ञान के केई ग्रन्थ ॥ ज्योतिष निमित्त त्रिकालस्वरूप । बतावे शुभाशुभ

पंथ ॥ चक्र ॥ ६ ॥ तीर्थेश चक्री दशार की । वंश की विधि वताय ॥ कुंभकारादि शिल्प-
कला । उत्कृष्ट जघन्य दरशाय ॥ चक्र ॥ ७ ॥ 'महाँकाल' निधान से । सव धातु की
उत्पत्ती होय ॥ चन्द्रकान्त मणि मोती आदि । चाहिये सो देवे सोय ॥ चक्र ॥ ८ ॥
'माणवक' नाम निधान से । सुभटों की उत्पत्ती थाय ॥ अस्त्र शस्त्र आभरण भटके ।
दंड नीति की विधि वताय ॥ चक्र ॥ ९ ॥ 'शंख' नामक निधान मे । वादिंत्र सव
प्रगटाय ॥ धर्म अर्थ काम मोक्ष की । विधि शास्त्र प्रगटी वताय ॥ चक्र ॥ १० ॥
इस प्रकार निधि थकी । चाहिये सो वस्तु पाय ॥ अधिष्टाना सहश्र देवता ।
पुण्यवंत की पूरे इच्छाय ॥ चक्र ॥ ११ ॥ नवही संदृक सारखे जी । ल-
लम्बे योजन बार । चौडी योजन नवतणी । ऊंची आठ योजन की जाड ॥ च ॥ १२ ॥
आठ २ पैये सवही के जी । वेडूर्य रत्न के कमाड ॥ सुवर्ण में मंजुषा वणी । चंद्र सूर्य
चक्र चिन्ह आकार ॥ च ॥ १३ ॥ निधि के नाम समान छे जी । मालक देव के नाम ॥
एक पल्योपम आयुष्य है जी । निधान ही रहने का ठाम ॥ च ॥ १४ ॥ तेही नवही देवता
जी । निकल के वाहिर आय ॥ भरतेश्वर के सम्मुख खडे । जय विजय कही वधाय ॥च॥
॥ १५ ॥ हम हैं अनुचर आप के जी । रहें गे आप की लार ॥ इच्छित स्थान इच्छित वस्तु
। लिजे व्यय कीजे इच्छाचार ॥ च ॥ १६ ॥ चक्रवर्ती तस सत्कारीया जी । देव सुखे रंहे

निधि में आप ॥ जहाँ जहाँ चक्रवर्ती संचरे । तहाँ २ भूमी में पग तले आय ॥ च ॥ १७ ॥ पौषध पार आए बाहिरे । सभा में सिंहासन बिराज ॥ निधान छ्ठम महोत्सव करन । दी आज्ञा सबी को महाराज ॥ च ॥ १८ ॥ महोत्सव निवृत्ते राजवी । सेना पतिजी को बोलाय ॥ गंगा नदी के पूर्व दिशा । लघु खण्ड साधन फरमाय ॥ च ॥१९॥ पूर्व दक्षिण में लवणो दधी । पश्चिम में गंगा आण ॥ उत्तर में वैताढ्य दीर्घ का । अखण्ड फैलावो आण ॥ च ॥ २० ॥ आज्ञा मस्तक चढायके जी । चतुरंग दल सजाय ॥ चर्म रत्न की सहाय से । नदी उल्लंघन कर तहाँ आय ॥ च ॥ २१ ॥ पूर्वोक्तपर साधन किया । निजराणा आदि ले माल ॥ भरतेश्वर जी को लाकर दिया । सुना दिया सब हाल ॥ च ॥ २२ ॥ निज डेरे आ सेनापति । सुख से गुजारे काल ॥ अमोल ऋषि चौथे खण्डे । कही यह तो दशमी ढाल ॥ च ॥ २३ ॥ ❁ ॥ दोहा ॥ आयूध शाला से निकला । चक्र रत्न उसवार ॥ सहस्र देव से परिवार । चला नैरुत्य मझार ॥ १ ॥ विनीता राजधानी तरफ । जाता चक्रको देख ॥ चतु रंगणी सेना सजी । हर्षे भरत विशेष ॥ २ ॥ साँठ हजार वर्षों विषे । छेही खण्ड साधन कीम ॥ आए विनीता पुरी तदा । बाहिर रहे सुख लीन ॥ ३ ॥ राजधानी पति देव को । आराधन के काम ॥ स्थिर चित्त पौषध शाल में । पौषध करे रतें श्याम ॥ ४ ॥ चौथे दिन प्रात काल में । करे पुरी प्रवेश ॥ रचना तेहनी वरणवु । पुण्य तणा फल एश ॥ ५ ॥ * ॥

ढाल ११ मी ॥ आज आणंद घन योगीश्वर आया ॥ ए ॥ फते करी भरतेश्वर जी पधारे॥साठ सहश्र वर्ष मझारो रे लो । आणन्द उत्सहा विनीता के मांही । हो रहे मंगला चारोरे लो ॥ फत्ते ॥ १ ॥ आभिशेष हस्ती रत्न सजाया । स्नान मंजन कराया रे लो॥ देवा र्पित वस्त्र भूषण पहने। इन्द्र समान सोभायारे लो ॥ फत्ते ॥ २ ॥ विविध रत्न जडित मुगुट मस्तकपर । काने कुंडल झलकावे रे लो ॥ अठरा नव त्रि सरादि । हार से हृदय सोभावे रे लो ॥ फते ॥ ३ ॥ भुजबन्ध कडे कर मुद्रा अंगुली मे । हेम कडदोरा कटी राजे रे लो ॥ रत्नजडित मोजाडियां पगमें । गजपर आय बिराजे रे लो ॥ फते ॥ ४ ॥ कोरंट वृक्ष पुष्प माला लटकंती । सिरपर छत्र धरावे रे लो॥चउदिश चारों चामर बींजते। आवताब धूप वचावे रे लो ॥ फते ॥ ५ ॥ विनीता श्रृंगारन देव गण मिले । कचरा दूर हटाया रे लो ॥ सुगंधोदक पुष्प वृष्टि कीनी । धूप से पुर मघमघाया रे लो ॥ फते ॥ ६ ॥ मचाणे मचण मग कठडे लगाए ।द्धूजा पताका सजाये रे लो॥स्वर्ग पुरीसी विनीता बनाइ।जन मन हर्षे उमाये रे लो ॥ फते ॥ ७ ॥ चली सवारी भरतेश्वर आगे । अष्ट मंगल पहिले चाले रे लो ॥ कलश झारी पताका केई । कर धर नरगण हाले रे लो ॥ फते ॥ ८ ॥ उसके आगे चक्र[1] छत्र[2] चर्म[3] दंड । खड्ग मणि[4] कांगणी जाणो रे लो ॥ नवही निधि चले इनके आगे । सहश्र सोला सुर सज्ज संडाणो रे लो ॥ फते ॥ ९ ॥ आगे सेनापति गाथापति[2] वार्धिक[3] ।

पुरोहित श्रीदेवी परिवारो रे लो ॥ बत्तीस हजार जनपद कल्याणी का । ऋतु कल्याणिका बत्तीस हजारो रे ला ॥ फते ॥ १० ॥ शीत ऋतु में उष्ण, उष्ण में शीत तन । पने ते ऋतु कल्याणी रे लो ॥ सर्व देश की स्त्री यों में उत्तम । जनपद कल्याणी ते जाणी रे लो ॥ फत ॥ ११ ॥ चौपट हजार यों राज पुत्री यों । मंत्रीपुरोहितकी दो दो लारे रे लो ॥ यों चारगणा सहित सबराणी । एक लाख पीर्णु हजार रे लो ॥ फते ॥१२॥ बत्तीस प्रकार नाटक करन वाले । पुरुष हैं बत्तीस हजारो रे लो ॥ बत्तीस हजार देशाधिप पुत्री सगाते । यह नर देवे सुख कारा रे लो ॥ फते ॥ १३ ॥ तीनसे साठ रसोइए साथे । प्रत्यक सामग्री मिलावे रे ला ॥ चार महिने में एक दिन रसोइ । निपजाइ भूप ने जीमावे रे लो ॥ फत ॥ १४ ॥ इन आगे चले श्रेणि प्रश्रेणि अष्टांदश ॥ तस आगे गज गाजी रथो रे लो ॥ चौरासी चौरासी लाख ए तीनो ॥ छिन्नू क्रोड पायक समरथो लो ॥फते॥१५॥ राजा युवराजा ईश्वर तलवर । शेठ इभ्य सार्थवाही रे लो ॥ तस आगे च्छत्रधर दण्ड छडी धारक । चमर चमुरधर साहिरे लो ॥ फते ॥ १६ ॥ चोपट पासा परशु पुस्तक । वीणा तेल की सीसी रे लो ॥ अपने २ उपकरण लकर । आगे चले घणी खुसी रे लो ॥ फते ॥ १७ ॥ शिर मुण्डित जटा धारक शिखा धर । मयुर पींछी के धारी र लो ॥ हांस कुतुहल कदर्प कौतुक कर । वाचाल भील गवेयारी रे लो ॥ फते ॥ १८ ॥ वार्दित्र बजाते

नाचते कूदते । हँसते हँसा ते क्रीडा करते रे लो ॥ शुभ आशीर्वाद जय विजयादि । बधा ते संग संचरते रे लो ॥ फत्ते ॥ १९ ॥ आकाशे सूर्य सम चक्र चलंता । देव वर्षावे रत्न धन माले रे लो ॥ समुद्र सम वेग शब्द गुंजारव । नगरी के मध्य हो चाले रे लो ॥ फत्ते ॥ २० ॥ प्रेक्षाते हुए सहस्रों नेत्र माला से । वचन माला से स्तवाते रे लो ॥ हजारों हृदय माला से हर्षाते । मनोर्थ माला से तृप ताते रे लो ॥ फत्ते ॥ २१ ॥ क्रांति रूप सौभाग्ये सोभाते । तर्जनी सहश्रो से दर्शातरे लो ॥ दक्षिण करे से सबही को चहा ते । घर पंक्ति उल्लंते जाते रे लौ ॥ फत्ते ॥ २२ ॥ सहस्रों वादिंत्र नभ गरजाते। बहु मान्य शब्द जन सुनाते रे लो ॥ स्वयं के श्रेष्ट महल द्वार पे आते । तज हस्ती ऊंच स्थान खडे रहाते रे लो ॥ फत्ते ॥ २३ ॥ सोले सहश्र देवता सन्माने । बत्तीस सहश्र नृप सत्कारे रे लो ॥ सातों पचेन्द्रिय रत्न को तोषे । श्रेणि प्रश्रेणि सबी को बकारेरे लो ॥ फत्ते ॥ २४ ॥ तीन सो साठ रसोइये सन्माने । अन्य राजादि सबी को सत्कारे रे लों ॥ दी आज्ञा निज २ स्थान जाने को । सबी अन्तेपुरी ले लारे रे लो ॥ फत्ते ॥ २५ ॥ केलास शिखरे कुंवरे देव सम । महल में महाराज पधारे रे लो ॥ स्वजन सम्बन्धी को कुशल पूछीए। इष्ट मित्र मिष्ट वचन बकारे रे लो ॥ फत्ते ॥ २६ ॥ स्नान करीने पारणा कारिया । रहे अनोपम भोग भोगंतारे लो ॥ चौथे खण्डे

अमोल कहता र हो ॥ फत्ते ॥ २७ ॥ * ॥ दोहा ॥ एकदा

राव प्रकाशक यह । ऋषि अमोल कहता र हो ॥ फत्ते ॥ २७ ॥ * ॥ दोहा ॥ एकदा
भरतेश्वर जी । राज धुरा का विचार ॥ करते हुए चिन्तवना । निज ऋद्धि सिद्धी निहार
॥ १ ॥ मै मेरे पराक्रम से । कोष के पुरुष कार । हेमवत से समुद्र लग । सम्पूर्ण भरत
मझार ॥ २ ॥ देव दानव मानव सभी । किये वश्य सभी मोय ॥ अखण्डित विजयी घना ।
कमी रही नहीं कोय ॥ ३ ॥ ताते अब करना भय । सब से बड़ा जगमाय ॥ राज्य
भिशेप श्रेष्ठ जे । महा आडम्बर सजाय ॥ ४ ॥ सुर नर सबही मिलकरी । उत्सव सब
मण्डान ॥ सुनो भव्य अब दत्त चित्त । राज्याभिशेप बखान ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल १२ मी ॥
राय स्थानक बिच खुली गुलफधारी ॥ प० ॥ भरतेश्वर नृप पुण्यवन्त भारी । पुण्यवन्त
भारी, करे सभा की तैयारी ॥ टेर ॥ प्रात काले मजन घर में आए । व्यायम स्नान शृंगार
सजाए ॥ भर ॥ १ ॥ राज सभा में आए विराजे । सब परिवार योग्य स्थाने ॥ भर ॥
२ ॥ आए देवता सोला हजार । बत्तीस हजार राजा स परिवार ॥ भरत ॥ ३ ॥ सात
पचेन्द्रिय रत्न पधारे । श्रेणि प्रश्रेणि अठारा सिरधारे ॥ भरत ॥ ४ ॥ अन्य भी बहुत
राजा सेठ सार्थवाही । दरबार तत्क्षीण गया भराइ ॥भरत॥ ५ ॥ कर बैठे सभी प्रणाम ॥
नम्र पूछे क्या आज्ञा स्वाम ॥ भरत ॥ ६ ॥ तब भरत सुभव सभी को दरशावे । यथो
चित सुषमा बचके सुनावे ॥ भरत ॥७॥ मैंने मैरे भुजबल से इसबारा । जीत लीया भारत

वर्ष सारा ॥ भरत ॥ ८ ॥ किन्तु अभितक अभिशेष सारा । मिलकर तुमने न किया हमारा ॥ भरत ॥ ९ ॥ इसलिए अब सोही करना है योग । नीति प्रमाणे सब होना संजोग ॥ भरत ॥ १४ ॥ महाराज्याभिशेष सब मिल करावो । सुनी सर्वी के मन उपजो उमावो ॥ भरत ॥ ११ ॥ सविनय आज्ञा मस्तक चढाई । हर्षोत्साए सभा विसर जाई ॥ भरत ॥ १२ ॥ भरत महाराज पोषध शाला में आए । पूंजी प्रतिलेखी स्वच्छ कराए ॥ भरत ॥ १३ ॥ दर्भासन को लिया बिछाई । वैठे उस पर ध्यान लगाई ॥ भरत ॥ १४ ॥ चौविहार अष्टम तप लिया धारी । निर्विघन राज काज करता चिन्तारी ॥ भरत ॥ १५ ॥ अहोरात्रि तीन सुख सं बीताइ । चौथे दिन पौषध पार बाहिर आई ॥ भरत ॥ १६ ॥ अभियोगी देवता को बोलाया । अभिशेष मंडप करन फरमाया ॥ भरत ॥ १७ ॥ विनिता राज धानी के ईशान कौन मांहि । बडा मण्डप योग्य देवो बनाई ॥ भरत ॥ १८ ॥ आज्ञा सुन अभियोगी हर्षाया । चक्रवर्तीका हुक्म सिरपर चढाया ॥ भरत ॥ १९ ॥ तत्क्षण ग्राम बाहिर ईशान मांई । आया समुद् घात वैक्रय कराई ॥ भरत ॥ २० ॥ आत्म प्रदेश का दंड बनाया । रत्नों के पुद्गल ग्रही उस मांय ॥ भरत ॥ २१ ॥ अठारा रत्नों के पुद्गल सार । ग्रहण किए दिए असार टार ॥ भरत ॥ २२ ॥ पुनर्पि वैक्रय समुद् घात करने । मंडप रचना रचे चूंप चित्त धरने ॥ भरत ॥ २३ ॥ बहू सम अति रम्य

किया भूमिभाग । ऊपर छत्त चन्द्र विचित्र रत्न राग ॥ भरत ॥ २४ ॥ सैंकड़ों स्थम्भ सुडोल लगाए ॥ मणि घों पच रंग तामें चम काए ॥ भरत ॥ २५ ॥ मध्य मणि पीठ का मोटी बणाइ ॥ पूर्व दक्षिण उत्तर सोपान स्थपाइ ॥ भरत ॥ २६ ॥ चमूतरे पर सिंहासन रचा दियाजी । सर्वो परिवार लिए आसन ठावीयाजी ॥ भरत ॥ २७ ॥ जरी मोती जवाहर चकी जी । यथो चित्त स्थान सर्वो दिए रची जी ॥ भरत ॥ २८ ॥देव सभा सादृश्य मण्डप रचा जी । देखा निरखी काम नहीं रहा कचा जी ॥ भरत ॥ २९ ॥ देव रचन की सोभा कहना किसी । पुण्य पनोता की सोभा है इसी ॥ भरत ॥ ३० ॥ चौथे खण्ड ढाल ग्रामगामी पाई । कहे अमोलक जग चडी पुणाइ ॥ भरत ॥ ३१ ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ मण्डप सुजाइ सज्ज करी । ते अभियोगी देव ॥ भरत जी पासे आए के । आज्ञा सौंपी तत्खेव ॥ १ ॥ भरत जी पोषध पारीया । पोषध शाला बाहर ॥ उपस्थान सभा विराज के । दी आज्ञा तत्काल ॥ २ ॥ पाटवी हाथी सज्ज करो । सजो चतुरंगिणी सेन ॥ सब परिवार सजी संग चलो । सज्ज भए सर्वी तत्खेन ॥ ३ ॥ स्नान गृह में भरत जी । स्नान कर सजे शृंगार ॥ विराजे पाटवि गजगले । साथे सब परिवार ॥ ४ ॥ अष्ट मंगल आगे चले । और सर्वो अधिकार ॥ नगरी प्रवेश सारीखो । इहांभी कीजे उच्चार ॥ ५ ॥ * ॥ ढाल ११ मी ॥

म्हारे आज आनन्द नो दिन छे जी ॥ एदेशी ॥ राज अभिशेष भरत महाराय को जी। सुणो सोचो पुण्यफल पसाय को जी ॥ टेर ॥ मंडप पास सवारी खडी करी जी। सबी खडे रहे सवारी पर हरी जी ॥ राज ॥ १ ॥ चक्रवर्ती महाराज आगे चले जी। श्रीदेवी आदि अन्तेपुरी पाछले जी ॥ राज ॥ २ ॥ सबी अभिशेष पीठ पास आवीया जी। देइ प्रदक्षिणा ऊपर पग ठावीया जी ॥ राज ॥ ३ ॥ पूर्व दिशा के पंक्तिये से चडे जी। वैठे पूर्वाभि मुख सिंहासन परे जी ॥ राज ॥ ४ ॥ फिर बत्तीस हजार बडे राजीया जी। आए मंडप में सबी सज्ज साजीया जी ॥ राज ॥ ५ ॥ प्रदक्षणा पीठ को देकरी। उत्तर सोपान से ते गए चडी जी ॥ राज ॥ ६ ॥ भरत महाराज पास आए ने जी। सिर सावंत कर अंजली सिर ठाए ने जी ॥राज॥७॥ जय विजय बधाय स्तुती करी जी। वैठे स्वस्थान सबी हर्ष धरी जी ॥राज॥८॥ फिर सेनापति आदि रत्नों चारही जी। आए मंडप में पीठे प्रद-क्षण दही जी ॥राज॥९॥ दक्षिण के पेढी से चढ गये जी ॥ जय विजय बधाय खडे रये जी ॥राज॥१०॥ तब अभियोगी देव को बोलावीया जी। भरत महाराज हुकमफरमावीया जी राज ॥ ११ ॥ अभिशेप सामग्री सबी ले आवी एजी। जो जो वस्तु यथा चित्त चाहिए जी ॥ए॥१२॥आज्ञा प्रमाण कर ईशान कौन आवीया जी॥ वैक्रय समुद्घाते रूप बनावीया जी ॥राज॥ १३ ॥ मागध वरदाम प्रभास तीर्थ तिहुंजी । जम्बुद्वीप छे सेल की द्रह छिहूं जी॥

॥ राज ॥ १४ ॥ छे इ पर्वत मेरू के चारों वन विचे जी। और जिस मोगा स्थान वस्तु अ विसे जी ॥ राज ॥ १५ ॥ पाणी मट्टी द्रोप सरसव गही जी । पावना चवन काष्ट आदि छही जी ॥ राज ॥ १६ ॥ फिर के धिनीता के मवप मे आवीया जी । सव सामग्री स विनय ठावीया जी ॥ राज ॥ १७ ॥ उत्तरा भाद्रपद विजय मुहर्त मायने जी । पतीस हजार नृप कळश उठायने जी ॥ राज ॥ १८ ॥ जो तीर्थोदक सुगधोदके भरे जी । चक्रवर्ती मस्तके भभि शेप करे जी ॥ राज ॥ १९ ॥ चन्दन द्रोप पुष्प सरसप अर्पीए जी । मगल कार्य अते सभी कीए जी ॥राज॥२०॥ दोनों हाथ जोड मस्तक चढाविए जी। जय हो विजय हो आते का निभावीए जी ॥राज॥२१॥ पर्वत जितना आयुष्य होवजो जी। देव गण में इन्द्र क सम सोहवजो जी ॥राज॥२२॥ फिर सेनापति आदि चारों रत्नने जी। श्रेणि प्रश्रेणि सार्थवाही यत्नने जी ॥राज॥२३। उपरोक्त सम अभिशेप तिन किया जी ॥ स्तुति मगल मण आविर्भाव दियाजी ॥ राज ॥ २४ ॥ सोल सहस्र देव तत्क्षण मिल करी जी । पक्ष्म सूक्ष्म वस्त्र कोमल करे पिरी जी ॥ राज ॥ २५ ॥ चक्रवर्ती वदन को पूछीया जी । स्वच्छ तहाँ सुवर्ण पदु चमकिया जी ॥ राज ॥ २६ ॥ मलिया गिरीका चन्दन तन चर्चिया जी ॥ पुष्प माल दिव्य वस्तु अर्पिया जी ॥ राज ॥ २७ ॥ क्षाम युगल जर कस वसन पहरिया जी ॥ मुकुट कुण्डल कठा हार कर मुद्रिया जी ॥राज॥२८॥ पचो विध अग सब भूषण सजे

जी ॥ जय २ ध्वनी से सब मंडप गजे जी ॥ राज ॥ २९ ॥ यों महाभिशेष समाप्त ज
भया जी ॥ कोटुम्बिक नर भरत बोलाविया जी ॥ राज ॥ ३० ॥ कहे गजारूढ हो पुर
मायने जी ॥ करो उदू घोषण हुक्म दो सुणायने जी ॥ राज ३१ ॥ बारा वर्ष तक सब
निर्विघन फिरो जी ॥ शुल्क हांसल कर सब माफी करो जी ॥ राज ॥ ३२ ॥ धरणा मत
धरो दंड भी देणा नहीं जी । कटूक बचन भी किन को केणा नहीं जी ॥राज॥३३॥ स्नान
पान गान तान काल क्रमीये जी । धर्म ध्यान कर दान मान दीजीये जी ॥राज॥३४॥ द्वादश
वर्ष ऐसे गुजारीये जी । येही नृप आज्ञा अवधारीये जी ॥राज॥३५॥ आज्ञा प्रमाणें दोंडी पीटी
दीइ जी । सुणकर सबी मन हर्षे सइ जी ॥राज॥३६॥ फिर भरतेश्वर गजारूढ होयने जी ।
सबी परिवारे चले जग मोय ने जी ॥ राज ॥ ३७ ॥ स्वस्थान सब परिवार आवीया जी ।
सत्कारी सबी को तोपावीया जी ॥ राज ॥ ३८ ॥ विदाकरी महल में पधारीया जी । स्नान
करी शृंगार कर पारणा किया जी ॥ राज ॥ ३९ ॥ पांचों इन्द्रिय के भोग भोगी रए जी ।
सुख स्वप्न सम वर्ष बारा गए जी ॥ राज ॥ ४० ॥ अन्तिम दिन सभा मोटी भरी जी ।
देव सोला सहस्र और सबही सिरी जी ॥ राज ॥ ४१ ॥ बत्तीस सहस्र मांडलिक सन्मा-
नीया जी । स्वस्थान जाने हुक्म फरमावीया जी ॥ राज ॥ ४२ ॥ निज २ देश गये सुख
से रहे जी । छहों पचेन्द्रिय रत्न स्वस्थाने मए जी ॥ राज ॥ ४३ ॥ चक्र छत्र दंड खड्ग

आयुध शाल में जी। चर्म मणि कांगणी भण्डार में जी ॥ राज ॥ ४८ ॥ सपही ऋद्धी पुनि कान्ती जी। भोगे सुख मानोपम आणंद शान्ति जी ॥ राज ॥ ५० ॥ बाल ऋषी धामी अमोलक कहे। चौथा खण्ड पूर्ण सभी सुखी रहे जी ॥ राज ॥ ५१ ॥ ❁ ॥ चतुर्थ खण्ड उपसंहार—हरिगीत छन्द ॥ भरतेश्वर चक्र रतन की पूजा कर खण्ड साधन चले। मागध वरदाम प्रभास सुर सिन्धु देवी नृत्यमाल सुर मिले। आपात किरात हराय चूल हेम देव वश में करे। ऋषभ कूट नाम लिख विद्याधर से श्रीदेवी वरे ॥ १ ॥ गंगा देवी नवनिधी नगरी प्रवेश राजरोहण वरी। चक्रवर्ती ऋद्धि महिमा चौथे खण्ड मांह करी ॥ आगे भरत जी षट् खण्डी का वृतान्त रसिक सुणी जी ए। जिनेन्द्र गुणवर्णन अमोलक हिरी सिरी सुख लीजी ए ॥ २ ॥

शास्त्रोद्धारक बालब्रह्मचारी श्री अमोलकऋषिजी महाराज रचित
श्री ऋषभदेव भगवान चरित्रस्य चतुर्थ खण्डम् समाप्तम्

॥ अथ पञ्चम खण्डम्–भरत बाहुबली अधिकार॥

॥ अथ पञ्चम खण्डम्–भरत बाहुबली अधिकार॥ पञ्चम खण्ड प्रार
॥ दोहा ॥ अरिहंत सिद्ध आचार्य जी । उपाध्याय अणगार ॥ पञ्चम खण्ड प्रार
भ्यते । पंचों को नमस्कार ॥ १ ॥ ऋषभ देव भगवान को । सविनय सीस नमाय ॥
भरत और बाहु बली का । युद्ध वैराग्य कथन वरणाय ॥ २ ॥ सुन्दरी नामे महासती ।
ऋषभ जिन लघु धीयं ॥ रूपे मोही भरत जी । दीक्षा न लेने दीए ॥ ३ ॥ मन वसीयो
वैराग में । रसीयो न आवे दाय ॥ खसियो चित्त बने लुब्ध नो । मंडा तेही उपाय ॥ ४ ॥
साठ सहस्त्र वर्षों लगे । निरंत्र छट २ तप ॥ पारणे अखिल तुच्छ कर । ऋषभ ब्राह्मी का
जप ॥ ५ ॥ * ॥ ढाल १ ली ॥ तप बडो रे संसार में ॥ ए० ॥ धन्य २ सुन्दरी सती ।
शील नीर्मल पाल्यो जी ॥ दुष्कर तप समाचारी । मोह भरत को टाल्यो जी ॥ धन्य ॥
१ ॥ चक्रवर्ती भरत राजवी । करे विनीता में राजो जी ॥ आणा अखण्ड षट खण्ड में ।
सारे स्व पर काजो जी ॥ धन्य ॥ २ ॥ कार्य निवृत भया तदा । सुंदरी यादज
आइ जी ॥ हुक्म दिया कोटुम्बिक को । लावो सुंदरी तांइ जी धन्य ॥ ३ ॥
सूचना दी सुंदरी भणी । सुन कर ते शीघ्र आई जी ॥ देखी छटा तस शरीर की ।
चक्रवर्ती विस्माइ जी ॥ धन्य ॥ ४ ॥ रक्त सूको मांस सोशीयो । हड्डीयो सुकडाइ जी ॥

शाल्य पड़े धमकी विषे । निस्तेज वदन देखाइ जी ॥ धन्य ॥ ५ ॥ निरखी थेपू सती सणो । भरतेश्वर कोपाया जी ॥ भग रक्षक दासी दास को । तत्क्षीण पोलाया जी ॥ धन्य ॥ ६ ॥ क्या गान नहीं रहा हम घरे । क्या आगर मे न लूणो जी । क्या कोई रसोइया नहीं । क्या स्वाद हैं रूणो जी ॥ धन्य ॥ ७ ॥ क्या मेवा सब खुट गया । क्या सब वृक्ष रूसाए जी ॥ क्या कामधेनु भी पय नहीं दए । कुछ खाना नहीं पाया जी ॥ धन्य ॥ ८ ॥ इस लिए मूख के दुःख करी । गइ सुन्दरी सुकाइ जी ॥ क्या काइ रोग उत्पन्न भया । सा क्या वैद्य नहीं पाइ जी ॥ धन्य ॥ ९ ॥ कैसा दिव्य रूप सुन्दरी का । अब कैसा कुम लाया जी ॥ दरिद्री की कन्या सारीसी । सही यह तो देखाया जी ॥ धन्य ॥ १० ॥इत्यादि वचन नरेन्द्र क । सुन के अधिकारी बोले जी ॥ किस चीज की कमी इस घरे । भरा माल मे तोले जी ॥ धन्य ॥ ११ ॥ अग्रह से आमन्त्रिये । किन्तु इन नहीं स्वीकार जी । मेवा मिष्टान विष सम गिने । तजा मेष्ठ सब आहार जी ॥ धन्य ॥ १२ ॥ दुकूल पट कुल सभी परिहरे । क्षाम युगल ही राखे जी ॥ रौप्या आसन सभी परिहरे । शयन भूइ काष्ठ राखे जी ॥ धन्य ॥ १३ ॥ रुक्ष सूका सेक अन्न का । करती जल सग आहार रे ॥ सो भी दो दो दिन अन्तरे । स्वस्त तन रक्षण सारे रे ॥ धन्य ॥ १४ ॥ ब्राह्मी जी सग दीक्षा लेन को । आप हम को मटकाइ जी ॥ आप दीक्षित होकर रही ।

घर में साध्वी सहाइ जी ॥ धन्य ॥ १५ ॥ यों सुन वचन कोटुम्बिक के । खेदाश्चर्य भरत पाये जी । पूछे सती से अहो कल्याणिका । क्या दीक्षा लेने चहाये जी ॥ ध ॥ १६ ॥ सुन्दरी कहे उत्कृष्टी इच्छा । भाइ आज्ञा बक्साओ जी ॥ भरत जी सुनकर चिन्तवे । व्यर्थ दी अन्तरायो जी ॥ ध ॥ १७ ॥ केवल प्रमादे और शरलता । विघन दीक्षा मे डाला जी ॥ सच्ची पुत्री यह पिताजी समी । सदैव धर्मं उजमाला जी ॥ ध ॥ १८ ॥ हूं अधन्य पुत्र तस हुई । विषय माहीं लोभाना जी ॥ अतृप्त रहू राज सुख मे । मृत्यु भय नहीं माना जी ॥ ध ॥ १९ ॥ कहे सुन्दरी से बाई धन्य तुझ । हुइ संयम में उजमालो जी ॥ इस अनित्य शरीर से । प्राप्त करेगी मोक्ष मालो जी ॥ ध ॥ २० ॥ हर्षित हृदय भरत जी। आज्ञा सुन्दरी ने दीनी जी । सुन के वचन भरत भाई का । सुन्दरी अति हर्षे भीनी जी ॥ धन्य ॥ २१ ॥ फूली तत्क्षीण वदन में । तप कृशता बिरलानी जी ॥ आवे प्रभुजी दीक्षा ग्रहूं । यों भावना हुलसानी जी ॥ ध ॥ २२ ॥ छत्ती का त्यागी महा वैरागी ने । अमोलक करे नमस्कारो ॥ ढाल प्रथम पञ्चम खण्ड की । भव्य गुण अवधारो जी ॥ ध ॥ २३ ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ उस अवसर ऋषभदेव जी । गणधर साधु परिवार ॥ जनपद देश में विचरते । करते धर्मं प्रसार ॥ १ ॥ केवल ज्ञाने दर्शित थे। सुन्दरी का दीक्षा काल ॥ आए तब विनीत पुरी । विराजे बाग मझार ॥ २ ॥ वन पालक हर्षित हो। सभा योग्य

सज्ज शृंगार॥ आय पधाय भरतश्वर। जय विजय शब्द उचार॥३॥ जग दिन कर आदिश्वर। अष्टापद शैल पास। विराज नन्दन वने। पधारे हैं यह खास॥ ४ ॥ हर्ष वन्दन सहोस करे। साढ़ी बारा लाख दीनार॥ दई बधाई विदा किया। दर्शन की उमंग अपार॥ ५ ॥

॥ * ॥ ढाल २ री ॥ मेरी २ करतां जन्म गमायो ॥ ए ॥ धन्य २ सती सुन्दरी बाई। सुन्दरी बाई छमी ऋषि छिट काई ॥ टेर ॥ सुन्दरी बाई पास भरतजी आई। ऋषभ प्रभु पधारे वधे वधाई ॥ धन्य ॥ १ ॥ शीघ्र मनोरथ पूर्ण कीजे। मधोवधो तारणी दीक्षा लीजे ॥ धन्य॥ ॥ २ ॥ सुनकर सुन्दरी अति हर्षाई। रोम राई तन हृदय विकसाई ॥ ध ॥ ३ ॥ अहो भाई जी शुभ शीघ्र ल धालिए। धन्य सफल समझ यही घडीए ॥ ध ॥ ३ ॥ तब भर तजी अन्तेउरी सब बोलावे। सुन्दरी का अभिशेष करन फरमावे ॥ ध ॥ ॥ ४ ॥ सुवर्ण रूपे के कलश से न्हवाई। चदन चूवा आदि लगाई ॥ ॥ ध ॥ ५ ॥ श्वेताम्बर मोती भुषण पहनाये। वैराग्य तेज अधिक झल काये ॥ ध ॥ ६ ॥ श्री देवी तस आगे लजाई। दासी सरीखी तेह दीखाई ॥ धन्य ॥ ७ ॥ मेघधारा ज्यों दान दिरायो। दुःखीयों के दुःख को दूर नशायो ॥ धन्य ॥ ८ ॥ सहस्र पुरुष वाहनी शिबिका में बैठाई। चतुरंगिणी सेना सब सजाई ॥ धन्य ॥ ९ ॥ पालखी को अन्तेपुरी घेरी। गीत के नाद गगन गर्जेरी ॥ धन्य ॥ १० ॥

विविध वादित्र संग चली सजाइ । विनीता के मध्य बजार मांई ॥ धन्य ॥ ११ ॥ बाग में आया वाहण छिटकाया । पंच अभिगम सांचवन कराया ॥ धन्य ॥ १२ ॥ सुन्दरी को भरतजी आगे करके । सविनय वन्दे प्रेमे उभरके ॥ धन्य ॥ १३ ॥ कह भरतजी महारी बहिन के तांइ । अर्पो दीक्षा प्रभु मेहर कराई ॥ धन्य ॥ १४ ॥ कहे सुन्दरी धन्य ब्राम्ही बाई । और अनेक राज कुंवरी के तांई ॥ धन्य ॥ १५ ॥ जिनने मेरे पाहिले दीक्षा धारी । आज अन्तराय मुझ टूटी देखारी ॥ धन्य ॥ १६ ॥ शरण में आइ भवोदधी से तारो । यों कही आई ईशान कौन मझारो ॥ धन्य ॥ १७ ॥ पंचमुष्टी तब लोचन कीना । साध्वीजी का तब वेश पहर लीना ॥धन्य॥ १८ ॥ पुन आइ प्रभुजी के पास । सविनय वंदन करे उल्लास ॥ धन्य ॥ १९ ॥ प्रभुजी सावद्य योग पच्चखाया । जावज्जीव संयम चित्त ठाया ॥ धन्य ॥ २०॥ हित शिक्षा प्रभुजी बक्साइ । ते सबी सती चित्त माहे ठाइ ॥ धन्य ॥ २१ ॥ एकादश अंग कंठस्थ करिया । फिर विविध पर तप आचरिया ॥ ध ॥ २२ ॥ पंचम खण्ड ढाल दूसरी थाइ । ऋषि अमोलक सती तांइ ॥ ध ॥ २३ ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ श्री भरत महाराय जी । राज सभा के मांय । सेनापति आया तदा । जय विजय बधाय ॥ १ ॥ अर्ज करे कर जोड के । दिग्विजय किया महाराज ॥ तो भी चक्ररत्न बाहिरे । अटक रहा किस काज ॥ २ ॥ भरतजी कहे आश्चर्य मुझे । आता है इसवार ॥ क्या कोइ बाकी रहा ।

आज्ञा अस्वीकार ॥ ३ ॥ हीमवत से सिन्धु तक । वश में कर लिया भाप ॥ तथापि कोइ रहा क्षिने । जो अभिमानी कहाप ॥ ४ ॥ सही कोइ याद आती मुझे । निन्याणीवे आप भ्रात ॥ राजोत्सव में आए नहीं । यही कारण जनात ॥ ५ ॥ * ॥ ढाल ३ री ॥ सुणो सदा जी सीमधर परमात्म पासे जाव जी ॥ ए० ॥ सुणो राजेश्वर । भरतेश्वर की आज्ञा आप स्वीकारी ए ॥ आहोराय सु जान । पके भाई को तास समाना धारी ए ॥ टेक ॥ मन्त्रीश्वर की सुण वाणी । भरतेश्वर ने सभी जानी । किन्तु क्या करना इस स्थानी । दिग्मुढ सम मन विचार ध्यानी ॥ सुणो ॥ १ ॥ लघुभ्रातों से करना लडाइ । जग में भला नहीं बताइ । वे आए नहीं उत्सव माई । जिस स अभिमानी जणाइ ॥ सुणो ॥ २ ॥ जा घर केइ मुझ नहीं माने । तो परका क्या बखाने । लगी महनत सभी फोकट जान । लोगों यों भी लगेंग मुझे सताने ॥ सुणो ॥ ३ ॥ जा चक्र शाळा में नहीं आव । तो अखण्ड राज नहीं गिणावे । वह चक्रवर्ती भी नहीं कहलावे । यह काम न मुझ सहावे ॥ सुणो ॥ ४ ॥ विचक्षण उमराव बोलाया । दूत बनाइ पठाया । भाबो जहाँ अठाणवे मुझ भाया । मधुरालापे समजाइ तिन लाया ॥ सुणो ॥ ५ ॥ और कछु चाहिए नाहीं । सेवा भी उन की नहीं चहाइ । फक्त इतनाही कह वे मुझे सांइ । हम हैजी भरत आज्ञा माई ॥ सुणो ॥ ६ ॥ सुनकर दूत अति हर्षाया । यह तो कथन सहज जणाया।

कोण अजा न माने भरत राया । अभी मनाकर आवें सब तांया ॥ सुणो ॥ ७ ॥ सज्ज हो
सबही दूत सिधाए । अलग २ अठाणवे भाइ पे आए । प्रथम तो जयविजय वधाए । उन्हे
सत्कारी उनको वैठाए ॥ सुणो ॥ ८ ॥ कहे दूत भरतेश्वर कहलाया । आप क्यों नहीं आए
उत्सव मायां । गडवड में भूले भरत राया । आमंत्रण आप को नहीं पठाया ॥ सुणो ॥९॥
अब याद आतेही मुझ भेजा । चलो मिलो भरतजीसे अति हेजा । बडे भाई हैं मानो
उनकी रजा । यह कृतव्य आपका है समजा ॥ सुणो ॥१०॥ यों अठाणवें सुण दूत की वाणी ।
कहे हमें क्या गरज भरत की जानी । हमें पिताश्री गए राज वैठाजी । हम मजा करते
हैं मन मानी ॥ सुणो ॥ ११ ॥ अब भरत हमे क्या जादा देगा । क्या मोत से हमे
बचावेगा । क्या जरा भी आने नहीं पावेगा । क्या उपजता रोग हटावेगा ॥ सुणो ॥१२॥
जो हमारी लघुता बदले सांही । उक्त बातें जो कर सके नहीं । तो क्यों आवे वहां कारण
क्याही । जावो आए जैसे स्वस्थान भाइ ॥ सुणो ॥१३॥ आश्चर्य हमे आता है भारी । सारे
भारत का राज भरत गया पारी । तौ भी तृष्णा नहीं गइ अघारी । जिससे हमारे राज
की भइ इच्छारी ॥ सुणो ॥ १४ ॥ पिताजी ने राज हमको दीना । इसमें भरत का क्या
चीना । हम सब भाइ सरीखे न कोइ हीना । फिर क्यों भला भरत उत्तम माने भीना ॥
सुणो ॥ १५ ॥ हम पुछेंगे पिताजी को जाइ । करेंगे वे जो हुक्म फरमाइ । तुमारी भरत

की माने नाह । जावों देखा तुम स्वामी को चेताइ ॥ सुणो ॥ १६ ॥ सुन के दूत युक्ति गया सकाइ । उत्तर कुछ तस आया नहीं। नमन कर भरत भूपति प जाइ। बीती बात दीवी सभी सुणाइ ॥ सुणो ॥ १७ ॥ सोचे प्रभुजी उन्हें समजासी । रीति अनादि जगत् की बतासी । यहां गए सब ठेकाणे आजासी । चुप बैठे भरत यों मन विमासी ॥ ॥ सुणो ॥ १८ ॥ तत्क्षण अठाणू एकत्र भए । निज २ पीतक परस्पर कए । एक सला हुइ प्रभूजी पास गए । कैलास गिरी ढिग प्रभुजी बिराज रए ॥ सुणो ॥ १९ ॥ तिक्खुत्ता की विधि स वन्दन करे । कर जोडी स्तुति यों उचरे । अहो जगत् धनी कौन आप परे । शरणागत दु खोदधी से तरे ॥ सुनो जिनवर जी । अर्जी हमारी अहोनाथ अवधारी ए । परमेश्वर जी । हमे दित सुख पथ प्रभुजी देखावि ए ॥टेर॥२०॥ आप जिस वक्त थे ससार मांही । सो पुत्रां को देखो बाटपताइ । यथोचित राज बांटा सब तांइ । हम तो दिए राज मे रहे सन्तापाइ ॥ २१ ॥ जो विनीत पुरुष जग कहाव । वह महा पुरुष की नीति निभाव । हम भी मद्य यही करना चहाव । किन्तु बडे भाई से यया कहा जाव ॥ सुगो ॥ २२ ॥ भरत ने छे खण्ड में राज किया । केइयों के राज को छीन लिया । ता भी तृप्ता नहीं उसका जिया । ज्यों वडवानल जल से न भरे हिया ॥ सुणो ॥ २३ ॥ जैसे दूसरों के राज छिनाये । वैसे हमारा राज हडपना चहावे । तभी तो

दूत हम पास पठावे। करो सेवा हमारी यों कहलावे ॥ सुणो ॥ २४ ॥ किन्तु हमे यह पसंद नहीं आवे। सबी आप के पुत्र कहलावे। फिर क्यो हम भरत शरणे जावे- है जिस से राज अधिक नही चहावे ॥ सुणो ॥ २५ ॥ करी भरत ने हमारी छेडकानी। हमने भी युद्ध करना लिया ठानी। अब आपकी रजा रहे चहानी। फरमावो क्या इच्छा है थानी ॥ सुणो ॥ २६ ॥ यातो आप भरत को समझावो। क्रोडों नरके प्राण को बचावो। या युद्ध करन का दरशावो। जो आज्ञा सोही हम उमावो ॥ सुणो ॥ २७ ॥ यों अर्ज गुजारी चुप के रहीए। उत्तर अतुरतासे चहिए ॥ खण्ड पंचम ढाल तीसरी थइए। अमोल ऋषि कहे जिण उत्तर सुणो सहिए ॥ सुणो ॥ २८ ॥❀॥दोहा॥ अनंत ज्ञानी आदिश्वर। भविष्य जो वर्तनार ॥ जान ते थे वे भाव सब। ताविधि होय उच्चार ॥ १ ॥ त्यागी जग जंजाल के। ममत्व भी नहीं लगार ॥ तथापि भव्योद्धार वा। हे प्रभू का अवतार ॥ २ ॥ सम भावी सब वस्तु पे। पुत्रही सब संसार ॥ तो भरत अरू अन्य का। भाव भेद न धार ॥ ३ ॥ अवसरोचित्त प्रगटी। दिव्य ध्वनी जिनराज ॥ प्रण में श्रोता वर्ग को। सारन आत्मज काज ॥ ४ ॥ सुने ते वे दत्त चित्त से। उमंगे अठाणु भ्रात ॥ प्रेरक सबही को सदा। सुणियो सभा ते बात ॥ ५ ॥ढाल ४ थी॥ नोकरवाली रेशम तार गुंथाई ॥ ए० ॥ उपदेश जिनजी का सबी को सुख दाई। सुनके बूजे अठाणवे भाई

॥ उपदेश ॥ टेर ॥ अहो राजकवरा बूजो बूजो । अब भी समझ क्यों न आई ॥ उप ॥१॥ ऐसा राज मिला अनंत वक्त । गर्ज सरी नहीं काई ॥ उप ॥ २॥ किन्तु बोध बीज अति दुर्लभ । आचरण अवसर पाइ ॥ उप ॥३॥ जासे जो दिन रात्रि ना आते । तासे रहा चेताइ॥ उप ॥४॥ सुलभ नहीं पुनर्पि ऐसा जीतब । निश्चय सो चित्त ठाइ ॥उप॥५॥ देखो प्रत्यक्ष नीता तुमारा । जिस राज ने तुम को चढाइ ॥ उप ॥ ६ ॥ यही अब तुम पटकना चहाता । उसकी कैसी सगाइ ॥ उप ॥ ७ ॥ राज तुमारा लेना अन्य चहाता । ऐसा तुमने जानाइ ॥ ॥ उप ॥ ८ ॥ झगडे का कारन यही उपस्थित । संग्रामे सज्ज भयाइ ॥ उप ॥ ९ ॥ जय पराजय का भरोसा न तुम को । तो फिर झगडा कैसे जाइ ॥ उप ॥ १० ॥ मनुष्य पशु आदि प्राणियों का । वध तो प्रत्यक्ष देखाइ ॥ उप ॥ ११ ॥ तासे कर्म बन्धन निश्चय होय । जो कु गति में ले जाइ ॥ उप ॥ १२ ॥ कर्म फल सुख ते राजादि सामग्री । शरणागत न सहाइ ॥ उप ॥ १३ ॥ तो फिर इस की ममा क्यों करना । जिसे अपनी ममा नाइ ॥ उप ॥ १४ ॥ इस लिए राजा में बनाता तुम का । जो किस से प्रामवा न जाइ ॥ उप ॥१५॥ नरसादिक का भी यहां जोर न चलता । किम्बहु काल से नहीं छलाइ ॥ उप ॥ १६ ॥ ऐसा राज का साधन करलो । तो रहो अखण्ड मजा मांइ ॥ उप ॥ १७ ॥ तब पुछे कर जोड कुमर सब । वह राज है जी किस स्थाइ ॥ उप ॥ १८ ॥ किस प्रकार से वह प्राप्त होता है।

कृपा कर देवो फरमाइ ॥ उप ॥ १९ ॥ प्रभु कहे वह है मोक्ष पुरी का । जो है लोकान्त के
माई ॥ उप ॥ २० ॥ उसे प्राप्त करने को कीजे । आत्म शत्रु संग लडाइ ॥ उप ॥ २१ ॥
क्रोध मान माया और लोभ । राग द्वेष आड़े जस आई ॥ उप ॥ २२ ॥ इने जीतने संयम
वक्तर सज । तप के शस्त्र चलाई ॥ उप ॥ २३ ॥ रहे अडग जहां तक वे नहीं हारे । तो
देवे उन्हे भगाई ॥ उप ॥ २४ ॥ फिर बन जावे वह हम हैं जैसा । अजरामर पद पाई ॥
उप ॥ २५ ॥ यही आज्ञा हैगी हमारी । न करना पड़े किस की अवज्ञाइ ॥ उप ॥ २६ ॥
दरषे और भवे जगत् के शत्रु । सबही को देवो नमाई ॥ उप ॥ २७ ॥ इस प्रकार सुन
प्रभु की आज्ञा । खम खमी सब उठ्याई ॥ उप ॥ २८ ॥ सच्ची २ हितकारक यही । जो
दी आप शिक्षाई ॥ उप ॥ २९ ॥ तारो २ अब इस दुःखोदधी से । वारो अनर्थ से यदाई
॥ उप ॥ ३० ॥ सारो आत्म के काज हमारे । सुधारो बिगडती के तांई ॥ ३१ ॥ अवधारो
अर्जी यह प्रभुजी । दीक्षा देवो बक्साई ॥ उप ॥ ३२ ॥ यों कही गए सब ईशान में ।
गृह लिंग को उतार्याई ॥ उप ॥ ३३ ॥ शासन सुर साधु वेष समर्पा । तत्क्षीण तास
सजाई ॥ उप ॥ ३४ ॥ आये प्रभु पास सुविनय वन्दे । तास दीक्षित लिए बनाई ॥ उप ॥
३५ ॥ आसेवना ग्रहना की शिक्षा । दी प्रभूजी उन उमाई ॥ उप ॥ ३६ ॥ जा वैठे साधु
परिषद में । ज्ञान ध्यान में आत्म रमाई ॥ उप ॥ ३७ ॥ स्मघृत है मुक्ति के पथ को । न

रखो कोई प्रमाई ॥ उप ॥ १८ ॥ ढालें यह चौथी पथम खण्डकी । ऋषि अमोलक गाई ॥ ॥ उप ॥ २० ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ कुछ सामंत भरतेश के । रहे थे कुमरों संग ॥ साधु बने सबी देख के । हो गए मन में दंग ॥ १ ॥ तत्क्षिण आए चक्रवर्ती पे । पीतक दिया प्रकाश ॥दीक्षीत बने जान भ्रात को । क्षीन मन बने उदास ॥२॥ घर हानी हांसी जग । होसी विसे अप ॥ लोगों के मुख न बचे । कहेंगे यों सब ॥३॥ भाई को बाबा बना दिए । छीन लिया तस राज ॥ कैसा लोभी भरत है । सुनुंगा यही आवाज ॥ ४ ॥ किन्तु रे कैसा करू । चक्र आवे न स्थान ॥ होन हार टले नहीं । जानते हैं भगवान ॥ ५ ॥ अन्य राजेश्वर को तदा । अठाणू भाई का राज । समझाया रक्षा करन । दे शिक्षा सब काज ॥ ६ ॥ सबही नीति रीती से । चलाने लगे काम ॥ आगे भरत बाहुबली तणा । सुनो कथन अभिराम ॥ ७ ॥ ❀ ॥ ढाल ५ मी ॥ आए आदेश्वरजी आप । वर्षी तप पारणे जी ॥ ए ॥ सेनापति कहे जाग । स्वामी कैसा की जीए जी ॥ चक्र रत्न न आवे मांय । सीख किसि दीजीए जी ॥ १ ॥ चक्रवर्ती कहे अब । भाइ एक ही रहा जी ॥ प्राणाधिक प्यारा मोर । आवे कैसे कहा जी ॥ २ ॥ मन्त्री कहे महाराज । सहज नहीं जानीए जी ॥ बाहु बली सम बलवान । अन्य नहीं मानीए जी ॥ ३ ॥ जैसे ऋषभ देव जी के गुन लोकोत्तर आप प्रगटे जी ॥ तैसेही बाहु बली जान । तिलमात्र भी न घटे जी ॥ ४ ॥ उन्ह को न जीते जहां तक । किसी को

आप सुन लीजीए जी ॥ ५ ॥ सुनकर
न जीतीए जी । चक्र रत्न की अर्जी इस काज । आप सुन लीजीए जी ॥ ५ ॥ सुनकर मंत्री कथन । विचारे भरत पडे जी ॥ प्यारा मेरा छोटा भ्राता । मुझे दुःख कैसे लडे जी ॥ ॥६॥ लोको का भी अपवाद । सहन कैसे करूं जी ॥ पूरा अभिमानी दीखे बाहूबल । अभिमान उसका हरूं जी ॥७॥ दुविधा में पडे भरतेश । मंत्री कहे तान है जी ॥ चिन्ता का है क्या काम । क्या बाहूबल नादान है जी ॥८॥ जग का यही व्यवहार । वडा जो आज्ञा करे जी ॥ आवश्यही ते शीघ्र । लघु शिरपर धरेजी ॥ ९ ॥ दूत को भेज महाराज । समाचार कह लावीये जी ॥ जो माने आज्ञा तो ठीक । नहीं तो फिर मनाविये जी ॥ १० ॥ आज्ञा विन मनाए । सोभा जग नहीं रहे जी ॥ चक्रवर्तीका रिवाज । नीति शास्त्र कहे जी ॥ ११ ॥ सुन मंत्री की वात । चक्रवर्ती मन जची जी ॥ नीति और व्यवहार । दोनों परे है सची जी ॥ १२ ॥ 'सुवेग' उमराव सुदृढ । बुद्धि चातुरी सिरे जी ॥ वक्तृत्व कला में पारंग । चातुरी सिन्धु तिरे जी ॥ १३ ॥ तत्क्षीण होगया सज्ज । रथ सजावीया जी ॥ तक्षशिला नगरी तरफ । सु शकुने चलाविया जी ॥ १४ ॥ उचित्त सेना संग लीध । अति वेग संचरे जी ॥ होन हार दर्शन । शकून रोकन करे जी ॥ १५ ॥ बायां फरके नेण । रथ टकराव तो जी ॥ घुड स्वार नरुक कृष्ण मृग । दाहीना जाव तो जी ॥ १६ ॥ कंटक वृक्ष पर वायस । चोंच घसी रहा जी ॥ बोलत कटुक शब्द । मानो फिरने कहा जी

॥ १७ ॥ मार्ग में कृष्ण सर्प । आडा पडी गया जी ॥ सन्मुख का धायुवेग । इससे मुख छपा जी ॥ १८ ॥ दक्षीण स्वर मोकल । रोकत नर सामें पडो जी ॥ समझे सब सुवेग । तोभी आगें जावे पड़ा जी ॥ १९ ॥ मामागर नगर पुर । उल्लंघतों चालीया जी ॥ दस्प पिपासा डेग, सुख नहीं कुछ भालीया जी ॥ २० ॥ यों कालान्तरें तेय । भयकर वन में गया जी ॥ पहाड़ म्याड झाड उजाड । देश के पग भया जी ॥ २१ ॥ गगना लम्पी शिखरी । शिर पर शृंग है जी ॥ पहाडी गुफा की गुम्फ । रोके मार्ग समक्ष है जी ॥ २२ ॥ चीत्त रीछ सियाल । अजगर सर्पादि पड़े जी ॥ नाल खाल नदी कुप । चालत केइ अडे जी ॥ २३ ॥ तीर कमान के धार । भील भीलडी घणों जी ॥ कृष्ण रुक्ष वदन । चिस्वरे बाल फिर मीगा जी ॥ २४ ॥ सुवेग सहास धार । उल्लघा रण भणी जी ॥ पलटा क्षेत्र विभाग । आगे सोमा घणी जी ॥ २५ ॥ मार्ग चारत सुखकार । वृक्ष दो किनार पैंजी ॥ पेड भी गहन गंभीर । फल भर कतार पेजी ॥ २६ ॥ वन खेत बाग विविक्षित । गोचर भूमी खुली जी ॥ छोटे बडे सुन्दर ग्राम । देखी मुक्ति सुली जी ॥ २७ ॥ गोपाल हर्षोद्गारें । ऋषभ गुण गावता जी ॥ वस्त्र भूषण अलकृत । मोजा मनावता जी ॥ २८ ॥ रूप स्वरूप रगपुर । रम्य स्थानक घणा जी ॥ श्रीमान मुरकीया युग्म । विस्मय मन तह जणा जी ॥ २९ ॥ माहुणा स्वागत काज । लोगों ताकी रखा जी ॥ उदारता दातारी मांग ।

ग्राहक मिले किस्या जी ॥ ३० ॥ बाहू बली के सिवाय । जन्य जाणे नहीं जी ॥ प्रभा न
दिल लगार । यवन गण जहां रही जी ॥ ३१ ॥ क्या यह खण्ड छे के बाहार । भरत जी
आए नहीं जी ॥ जाने न कोइ तस नाम । बाहु बली ए माने सही जी ॥ ३२ ॥ यों विचार
में निमग्न । क्षुधा तृषा भूलीयो जी ॥ स्वामी की आज्ञा पालन । बना प्रातिकूली यो जी ॥
॥ ३३ ॥ बाहू बली महा पुण्य वन्ता । नीति सु रीति सिरे जी ॥ भरत जी की
वस्ती रु ऋद्ध । इसकी होड क्या करे जी ॥ ३४ ॥ यों केइ तरंग करंत । नगरी ढिग
आवीया जी ॥ ढाल पांचमी यह । अमोलक गावीया जी ॥ ३५ ॥ * ॥ दोहा ॥
तक्षशिला नगरी कने । अनेक रम्य उद्यान ॥ वृक्ष वल्ली पुष्प कुंजसे । नंदन वन समान
॥ १ ॥ गज शाळा में गज घणा । अंजनगिरी कूट साय ॥ एरापत से दीपते । सहश्रोंगम
बन्धयाय ॥ २ ॥ सूर्य के अश्व सारीखे । घोडे सहश्रोंगम ॥ जल पथ सम गती करे । चंचल
शाळे तुरंगम ॥ ३ ॥ मानो विमान ज्योतिषी के । तैसे हजारो रथ ॥ वृषभ तुरुंगादि सजे।
भरे विविधपर सत्यं ॥ ४ ॥ पलटनो विविध प्रकार की । क्रोडों सूभट बलवंत ॥ सूर
शस्त्र अस्त्र सजे । अधिकाधिक दीपंत ॥ ५ ॥ ऊंठ उतंग चंग हे घणा । खच्चर पाडे
अपार ॥ पालखी साकट यान का । लागत नहीं कछु पार ॥ ६ ॥ देखी सायबी श्रेय सहू।
होगया सुवेग दंग । अब बाहूबली देखन की । लागी अति उमंग ॥ ७ ॥ ❀ ॥ ढाल ६ ठी ॥

पयपमय पापन नाम तुमारो ॥ ए ॥ पाहू पली अतुल्य पुण्याई क धारो । नीतियत सपी परजा का प्यारो ॥ पाहू पली ॥ टेर ॥ गगनालम्पी सघन सुदृढ तहां । प्रेक्षे नगर के द्वारा । सज शस्त्र खडे पहरेवाले । पूछ सुघगे ते धारो ॥ पहु ॥ १ ॥ अर प्रदेशी! कहा से आया । आता कहां इस धारो ॥ सो कह भरत चक्रपर्ती का सामत । पाहूपली से मिलन विचारा ॥ पाए ॥ २ ॥ यह हसा क्या पस्तु भरत है । आगे चला सो सघारो ॥ देख छटा नगर की सारथी । सफा नहीं अश्व समारो ॥ पाहू ॥ ३ ॥ अपमा रप तय हसे प्रक्षक जन। च्पहक कैसा गमारा॥ क्या भरत के पसेदी सामंत । चला यह सा आगे तत्काले ॥पाहू॥४॥ रम्य पाजार दुकाना रमणिय । सजाघट सप भेपकारो ॥ गादीयों पर तफीपे के टेके । बैठे पच साहूकारो ॥ पाहू ॥ ५ ॥ देप सा रूप सम्पती भी देखसी । सभ्यता भाव उसारा ॥ दम्भ के सुयग आश्चय घरता । आया राज आगारो ॥ पाहू ॥ ६ ॥ मयगल मद भर घूमत गजत । पाहन प्यष विविध प्रकारो ॥ जयर जग द्वार गाल्म सजे शस्त्र । घूमत घरन पिकरालो ॥ पाहू ॥ ७ ॥ रोका सुघेग का रहा प्यशा खर । कही हकीगत पिस्तारो ॥ तप कह खड रहा लता मे आसा । ओ हुकम देवेंग सरकारो ॥ पाहू ॥ ८ ॥ तो ले जानूगा तुम पहां पर । गया यह सभा मझारो ॥ जप पिजय पधा कहे प्रणाम कर । कोइ आया है प्रत्यहारो ॥ पाहू ॥ ९ ॥ कहता है मै भरत चक्रपर्ती का । सामत लाया समा

सुवेग है नाम म्हारो ॥ बाहु ॥ १० ॥ बाहुबल
चारो ॥ आया हूं मिलने महाराज से। सुवेग है नाम म्हारो ॥ वह लाया वह देख चकीत हुआ। बाहुबली
महाराज शानी की। लावो यहां इसवारो ॥ वह लाया वह देख चकीत हुआ। बल रूप तन वीर्य धारो ॥
का दरवारो ॥ बाहू ॥ ११ ॥ मणि सिंहासने सिंह समाना। बल रूप तन वीर्य धारो ॥ द्वीतीय सूर्यसा
वैठा महाराला बाहूबली नृप। सब नरो का सिरदारो ॥ बाहू ॥ १२ ॥ द्वीतीय सूर्यसा
मुकुट मस्तक दीपे। कुंडल ग्रह के सुतारो ॥ हलके हार ज्यों तारे गगन के। पडे वसन
भूपण झलकारो ॥ बाहू ॥ १३ ॥ वेटे पोते मंत्री सामंत गण। भरी सभा सब सारो ॥
एकेक से अधिका धिक तेजस्वी। सूर वीर धीर धारो ॥ बाहू ॥ १४ ॥ चन्द्र सा छत्र
ने चमर नक्षत्र युथ। क्षेपे अपत्सरा नारो ॥ चोपदार छडीदार वंदीजन। गुंजे
विरुदावनी ललकारो ॥ बाहु ॥ १५ ॥ सुवेग पृथवी को मस्तक टेकी। किया लली
नमस्कारो ॥ उसके वैठने आसन चाकर ने। बिछाया होते इशारो ॥ बाहु ॥ १६ ॥ वैठा
सुवेग तब पूछे बाहु बली ॥ घर के कुशल समाचारो ॥ कहो भैया सुवेग कुशल है
भरतजी। सब वीनिता जन सपरिवारो ॥ बाहु ॥ १७ ॥ कामादि षड्रिपु सम भरत ने।
जीते छे खण्ड विघन वारो ॥ साठ सहश्र वर्ष दिग विजय संकट से। सवही आए सुख
मझारो ॥ बाहू ॥ १८ ॥ यों पूछ के चुप रहे बाहूबली। तब सुवेग करे उचारो ॥ करजोडी
नमी कहे अहो स्वामी। भरत जी छे खण्ड सिरदारो ॥ बाहु ॥ १९ ॥ वे निर्विघन कर

सके छो को। तो स्वय निर्विघ्नी है धारो। जिनके रक्षक आप के बडे भाइ। यहां कौन जग विघन करनारो ॥ बाहु ॥ २ ॥ भरत जी से बढकर कौन जगमे। जो षण्ड साधन में भावे भारो ॥ धारे भरत के राजे राजेश्वर ॥ अनूपर धने आज्ञा धारा ॥बाहु॥२१॥तथापि भरतेश्वरजीके चित्त का। सन्तोप न हुआ छगारो॥विना स्वकुटुम्बियोंकी सेवा। निर्थक वांसे सारो॥ बाहु ॥ २२ ॥ तैसेही राज्याभिषेक के समय। और मिला सब परिवारो ॥ बारावर्ष तक उत्सव रहा। आपकी रहा देखी अपारो ॥ बाहु ॥ २३ ॥ देवेन्द्र नरेन्द्र और सब आए। किन्तु आपबिना धिरकारो ॥ चित्त जरा न लगा भरतेश्वर का। तब मिलन आतुरता धारो ॥ बाहु ॥ २४ ॥ निन्याण वे भ्रातों को सामत के संग। भेजा आमंत्रण नीति अनुसारो ॥ अठाण वे भाइ तो पिताजी पासे। गये मिलने परमरो ॥ बाहु ॥ ॥ २५ ॥ सुन उपदेश सबही ली दीक्षा। अब आप बिन जगत् मझारो ॥ भाइ कोइ नहीं इस लिए आप अब। कृपा कर विनीता पधारो ॥ बाहु ॥ २६ ॥ ऐसे समय में चुप हो रहना। आप को नहीं भयकारो ॥ बडे भाइ का मान बढाना। यही श्रेष्ठ चारो ॥ बाहु ॥ ॥ २७ ॥ विश्व विजयी और गुरु जन की। सेवा है सदा सुख कारो ॥ आप जैसे विनीत स ऐसों का। अविनय बने किस प्रकारो ॥ बाहु ॥ २८ ॥ देखो आपही बडों की बडाइ। आप नहीं आये उसवारो ॥ सबी अपराध को गिनकर मुझ को। भेजा प्रीति पसारा ॥

॥ बाहु ॥ २९ ॥ इतने दिन न गया अब कैसे जावूं । यह भी शंका निवारो ॥ उत्तम गुण वाले अपने स्वामी । करेंगे भूल गुजारो ॥ बाहू ॥ ३० ॥ बडे भाई समझो या समझो चक्रवर्ती । अब शीघ्र सेवा स्वीकारो ॥ इसही में सबही भलाइ समाइ । इत्यलं आप विचारो ॥ बाहू ॥ ३१ ॥ इतना सुन मन नहीं मुचे आपका । जानू ऋद्धि गर्व इसवारो ॥ किन्तु चक्रवर्ती की ऋद्धि आगे । अन्य की गहू तोभी लगारो ॥ बाहू ॥ ३२ ॥ नहीं निश्चय है सार लडन में । लडे तो निश्चय आपकी हारो ॥ दीर्घ दृष्टी से लीजे विचारी । तृण लिए ग्रामको न जारो ॥ बाहु ॥ ३३ ॥ में तो हूं स्वामि दोनों के विच मे । मेरे आप दोनो सिरदारो ॥ तथापि हित चेताना स्वामि को । कृतव्य यह हमारो ॥ बाहू ॥ ३४ ॥ इत्यादि खारी मीठी सुवेग ने । अर्जी दी गुजारो ॥ ढाल षष्टी कही अमोलक ने । होवे जो होवन हारो ॥ बाहु ॥ ३५ ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ बाहुबली महाराज वी । सुवेग की सुन बात ॥ मतलब सब समझी गए । भरत इस लिए बोलात ॥ १ ॥ कहे अरे सुवेग तूं । वातों में बडा होंशार ॥ तब ही तो मेरे सम्मुखे । बोलन न रखी कार ॥ २ ॥ बडे भाइ है भरत जी । जिस से हैं पूज्यनिय ॥ किन्तु नीति विचार ते । मिलन न चाहे जीय ॥ ३ ॥ तूं है नोकर उसही का । ज्यों हंडे का कण ॥ ता को दबाये लख गया । हंडे में जो धान मण ॥ ४ ॥ सुनरे ! नीति प्रीति की । रीति एती जान ॥ व्यर्थ घमण्ड न काम का ।

खुश कर सुन कान ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल ७ मी ॥ कोयल टहुक रही माधो बन में ॥ ए० ॥
बाहुबली नृप बड़े तेज धारी । सामंत परजा भी तस अनुसारी ॥ टेर ॥ समुद्र सम गंभीर गिरा बोल । सुभग के मन की खटपट खोल ॥ बाहू ॥ १ ॥ यह बड़े भाई का बड़पन देखावे । जो वे छोटे से मिलना चहावे ॥ बाहू ॥ २ ॥ किन्तु सुराधुर राजाओं का धन । मास कर भरत बने हैं महा जन ॥ बाहु ॥ ३ ॥ मेरे जैसा अल्प ऋद्धि भाई । देख के भरत दिल मे शरमाई ॥ बाहु ॥ ४ ॥ इसही विचार से मे नहीं आया । मेरी गरीबी में मजा मुझ सौंपा ॥ बाहू ॥ ५ ॥ साठ हजार वर्ष राज पराए । हरण किए सोमी हीन मघोए ॥बाहु॥६॥ वे छोटे भाइ का राज दबावे । आकरण यह नहीं कहावे ॥बाहु॥७॥ जो भरत का बन्धु पे प्रेमअ होता । तो दूत भेज भाइ क्या उपासा ॥बा॥ ८ ॥ मेरे प्यारे शान भठाणवे भाई । बड़े भाई स लखना भला न मानाई ॥ बाहु ॥ ९ ॥ उदार हृदयी तातजी शरण गइया । प्रेमी भरत की युक्ति समझा भइया ॥ बाहु ॥ १० ॥ मृग स्नेह यों देखाके फसाय । तरे जैसे वाक्यडम्बरी दलाल बनावे ॥ बाहु ॥ ११ ॥ मेरे भाइयों जैसे बने साधु । मै तो तैसे न बना अगाधु ॥ बाहु ॥ १२ ॥ यद्यपि अल्प सम्पत्ती मेरी देखाई । तथापि है दम कैसी कठनाइ ॥ बाहू ॥ १३ ॥ यदि भरत फूल सा कोमल देखावे । तथापि मायावी मुझे जनावे ॥ बाहू ॥ १४ ॥ तबही युक्ति रची भाइयों निकाले । उन सबी के

राज शीघ्र संभाले ॥ बाहु ॥ १५ ॥ मै तो तैसा हाथ नहीं आवूं । सबसे निर्भय मै सदा राहुं ॥ बाहू ॥ १६ ॥ गुरु जन गुरू गुण धारक होवे । उन्ही को पूज्य दृष्टी से सब जोवे ॥ बाहू ॥ १७ ॥ दुर्गुणी की सेवा दुर्गुण उपजावे । ऐसे से मिलने मुझे शरम आवे ॥ बाहु ॥ १८ ॥ क्या मैंने भरत का राज छिनाया । या उन के सुख को धक्का पहोंचाया ॥ बाहु ॥ १९॥जो लेवूं कहता है मैरे अविनय की माफी ।कृपालु भरतजी ने मुझे आपी॥बाहू॥२०॥ मै निस्पृही अलुब्ध स्वऋद्धि संतोषी । क्या मुझ में दोष अर्पेंगे रोषी ॥ बाहू ॥ २१ ॥ क्या आज तक पूरी करी मैरी स्वामी । इसलिए भरत हो सके मैरा स्वामी ॥ बाहू ॥ २२ ॥ दोनों को राज ऋद्धि सुख दाता । दोनों के स्वामी ऋषभस्वामि कहलाता ॥ बाहू ॥ २३ ॥ अन्य को स्वामी मै नहीं मानुं । जो उसे सेवे उसे असमर्थ जानूं ॥ बाहु ॥ २४ ॥ उनही दरिद्रीयों राजा पे भाई । निग्रह अनुग्रह करन समर्थाइ ॥ बाहू ॥ २५ ॥ बडे भाई के नाते सेवा यदि कीजे । तोभी लोगों मुझ मातेदही समझे ॥ बाहू ॥ २६ ॥ भरत की ताकद में अच्छी तरह जानूं । बचपन मे हम खेले थे दोनों ॥ बाहू ॥ २७ ॥ तब मैने उसे फत्थर के साइ । उठा हाथ से गगने फेंकाइ ॥ बाहू ॥ २८ ॥ बहूत ऊंचा जा जब पडने लागा । अधर झेली लिया रख दिया आगा ॥ बाहू ॥ २९ ॥ उन बातों को भूले भरत राजा । क्या राज वृद्धी से बन गए ताजा ॥ बाहू ॥ ३० ॥ किन्तु बाहूबली के बाहूबल

आगे । वे जीत हुए भूप सब अवेंगे भागे ॥ बाहू ॥ ३१ ॥ मुम नहीं गरज किसी के राज धन की । उ मैं आयूं यहां मानी तुम कथन की ॥ बाहू ॥ ३२ ॥ उन्हें हो गर्जे तो ये भरतेश आवे । बाहूबली भी उन्हें मजा बतावें ॥ बाहू ॥ ३३ ॥ जा निकल जलदी यो हुक्म फरमाया । दूत क मरक से मुह को फिराया ॥ बाहु ॥ ३४ ॥ ढाल पष्ठी खण्ड पञ्चम माहा अमोलक बाहुबली की महमी पुण्यार ॥ बाहु ॥ ३५ ॥ * ॥ दोहा ॥ सुनी हुक्म महाराज का । भलपली कचहरी तमाम ॥ अरुण नत्र सुवेग को । देखन लग सब जाम ॥ १ ॥ सामत राजा कुमर सब । मारो मारो कहे बेण ॥ मन्त्री कहे दूत अवध है । शिक्षा यही कहु बेण ॥ २ ॥ सतरी आइ तत्क्षीणे । कर घर दियो उठाय ॥ मुख पिलखाइ सुवेग तब । सभा के बाहिर आय ॥ ३ ॥ जोर न चला कोइ का । तोर सभा का दख ॥ शोर मचा फिर २ तणा । दुःख पाया सो विशेष ॥ ॥ ४ ॥ रोष धरी रथ पर चढी । ले संग निज परिवार ॥ चला फिर निज भूप पे । करता चित्त विचार ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ ७ मी ॥ मोनवकार जपो मन रंगे ॥ ए० ॥ बाहुबलीके सब बल भारी । परजा भी तस सेना सारी जी ॥ देखी सुवेग भरा अमरस में । चिन्ते करना क्षुवारी जी ॥ बा ॥ १ ॥ युद्ध की बात प्रसरी सब पुर में । तैसही देश ममारी जी ॥ दूत आया था भरत चक्री का । हुइ तस फजिती तहांरी जी ॥ बा ॥ २ ॥ मेहल बाहिर

निकल ते सुवेग को। विचित्र रूप देखावे जी ॥ कोइ भट्ट कर रहे तैयारी। इच्छे युद्ध वक्त कब आने जी ॥ वा ॥ ३ ॥ कितनेक तो रहे शस्त्र फिराइ। रहे कितनेक निशाना सारे जी ॥ कितनेक नकली लडाइ करते। कितनेक कसी वक्तर बांधे जी ॥ वा ॥ ४ ॥ पग पग पर तस डर मन व्यापे। रखे कोइ करे मुझ घातो जी ॥ शीघ्र गती से चला सो जाये। सुणता पुर जन वातो जी ॥ वा ॥ ५ ॥ यह कौन नवा मनुष्य यहां आया। राज-धार के नारो जी ॥ कोइ कहे यही दूत भरत का। दूर देशी वेष से निहारो जी ॥ वा ॥ ६ ॥ बाहुबली जी तुल्य है कोइ राजा। इस भूमंडल मांही जी ॥ अन्य कहे हां आयुध्या में भरत जी। चक्रवर्ती कहलाइ जी ॥ वा ॥ ७ ॥ किसलिए दूत उनो ने यहां भेजा?। बाहुबली भाई बुलाई जी। तो इतने दिन क्यों न बोलाए?। वे छे खण्ड साधन गया इ जी ॥ वा ॥ ८ ॥ अब इतनी उत्कंठा क्यों जगी?। अन्य राजा की तरह इने जाने जी ॥ जैसे अन्य नृप वश में कीने। तैसे इन्हे करने माने जी ॥ वा ॥ ९ ॥ बोले भरत नृप मुख को भाषे। निज पर बल न विचारे जी ॥ ऋद्धी बल छक बाहुबली बुला के। क्या यह मरना धारे जी ॥ वा ॥ १० ॥ १ अखण्ड आणा चक्रवर्ती की होवे। २ अच्छा जो कभी हाराजी। तो फिर कैसी फजीती होगी। डूबावे कामाया राज सारा जी ॥ वा ॥ ११ ॥ इत्यादि सुन सुवेग मुरझाया। चिन्ते दुगा मज: सभी को बनाइ जी ॥ चक्रवर्ती की

शक्ति क्या आवे। यों सोचत मार्ग चलाइ जी ॥ पाहु ॥ १२ ॥ जहां २ मुकाम होता सुवेग का। तहां २ युद्ध की कहानी जी ॥ ठाकर चाकर सब करे तैयारी। युद्ध लिए बहु ठानी जी ॥ पाहू ॥ १३ ॥ कोइ तो गज मणी सजावे। कोइ करकाण कुदावे जी ॥ कोइ रथ ठाट कर शृंगारे। कोइ सुभटों को पोषावे जी ॥ पाहु ॥ १४ ॥ शस्त्र सुधारे समारे केइ। केइ सिन्धुरा ललकारे जी ॥ केइ तम्बु रावटी खड़ी करते। यों गड़बड़ मची सबी जगार जी ॥ पाहू ॥ १५ ॥ राज भक्ति यों देखी परजा की। सभी प्राण अर्पन तैयारी जी ॥ संग्राम तो भनी है बहू बुरा। किन्तु जन मन उत्साह अपारो जी ॥ पा ॥१६॥ आगे जगल में आप सुवेग। किरात लोगों देखाइ जी ॥ रहे इत नत पोड़ लगाइ। करते युद्ध की सजाइ जी ॥ पा ॥ १७ ॥ तीर कमान बरछी और भाले। फरसी गोफण धारी जी। सिंह व्याघ्र चर्म तन को लपेटे। रहे निशान सधारी जी ॥ पा ॥ १८ ॥ चर्म कवच कसे हृदय पर। अरसी चक्र फिरावे जी ॥ नदर की तरह इत उत कूद। परस्पर बातां बनावे जी ॥ पाहू ॥ १० ॥ कितिक सेना होसी भरत की। एक अक्षुणी मे डाल्हू मार जी ॥ जय जरूर करेंगे आगे हो। पाहूपली जी की इसबार जी ॥ पा ॥ २ ॥ रथ आता देखी सुवग का। पूछ ने सभी पोड आग जी ॥ डर घर सुवेग कहता रहा। पूछे भरत कहां रहाए जी ॥ पा ॥ २१ ॥ उमग अति देखी सभी के मन।

लडने को सब हौंशार जी ॥ कहे अबी आवेगे भरतेश्वर । सुन सबी करी पूकार जी ॥ बाहु ॥ २२ ॥ आगे दोडाया रथ चिन्तवे । सभीका सरीखा अनुराग जी ॥ क्या ग्रामी क्या जंगली देखे । बाहूबली के लिए तन त्याग जी ॥ बा ॥ २३ ॥ आश्चर्य चकित करे यह रचना । सेवा तो मोलाइ होय जी ॥ बाहूबली ने तो देश खरीदा । गुण यह अपूर्व जोय जी ॥ बा ॥ २४ ॥ इनका रंग देखते तो मुझ को । चक्री सेना तुच्छ जनाय जी ॥ महाबली बाहूबली के आगे । भरत जी तुल्य कैसे आय जी ॥ बा ॥ २५ ॥ बल विख्यात ग्रन्थे चक्रवर्तीका । तासे इन्द्र अधिक कहाय जी ॥ किन्तु इन दोनों के मध्य में । मुझे बाहूबली जनाय जी ॥ बा ॥ २६ ॥ ब हुबली की थप्पड सम्मुख । चक्र और वज्र क्या मात जी ॥ ऐसे महाबली को छेडना भासे । मानो छेडे अपनी घात जी ॥ बा ॥२७॥ जैसा बली संतोषी भी तैसा । इस लघु पृथवी खण्ड मांय जी ॥ रहा मजा मान सतावे न किस को । तो इने सताने कौन पाय जी ॥ बा ॥ २८ ॥ क्या कमी चक्रवर्ती महाराज के । जो न हो इतना राज जी॥इस लिए बाहूबली शत्रु बनाना । होता दीखे अकाज जी॥बा॥२९ धिक्कार मुझे में दुत कह लाया । पडा इस परपंच माय जी ॥ श्रेय प्राप्त होना तो मुश-किल । वदनाम रखे कही थाय जी ॥ बा ॥ ३० ॥ इत्यादि विचार तरंग में । सुवेग मार्ग क्रमाए जी ॥ पंचम खण्ड ढाल सात कही अमोलक । होणहार पहिले जणाय जी ॥ बा ॥

३१ ॥ * ॥ दोहा ॥ चन उहावी निज राज की। भूमी में सुवेग जाय ॥ मुकाम स्थान लोगों मिल। पूछे उसको आय ॥१॥ कहो कैसे हैं बाहुबली। भरत जी से मिले के नाय ॥ समाचार क्या लाए हो। हमे भी देवो सुनाय ॥२॥ संक्षिप्त उत्तर उन भणी। देकर लोगों नम्राय ॥ संकल्प विकल्प श्रोता मने। देसें अब कथा थाय ॥ ३ ॥ यों प्रवास पुण करी। नगरी विनीता आय ॥ राज सभा माहे गया। जय विजय बधाय ॥ ४ ॥ बैठे जा स्वस्थान के। स्थिर हो ले विश्राम ॥ भरतेश्वर उमंग धर। पूछने लग ताम ॥५॥ * ॥ ढाल ८ मी ॥ बिना जिनराज के देखे। नही दिलको करारी है ॥ ए ॥ कहो सुवेग जलदीसे। बाहुबल सुख माइ है ॥ कुशल परिवार है सारा। क्या रगत इष्ठी आइ है ॥ १ ॥ सुनो महिमा बाहुबली की। आपका छोटा भाइ है ॥ टेर ॥ बल बुद्धि तेज में पुरा। सम्पत्ती भी खुब पाइ है ॥ सुनो ॥ २ ॥ यदि नही चक्रवर्ती य। तथापि कुमी न कांइ है ॥ सभी परजा सेना उनकी। अजब प्रीति देखाइ है ॥ सुना ॥ ३ ॥ पुत्र पौत्र भी उन जैसे। तन बल अकल मांइ है ॥ सामंत गण भी सभी सूरा। राय मालिक उमराइ है ॥ सुनो ॥ ४ ॥ चली सब छटा अपुर्व में। स्व बुद्धि कुमलाइ है ॥ तथापि भक्ति स्वामि की। यथा शक्ति बजाइ है ॥ सु ॥ ५ ॥ कुछ औषधी सी कडवी। मधु सी मीठी सुनाइ है ॥ युक्ति सुक्ति सी जमा कर। उभय को सुख दाइ है ॥ सु ॥

६ ॥ योग्य सेवा करन उनको । आप की जग जनाइ है ॥ वृद्ध भाई पिता जैसे । कैसे
तोभी छोटे भाइ है ॥ सु ॥ ७ ॥ किन्तु उनको सम्पत्ती की । दिली अति गुमराइ है ॥ मेरी
करी सबी बातों को । हवा में दी उडाइ है ॥ सु ॥ ८ ॥ चूर होकर अभिमाने । लोक तीनों
ठुकराइ है ॥ तृण तुल्य तुच्छ तुमे समझे । कोइ न मुझ साइ है ॥ सनो ॥ ९ ॥ आपकी
सोभा की सेने । खण्ड षट की विभूताइ है ॥ घ्राण उनने ऐसा फेरा । जाने दुर्गन्ध आइ
है ॥ सुनो ॥ १० ॥ बोले मुझ प्रभा नहीं किस की । ताल ऋद्धि बकसाइ है ॥ संतुष्ट में
इतने में ही हूं । अधिक मुझे न चहाइ है ॥ सुनो ॥ ११ ॥ मेरी उपेक्षा के कारण । भरत
ऋद्धि कमाइ है ॥ पांती उसकी न मै चहाता । रहो वह सुख मांइ है ॥ सुनो ॥ १२ ॥
सेवा में आना तो दूरा । जानो बाहूबल भाइ है ॥ आमंत्रण युद्ध का देते । कहते जो भरत
इच्छाइ है ॥ सुनो ॥ १३ ॥ विशेष क्या कहूं अहो स्वामि । देखन आतुर आप ताइ है ॥
किन्तु संग्राम इच्छा से । नकी दर्शन चहाइ है ॥ सुनो ॥ १४ ॥ देखी जानी जैसी मैने
। तैसी सब दी दरशाइ है ॥ इच्छा होवे तैसा कीजे । विदूर सारी सभाइ है ॥ सुनो ॥
॥ १५ ॥ सुन कर सब दूत की बातें । भरतेश्वर गए विस्माइ हैं ॥ कोप और हर्ष दोनों
का । वेग हृदय छाइ है॥१६॥बोले सब सच्च कही तेहने । ऐसाही मैरा भाइ है॥ नहीं उस
जैसा है सुर नर । जगत् में ढूंडे पाइ है ॥ सुनो ॥ १७ ॥ गर्व उसका सबी सच्चा । मैने

पचपन के मार है ॥ खेल करने में पल उसका । लिया पहिले अजमाइ है ॥ सुनो ॥
॥ १८ ॥ खिलाफ स्वामि का पुत्रज है । पवि घप में छोटाइ है ॥ जाने तीन लोक को
जो तुच्छ । इ ि में क्या नवाइ है ॥ सूनो ॥ १९ ॥ अहो भाग्य समझता हूं मे । जो मेरे
ऐसा सभाइ है ॥ दोनों बराबर के होवे । तोही जगमें सोभाइ है ॥ सूनो ॥ २० ॥ ताकत
है जग म कहो किसकी । बाहुबली वश में लाइ है ॥ अष्टापद काबू में लाना । क्या
सहज ही जनाइ है ॥ सूनो ॥ २१ ॥ जो वश में हो जावे ऐसा । तो फिर कमी रहे क्याइ
है ॥ किन्तु यह आशा जो करनी । ज्योंमे कुसुम के साइ है ॥ सुनो॥ २२ ॥ आविनित पन
सपी उसका । सहगा मे एवाइ है ॥ परभा नहीं मे करू उसकी । जाने जो सुख निपलाइ
है ॥ सूनो ॥ २३ ॥ विरोधी ऐसे का पनना । जिस में क्या भलाइ है ॥ मुसाफिल माइ
ऐसा मिलना । व्यप सर्व स्वय कियाइ है ॥ सुनो ॥ २४ ॥ अहो सभा सवों मत्री । इच्छा
मेरी सुनाइ है ॥ सपी चुप चाप क्यो बैठे । कहो जो तुमे सुहाइ है ॥ सुनो ॥ २५ ॥
उचित जो लगता है तुम को । मुझे यह दो बताइ है ॥ बाल ब्रह्मचारी कही अमोलक ।
प्रीति पदी कहाही है ॥ सुनो ॥ २६ ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ चकित बनी सारी सभा ।
सुनी नरेन्द्र की बात ॥ कहां दुर्विनीत बाहुबली । कहां यह क्षमा साक्षात ॥ १ ॥
सनापति सुखसेन जी । खड़ हुए तत्काल ॥ कर जोडी कहने लगे । सुनो

क्षमा करनी है उचित ॥ किन्तु भरत भूपाल ॥ २ ॥ ऋषभ देव के पुत्र को । एक देशी नृप हो । इतना धरे गुमान कृपा पात्र पे । न कि किसी से प्रेरित ॥ ३ ॥ जीता सारे भरत को । रहा । भारत पति को तुच्छ गिने । वहवा बुद्धि निधान ॥ ४ ॥ महादाधि को तिर गए बकात । फिर क्या सोभा चक्री की । आर्जन की दे गमात ॥ ५ ॥ सबी गए । ग्वद्दा तिर ने काज ॥ अटक वैठना ठीक यह । कौन कहे महाराज ॥ ६ ॥ सभा कहे ठीक है । सेनापति कथन ॥ सजाइ शीघ्र ही करो । बाहु बली मथन ॥ ७ ॥ ॥ ढाल ९ मी ॥ राघव आवीया हो । होइ ने होंशार ॥ ए० ॥ भरतेश्वर चले हो । नाह बली जीतन काज ॥ टेर ॥ सुन कर बात सारी सभा की । भरतेश्वर सन भाय ॥ दिया हुक्म सज करो सेना । सामंतादि सज्ज आय ॥ भरत ॥ १ ॥ स्नान श्रृंगार कर भरत जी । हुए गज असवार ॥ छत्र चमर आवनाव धरते । शुभ मुहूर्त ने मझार ॥ भरत ॥ २ ॥ लक्ष चौरासी गज गजी रथ । पायक छिन्नू क्रोड ॥ सोला सहश्र यक्ष से परवरिए । तेज प्रतापी प्रोड ॥ भरत ॥ ३ ॥ अयुध्या के वाहिर आये । चक्र गगन मझार ॥ गरणाट करता चला आगे । तक्षशिला तरफ तत्काल ॥ भरत ॥ ४ ॥ जैसे समुद्र के सामे देखे । जल मय मही देखाय ॥ तैसे सेना सामे प्रेक्षत । प्राणी पूरित विस्माय ॥ भ ॥ ५ ॥ मयंगल देखत मयंगल मय जग । तुरी देखे मही तुरी पूर ॥ रथ प्रेक्षे रथ मए पृथवी ।

पपवल क्षीसी मयूर ॥ भरत ॥ ६ ॥ फाल्गुन वायु ज्यों रज गगन वके । त्यों सेना पद प्रहार ॥ उडी धूली छाइ व्योमम । जाने छाया आभाल ॥ भरत ॥ ७ ॥ ग्रीषम ऋतु जिम वार जल शोषे । त्यों जहां पद पड़ाव । तिहां तलाव वापी कूपादि । होवे उदक अभाव ॥ भरत ॥ ८ ॥ पाद पतन सेना से कम्पे । मेदनी पत्र के जेम ॥ गिरी शिखर गिर पडे खड खड । ग्राम सदन भी सम ॥ भरत ॥ ९ ॥ कल्पान्त काल का वायु जैसे । घन वृक्ष वाले उखाड ॥ तैसे सेनागत घन अरु पर्वत । दीखे सम उजाड ॥ भरत ॥ १० ॥ गज चिकार हयकार अश्वकी । रथ साकट झणकार ॥ जया रव पुकार पायदल । जान मेघ गर्जार ॥ भरत ॥ ११ ॥ लस्कर फोज भासाम पताका । फरके गगन मझार ॥ जान चक फीरे हस फउय । उडत नभमें फतार ॥ भरत ॥ १२ ॥ यों ग्रामागर नगर उल्लंघत । सुमे मुकाम करंत ॥ यत्किञ्चित दुःख किसे न देते । दुःखीयों के दुःख हरंत ॥ भरत ॥ १३ ॥ चरम रत्न पर गाथापति जी । नित्य सब खाद्य निपजाय ॥ मनुष्य तिर्यंच की सेना पोषे । यहाय सो सब पाय ॥ भरत ॥ १४ ॥ तैसेही नव निधिके प्रभावे । शयनासन वासन वर्सन ॥ भूषण धन अन इच्छित वस्तु । निकाली दे तत्क्षन ॥ भरत ॥ १५ ॥ मार्ग में खेड पतन वासी । क्रोडों गम छटा निहार ॥ पुण्य प्रताप यह देख भरतका । आश्चर्य पाय अपार ॥ भरत ॥ १६ ॥ कहे प्रतापी इस राजान मे । एक देश के राज समान ॥

छेही खण्ड सारे भरत में । मना दी निज आन ॥ भरत ॥ १७ ॥ इतना वैभव सम्पत्ती पाकर । फिर क्यों करे परिश्रम ॥ अब कहां जाते कारण क्या है ? । करने का परिश्रम ॥ भरत ॥ १८ ॥ तब कोइ कहता जाते है यह । अपने भाइ पे चाल ॥ वह घमंडी आण न मानी । लडें गे दोनों भूपाल ॥ भरत ॥ १९ ॥ अहो बडों का क्रोध भी बडा । कहां गया बन्धु प्रेम ॥ लडन चले यह दल बल सज कर । कैसे पावें क्षेम ॥ भरत ॥ २० ॥ क्या कि हमने भी सुना है । बाहु बली प्रताप ॥ सुरासुर भी जीत सके नहीं । तो क्या गिनती में आप ॥ भरत ॥ २१ ॥ यद्यपि इतनी सम्पत्ती नहीं है । नही है इतना राज ॥ तथापि तन बल जन बल अपरमित । देवे एकही सबे भगाज ॥ भरत ॥ २२ ॥ नही मिला कोइ सला दाता । क्यों जगाना सूता सिंह ॥ परिणाम यह है ऋद्धि गर्व का । देख लेना इह ॥ भरत ॥ २३ ॥ भाइ भाइ की लडाइ । सुखद कैसे होय ॥ हार जीत प्रत्येक की होवे । अपना ही सुख खोय ॥ भरत ॥ २४ ॥ घर हानी जन हांसी उभय विध । मुझे प्रत्यक्ष देखाय ॥ चढाइ कर जाते भूधव को । कौन सके अटकाय ॥ भरत ॥ २५ ॥ इत्यादि जन बात भविष्य की । गइ चक्रवर्ती कान ॥ डगमगा मन किन्तू भव्य तव्य । बढ गया फिर मान ॥ भरत ॥ २६ ॥ चक्र प्रदर्शित पथ से । सुखे करत मुकाम ॥ कालान्तर आए चल के । देश सीमा ठाम ॥ भरत ॥ २७ ॥ तक्षशिला पुर सीमा के ढिग । कीना तब पढाव ॥

समुद्र ज्यों मर्यादित मन के । रह सुख्य देख वाच ॥ भरत ॥ २८ ॥ धार्मिक रत्न ने पुर
बसाया । सुख सम्पत्ती विशाल ॥ ऋषि अमोलक पचम खण्डे । हुइ यह नवमी ढाल ॥
भरत ॥ २० ॥ * ॥ दोहा ॥ तक्षशिला महा पुरी विषे । सुनन्दा के लाल ॥ सुख से राज
करत थे । बाहु बली नृपाल ॥ १ ॥ राज सिंहासन ऊपर । बैठे सिंह समान ॥ वीर सामंत
सभा तणा । धरते चित्त अभिमान ॥ २ ॥ चरों के मुख से सुना । भरतेश्वर आगम ॥
दल बल संग समुद्र सा । सीमान्ते रह थम ॥ ३ ॥ सुनते ही उत्साहा तहां । चढा ज्यों
सरीता पूर ॥ सामंत भट उमराव के । उछला सूरत्व नूर ॥ ४ ॥ बधाइ संग बधा लिया ।
चर मुख का वृतन्त ॥ परस्पर मिसलत में । भरत को तुच्छ गिणन्त ॥ ५ ॥ * ॥
ढाल १० मी ॥ भुजंगी छन्द ॥ बाहुबली भूप की आज्ञा से पाए । ततक्षीण आयुध शाला
में आए ॥ सू चित्त कर न सूरे को दका उठाए । रण भेरी भग्ने दी गरणाए ॥१॥मली गण
सामंत राज कुमारा।उमरावों योध भट उसवारे ॥ विद्युत से चमके उत्साहाये अपारा
। सज्ज होने तत्क्षीण स्थान पधारा ॥ २ ॥ व्यायाम मजन कर वस्त्र पहने । बख्तर सजी
लिए शस्त्र ज्यों गहने ॥ द्युति कान्ती ऋद्धि शोभी जेहने । आए सभा में सबही सहेने ॥ ३ ॥
गजाधिपो गज की सेना सजाइ । सुवर्ण रत्न अम्बारी होवे चमत्कार ॥ सजे राज महाराज
आरूढ भयाई । मेघ घटा जैसे कुंजर सोभाई ॥ ४ ॥ तुरी तेजी कसीए पलाण भयारी ।

शस्त्र सजे वीरो ने कीनी सवारी ॥ कुरंग जैसे कूदे युद्धे उत्सारी । बाहू बली के अरबली ॥ जरी खोल डारी रथों जोनि लावे ॥
में अगाडी ॥ ५ ॥ अस्त्र शस्त्र भरीये घुंघर धमकावे । चपल तुरी वृषभ ताहे जोडावे ॥ ६ ॥ क्रोडो गम सेना
योधे माय वैठे धनुर्बाण धरावे । उमंगे लडन को सिन्धु राग गाते ।
पायदल साथे । वक्कर शस्त्र अस्त्र सजे ग्रही हाथे । अचला चलाते । विविध रणतूर
वीर रस छकिये उछलते ते जाते ॥ ७ ॥ यों दल बल सज सज्ज हो भ्रात मिलन चहाते
वादिंत्र गर्जाते । निज कटक देखी बाहूवल हर्षाते । तत्क्षण दिव्य साजे । रीसाला पलटन
॥ ८ ॥ भद्र गजेन्द्र बाहुबल विराजे । महेन्द्र से सोभे सवी ॥ ० ॥ जैसे सरोवर में पोंडरिक
जय जयारव बधाते । चली सेना पद घात धरणी धूजाते । शस्त्र चमकावे । कोलाहल
सोभावे । त्यों नृपति छत्र गगने देखावे ॥ नभ में विद्युत से बहूत दूरा । तथापि उत्सहा से
नादे गगन को क्षोभावे ॥ १० ॥ यद्यपि सीमान्त होता । गंगा तटपर रहो दल ते मजूरा
पहोंच शीघ्र सूरा ॥ भरत जी के दल से कुछंत्र ऊरा । दोनों नृप के दल में निशी के मांइ । कला कूशल
॥ ११ ॥ संग्रामिक सला करने के तांइ । दोनों तरफे भराइ ॥१२॥ बाहूबल 'सिंह रथ' पुत्र के
अग्र गण्य जेहे कहलाइ । प्रबल सभा अग्र संग्रामी बनाइ । दिव्य सुवर्ण पट्ट
तांइ । सिंह समान पराक्रमी जानाइ ॥ सेनापति के । किया प्रणाम अति हर्ष भरके ।
मस्तक पर बंधाइ ॥१३॥सिंहरथ रण दीक्षा धारण कर

मानो आज भूमीश प्रुम को पनाया। तन मन फूला स्वस्थान आया ॥१४॥ ऐसेही अन्य केइ नृप वीर तांइ। सब प्रूज कीने कर ने छकाइ॥ स्वप महा समर्थ यद्यापि लड़े ना। तथापि चलना है नीति पकड़ेना ॥ १५ ॥ भरतेश्वर सुखसेन सेनापति को। रण शिक्षादि किया पति सेन ही को ॥ आज्ञा स्वीकारी उमगे उत्साहे। स्वस्थान आयुद्ध साज सजाए ॥ १६ ॥ दोनों ओर के योधे युध की तैयारी। कर रहे सब शस्त्र बख्तर समारी। धनुष्य बाण तरकस गदा शक्ति भाले। असी तेग नाली कृपाण सभाले ॥ १७ ॥ वीरत्व उमग न निद्रा मगाइ। तीन प्रहर रात्री प्रहर सी जनाइ॥ सूर्योदय होते रण तूर बजाये। मारू राग रण वाद्य सूरे ललकारे ॥ १८ ॥ भुजा वन गिरी गुफा सब भग भगाया। सिंह साँप वन पर भगे जी छिपाया। उछला नीर सरीता का समुद्र क्षामाया ॥ पड़ पड़ा शिखर पड़ धरा को धूजाया ॥१९॥ दोनों फौजों रणांगण आइ तदाइ। कटक ककर दूर कर किमी सफाइ। गिरा टेकरे खाइको दी पुराइ। समांगणमें आसड राजा सजाइ॥२०॥ दोनों के मध्य छरहदी दरम्यान। रोपे चिन्ह रूप करांत निशान ॥ खुद्ध किए शस्त्र सगे विपु से चमकान। उछल रहे वीरों चहाते फरमान ॥ २१ ॥ पीछे से आज्ञा कर अधिकारी। शास्त्रों से भरे साकट छेपलो सारी ॥ ज्यों पे भरकर ले जावो तदारी। चक्त पर कमी कुछ आवे न लगारी ॥ २२ ॥ हाथी घोड़े रथ भी पीछे

से पहोंचाए । खूटे एकतो काम दूजा आजावे । चारण भाट वीरों यशोगान गावे । कुल बल कीर्ती दोहादि सुणावे ॥ २३ ॥ दोनों ओर की सेना अड़ा जमाया । इतने में दोनों नृप भी सज्ज आया ॥ सुवर्ण रत्न जडित कवच तन पे ठाया । मणि रत्नों का मुकुट अनंन भलकाया ॥ २४ ॥ वज्रमय धतुष्य लिए करमें धारी । वज्र वाण भर भाते स्कन्धे लटकारी ॥ ऋषभ प्रभुका नाम लिया संभारी । सजे धजे गजेन्द्र पे कीनी सवारी ॥ २५ ॥ सिरपर उतंग छत्र शशी सा सोभावे । चारों ओर दिव्य श्वेत्त चमर बींजावे । बृद्ध जनो सुभाशिर्वाद गर्जावे । बन्दी जनों विरुदावली बधावे॥२६॥विजय मुहूर्त शकुन अति शुभ लिया है । मंगल नाद सुणते प्रयाण किया है । निज २ सेना में दोनों पधारे । सलामी के वाद्य सेना ने झणकारे ॥ २७ ॥ सेनामध्य स्थित भूधव दो भइये । जय जयारव से गगन क्षुब्ध थइए ॥ नृप से नृप उमराव उमरावे । यों सबी बराबरी सामे थावे ॥ २८ ॥ हस्तियों के सम्मुख हस्ती को झुकाए । घोडे के सम्मुख घोडे लगाए । रथ से रथ योधे से मिले योधें । कर उंची वाह परस्पर प्रतिबोधे ॥ २९ ॥ धनुष्य चडाइ परिक्षाये टणकारी । वाण लगा आसन लिया जमारी । म्यान के वाहिर शस्त्र सब आए । लक्ष विन्दु तरफ निशान जमाए ॥ ३० ॥ यों सबी होगइ संग्राम तैयारी । फक्त हुक्म की रहा रहे निहारी ॥ पंचम

मणे ढाल सुगुनी उचारी। अमोल पुण्यात्म की होती रक्षारी ॥ ३१ ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ सपर पाए समाम की। धिक्षमक छुर से नमस्कार। लोक पाल शक्रेन्द्र से। सभी आने समाचार॥१॥भारत वर्ष में ऋषभ जिन। की बसी आबादान॥ उन्ही के दोनही पुत्र।मिल। करत सस घमशान ॥ २ ॥ सहम पचीस भरत सण। सपरिवार राजान ॥ सारी प्रजा बाहुबली तणी। सब बनी होन कुर्बान ॥ ३ ॥ प्रलय काल माना प्रगटा। तैसा बना यह याग ॥ दोनों ही नृप परम बली। देंगे जगत् का भोग ॥ ४ ॥ दोनों तनुज जिनेन्द्र क। झगड आपस मांय ॥ सहार करे भष्ठी तणा। क्येदाश्चर्य कहा कहाय ? ॥ ५ ॥ * ॥ ढाल ११ मी ॥ गयरल ईशरजी कहे तो हंसकर बोलना ए ॥ ए० ॥ सुनिये नृपति मेरी बात। हित की मानीये जी ॥ यथा सागर ऋषभ जी पुत्र। न्याय पक्षाचानीये जी ॥ टर ॥ सुन कर देव के मुख से कथन। इन्द्र विस्मित भए जी ॥ अपी ही जा दोना को सम जावू। महा जुल्म यह होता मिटावू। क्रोडों नर पशु मरते बचावू। भारत वर्ष की लाज निभावू। यों सोच के शक्र जी आए सेना स्थानिये जी ॥ सुनिये ॥ २ ॥ कह ते दोनों मार क सेनिक को ललकार के जी। सुनियो नृपा दी जन सारे। दोनो राजा पास इस वारे। आकर देता में समझारे। वहां तक युद्ध म छेडो लगार ॥ आण, है ऋषभ देव की सभी का। यही जानीय जी ॥ सुनिये ॥ २ ॥ सुन कर माघेस का यह वचन। सभी

इन्द्र है किस के पक्ष मझार । बाहू बली के भरत पे प्यार । क्यों रोके स्थंभित भए जी ॥ इन्द्र है किस के पक्ष मझार । चित्र लिखित पर सारे खडे । निज ठेकानिये लडते इसवार । देवे करते हैं किस प्रकार । शकेन्द्र आवीया जी ॥ जय हो नरेंद्र जी ॥ सुनिये ॥ ३ ॥ पहिले भरत नरेश्वर पास । युक्ति प्रयुक्ति से समझ लेवे । सब सुख आशिर्वाद देवे । सच्चे मंत्री जो हित की केवे । आनिये जी ॥ सुनिये ॥ ४ ॥ स्थान सुज्ञ जन सेवे । अहो प्रतापी भूप छे खण्ड आणे । किन्तु जैसे समुद्र के तांइ । कोइ यह तो कार्य सु शोभित तुमने सब अच्छा किया जी । तबी तो भाइ से लडाइ लगाइ ॥ सेरी ता न सके धपाइ । तैसे इच्छा न आप की अघांइ । सुनिये ॥ ५ ॥ जैसे गजेन्द्र का किन्तु यह तो मानो एक हाथ दूजे कर हानिये जी ॥ क्रोडों नर पशु की हानों उत्पात वन की हानी करे जी । तैसे आप की क्रीटा यह जानो । क्या कहुं चन्द्र से पडे । सार कछु न निकल तो मानो । दोनों एक ही घर घमशानो ॥ योग्य यह अंगार तैसे यह छानिये जी ॥ सुनिये ॥ ६ ॥ आदिश्वर जी के पुत्र रत्न को । छोटे भाइ को है नहीं जी । इस लिए यह पर पंच मिटावो । लोट के स्वस्थान सिधावो । फायदा इस कैसे हटा वो । इस में सोभा कौन सी पावो ॥ दोनों तरफ भरत जी अहो से सोभा जग ख्यानिये जी ॥ सूनिये ॥ ७ ॥ कहते दया अन्य किसे आवे । जो सुरेन्द्र । तुम ने भली कही जी ॥ आप विन

ऐसे मोके पे पैतावे । भेद जाने बिन बात बनावे । क्या सुर गुरु भी विज्ञ कहावे । नहीं मैं बलाभिमान से छद्मन आया सत्य मनीए जी ॥ सुनिये ॥ ८ ॥ षट खण्ड में प्रति स्पर्द्धी यह एकही रहा जी । प्रथम बाहुबली का विनय बान । मुझको मानता पिता समान । छज्ञायत गुणों की खान । नख मांस से प्रेमी असमान । किन्तु दिग विजय से मै आया । यह बना अभिमानीये जी ॥ सुनिये ॥ ९ ॥ राज अभिषेक पर्व बारा में यह आया नहीं जी ॥ तब मैं समझा गया यह भूल । भेजा दूत बने ज्यों अनुकूल । दिया जबाब गर्व में फूल । तो भी गम खाइ मैने भूल । किन्तु इसलिए चक्र भी बैठा नहीं ठिकानिये जी ॥ सुनिए ॥ १० ॥ इसलिए बेबश मैने चढाइ यह इस पर करी जी । क्या करू ऐसी हालत मांय । कहो सौधर्म पति समझाय । अब भी बाहुबली सीस झुकाय । तो भी करू मै जो यह फरमाय । चक्र न माने तो मुझे कहना योग्य न जानीये जी ॥ सुनिये ॥ ११ ॥ यों सुनी इन्द्र कहे सब ठीक २ आपने कही जी । मैं अब बाहुबली पे जाय । जो समझ तो दू समझाय । नहीं तो संग्राम युक्त है नाय । आप आपस में करो जा बहाय । दृष्टी बाहु वचादि उत्तम युद्ध । भरतजी मानिये जी ॥ सुनिये ॥ १२ ॥ वहां से शाकेन्द्रजी । बाहुबली पास पधारियें जी ॥ जय विजय हो आशीर्वाद देय । अहो नीतिज्ञ गुणों के गेह । लोक अपवाद सजालु छेय । दया क्षमा से अलङ्कृत येय ॥ इस

लिए कहने योग्य जो लगी सो ही बखानियेजी ॥ सुनिये ॥ १३ ॥ आप अयानित को
शिक्षा दाता । विनयवंत हो अतिजी । इसलिए बडे भ्रात के साथ । लडना योग्य
नही कहात । दोनों ऋषभेश्वर अंग जात । न करो नर पशु ओ की घात ॥ अभी
तक कछु नहीं बिगडा । पक्ष न तानीये जी ॥ सु ॥ १४ ॥ चलीये बडे भाइ के पास ।
विनय भाव से मिलो जी । जिस से सकल क्लेश टल जाय । कीर्ति सुर नर लोके छाय ।
दोनों स्थान आनन्द वरताय । शक्ति वानों को यही सोभाय ॥ जीते भरत जी के छही
खण्ड । भोगो मन लगानिए जी ॥ सु ॥ १५ ॥ क्योंकि आपहो दोनों ही पुत्र । श्रीऋषभ
देव के जी । परस्पर दोनों की साथ भलाइ । हार जीत में शोभा नाही । दोनों अवयव
तन के एक साही । सबी के हित के लिए चेताइ ॥ यों सुन मुस्करा कर बाहुबली कहे
जी । किन्तु कारण पूरा न जानो । सो कह देता मै सुनो कानो । पिता जी दीक्षा के अवसर
स्यानो । दान दे तोषे जग यजमानो । तैसे ही सोभाइ को राजा उचित्त बनाविए जी ॥
सुणो ॥ १७ ॥ किन्तु निगलता मोटा मच्छ जैसे छोटे मच्छ भनी जी । तैसे भरत
क्षेत्रोदधी मांइ । भरत ने सब राजा को गिल्याइ । तो भी तृप्ति जरा नहीं आइ ।
छोटे भाइयो का राज छीनाई । दी हुइ बापकी ऋद्धि खोसी । वह बडा ज्ञानी

ण जी ॥ सुणो ॥ १८ ॥ बड़पन पने से नहीं कहाय । गुण से मोटा कहा जी ॥ मैंने भ्रम से भरत बडा जाना । किन्तु सब गुण अब पहचाना । क्या अपराध लघु भ्रात ग्याना । मेरे बन्धु का किया अपमाना ॥ ता भी मैं बैठा गम लाय, ब लखन को आखिर ए जी ॥सु॥१९॥ जैसे नौका समुद्र कर पार । फूटे गिरी आयकी जी ॥ तैसे भरत जी भरत को जीत । आप टकराने मुझ स ए रीत । निर्दय भरत को करूं फजीत । कहो आनू मैं कैसे मित ॥ यह तो है क्षत्रीयों कृत्य मिले रणांगानिए जी ॥ सुनो ॥ २० ॥ जो सुखेच्छु भरत फिर आय ता मुझे हरज नहीं जी । मै नही लोभी उसके दाइ । पीछे लघु राज की चहाइ । आप भी विन विचार वरशाइ । क्यों चिल सु मै उस की कमाइ ॥ क्या सिंह भी कभी अन्य एना भक्ष ल न्यानिये जी ॥ सूनो ॥ २१ ॥ अजी मै चारू तो एक क्षीण में ऋद्धि छिनी लहु जी ॥ मुझे सतोष है इसमे मांहि । जो भरत जी भला निज चहाइ । ता चुप चाप शीघ्र फिर जाइ । मै पीछा न करूंगा कचाइ ॥ जाओ समझाओ अपी भरत को । यह हित कहानिय जी ॥ सुनो ॥ २२ ॥ तब कहे इन्द्र सुनो बाहुबली जी । बात सरूपी कहू जी । चक्री लडना न आप से चहावे । चक्र आयुध शाळा में न आवे । निरुपाय आप को मनावे । मानो तो सब जन सुख पावे ॥ कहे बाहुबली न करो यह बात । अब तो निशानिये जी ॥ सुना ॥२३॥ तब कहे हरी जो युद्ध करनाही तुमने धारिया जी ॥ तो मत करो अपत्र

का नाश । छोडो अधर्म युद्ध की आश ।.उत्तम युद्ध मे करूं प्रकाश । होवे सच्चा प्रमाण ने यह
माश । दृष्टी मुष्टी दंडादि युद्ध परस्पर ठानीए जी ॥ सुनो ॥ २४ ॥ माना बाहुबली ने यह
कथन । बहुत खुश होय के जी ॥ सुनकर इन्द्रादि सुर हर्षाये । दोनों अपर बली
देखाये । देखन कुस्ती नर उमंगाए । सुर भी गए गगन मे छाए । अमोल ऋषि खण्ड
पांच की ढाल एकादश मी भनि ये जी ॥सुनो॥२५॥❀॥ दोहा ॥ तत्क्षण इन्द्र ने आए के ।
भरतजी से चेताए ॥ उत्तम युद्ध कायम रहा । यह युद्ध दीजे रोकाय ॥ १ ॥ दोनो ही नृप
प्रतिहारी को । दी आज्ञा फरमांय ॥ बैठी वह गज ऊपरे । सबी सैनिक को सुनाय ॥ २ ॥
अहो वीरो चिरकाल से । की स्वामि ने प्रतिपाल ॥ वही रूण चुकान का । अवसर आया
था हाल ॥३॥ किन्तु सूरेन्द्र अनुरोध से । दोनों नृप आपस मांय ॥ स्वयं युद्ध को इच्छते ।
तुम सबी को की मनाय ॥ ४ ॥ वीरों पर वज्र पात सा । पडा वचन प्रहार ॥ रणोत्सव
को छीन के ।किया इन्द्रने विगाड ॥ ५ ॥पुत्र वियोग ज्यों सेनी को । मुरझाए अति मन ।
अपनीरचल बुद्धि । समझन लगे अघन ॥ ६ ॥ स्थिल बने शोके घने । शस्त्र छिपाये कोश
॥ समुद्र पुर लोटी सेना । दोनो ओर भर जोश ॥ ७ ॥ * ॥ ढाल १२ मी ॥ पर देशों मैं
रम गइ जान । तेरा कोई नहीं ॥ए०॥ भरत चक्री का बल अपार । वैसा ओरों का कहां ?॥
टेर ॥..भरतेश्वरजी अपनी सेना को । देखी करती पग २ पे विचार ॥ वैसा ओरों का कहां

॥ १ ॥ माल काल से अन्तर भाव को । गए भरतजी ताव ॥ वैसा ॥ २ ॥ पास बोलाए वेताए उन्हीं को । मेघ ध्वनी ज्यों स्वर उच्चार ॥वैसा॥ ३॥ तेम नशाने रवी ज्यों तत्पर। त्यों तुम करो शत्रू सहार ॥ वैसा ॥ ४ ॥ किन्तु मुझे लखता तुमने आज तक। देख्या नहीं कोइ वार ॥ वैसा ॥ ५ ॥ इसी से शाका सील भए तुम। पर्सी भाकि यत आचार ॥ वैसा ॥ ६ ॥ इस लिए तुम को बल मुझ भुजा का। देता हु मे देखाव ॥ वैसा ॥ ७ ॥ बहुत लम्बा चौड़ा ओर ऊंडा। खड्डा एक खोदाव ॥ वैसा ॥ ८ ॥ उस के किनारे खड़े भरत जी। कहे मझों से होवो होंशार ॥ वैसा ॥ ९ ॥ लोहे की एक मजबूत शृंखल। लाकर देवो यहां वार। वैसा ॥ १ ॥ मेरे वाए हाथ को बांधो। सब शृंखल हद सार ॥ वैसा ॥ ११ ॥ हजार लम्बी २ बधी शृंखलें। सोमे भुजा ज्यों रवी किरणार ॥ वैसा ॥ १२ ॥ फिर सभी को दीनी सूचना। भरत जी तब पुकार ॥ वैसा ॥ १३ ॥ जैसे गाडी को खेंचते वृषभ। वैसे तुम भी सब लार ॥ वैसा ॥ १४ ॥ निर्भय होकर मुझ को खेंचो। दो इस गड्ढे में डार ॥ वैसा ॥ १५ ॥ तोफि में जासु तुम पूरे बलवत। तोपूगा देकर पुरस्कार ॥ वैसा ॥ १६ ॥ मूस कोइ दुस्वम आया है। जिसका यह प्रतिकार ॥ वैसा ॥ १७ ॥ वारम्वार कही स्वामिकी आज्ञा। कीनी सभी ने स्वीकार ॥ वैसा ॥ १८ ॥ सब सेनिक निज वाहन सहित मिल। मुंज बधी शृंखल धार ॥ वैसा ॥ १९ ॥ इ कहते सभी साथ मल पूरन। सिंची सूप

ललकार ॥ वैसा ॥ २० ॥ किञ्चित ही हिला सके नही भुज को । करे चक्रवर्ती तिरस्कार ॥ ॥ वैसा ॥ २१ ॥ चक्रवर्ती तब कौतुक मे आ । हाथ संकोचा उसवार ॥ वैसा ॥ २२ ॥ निज हृदय को पञ्चा लगाते । सबही खिचे ज्यों घडनार ॥ वैसा ॥ २३ ॥ गिर पडे उस गेहरे खड्डु में । लटके खजूर ज्यों डार ॥ वैसा ॥ २४ ॥ अपूर्व बल और पोरूष नरेन्द्र का । देखा सबी ने चमत्कार ॥ वैसा ॥२५॥ चक्रवर्ती ने सूत के तागे ज्यों । फेकी सांकल तोड डार ॥ वैसा ॥ २६ ॥ सबही सावध हो हर्षाश्चर्य पाए । करने लगे जय २ कार ॥ वैसा ॥ २७ ॥ अपरा जित जान अपने स्वामी को । खुशी भए सबी अपार ॥ वैसा २८ ॥ शंका समाधान हुआ सबी का । लीवे अपनी फते धार ॥ वैसा ॥ २९ ॥ चालीस लाख अष्टापद का बल । होता चक्रवर्ती मझार ॥ वैसा ॥ ३० ॥ क्या शक्ति कोडो भी नर की । कर सके कभी हार ॥ वैसा ॥ ३१ ॥ ढाल द्वादश कही अमोलक । पुण्यात्मही बने सिरदार ॥ वैसा ॥ ३२ ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ तदनन्तर दोनों नृपति । मयंगल पर भए सवार ॥ विरूदावली वादिंत्र नाद से । करत दश दिग गुंजार ॥१॥ आए रणांगण विषे । खडे मध्य में समक्ष । दीपोदधी के बीच में । जगति ज्यों दीपे दक्ष ॥ २ ॥ इन्द्र हुक्म सुर तत्क्षीणे । युद्ध भूमी की तैयार ॥ रज हरी वृष्टी करी । दी पुष्प ढग प्रसार ॥ ३ ॥ मेघपर गर्जन करत । दोनों राजा उसवार ॥ ॥ कूंजर से उतरी करी । सम्मुख खडे निहार ॥ ४ ॥ नर गण भूमीपर

रहे । देव गण आकाश ॥ अपूर्व युद्ध अपरनको का । देख रहे उल्लास ॥ ९ ॥
* ॥ ढाल ११ मी ॥ सवका छन्द ॥ पुण्य प्रतापी नरेन्द्र दो दीपते । तथापि बाहुबली बल विशाली ॥ पांच सो साधु की सेवा भव पूर्व की । ताही के फल भोगता लीजे माली ॥ पुण्य ॥ १ ॥ दाम रू ईशान समान दोना भड़े । चढे अभिमान निज आम धरते ॥ प्रथम दृष्टी युद्ध करन की प्रतिज्ञा । अनिमेष नेत्रों रखने की करत ॥ पुण्य ॥ २ ॥ सामने सामने तिष्ठते निरखते । रक्त से चक्षु वीरेन्द्र दोनों ॥ मानों सपकाल म आकाश के अन्त में । चन्द्र सूर्य अड़े उभय कोनों ॥ पुण्य ॥ ४ ॥ विमल आम्मा से चिरकाल ठग टगे । भरत के नेत्र गए मीचाइ ॥ माना पट खण्ड की प्राप्त की विजय को । चक्षु के नीर ने दी वहाइ ॥ पुण्य ॥ ५ ॥ प्रातः के वृक्ष सम सिर हिला देव गण । बाहु बली पे कुसुम वृष्टि कीनी ॥ ता समय बाहु बली पक्ष की सेना ने । खुप सतकार की जय ध्वनी ॥ पुण्य ॥ ६ ॥ चक्री नरेन्द्र की सेना चशामर्ग । धरती रोगिष्ट ज्यों स्थिर थाइ ॥ मेरु के उभय पक्ष प्रकाश अन्धकार ज्यों । दोनों ओर हर्ष शोक रहा छाइ ॥ पुण्य ॥ ७ ॥ कूषले आंखी की तरह भरत कोपित बने । कहे एक न जिता कहावे । वाक्य युद्ध में नहीं चड़ेगा आगे कमी । तब दोनों नृप गुरजावे॥ पुण्य ॥ ८ ॥ सिंहनाद भरत जी का जब प्रगटा । चारों दिशा व्यापा नद पूर जैसा ॥

मानों गिरी के सब शिखर हिला दिए । समुद्र जल उछला प्रलय अन्देशा ॥ पुण्य ॥ ९ ॥
गज वृषभ अश्व तोड निज बन्धन । छोड स्वामि शंक भगन लागे ॥ फिर बाहूबली
सिंहनाद भयंकर किया । मानों बज्र पात देव क्षोभे भागे ॥ पु॥१०॥गिरी गहन से सिंह
वन चरादि भगे । सर्प अजगर विल में भराए ॥ दोनों सेना के नर पशु गण सर्व ही ।
भूल गए शुद्ध मुरछा जो पाए ॥पुण्य॥११॥ क्रमश सिंह नाद दोनो करने लगे । हायमान
पाने लगी भरत वानी ॥ बाहूबली की अधिकाधिक बडने लगी । इसमे भी बाहूवली
विजय कहानी ॥ पुण्य ॥ १२ ॥ तीसरा बाहू युध करन प्रवर्त भए । कम्मर कसी सन्मुख
धाए ॥ भुजा को ठोक हिलाते पग से मही । प्रेम से परस्पर कर मिलाए ॥ पुण्य ॥ १३ ॥
कभी उभय भीड ते कभी अलग होत ते । दोनों प्रचंड कुंजर के साही ॥ उछलते कुदते
मानो अलिंगने । विछडे प्रेमी मिले बहु दिन मांहीं ॥ १४ ॥ कभी दबे कभी चडे शीघ्रता
से उभय । रज धूली वस्त्र तेंने लपटानी ॥ चलते पहाडों परे भास होते तदा । असित
बली दर्शक विस्मय मानी ॥ पुण्य ॥ १५ ॥ गज गिरे मस्त मेंढे को ज्यों सूढ में । तैसे
बाहुबली चक्री को सहाया ॥ उछाला गगन में शर छूटा धनुष्य से । तैसे भरतेश्वर
गगने जाया ॥ १६ ॥ गिरते चक्री देख हाहार व मचा । दोनों सेना के सबी घबराया ॥
बडे की अपात्ति सबी को दु:खप्रद हुए । बाहूबली का भी चित्त चिन्ता छाया ॥ पुण्य ॥

२१ ॥ धिक्कार मेरे मल्ल को मारूं वृद्ध भ्रात को। विन विचारा काम मैंने करिया ॥ हाथ कैलाश पर खड़े रहे नीचे लेय। अधर ही आसानी से हट परिया ॥ पुण्य ॥ १८ ॥ हर्ष हुयी रहे जीवत चक्रवर्ती । दियो क्षमा पेख बाहुबल पस्ताना ॥ पुष्पवृष्टी लघु भ्रात पर सुर करे। भरत जी दिल अति दुःख वेदाना ॥पुण्य॥ १९ ॥ लज्जा से सिर झुका देख ते भ्रात को। बाहुबल गदगद स्वर से बोले ॥ जगत् पति महाबली सब नहीं कीजीए। दैव योग कभी विजयी नर भी डोले ॥ पुण्य ॥ २० ॥ मै तो सामान्य हूं आप ता महान है। नहीं मदले आपसा वीर नाहीं ॥ देख मथन कभी कर दे समुद्र का। यह तो ओछी सजा कहलाई ॥ पुण्य ॥ २१ ॥ चिन्ता तज मुष्ठ को सज्ज घनो गाढ़ जी। और भी युद्ध का नहीं है ढोंग ॥ भरत कहे सुज वह घुंसे के आरसे। भोगू फलक मत आन भोग ॥ पुण्य ॥ २२ ॥ क्रोध से लाल बोल दोनों आंखों करी। बाहुबली सामे चक्री दौड़ आया ॥ मारा घुंसा ध्येष बाहुबली छाती में। पीछे हटे बाहुबली सेन हलायो ॥ पुण्य ॥ २३ ॥ फिर बाहुबली न घुंसा मारा भरत को। तत्क्षीणं पड़े वे मूरछा खाइ। धूजी धरणी दुःखी भए बाहुबली। धिक्कार क्षत्री भ्रात मारे मृत्यु पांइ ॥ पुण्य ॥ २४ ॥ जो मरे बन्धु तो मरण मुझ को श्रेय। नेत्र नीरे भरत हाथ पम्भाले ॥ पक्षा से पवन कर पाळाये प्रेम से। आखिर भाई को भाई संभाले ॥ पुण्य ॥ २५ ॥ क्षीणान्तर सावध

हो बैठे पट खण्ड पतिं । दास सम लघु भ्रात सामे जोइ ॥ दोनों नीचे सिरे लज्जा व्याप्तज
यने । बडों से हार जीत शरमिंक होइ ॥ पुण्य ॥ २६ ॥ उठ चक्रवर्ती कुछ पांव पीछे हटे
। जाना बाहुबली भाइ अजून धापें ॥ युद्ध की इच्छा ओर भीं मन में । मानी नर न हटे
प्राण आपे ॥ पुण्य ॥ २७ ॥ जो कभी बडा भाइ मरगया हाथ मुझ । तो अपकीर्ती अनन्त
काल रेवे । इतने मे भरत जी यम सम कोपित बनी । वज्रसा दंड कर मे जो लेवे ॥
॥ पुण्य ॥ २८ ॥ चूलका से मेरू ज्यों सोभे दंड से चक्री । घुमाइके दंड भाइ को मारा ॥
भयकर शब्द भया ऊस प्रहार से । मस्तक मुकुट को चूर डारा ॥ पुण्य ॥ २९ ॥ चोट से
आँख मीचानी बाहुबली की । सावध हो उनने भी दंड सहाया ॥ घुमाया यम सा
पछाडा छाती परे । जरा भी फिकर मन में न लाया ॥ पुण्य ॥ ३० ॥ चक्रवर्ती का मज-
बूत अति बखतर । मट्टी के घटे ज्यों चूर चूर होवे ॥ गस्त आई भरतेश्वर को तदा ।
क्षीणन्तर सावध हो सामें जोवे ॥ पुण्य ॥ ३१ ॥ खडा देख बाहुबली क्रोधातुर हो अति ।
फिर वज्र दंड खुवही घुमाया॥विद्युत ज्यो लपक प्रहार अति जोर से । बाहूबली के शिरपर
लगाया ॥पुण्य॥३१॥ घुटने तक बाहूबली घुसे जमीन में । दंड के टूकडे होके जो पडि ए ॥
तत्क्षीण उचक बाहिर आए बाहूबली । भरत के बल का आश्चर्य करिए ॥ पुण्य ॥ ३३ ॥
तक्षशिलाधिप फिर ले दंड हाथ में । घुमाते देव दानव डराए ॥ जो छूटे दंड मानो भेदे

नभ धरणी को । चमकते छिपते सुर, देखे उमाए ॥ पुण्य ॥ ३४ ॥ लपक मारा सुभगला के पुत्र को । मानो वड़ा मुद्गल सिर पे ठोका ॥ गडे जमीन में कठ तक भरत जी । लोगों सब मृत्यु का लाए धोका ॥ पुण्य ॥ ३५ ॥ राहु को हन ज्यों सूर्य प्रगट हुए । त्यों भू म्यसेती भरत बाहिर आए ॥ लज्जा से शाम मुख चिन्ता सें हृदय शून्य । युद्ध से मन वृथीज लाए ॥ पुण्य ॥ ३६ ॥ चिन्ते हर बात में हार मेरी भइ । स्याद्धी ऐसा जग में न पाया ॥ महा मुशकिल से उपार्जी राज ऋद्धि को । क्या इसका धनेगा बाहुबली राया ॥ पुण्य ॥ ३७ ॥ एकही क्षेत्रमें चक्री दो न हुए । और चक्रवर्ती यह बना नहीं ॥ क्या चक्रवर्ती बाहुबली मे नहीं । यों चिन्ता प्रहस्थ बने भरत राइ ॥ पुण्य ॥ ३८ ॥ बाहुबली की सुर नर सब जने । मुक्त कठ से कीर्ति उच्चरे ॥ ढाल ए तरमी ऋषि अमोलक कहे । पर्वी से करणी अधिकता रे ॥ पुण्य ॥ ३९ ॥ * ॥

॥ दोहा ॥ भरतेश्वर चित्त चिन्तवे । हम हार अब सब बात ॥ मुझ से अधिक सुनन्दा सुत । प्रत्यक्ष सबे देख्यात ॥ १ ॥ चक्रवर्ती मेर तइ । कहा ऋषभ जिन राय ॥ किन्तु यहां तो विपरित पइ । कारण क्या देखाय ॥ २ ॥ निर्णय करण उपाय अब । एकही मेरे पास ॥ चक्र चला प्रति पक्षी का । करना योग्य विनाश ॥ ३ ॥ लज्जा राज भी राख ने । और न रहा अब जोर ॥ भाइ मरे तो क्या करू । बनू बनी यह कठोर ॥ ४ ॥ हजार सुर

सेवित जेह । लिया चक्री चक्र हाथ ॥ बाहूबली पे चलाव वा । गगन के माए घुमात ॥ ॥ ८ ॥ ❀ ॥ ढाल १४ नी॥ मुगति पद पावो रे जिनेन्द्र गुण गावतां ॥ए॥सुधारा कीधा हो बाहूबलीजी बिगडते काम का ॥टेर॥ भरत राजाके कर के मांहि । बाहूबली चक्रको देख प्रथम प्रतिज्ञा कहने लगे अरे ऋषभ पुत्र हो । जाति लजाइ विशेख ॥ सुधारा ॥ १ ॥ शरम जरा नहीं युध की कर के । चक्र को कैसे उठाया ॥ मेरे कर में तो दड यह हे । भरत लाया ॥ सुधारा ॥ २ ॥ जैसे तपस्वी तपो बल से । अन्य को डर बताता ॥ तैसेही भरत अब चक्र कर में ले । मैरें तांइ डराता ॥सु॥३॥ किन्तु जैसे भुज बल हारा । तैसा इसका भी करले ॥ मै नही डरता तैरा डराया । यही इच्छा भी सरले ॥ सु ॥ ४ ॥ इतने में भरत लगा के पराक्रम । तत्क्षण चक्र को छोडा ॥ दावानल ज्यों ज्वाला वमता । बाहूबली पर दोडा ॥ सु ॥ ५ ॥ देख बाहूबली मन में विचारा । यह विचारा क्या करसी ॥ गेंद की माफक फेकूं उछाली । दूरा जाइ पडसी ॥ सु ॥ ६ ॥ ऐसा विचार करते इतने में । चक्र निकट चल आया ॥ शीतल पडा गुरू शिष्य के दाइ । प्रदक्षिणा तीन लगाया ॥ सु ॥७॥ गौत्री की घातज करने का । अधिकार चक्र को नांइ ॥ चरम शरीरी महा पुण्यवंता । चक्री के सगे भाइ ॥ सु ॥ ८ ॥ फिर के तत्क्षण चक्रवर्ती के । कर पर आय विराजा ॥ आश्चर्य पाये भरतेश्वर आति । अब तो खुदा सब काजा ॥ सू ॥ ९ ॥ बाहूबली देखी यह

रचना । अति क्रोध उभराया ॥ मारता चक्र भरत मेरे को । सहाय इस में नाया ॥ सु॥ १० ॥ विश्वासी अपर चली भस्म । उसका भी तेज गया मारा ॥ भरत का भी करतु चक्रपूरा । प्रतिज्ञा भग करनारा ॥ सु ॥ ११ ॥ यम के जैसे क्रोधातुर हो । बाहुबली घूँसा उठाया ॥ दौड़ कर चले भरत के निकट जब । विचार में भटकाया ॥ सु ॥ १२ ॥ जैसे सक्षुम मर्याद भूमी में । तपकला का रुक जाता ॥ तैसे बाहुबली रुके देखी । शक्रेन्द्र जी आ चरचाता ॥ सु ॥ १३ ॥ यह क्या १ २ मझो करते हो । धीर शिरोमणि विचारो ॥ चक्रवर्ती कभी मारा न जावे । शोभा न इस के रातरे ॥ सु ॥१४॥ सुनके वचन बाहुबली जी विचारे । धिक्क राज लक्ष्मी तांई ॥ बाप भ्रात एक को मार । गया घोर पाप कमाई ॥ सु ॥ १५ ॥ कितना भी आ राज मिल तो । तृपति कभी नहीं आव ॥ राज लुब्ध मर जाए नर्क में । ऐसा मुझ नहीं चहाय ॥ १६ ॥ मुट्ठी खाली पर नहीं आवे । अन्य सहन करन नहीं पावे ॥ इस लिए अब इसीसरू मुझको । मेरा मस्तक ही सहन कराव ॥ सु ॥ १७ ॥ तत्क्षिण निज बालों का लोचन । बाहुबलीजी ने कीना ॥ राज ऋद्धि सुख सब छिटकाया । इन्द्र हर्ष अति भीना ॥ सु ॥ १८ ॥ साधु भावा बाहु बली का । शक्रेन्द्र जी पहनाया ॥ सुरपति सुरपर बोमलीनी । रजोहरण कांख के माया ॥ सु ॥ १९ ॥ जय २ शब्द करने लगे गगन में । भरत जी शिर को उठाया ॥ लघु भ्रात

साधु घने देखी । हर्ष खेद दोनों उभराया ॥सु॥ २० ॥ खडे भए दोनों कर जोडी । चौधारा
आँश्रु वर्षाते ॥ मानो संकल्पी सबी पातक को । आँखो के पानी से वहाते ॥ सु ॥ २१ ॥
बाहूबली कहते अहो चक्री । माजना जगत् का जाना ॥ ऋषभेश्वर पुत्र होकर में । अधम
में जाता गिनाना ॥ सु ॥२२॥ सूचना शकेन्द्र की पाते । तात जीके वचन संभारे ॥ यथार्थ
हुआ वही कहना । यहां किसका कोइ ना रे ॥ सु ॥ २३ ॥ अनुकरण उन्हीं का करूंगा ।
जाता अब उनके पासे ॥ भरत जी गिरे बंधु चरणों में । अपराध क्षमावे तासे ॥ सु ॥२४॥
अहो क्षमा नाथ अहो भ्रातवर्य । चक्र से धोका में पाया ॥ सताए यहां आकर आप को ।
किया मैने सच्चा अन्याया ॥ सु ॥ २५ ॥ वारम्वार धन्य है जी आप को । सच्चे बाप के
बेटे ॥ दया दृष्टी मेरे पर लाकर । हो गये जग से छेटे ॥ सु ॥ २६ ॥ पापी मेरे जैसे जग
में । और न कोइ देखाता ॥ समझता हू मै आप के जैसा । पण नहीं जग छिटकाता ॥
सु ॥ २७ ॥ यदि मै होवुंगा आप जैसा तब । सत्य पुत्र ऋषभ गिणावुं ॥ यह दिन मुझ
को भी शीघ्र आवों । विधिवंदन करी तिण ठावु ॥ सु ॥ २८ ॥ क्षमा अर्पण कर ऋषि
बाहुबली । तत्क्षण आगे सिधाए ॥ पंचम खण्ड ढाल चौदा अमोलक । अपूर्व वैराग्य
गाए ॥ सु ॥ २९ ॥ * ॥ दोहा ॥ बाहूबली साधु बने । देखी तस परिवार ॥ चिन्ता व्यापी
रूदन करे । लगे सब शुन्यकार ॥ १ ॥ शक्रेन्द्र और भरत जी । आए चन्द्रयशः पास ॥

समाधान प्रेमी किए। रीति अनादि प्रकाश ॥ २ ॥ बाहुबली की गादी पे। चन्द्रयश को बैठाय ॥ " चन्द्रयश " तप प्रगटा। महा आपे हुए उसमाए ॥ ३ ॥ दिन कितनेही तहां रही। किया सभी समाधान ॥ निज परिवार साथे लइ। किया सहर्ष प्रयान ॥ ४ ॥ विनीता को सुख्ने आवीये। कर सुख से राज ॥ चक्र गया आयुध शाल में। सुख से चले सब काज ॥ ५ ॥ ❁ ॥ ढाल १७ मी ॥ वीरा म्हारा गज थकी उत्तरो ॥ ए० ॥ मान तजे ज्ञान ऊपजे। माने ज्ञान विनाशे जी ॥ विनय भाव घट प्रगटे। ज्ञान की ज्योति प्रकाश जी ॥ मान ॥ १ ॥ बाहुबली जी ऋषिवरा। कुछेक दूरा आई जी ॥ चिन्तवना यिव ऊपजी। ऊभे रहे उस ठांई जी ॥ मान ॥ २ ॥ मुझ पहिले दीक्षा महा। लघु मेरे अठाणव भाइ जी ॥ दीक्षा में वे बडे भए। नमना पडे उन तांइ जी ॥ मान ॥ ३ ॥ अभी नहीं आउ जिनराज पे। गये से मेरी नीची लागे जी ॥ केवल ज्ञान प्राप्त करी। आऊंगा प्रभु के भाग जी ॥ मान ॥ ४ ॥ तप प्रशस्य अग्नि करी। संयम कुंड में ठाइ जी ॥ ध्यान पवन उत्कट करी। घन घातिक इंधन जलाइ जी ॥ मान ॥ ५ ॥ अभी ही बन जाऊं केवली। यों चिन्ति तहां ध्यान लगाया जी ॥ दोनों बांह लम्बी करी। स्थिर बने मेरू के सहाया जी ॥ मान ॥ ६ ॥ नाशाग्र दृष्टी धरी। अनिमेष नेत्र ठेराया जी ॥ उष्ण ऋतु के ताप में। लग धूप और वाया जी ॥ मान ॥ ७ ॥ स्वेद छूटी सब बदन से। भूमी के तांइ भिजावे

जी ॥ वायु से रज धूली उडी । वदन पे चीगटी जावे जी ॥ मान ॥ ८ ॥ मानो कर्दम लपेटीया । कनका चलसा देखावे जी ॥ फिर पछीना छुटे ते । मल वहे यो नित्य थावे जी ॥ मान ॥ ९ ॥ कोमल तन कष्ट दहे । मुनिश्वर ध्यान में लीनो जी ॥ प्रवाह नहीं सुख दुःख तणी । केवल लेवन मन भीनो जी ॥ मान ॥ १० ॥ वर्षा ऋतु में वर्षे तो । पानी मूशल धारोजी ॥ वाजे अन्धी शीतल वायरो । वृक्ष तल चले न लगारोजी ॥ मान ॥११॥ विद्युत कडक ढिग आपडे । तथापि कम्पे नहीं जी ॥ पांव खुचे दोनों कीच में । सेवालादि लपटाई जी ॥ मान ॥ १२ ॥ हेमंत ऋतु दाहज पडे । वाजे शीत शमीरोजी ॥ भस्म करे वन राई को । तथापि वाहु मुनी धीरोजी ॥ मान ॥ १३ ॥ वनचर जीव गतागत करे । सिंह व्याघ्र रींछ सीयालो जी ॥ टकरावे ऋषि तन भणी । पटकने भरे बडी फालो जी ॥ मान ॥ १४ ॥ तो भी किंचित नहीं चले । खप एक कर्म खपावा जी ॥ अजगर सर्प आ लपट ते । दंस मच्छर आदि डंकाया जी ॥ मान ॥ १५ ॥वृक्ष उपर से वल्लीयों । चारों और लेफानी जी ॥ मानो खडे गिरी गुफा विषे । पक्षीयों वसे उस स्थानी जी ॥ मान ॥ १६ ॥ वृक्ष थूड तस तन लखी । घेस ते तन पशु आई जी ॥ चड ते अजगर नकुलादिक । चींटी का तो कहना क्याई जी ॥ मांन ॥ १७ ॥ चारौ आहार रहित सो । निश्चल महिना चारा जी ॥ शीताप यों ध्यान में । तथापि केवल नहीं धारा जी ॥ मान ॥ १८ ॥ तिण

काल तिण अवसरे । जगत् वात्सल्य जिनराया जी ॥ इत्यादि मारों योग को । आना ज्ञान के मार्पा जी ॥ मान ॥ १९ ॥ ब्राह्मी सुंदरी महासती । पोलाइ यों फरमावे जी ॥ फक्त पकड़ा रहा मान का । बाहुबली मुनी ध्यान से । कर्मांश बहु खपावे जी ॥मान॥२०॥ केवल ज्ञान प्रग हुए । इसलिए तुम यहां आवोजी ॥ मान ॥ २१ ॥ सो तुम जाकर हटावोजी ॥ केवल ज्ञान प्रग हुए । इसलिए तुम यहां आवोजी ॥ विहार कियो वहां से सती । भार जिनाज्ञा शिरोधार कर । सविनय कर नमस्कारो जी ॥ विहार कियो वहां से सती । भारम्बारो जी ॥ विविध मझारो जी ॥ मान ॥ २२ ॥ ढूंढे पन पावे नहीं । इत उत फिरे बारम्बारो जी ॥ ओलखी विगाने यही गहन में रहो थकी । वृक्ष युग से अणगारो जी ॥ मान ॥ २३ ॥ ओलखी विगाने तदा । सविनय वदन कीनी जी ॥ बोली सुसन्द आवाज से । ज्यों लेवे शब्द को चिनी जी ॥ ॥ मान ॥ २४ ॥ अहो भाई मुनि सांभलो । ऋषभ देव प्रभू पठाइ जी ॥ समाचार तुमें करुणावेपा । सोही हम रही सुनाइ जी ॥ मान ॥ २५ ॥ हाथी पर चढ़ा मानवी । केवल ज्ञान नहीं पावे जी ॥ इसलिए शीघ्र नीचे उतरो । यों कही दोनों सिधावे जी ॥ मान ॥ ॥ २६ ॥ भगि साध्वी वचन को । सुन बाहुबली विस्मावे जी ॥ मैं त्यागी सावद्य योग को । गज चढ़ा कैसे बतावे जी ॥ मान ॥ २७ ॥ शिष्या भी भगवान की । मार्पा पद स्वीकारी जी ॥ मूठ तो कभी बोले नहीं । कैसे मैं लेवू सत्यधारी जी ॥ मान ॥२८॥ अहो२ अब मैं समझीया । मूझ मन में अभिमानी जी ॥ मन में बड़े छोटे वय विषे । कैसे नमू

में रहा ठानो जी ॥ मान ॥ २९ ॥ यही मयंगल मुझ मन विषे । मै भया उसपर सवारो जी ॥ इस लिए इतने कष्ट सही। नही बना केवल धारोजी ॥मान॥३०॥ धिक मुझ ज्ञानी होय मै । कर के जिनेश्वरकी सेवाजी ॥ तो भी मै नही तज सका । यह अनादि कर्म टेवाजी ॥ मान ॥ ३१ ॥ विवेक मुझे नही प्रगटा । इस लिए प्रभु उपकारी जी ॥ साधवी भेजी चेतावीयो । कीनी दया हमारी जी ॥ मान ॥ ३२ ॥ भव भ्रमण में ऊंच नीच हो । वक्त अनन्त चगदायो जी ॥ वृद्ध साधु को वंदने। क्यों मुझ तन अकडायो जी ॥ मान ॥ ३३ ॥ चलो अभी सभी साधु को । लली करूं नमस्कारो जी ॥ यों चिन्ती पांव उठावीयो । खसे आवरण उसवारो जी ॥ मान ॥ ३४ ॥ द्रव्ये आए मण्डप बाहिरे । भावे घन घातिक खपावे जी ॥ तत्क्षिण आतम निर्मल बनी । केवल ज्ञान उपावे जी ॥ मान ॥ ३५ ॥ आए श्रीभगवान पे । प्रदाक्षिणा वर्त कर फिराई जी ॥ वन्दे ऋषभ जिनन्द को । वैठे केवली परिषद मांही जी ॥ मान ॥ ३६ ॥ श्रीऋषभ देव चरित्र का । पञ्चम खण्ड पूर्ण थाइ जी॥ भरत बाहूबली की कथा । ऋषि अमोलक सुखदाइ जी ॥ ३७ ॥ मान ॥❀॥ पञ्चम खण्ड उपसंहार—हरीगीत छन्द ॥ सुन्दरी जी संयम लिया। भरत अठाणु भाइ बुलाइया । वेभी सब साधु भए । बाहूबली पे दूत पठाविया ॥ संग्राम की तैयारी की शक्रेन्द्र हिंसा रोकी यडी । उत्तम पाञ्चो युध में । बाहूबली की महिमा चडी ॥१॥ बाहूबली संयम लिया । वारा

महिनो ध्यान वनें में किया । मोक्षिगोष केवल लिया यह अधिकार चौथे खण्ड भयां॥ आगे मतान्तर निर्वाण महोत्सव । वृतान्त रसिक सुणीजी ए ॥ जिनेन्द्र गुण वर्णत अमोलक हिरी सिरी सुख लीजीए ॥ २ ॥

शास्त्रोद्धारक बालब्रह्मचारी श्री अमोलकऋषीजी महाराज प्रणित
श्री ऋषभदेव भगवान चरित्रस्य पंचम खण्डम् समाप्तम्

॥ अथ षष्टम खण्डम्–निर्वाण महोत्सवाधिकार ॥

मुनिवर और गुरु देव

दोहा ॥ तीर्थंकर मोक्षस्थ प्रभु । गणिवर जी बहु सूत ॥ षष्टम अन्तिम खण्ड में । अन्तिम गति अधिकार ॥
जी ॥ छही को नमु विनय युत ॥ १ ॥ प्रथम जिनन्द ऋषभ प्रभु । सर्वज्ञ
नवीन मत की उत्पत्ती । कथु श्रृंगार विस्तार ॥ २ ॥ गण धर चौरासी
श्रीभगवंत ॥ तीन लाख[300000] सघ साधवी । चौरासी सहस्त्र[84000] संत ॥ ३ ॥ उपना केवल ज्ञान ॥ ४ ॥ साडी
भए । ऋषभ सेन वडे जान ॥ बीस हजार[20000] साधू भनी । सोभे नव हजार[9000] ॥ ५ ॥
तेरासे[1300] मुनिवरा । मनःपर्यव ज्ञान धार ॥ अवधि ज्ञानी मुनिवर । वैक्रय लब्धि
पाठी चउदह पुर्व के । सेंतालीस सो पचास[4750] ॥ बीस हजार छसो[26...] ऊपरे । देव मनुष्य महा
गुणरास ॥ ६ ॥ बारा हजार साडी छसो[12650] । चर्चा वादी मुनिराय ॥ श्रावक साडी तीन लाख[350000] ॥
वुद्धि वन्त । न सके तास हटाय ॥ ७ ॥ बारा व्रत के पालक । पालक श्री जिन धर्म के ।
पचांस लाख[5...] चौपन सहस्त्र । श्राविका आगम साख ॥ ८ ॥ देव उपकार ॥ ९ ॥ * ॥
क्रोडों ही नर नार ॥ विश्व व्यापी धर्म बन गया । श्रीऋषभ
दाल१ली ॥श्रीनन्द जी के कनैयालाल, म्हारे घर आव जो॥ए०॥श्रीजिन के दर्शन की उमंग,
सुनो नर नार जो॥टेर॥करते प्रभु भूमंड विहार । होता स्थान२महा उपकार । व्यापा धर्म

विघ्न मझारा। यही सुख कार जो ॥श्री॥१॥ पुरि श्रीअयोध्या के महार। अष्टापद गिरी श्रेयकार। तहां निकट बाग मझार। विराजे पधार जो ॥ श्री ॥ २ ॥संयम तप से आतम भाय। देखी वन रक्षक हर्षाय ।,अग्रज दे उमगाय। दर्शन निहार जो॥श्री॥३॥सज करके माली शृंगार । हो चतु घट रथ असवार। आया भरत कचहरी मझार।, हर्ष उभार जो ॥ श्री ॥ ४ ॥ दे वधाइ पधार जिनराज। साथ में गण धर महा मुनिराज। उतरे हैं वगीचा माज । श्री जगाधर जो ॥ श्री ॥ ५ ॥ सुन के भरतजी सभा सारी। पाइ हर्षोत्सहा अपारी। आये भाग्योदय भारी। तुठ करतार जो ॥ श्री ॥ ६ ॥ तज सिंहासन खड़े थइया । उतार मोजड़ी सन्मुख गइया। दिशा उसही जहां जिनजी रहिया। सभा मझार जो॥श्री॥ ७ ॥ दक्षिण घुटना जमी के लगाया। वाया दक्षिण ऊभा ठाया। कर जोडी ने सीस झुकाया। किया नमस्कार जो ॥ श्री ॥ ८ ॥ नमोत्थुण से नमन करने। पीछे उठे हर्ष हिय भरने। आए सिंहासन प्रेम उभरने। देवे पुरुष कार जो ॥ श्री ॥ ९ ॥ साढी बारा लाख दीनार । दी वधाइए को उसवार। दिए भूषण तन से उतार। बहुत सत्कार जो ॥ श्री ॥ १० ॥माली हर्षा स्वस्थान आया। चक्रवर्ती हुक्म फरमाया। कुटुम्बिक पुरुष के ताया॥ उसही वार जो श्री ॥ ११ ॥ कहे सुधर्मी को बजवाय। देवो सभी के तांय जणाय। पधारे हैं श्रीजिन राय। बाग मझारे जो ॥ श्री॥ १२ ॥ भूप कुमर अंतेपुर सारे। सामंत चोक सभी परिवारे। सज

के साज सवही श्रेयकारे। हो जावो तैयार जो ॥ श्री ॥ १३ ॥ सुनि पुर जन दुंदभी नाद।
पाए अति हर्ष अहलाद। सज भए तज विष वाद। सजी श्रृंगार जो ॥ श्री ॥ १४ ॥अहन
शाळा माही। भरत जी व्यायाम कराइ। स्नान मंजन से शुद्ध थाइ। किया अलंकार जो
॥ श्री ॥ १५ ॥ मस्तक मुगुट सोभावे। काने कुंडल झलकावे। कंठे गेविज कंठी ठावे।
लटकते हार जो ॥ श्री ॥ १६ ॥ मंत्री सामंत गण परिवारिया। धवल बद्दल से चन्द्र
निसारिया। उप सभामें संचरिया। सवी परिवार जो ॥ श्री ॥ १७ ॥ आभिशेष गज पर
विराजे। छत्र चमर विरूदावली साजे। नाद वादिंत्र अम्बर गाजे। जय २ कार जो ॥
॥ श्री ॥ १८ ॥ दोनों बाजू कूंजर सेना। आगे अश्व पीछे रथ लेना। चौ बाजू पायक वर
बेना। मंगल अष्ट सार जो ॥ श्री ॥ १९ ॥ कौतल गज गाजी चलते। भट चेटक आगे
निकलते। शस्त्र अस्त्र वक्कर झल हलते। लगी कनार जो ॥ श्री ॥ २० ॥ चाप८ सहश्र
राणीयों लारे। दो क्षो वारंगना परिवारे। वस्त्राभूषण श्रृंगारे। रथ सवार जो ॥ श्री ॥
॥ २१ ॥ पुर जन शेठ शेठाणि। कोम छत्तीस सवी सजाणी। देख न जिन दीदार
उमगाणी। सपरिवार जो ॥ श्री ॥ २२ ॥ पुरी से ठेठ बगीचे तांइ। दिए उंच मचाण
बंधाइ। मार्गे न सके कोइ दवाइ। फिरे नर नार जो ॥ श्री ॥ २३ ॥ निकली बीच बजार
सवारी। सहश्रों गम जमे नर नारी। नमनको लेते चक्री स्वीकारी। देते सत्कार जो ॥

॥ श्री ॥ २६ ॥ आए जब बगीचे के पास । तज दिये वाहन सभी ने खास । सर्व अभिगम कृतल्प विमास । पच उसवार जो ॥ श्री ॥ २ ॥ खड्ग छत्र चमर मुगट । पगरखी तजी भरत जी झट । पंच राज चिन्ह मान के पट । दूर निवार जो ॥ श्री ॥ २६ ॥ चलकर भगवत सम्मुख आए । अभिगम पांच वहां सब थाए । सचित्त वस्तु को दूरी ठाए । फल हार जो ॥ श्री ॥ २७ ॥ अचित्त वस्त्रादि सभारे । एक पट वस्त्र किया मुह आडे । देखत प्रभु हाथ जोडारे । एकान्त मन धार जो ॥ श्री ॥ २८ ॥ यों सब उत्तर विधि सजाइ । सविधि नमन किया जिन तांइ । तिक्खुत्ता की विधि भणाइ । वंदे चरणार जो ॥ श्री ॥ २० ॥ स्वर्ग से इन्द्र और इन्द्राणी । देवी देव आए ते स्थानी । चारों जाति के बैठे विमानी । देखन दीदार जो ॥ श्री ॥ ३० ॥ आगे नम कर इन्द्र बैठे । चक्रवर्ती इन्द्र के हेठे । द्वादश परिषद् भराइ सेठे । कोस में चार जो ॥ श्री ॥ ३१ ॥ पीछे से राणी सेठाणी । पच अभिगम साचवी शाणी । आइ वदन विधि सब ठाणी । खडी रही लार जो ॥ श्री ॥ १२ ॥ जिन वाणी सुणन उमग सारे । ढाल वर्ट सण्ड प्रथम मझारे । अमोलक ऋषि उचारे । दर्शने प्यार जो ॥ श्री ॥ ३३ ॥ * ॥ दोहा ॥ श्री जिनवर प्रकाशीयो । भो भो सुणो भव्य लोक ॥ सचित पुण्य पसाय से । मिला सुखद सब थोक ॥ १ ॥ ताते योगयता करन की । पाई आत्म उद्धार ॥ यही सार सम्पत्ती

तणा । भव दुःख से बनो पार ॥ २ ॥ जो चूके इस अवसरे । तो पस्तासो अपार ॥ अवसर ऐसा फिर मिलन । बडा है जी दुषवार ॥ ३ ॥ मानो जानो तत्त्वको । पर हरो मद मोह वैर ॥ क्षमा दया संतोष युत । रमो आत्म गुण लेहर ॥ ४ ॥ इत्यादि धर्म देशना । सुनी भव्य जन हर्षाय ॥ यथा शक्ति व्रतादि ग्रही । आए उस दिश जाए ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल २ री ॥ वारी जाऊ हो सत् गुरुजी । तुम पर वारणारे ॥ ए० ॥ साधु श्रावक का आचार समझ स्वीकारनारे ॥ टेर ॥ सुनी वानी भरत जी उमंगाए । भाइ यों के दर्शन को आए । पाए मन में खेद, अइ विचारनारे ॥ साधु ॥ १ ॥ मैंने आण मना न दबाया । तब ही इन ने राज छिटकाया । होकर साधु कर रहे, आत्म सुधारनारे ॥ साधु ॥ २ ॥ मै बन बैठा उसका अधिकारी । अन्य को सोपा उसे उसवारी । ऐसी मेरी दुर्बुद्धि; धिक्कार-नारे ॥ साधु ॥ ३ ॥ कर तपस्या जो करते आहार । त्यों जो करे ए राज स्वीकार । तो साथक होवे मैरा, करूं सुधारनारे ॥ साधू ॥ ४ ॥ फिर कर श्री भगवत पर आइ । मन में उपजी सो दी सुनाइ । नम्र अर्जी है मेरी इतनी, तात स्वीकारनारे ॥ साधू ॥ ५ ॥ कहे जगनाथ शरल स्वभावी । अबी तक तुमे समझ न आवी । संयम व्रत का कभी नही होता, पार नारे ॥ साधु ॥ ६ ॥ इन ने संसार असार जाना । राज को कारा ग्रह माना । महा सत्व धारी बन्धव, रखा है खार नारे ॥साधु॥ ७ ॥ वमन आहार सम त्यागी

॥ श्री ॥ २४ ॥ आए जन बगीच के पास । तज दिए वाहन सबी ने स्वास । सबे अभिगम कृतरूप बिमास । पच उसवार जो ॥ श्री ॥ २ ॥ खड्ग छत्र चमरें मुगट । पेगरखी मर्जी भरत जी झट । यह राज चिन्ह मान के पट । दूर निवार जो ॥ श्री ॥ २६ ॥ चलकर भगवत सम्मुख आए । अभिगम पांच वहां सब पाए । सचित्त वस्तु को दूरी ठाए । फूल हार जो ॥ श्री ॥ २७ ॥ अचित्त वस्त्रादि सम्हारे । एक पट वस्त्र किया मुह आडे । देखत मस्तु हाथ जोडारे । एकान्त मन धार जो ॥ श्री ॥ २८ ॥ यों सब उत्तर विधि सजाइ । सविधि नमन किया जिन सांइ । तिक्खुत्ता की विधि भणाइ । वंदे चरणार जो ॥ श्री ॥ २९ ॥ स्वर्ग से इन्द्र और इन्द्राणी । देवी देव आए ते स्थानी । चारों जाति के बैठे विमानी । देखन दीदार जो ॥ श्री ॥ ३० ॥ आगे नम कर इन्द्र बैठे । चक्रवर्ती इन्द्र के हेठे । द्वादश परिषद भराइ सेठे । कोस में चार जो ॥ श्री ॥ ३१ ॥ पीछे से राणी सेठाणी । पच अभिगम सांचवी शाणी । आइ वचन विधि सब ठाणी । खडी रही लार जो ॥ श्री ॥ ३२ ॥ जिन वाणी सुणन उमग सारे । ढाल पर्ट सण्ड प्रथम मझारे । अमोलक ऋषि उच्चारे । वर्शभे च्यार जो ॥ श्री ॥ ३३ ॥ * ॥ दोहा ॥ श्री जिनवर प्रकाशीयो । मेरे मो सुणो मध्य लोक ॥ सचित पुण्य पसाय से । मिला सुख्यव सब थोक ॥ १ ॥ तातें योग्यता करने की । पाई आत्म उद्धार ॥ यही सार सरूपती

॥ २ ॥ जो चूके इस अवसरे । सो पस्तासी अपार ॥
तणा । भव दुःख से बनो पार ॥ ३ ॥ मानो जानो तत्त्वको । पर हरो मद
अवसर ऐसा फिर मिलन । बडा है जी दुषवार ॥ ४ ॥ इत्यादि धर्म देशना ।
मोह वैर ॥ क्षमा दया संतोष युत । रमो आत्म गुण लेहर ॥ ५ ॥ ❀ ॥
सुनी भव्य जन हर्षाय ॥ यथा शक्ति व्रतादि ग्रही । आए उस दिश जाए ॥ ए० ॥ साधु श्रावक का
ढाल २ री ॥ वारी जाऊ हो सत् गुरुजी । तुम पर वारणारे ॥ सुनी वानी भरत जी उमंगाए । भाइ यों के दर्शन
आचार समझ स्वीकारनारे ॥ टेर ॥ मैने आण मना न दबाया ।
को आए । पाए मन में खेद, अइ विचारनारे ॥ साधु ॥ १ ॥ होकर साधु कर रहे, आत्म सुधारनारे ॥ साधु ॥ २ ॥ मे
तय ही इन ने राज छिटकाया । अन्य को सोपा उसे उसवारी । ऐसी मेरी दुर्बुद्धि; धिक्कार-
यन बैठा उसका अधिकारी । त्यों जो करे ए राज स्वीकार । तो
नारे ॥ साधु ॥ ३ ॥ कर तपस्या जो करते आहार । फिर कर श्री भगवत पर आइ । मन
सार्थक होवे मैरा, करूं सुधारनारे ॥ साधू ॥ ४ ॥ नम्र अर्जी है मेरी इतनी, तात स्वीकारनारे ॥ साधू ॥ ५ ॥ कहे
मे उपजी सो दी सुनाइ । अबी तक तुमे समझ न आवी । संयम व्रत का कभी
जगनाथ शरल स्वभावी । इन ने संसार असार जाना । राज को कारा ग्रह
नहीं होता, पार नारे ॥ साधु ॥ ६ ॥ वमन आहार सम त्यागी
माना । महा सत्व धारी बन्धव, रखा है खार नारे ॥साधु॥ ७ ॥

सम्पत । उत्तम पुन न प्रइ आवे विपत । ऐसी भावना सभूत हृदय से, विसारनारे ॥ साधु ॥ ८ ॥ यों सुन भरत मन में पसताए । सोचन लगी मन्य कोइ उपाए । जिसपर रीझे मेर प्रात, करू क्या पार नारे ॥ साधु ॥ ९ ॥ तत्क्षण सुबुद्धि भर को पठाया । सभी प्रकार पकान मंगाया । यह पांचसो साकट भर लाया लागी पार नारे ॥ साधु ॥ १० ॥ फिर प्रभु से अर्ज गुजारे । दो आज्ञा सभी को इसवारे । मेरे मगाए आहार से करे सब, पार नारे ॥ साधु ॥ ११ ॥ प्रभु कहे साधु के लिए बनाया । मोल लिया या सन्मुख लाया । उसे कर ना स्वीकार, साधु का आचार नारे ॥ साधु ॥ १२ ॥ सुन कर भरत जी मन मुरझाए । सोचे कैसे भाग्या लोपाए । फिर सोच विचारी अर्ज करे, जिन राज नारे ॥ साधु ॥ १३ ॥ मुझ घर गोचरी करन पठावो । आहार षेद्रावन भाति उमावो । तब प्रभु कहे इसकी भी साधु को परकार नारे ॥ साधु ॥ १४ ॥ राज पिण्ड काम नहीं आय । तब चक्रवर्ती मन झुरकाय । अब तो किसी प्रकार से, मेरा दोष उद्धार नारे ॥ साधु ॥ १५ ॥ राहु ग्रस्त चन्द्र समान । देखा भरत का मुख म्लान । खुशी करन चक्री, इन्द्र करे विचार ना ॥ साधु ॥ १६ ॥ करके जिनवर को नमस्कार । पूछे शक्रेन्द्र जगदाधार । अवग्रह कितने प्रकार कृपाकर उचारना ॥ साधु ॥ १७ ॥ प्रभु कहे सो पंच प्रकार । इन्द्र चक्रेश्वर्ती नृपे गृहस्थ सार । पंचम साधुकी आज्ञा मधे अणगार नारे

॥ साधू ॥ १८ ॥ उठ कर इन्द्र करे अरदास । मैरी माल की की भूमी खास । तहां सुखे विचरो साधू सती, आप अवधारनारे ॥ साधु ॥ १९ ॥ यों देख भरत भी हर्षावे । मैरा अवग्रह तो काम आवे । उठी तत्क्षन दीवी आज्ञा, इन्द्र प्रकारनारे ॥ सा ॥ २० ॥ प्रभुने अभिग्रह तब स्वीकारा । दोंनों हर्षे मन मझारा । फिर इन्द्र पुछे चक्री कहो, गुण आगारना रे ॥ सा ॥ २१ ॥ यह भोजन जो मैने मंगाया । अब यह देना किस के तांया । तब कहे इन्द्र सुनो राजिन्द्र, धर्म की धारनारे ॥ सा ॥ २२ ॥ तुम से गुणाधिक जो पावे । उसको देना ठीक देखावे । सुनकर भरतेश्वर जी मन में, करे निरधार नारे ॥ सा ॥ २३ ॥ श्रावक देश विरत के धारी । तेहीं मुझ से हैं श्रेय कारी । इस लिए अर्पन करूं उन तांय अन्य को टार नारे ॥ सा ॥ २४ ॥ इन्द्र स्वर्ग लोक सिधाए । चक्रवर्ती निज घर आए । बोलाए श्रावक कराया भोजन, हृदय ठार नारे ॥ सा ॥ २५ ॥ नित्य प्रत निज रसोडे माइ । श्रावक को भोजन कराइ । करावे उनसे धर्म ध्यान यों धर्म प्रसार नारे ॥ सा ॥ २६ ॥ यह खण्ड छठे के माही । साधू श्रावकाचार दर्शाइ । धर्मेच्छु नर धारो, अमोलक उच्चार नारे ॥ सा ॥ २९ ॥ * ॥ दोहा ॥ चक्रवर्ती के घर तणा । भोजन सरस सुख दाय ॥ विन मेहनत मुफत में । मिलता देख लुभाय ॥ १ ॥ श्रावक नाम धराय के । आने लगे बहू लोक ॥ प्रात से सन्ध्या लगे । जमा रहे बहू थोक ॥ २ ॥

सबही को सतोपने । पाक कार पधराए ॥ हुकम भी महाराज का । सोमी तहां सोंपाए ॥ १ ॥ अन्य वा अवसर पाय के । पाक शाला का अध्यक्ष ॥ अर्जे गुजारी आए के । चक्रवर्ती के समक्ष ॥ ४ ॥ महा राजा गर्वी अति । पहचान में न आए ॥ कौन श्रावक कौन अन्य है । सब ही आ जीम जाय ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल ६ री ॥ मनडो मोयो जी महावीर स्वामी म्हाने दर्शन दरशो जी ॥ ए० ॥ श्रावक साचा जी । श्रावक साचा जी । जो जीव दया के धर्म में राचा जी ॥ श्रावक ॥टेर॥ पाकाध्यक्ष की बात सुनी । परिक्षा करने ताई जी ॥ चक्रवर्ती महा राजा तब तहां । युक्ती उपाई जी ॥ श्रावक ॥१॥ कौटुम्बिक ने सूचना दइ । सरोवर के किनारे जी ॥ श्वेत कृष्ण दो रंगी तम्बु । बधाया सारे जी ॥ श्रा ॥ २ ॥ धोला तम्बु नीचे पानी । लीलन फुलन अत् जी ॥ काला तम्बु नीचे रेती । निर्जीव भूम एकान्तू जी ॥ श्रा ॥ ३ ॥ ढंढेरो पीटायो नगर में । जो श्रावक धर्मधरो जी ॥ श्वेत तम्बु के नीचे ऊबे रहो । सरोवर किनारो जी ॥ श्रा ॥ ४ ॥ श्रावक का गुण नहीं है जिन में । वे कृष्ण तम्बु ठहरे जी ॥ खडे रहो राजिन्द फरमाये । भोजन करा देते जी ॥ श्रा ॥ ५ ॥ सुणी उद्घोषण भोजन शाल में । जो भोजन करनारा जी ॥ आप मराया श्वेत तम्बु तले । जरा न लगारा जी ॥ श्रा ॥ ६ ॥ जीवादि तत्त्व के ज्ञाता । श्रावक भी तहां आया जी ॥ धमधाण देखी जलू को । कम्पा रहायाजी ॥श्रा॥

॥ ७ ॥ आँखों देख ते जन्तु कचरी । कैसे जांतां आवे जी ॥ फासुक जागा काला तम्बू तल । तहां उभा रहावे जी ॥ श्रा ॥ ८ ॥ इतने में गज होदे विराजी । भरतेश्वरजी आया जी ॥ श्वेत तम्बू में रहे मनुष्यों से । पूछे राया जी ॥ श्रा ॥ ९ ॥ क्या तुम सबही हो जी श्रावक । एक दम सबही उच्चारे जी ॥ फिर आए काले तम्बू ढीग । पूछे त्यारे जी ॥ श्रा ॥ १० ॥ क्यों भाइ तुम यहां क्यों ऊभे । श्रावक नहीं कहलावो जी ॥ ते कर जोडी कहे नरेन्द्र । को कोन जाने भावो की ॥ श्रा ॥ ११ ॥ श्रावक हां अथवा नहीं हां हम । श्री जिनेश्वर जाणे जी ॥ यहां क्यों खडे पूछे भरत जी । तजी ते ठेकाणे जी ॥ श्रा ॥ १२ ॥ प्रत्यक्ष वहां अपकाय वनस्पति । त्रस जीव पण होवे जी ॥ जानी प्रीछी हिंसा करनी । हमने नहीं सोहवे जी ॥ श्रा ॥ १३ ॥ आप कहो तो भोजन शाळा में । भोजन हम नहीं करिए जी ॥ अब हमारे घरे जीम सां । पाले यह चरिए जी ॥ श्रा ॥ ॥ १४ ॥ सुन के भरतेश्वर समझे मनमें । सच्चे श्रावक येइ जी ॥ श्वेत तम्बु के तले भराए उदर पोषक तेही जी ॥ श्रा ॥ १५ ॥ कुंजर तल उतरी भरतेश्वर । कांगणी रत्न ने सहाइ जी ॥ तीन लकीर करी तस भाले । त्रीरत्न दरशाइ जी ॥ श्रा ॥ १६ ॥ ऊभी लकीर तीन करी हृदय पर । यज्ञोपित ज्यों डारी जी ॥ कहे जाहिर यही सच्चे श्रावक दया विचारी जी ॥ श्रा ॥ १७ ॥ श्वेत तम्बू वालो से बोले । जीवा जीव न जाणो जी ॥

नीचे बैसे बिना काचे रहे। होवे धमसाणो जी॥ भा॥ १८॥ मोजिन साधु उपासना करने। सीखो ज्ञान घणा घारो जी॥ यों कही सबे श्रावक सगळे। आप आगारे जी॥ भा॥ १९॥ छे छे मास के अन्तर इस पर। विविध बुद्धि उपाइ जी॥ परिक्षा करते श्रावक की। चिन्ह करते वैसाही जी॥ भा॥ २०॥ सब श्रावक को मेहल के नीचे। सुखस्थान बेठाइ जी॥ उन को पढने जिन वाणी अनुसार। चार वेद बणाइ जी॥ भा॥ २१॥ प्रथम वेद 'संसार दर्शन' नाम। चारों गति ज्ञान विस्तारा जी॥ 'संस्थापन परमर्शन' वेद। नाम दूजा को सारा जी॥ भा॥ २२॥ सम्यक्त्वी श्रावक साधु की। क्रिया को वर्णन तामे जी॥ 'तत्त्वार्थ बोध' वेद तीसरे माही। नवतत्त्व रूप आमे जी॥ भा॥ २३॥ चौथा वेद 'विद्या प्रबोध' वर। सर्व विद्या का खजाना जी॥ इन चारों वेद में जग उपयोगी ज्ञान। सर्व समाना जी॥ भा॥ २४॥ इनका वहां पठन वे करते। भरतेश्वर नृप के तांई जी॥ 'जीतो भगवान् वधत भीत स्मान। महान महान २ सुनाइ जी॥ भा॥ २५॥ तुम जीत गये भय वधू का प्राम हो। आत्म गुण मत मारा जी॥ अर्थ ऐसा समझ सुन नृपति। करते विचारोजी॥ भा॥२६॥ म्हारे मे किससे जिता गया हु। किस स भय मेरा वढताजी॥ हां जाना जीता कषायों से। वही भय वृद्धी करताजी॥भा॥२७॥ इस लिए गुण वृन्द स्मरण कराते। आत्म

न्या न कीजेजी ॥ तो भी मैरी कैसी प्रमाद दशा । आत्म विषय में रीजे जी ॥श्रा॥२८॥
भिक्ष मुख गों विचार करत वे । विषय में नही लोभाते जी ॥ ऋक्ष वर्ती रहते सेवे ।
कर्म से न पन्याते जी ॥ श्रा ॥ २९ ॥ महान महान शब्द सुन वारम्वार । महान नाम तस
पडीया जी ॥ चक्रवर्ती के सन्मानीक होने से । जग में चाढिया जी ॥ श्रा ॥ ३० ॥ उन के
पुत्र जो होते उसे । वे वेदाभ्यास कराते जी ॥ वैरागी बने उसे ऋषभ देव जी पे । साधु
बनाते जी ॥ श्रा ॥ ३१ ॥ साधू न होता उसे श्रावक करते । केइ स्वयं भी संयम लेते जी
॥ विरक्त भावी गुणी जन देखी । आदर सब देते जी ॥ श्रा ॥ ३२ ॥ कांगणी रत्न का
चिन्ह देखी । अन्य भी उन्हे जीमाते जी ॥ यह ब्राह्मण वेदों की उत्पत्ती । आदी चारित्र
बताते जी ॥ श्रा ॥ ३३ ॥ रहे संसार में भरतेश्वर जी । उदया वली ने भोगे जी ॥ विरक्त
भावी जल कमल वत् । मन में अरोगे जी ॥ श्रा ॥ ३४ ॥ ऋषभ चारित्रे परम पवित्र ।
प्रथम खण्ड मझारो जी ॥ ढाल तिसरी कही अमोलक ऋषि । अनुकरणीय आचारो
जी ॥ श्रावक ॥ ३५ ॥ * ॥ दोहा ॥ भरतेश्वर महाराज के । राणी मिरीची नाम ॥ रूप
कन्या गुण शोभती । धर्मात्म अभिराम ॥ १ ॥ तास उदर से उपना । कुमर एक
गुणवन ॥ नाम मिरीची तस दियो ॥ विज्ञान वय पावंत ॥ २ ॥ कला कौशल्यता
प्राप्त कर । भोगयता सुख भोग ॥ भगवंत ऋषभ पधारिया । वदन गए सु

योगं ॥ ३ ॥ सुन धानी वैरागिया । लीना संयमं भार ॥ विनय करी ज्ञानी
पर्म । एकादश अंग धार ॥ ४ ॥ तप जप योग समाचरे । करे साधु संग विहार ॥
कर्म तणी विचित्रता । सुणो आगे अधिकार ॥ ५ ॥ * ॥ ढाल ४ थी ॥ धन जी मूंधे
पोल ॥ ए० ॥ संयम दुष्कर कार । पाले जो सूर धीर होय सो । कायर देवे गार ॥ संयम ॥
टेर ॥ श्री माघेश्वर साथ माधने । विचरे बहु आणगार ॥ उन में रहते मिरिषी मुनिवर ।
ज्ञानादि गुण धार ॥ संयम ॥ १ ॥ ग्रीषम ऋतु में साधु संघाते । अन्यदा करत विहार ॥
मध्यान्ह संयम म रवी तपे अति । जैसे वर्षे अगार ॥ संयम ॥ २ ॥ नीचे धूले तपी भो
मरसी । बाजे देह धाराधार ॥ स्वेद छुन्न सारा बदन से । जसे वर्षा धार ॥ स ॥ ३ ॥
उष्ण परिषह नहीं सहने से । मन में करे विचार ॥ ऐसे विकट प्रसंग मेरे से । न पले
संयम भार ॥ स ॥ ४ ॥ तीन लोक के पूज्य प्रभू का । मै पोतरा कहलावू र ॥ पट खण्ड
पति नरेन्द्र पिता मुझ । कुल सोभागु रे ॥ स ॥ ५ ॥ चारों संघ के सन्मुख मुझ का । दीक्षा
संयम प्रभु आपी रे ॥ कैसे तजु इस मंजु संसार में । शरम पधापि रे ॥ स ॥ ६ ॥ वीर
कुलोत्पन्न मरे जग बिच । किन्तु भगे न कदापि रे ॥ तैसे मुझ को संयम भग कर । जाना
न लाधी रे ॥ स ॥ ७ ॥ समर्थ भी नहीं चारित्र पाल ने । यह तो दुष्कर भारी रे ॥ क्या
करूं अब अभी धांस ये । करे विचारी रे ॥ स ॥ ८ ॥ एक ओर नदी, सिंह एक ओर ।

मध्य में फसा मे आई रे ॥ किन्तु बीच कोई मार्ग निकालुं । ज्यों दोनों रह जाई रे ॥ सं ॥ ९ ॥ मन वच काया तीनों दंड को । साधु जीतने वाले रे ॥ मै नहीं जीता सका इनो को । त्रिदंड धारे रे॥सं॥१०॥लोच करन नहीं समर्थ में तो । छुरे से सिर मुंडास्युं रे॥ शिखा रखी यह भाव मनोगत । जन ने जणासूं रे ॥ सं ॥ ११ ॥ स्थूल सूक्ष्म कोइ जीव न मारे । साधु को आचारो रे ॥ स्थुल प्राणी मै नहीं मारू । स्थावर आगारो रे ॥ सं ॥ १२ ॥ आकिंचन मुनिराज होते । मै सुवर्ण मुद्री राखु रे ॥ ऋषिराज जूत्ते नहीं पहने । मै काष्ट पन्ही आखुं रे ॥ १३ ॥ मुनि ब्रह्मचर्य सुगन्धे महके । मै व्यभीचार दुर्गंधी रे ॥ इसलिए विलेपन करूं चंदन । युक्ति यों सन्धी रे ॥ सं ॥ १४ ॥ जिनाज्ञा छत्र साधू के सिरपर । मै तो भंग तस कीधी रे ॥ यह बता ने धूप रक्षार्थ । छत्री लीनी रे ॥ सं ॥ १५ ॥ निष्कपायी साधु सदा निर्मल । मै पाप मैल लेपाया रे ॥ याने भगवे वस्त्र धारे ॥ यों स्वरूप पलटायारे ॥ सं ॥ १६ ॥ स्वयंबुद्धी से कल्पना कर । लिङ्ग निशानी धारी रे ॥ ऋषभ देवजी के संग फिर ते । धार आधारी रे ॥ सं ॥ १७ ॥ जैसे खच्चर घोडा न गद्धा । तैसे मिरिची थइयारे ॥ नवीन स्वांग तस देखी लोगों । अचंबे भइया रे ॥ सं ॥ १८ ॥ पूछे कोइ तो देवे देशना । साधु श्रावक धर्म बतावे रे ॥ तब कोइ पुछे तुम क्यों ऐसे । तास चेतावे रे ॥सं ॥ १९॥ मै कायर संयम न सका पाली । जग में जाता शरमाया रे ॥ तब मैरे से निभते व्रत

धर। ये वेष बनाया रे ॥ स ॥ २० ॥ सुन देशना कोइ मने वैरागी। उसे प्रभु पास पठावे रे। देते उसे भी दीक्षा जिनेश्वर। तारण उपाये रे ॥ स ॥ २१ ॥ यथा लब्ध मासी मिथ्यापद पना से। सम्यक्त्व नहीं गमावेरे ॥ कर्म की गति विचित्र इसतरे। जीव डोलावेरे ॥ स ॥२२॥ यह मार्वर्जिक मत उत्पत्ती। ऋषभ चरित्र बताइए॥ अष्टम खण्ड ढाल चतुर्थी। अमोलक गाई रे ॥ सयम ॥ २३ ॥ * ॥ दोहा ॥ श्री आदिश्वर जो प्रभु। करते भव्योद्धार ॥ चारों तीर्थ सघ परिवरे। कर भूमंड विहार ॥ १ ॥ विनीता पुरी पधारिए। अष्टापद गिरी पास ॥ नदन वन में विराजीए। छेह अनुत्तर प्रकाश ॥ २ ॥ भरत को दी वधामणि। धन पावक सन्तोप। सना परिवार सग परिवरे। आए वदन धर होंप ॥ ३ ॥ सविधि वदन करी। बैठे प्रभू सन्मुख ॥ जिनवर दे धर्म दशना। नाश करन भव दुःख ॥ ४ ॥ धर्मानुरागी हर्षिए। यथोचित व्रत धार ॥ आए उसही दीशी गए। कर प्रभु को नमस्कार ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल ५ मा ॥ सुकृत्य की पाल तेरे हाथ, जरा न रहि र ॥ छावणा की चशी में ॥ भविष्य काल के जिन जी के नाम। प्रभु जी फरमावे। सुनकर भरत राजिन्द्र अति हर्षाय ॥ टेर ॥ साविनय कर नमस्कार। ऋषभ जिन तांइ। इस भारत वर्ष मझार भविष्य काल मांइ। आप के सामान धर्म चक्री कोइ थाइ। उन के नाम गाम आदि सुनन इच्छाइ। तब कृपा कर श्री जिनराज यों दरशावे ॥ सुन ॥ १ ॥

इसहीं अयोध्या में 'जीत शत्रु' होगा राय। 'विजया' राणी से 'अजित नाथ' जिन थाय॥ बहोतर लाख पूर्व आयु सुवर्णसी काय। साढो चाँर सो धनुष्य वे धर्म फेलाय॥ पचास लाख कोटी सागर बाद मोक्ष वे पावे॥ सुन॥ २॥ 'श्रावास्ति' नगरी के राय जितारी। 'सेना' राणी के पुत्र संभव यश धारी॥ साठ लाख पूर्व आयु चारसो धनु काया। सु कंचन वरन वदन तीसरे जिन राय॥ तीस लाख कोटी सागर बाद मोक्ष सीधावे॥ सुन॥ ३॥ विनिता पुरी संवर राजा सिद्धार्था राणी। उन के पुत्र होंगे "अभीनन्दन" गुन खानी। पचास लाख पूर्व स्थिति, सोने सा शरीर॥ साढी तीनसो धनुष्य मेरू से धीर। दश कोटी सागर बाद वेभी मोक्ष जावे॥ सुन॥४॥ विनीता 'नगरी में धरण' नृप राज करसी। 'मंगला' राणी उर 'सुमति' जिन अवतरसी॥ सुवर्ण सी कान्ती तीनसो धनुष्य की देही। चालीस लाख पूर्व उमर धर्म चक्री तेही। नौलाख कोटी सागर बाद तेही सिद्ध थावे॥ सुन॥ ५॥ 'धर' नाम होंगे राय 'कोसाम्बी' केरे। 'सुसीमा' राणी से 'पद्मप्रभ' जी अवतरें॥ रक्त वर्ण वपु ढाइसो धनुष्य शरीरों। तीस लख पुर्व आयुष्य कर्म को चीरो। नंव्वे हजार कोटी सागरोपमे सिद्धी वरावे॥ सुन॥ ६॥ 'वाणारसी' पुरी के भूपाल होंगे 'प्रतिष्ट'। पृथवी राणी के पुत्र सुपार्श्व इष्ट। कनक वरण तन दो सो धनुष्य का ऊंचा। बीस लाख

पूर्व आयुपाल मोक्ष पहुंचा ॥ नौवे हजार कोटी सागर अन्तर सूत्र दरशावे ॥ सुन ॥७॥
'चन्द्रपुरी नगरी के 'महासेन' राजान। 'लक्षमा' पति से होंगे 'चन्द्रप्रभ' भग
वान ॥ श्वेत चन्द्र से आयू पूर्व दश लाख । देढ़सो धनुष्य देहाकार कर्म किए खाक ॥
नो सो कोटी सागर पीछे कर्म खपावे ॥ सुन ॥ ८ ॥ 'काकंदी नगरी 'सुग्रीव' नृप
भूपाल। रामा देवी' के 'सुविधि नाथ' दयाल ॥ श्वेत वर्ण तन आयु पूर्व लक्ष दोय।
सा धनुष्य तन मुक्ति पति सो होय ॥ नब्बे कोटी सागर अन्तर मध्य कहावे ॥ सुन ॥
९ ॥'भद्दिलपुर' पति 'दृढ रथ' नर नाथ। नन्दा देवी के नन्दन 'शीतलनाथ'
घात ॥ हेम सरीखा रंग लाख पूर्व स्थिति पामी। नब्बे धनुष्य देह धारी मोक्ष विधासी ॥
नो कोटी सागर मध्य सूत्र बतावे ॥ सुन ॥ १० ॥ 'विष्णू' नरेश्वर सिंहपुरी के राजा।
'विष्णु' राणी के "श्रेयांस" जिन राजा ॥ सोना सरीखी अस्सी धनुष्य की काया।
चौरासी लाख वर्ष आयु कर्म खपाया ॥ सो सागर कम एक कोड सागर मध्य मावे ॥
सुन ॥ ११ ॥ चम्पापुरी के वसुपूज्य' क्षीति पत। 'जया पती' उर "वासुपूज्य'
जिन उपजत ॥ लाल वर्ण में सत्तर धनुष्य की देही। बहोतर लाख वर्ष आयुष्य। शिव
धन लेही ॥ चोपन सागर का अन्तर बीच में पावे ॥ सुन ॥ १२ ॥ 'काम्पिल पुर' पति
कृतवर्मा महाराय। श्यामा राणी के पुत्र विमल नाथ थाय ॥ साठ लाख वर्ष

आयु कनक सी काया ॥ साठ धनुष्य के वदन से मोक्ष सिधाया ॥ तीस सागर के बाद
पद भी सोमावे ॥ सुन ॥ १३ ॥ अयोध्या पति सिंहसेन ' ' सुयशा ' राणी । कुल
दीपक " अणन्तनाथ " महा उत्तम प्राणी । पीला चमकता तनु पचास धनुष्य मांय ।
तीस लाख वर्ष आयु भोगी शिव पाय ॥ नौ सागर वाद विमल जिन से थावे ॥ सुन ॥
॥ १४ ॥ रत्न पुर के भानु राज पुण्यवंता । सुव्रता देवी के धर्मनाथ दीपंता ॥
कांचन जैसा शरीर धनुष्य पेंताली । मोक्ष पधारें दश लाख पूर्व आयू पाली ॥ चार
सागर दोनों जिन के बीच वीतावे ॥ सुन ॥ १५ ॥ गजपुर नगर के विश्वसेन होंगे
स्वामी । अचिरा देवी के कंवर " शांति प्रभु " नामी ॥ सुवर्ण सरीसी काया धनुष्य
चालीस । लाख वर्ष का आयु भोगा जगदीस ॥ पौन पल्य कम तीन सागर अन्तर रहावे
॥ सुन ॥ १६ ॥ ' गजपुर ' के ' शूर राजा ' राणी ' श्रीदेवी ' । ' कुंथुनाथ ' जिन जन्मे
जगत् के सेवी । पेंतीस धनुष्य तन हेम जैसा दमकावे । पचानवे हजार वर्ष आयू से
अपवर्ग पावे । आधापल्योपम अन्तर बीच में जावे ॥ सु ॥ १७ ॥ गजपुर में ही सुदर्शन
फरेंगे राज । देवी राणी से होंग " अर " जिन राज ॥ तीस धनुष्य में पील रग की काया ।
चोरासी हजार वर्ष आयु भोग शिव पाया ॥ हजार क्रोड वर्ष कम अन्तर पल्य पावे ॥
सुन ॥ १८ ॥ मिथिला नगरी के कुंभ राय यश धारी । प्रभावती राणी से मल्लि

जिन होगी कुमारी ॥ नीलम सा हरा रंग । पचीस धनु धारी । पचपन्न हजार वर्ष आयु मोक्ष स्वीकारी ॥ एक हजार क्रोड वर्ष दोनों जिन बीच गमाये ॥ सुन ॥ १९ ॥ राजग्रही के सुमित्र नराधिप वासी । पद्मावती उर "मुनिसुव्रत" जिन वासी ॥ श्याम वर्ण बीस धनुष्य दिव्य शरीर । तीस हजार वर्ष आयुपाल हो गये भव तीर ॥ चोपन्न लाख वर्ष अन्तर इनका कहाये ॥ सुन ॥ २० ॥ मिथिला नगरी विजय राय राज करसी । वप्रा देवी उर "नेमिनाथ" जी अवतरसी । पन्दरा धनुष्य में सोना सा वपु भल के । दश हजार वर्ष आयु भोग मोक्ष हो गये चल के । छे लाख वर्ष गत जिन का अन्तर कहाये ॥ सुन ॥ २१ ॥ शौर्य पुर के पति 'समुद्र विजय जी ॥ शिवा देवी' राणी से 'रिठ नेमी जिन चय जी ॥ श्याम वरन दश धनुष्य देहा कृति दीपे । हजार वर्ष आयु कर्म शत्रु को जीपे । पांच लाख वर्ष बीत बाद यह पाये ॥ सुन ॥ २२ ॥ बनारसी नगरी अश्वसेन नरेन्द्र । वामा देवीसे होवें ग "पार्श्व" जिनन्द । नव हाथ वपु हरे वर्ण के मांह । सो वर्ष आयु भोग के मोक्ष सिधाइ ॥ चौरासी हजार वर्ष मध्य में इन के जाय ॥ सुन ॥ २३ ॥ क्षत्रिय कुंड नगरी राय सिद्धार्थ नामी । त्रिसलादेवी के नन्द "महावीर स्वामि" ॥ सुवर्ण सरीखी सात हाथ की काय । बहोत्तर वर्ष आयु भोग मोक्ष सिधाय ॥ ढाइ सो वर्ष का अन्तर मध्य में रहाये ॥ सुन ॥ २४ ॥ यों चौवीस जिनका

वृतान्त प्रभुजी फर्माया । सुनकर भरत महाराज हर्ष अतिपाया ॥ यह पञ्चम खण्डे ढाल पांच मी होइ । कहे ऋषि अमोलक गुण गावो सहु कोइ ॥ जिन वाणी सूणने का योग्य पुण्यवंत पावे ॥ सुन ॥ २९ ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ फिर चक्रवर्ती उमंग धर । सविनय कर नमस्कार ॥ पूछे आदिश्वर से । कहो प्रभु जगदाधार ॥ १ ॥ आप सम तेवीस जिन । भारत वर्ष मझार ॥ होवें गे सो मैने सुने । और भी हुआ विचार ॥ २ ॥ जिस प्रकार मेरे भणी । मिला छे खण्ड का साज ॥ ऐसे ही चक्रवर्ती । ओर होवें गे क्या राज ॥ ३ ॥ प्रभू कहे हां होवें गे । ग्यारा चक्रवर्ती और ॥ ऋद्धी सब तुम सरीखी । वय तन काल सा जोर ॥ ४ ॥ कृपा करी फरमाइए । तस नाम गाम अभि राम ॥ मेरे जैसे को जान ने । मुझ को घणी है हाम ॥ ५ ॥ * ॥ ढाल ६ ठी ॥ धन्य २ श्री विजय कवर जो । करी कुमी कुछ नाथ जी ॥ ए० ॥ चौथे आरे में चक्रवर्ती ग्यारा थावे । श्रीऋषभ देव भरतेश्वर से फरमावे ॥ टेर ॥ ' अयोध्या नगरी ' सुमित्र ' नामे राजा । ' यशोमति ' राणी " सगर " कुमर गुण ताजा ॥ बहोतर लाख पूर्व आयू साडी चारसो धनु काय । अजित जिनेश्वर वक्त में यह चक्री थाय । श्रीऋषभ ॥ १ ॥ श्रावस्ती नगरी समुद्र विज की भद्रा राणी । चालीस धनुष्य तन " माघव " चक्री गुण खाणी ॥ पांच लाख वर्ष का आयु यह पाले । होंगे धर्म शांति जिन के अतराले ॥ श्री ॥ २ ॥ हस्तनापुर अश्वसेन राजा की 'सह देवी' ।

सनत्कुमार तीन लाख वर्ष आयु सेवी ॥ साढी गुण-चालीस धनुष्य तास शरीरो । धर्म शांति जिन मध्य होवेंगे धीरो ॥ श्री ॥ ३ ॥ 'शांति' कुंथु और 'अर' पद तीन जिन राज । चक्रवर्ती की पद्वी पावें गे साज ॥ इनका आयुष्य अवगाहना पुर्व वखानी । छे पद्वी धारक होवेंगे उत्तम प्राणी ॥ श्री ॥ ४ ॥ हस्तिनापुर नगरी कृतवीर्य महा राय । तारा रानी से सुभुम चक्री थाय ॥ साठ सहस्र वर्ष आयु आठाइ धनु काय । अर मल्लि जिन अन्तर में यह थाय ॥ श्री ॥ ५ ॥ वाराणसी पद्मोत्तर नृप राणी ज्वाला । पद्म चक्री तीन हजार वर्ष आयु वाला । बीस धनुष्य तन सुरा सुर से पूजाय । मुनि सुव्रत नमिनाथ अन्तर में थावे ॥ श्री ॥ ६ ॥ कम्पिलपुर के 'महाहरी' नृपाल ॥ 'मेरा देवी' के हरीषेण' गुण माल ॥ दश हजार वर्ष आयु पदरे धनु काय । मुनिसुव्रत नमि बीच में यह भी थाय ॥ श्री ॥ ७ ॥ राजग्रही नगरी के विजय नाम राज । वप्रा देवी 'जय' नाम कुमर नर ताज ॥ तीन हजार वर्ष स्थिति बारु धनुष्य धारा ॥ होंग नमी रिठनेमी अन्तर मझार ॥श्री॥८॥ कम्पिलपुर ब्रह्म राजा चूलनी राणी । ब्रह्मदत्त' चक्री सातसो वर्ष आयु जानी ॥ सात धनुष्य शरीर भोगे लुब्धाया । रिठ नेमी पार्श्व नाथ मध्य ए थाय ॥ श्री ॥ ९ ॥ सुन चक्रवर्ती का अधिकार भरत नृप रहावे । नव चिन पूछेही भगवत तस फरमावे ॥ और भी अर्ध चक्री भरत में वासी । तीन खण्ड

पति आवी ऋद्धि तुम से पासी ॥ श्री ॥ १० ॥ इन के नौ सोतेले भ्रात गुणधारी । वासु-
देव बलदेव की जोडी जहारी ॥ वासुदेव शाम वर्ण बलदेव होगे गोरे । परस्पर अत्यन्त
प्रेमी नमीले औरे ॥ श्री ॥ ११ ॥ पोतनापुर में प्रजापति नरराय । मृगावती राणी
' त्रिपुष्ट ' वासुदेव थाय ॥ अस्सी धनुष्य शरीर श्रेयांस जिन वारे । चारासी लक्ष वर्ष
आयू तमतमाँरे ॥ श्री ॥ १२ ॥ द्वारका नगरी ब्रह्मराजा पद्मावती राणी । ' द्विपुष्ट '
वासुदेव सत्तर धनुष्य देह जानी ॥ बहत्तर लाख वर्ष आयु तमाँ में जावे । वासुपूज्य
जिनराज वक्त में थावे ॥ श्री ॥ १३ ॥ द्वारका मे धरराजा की पृथवी देवी । स्वयंभु
' वासुदेव ' साठ धनुष्य बोदी सेवी ॥ साठ लाख वर्ष उम्मर छट्टी के बने वासी ॥ विमल
नाथ की विरिया में ये थासी ॥ श्री ॥ १४ ॥ द्वारका मे ही सोमराजा की राणी सीता ।
' पुरुषोत्तम नृप ' पचास धनुष्य तन दिसा ॥ तीस लाख वर्ष स्तिथी तमाँ के गामी । ये
होंगे तब बिचरें गे अनन्त नाथ स्वामी ॥ श्री ॥ १५ ॥ अश्वपुर शिवभूप देवी अमृता ।
' पुरुषसिंह ' चालीस धनुष्य तन धरता ॥ दश लाख वर्ष आयु छठी नर्क जावे । धर्म
नाथ जिनराज की सेवा करावे ॥ श्री ॥ १६ ॥ चक्रपुरी महाशिर राय राणी
लक्ष्मीवती । हुए ' पुरुष पोंडरिक ' गुनतीस धनुष्य आकृति ॥ पेंसठ सहश्र वर्ष
बाद छठी में जावे । मल्लीनाथ जिन जी का धर्म दिपावे ॥ श्री ॥ १७ ॥ कासी

नगर अग्निसिंह राय शेषवती राणी । ' दत्त " वासुदेव छब्बीस धनुष्य देह मानी । छप्पन सहस्र वर्ष आयु पचमी में जासी । अर मल्ली जिन बीच में यह तो पासी ॥ श्री ॥ १८ ॥ आयोध्या के दशरथराय सुमित्रा राणी । " लक्ष्मण जी " सोला धनुष्य तन सुख दाणी ॥ बारा हजार वर्ष आयु पङ्कप्रभा पाय ॥ मुनि सुव्रत नमी जिन बीच में यह भी थाय ॥ श्री ॥ १९ ॥ सोरीपुर नगर वासुदेव देवकी नन्दन । होंग " कृष्ण " वासुदेव दश धनुष्य तस तन ॥ हजार वर्ष आयु भन्त बालुप्रभा पासी । रिठ नेमी प्रभु का शासन दीपासी ॥ श्री ॥ २ ॥ अब इनही नवों के सातल भ्रात के नाम । माता नाम आयु तन उपाइ कहू आम ॥ भद्रा माता के ' अचल ' नाम बलदेव । पचासी लाख वर्ष आयुष्य मोक्ष प लेव ॥ श्री ॥ २१ ॥ सुभद्रा के पुत्र " विजय " बलदेव थाय । लाख पचहत्तर वर्ष जिन की आए ॥ सुप्रभा जननी से " भद्र " बलदेव पासी ॥ पैंसठ लाख वर्ष की उम्मर पासी ॥ श्री ॥ २२ ॥ सुदर्शना वर्षा " सुप्रभ " राम को जनसी । पचा वन लाख वर्ष की उम्मर करसी ॥ विजया राणी स " सुदर्शन " बलदेव जानो । सतरा लाख वर्ष की आयु माना ॥ श्री ॥ २३ ॥ वेजयति माता के तनुज " आनन्द " बलदेव । पचास हजार वर्ष की स्थिति केव ॥ जयति के बटे ' नन्दन " बलदेव होवे ।

पञ्चास हजार वर्षं आयु तस सोहवे ॥ श्री ॥ २४ ॥ ❀ अपराजिता कौशल्या के पुत्र "पद्मरथ"। पन्दरा सहश्र वर्ष आयु राम नाम तथ॥रोहणी के कंवरजी "बलभद्र" कहलासी ॥ बारासो वर्ष का आयु पञ्चम स्वर्ग पासी ॥ २५ ॥ आठो ही बलदेव मोक्ष सिधाए। इन्ही के समय में नव 'प्रति वासुदेव' थाय ॥ वासुदेव उन को हन कर राजा बन जावे। उन का नाम आयुष कहूं संक्षिप्त के मांय ॥ २६ ॥ प्रथम 'सुग्रीव' पीचासी लाख वर्ष आय। 'तारक' दुसरा पचहतर लाख वर्ष रहाय ॥ 'नेरक तीसरे पेंसठ लाख वर्ष उम्मर। 'मधुकेट' पचावन लाख वर्ष तिथि भर ॥२७॥ 'नसुंभ' की सतरे लाख वर्ष की स्थिति। 'बल' की पचासी सहश्र वर्ष में इति ॥ 'प्रहलाद' पेसठ सहश्र 'रावन' पन्दरे हजार। 'जरासिन्ध' बारा सहश्र, सब ही नर्क द्वार ॥ २८ ॥ यों चौवीस तीर्थंकर बारा चक्रवर्ती जानो। बलदेव वासुदेव प्रति वासुदेव नव २ मानो ॥ सब त्रेसठ[63] श्लाघा पुरूष सर्पिणी उत्सर्पिणी थाय ॥ छठे खण्ड छठी ढाल अमोलक गाय ॥ २९ ॥ * ॥ दोहा ॥ पूछा जिस से अधिक ही। प्रकाशा कृपाल ॥ मुदा की सब सुनी कथा। हर्षे भरत नृपाल ॥ ॥ १ ॥ पुन: प्रश्न उत्पन्न भया। तत्क्षिण किया नमस्कार ॥ फरमावो कृपा करी। देखन

---

* १ कोशल्याजी का अपर नाम 'अपरा जिता, था. २ 'रामचन्द्र जी' जो प्रख्यात नाम है सो पद्वी का है ऐसे राम ९ हुए हैं, किन्तु। आठ मे राम का खास नाम "पद्मरथ" था.

उमग अपार ॥ २ ॥ समव सरण के मांय ने । ऐसा है कोइ जीव ॥ आप समान जिनवर बने । सभी पुण्य अतीव ॥ ३ ॥ आप मिल सब ही इर्हां । तीन लोक के देव ॥ नर गण तिर्यंचादिक । हो सो बतावो देव ॥ ४ ॥ भरतेश्वर के प्रश्न का । प्रभू उत्तर फरमाय ॥ सुन क भव्य धर्माधर्म । तुल्य नात्मक तोलाय ॥ ५ ॥ * ढाल ७ मी ॥ लाखों पापी तिर गए । सत्सग के प्रताप से ॥ ए० ॥ अभिमान नहीं करना कभी । कुल मद का फल सुन लिजीए ॥ नीच गोत्र बन्धा मरीचि कुलमद का फल सु० ॥ टर ॥ कहत ऋषभ प्रभ अहो भरत । पुत्र तुमारा मरिचि है ॥ सयम से वह पतित भया ॥ कुल ॥ १ ॥ त्रिदण्डिया भावर्जिक का । स्वमति से मत जाहिर किया । जिस से मलिन आत्म बना ॥ कुल ॥ २ ॥ बाह्य रूप स प्रावर्तता । तथापि सम्यक्त्व युक्त है ॥ धर्म ध्यान में मन रम रहा ॥ कुल ३ ॥ हायमान वृद्धमान भाव से । सञ्चित कर्म फल भोगता । उन्नत अवस्था पायगा ॥ कुल ॥ ४ ॥ इसही भरत क्षेत्र में पहिला । वासुदेव त्रिपृष्ट नाम का । होगा मुक्ता त्रिखण्ड का ॥ कुल ॥ ५ ॥ फिर क्षेत्र पश्चिम महा विदेह में । चक्रवर्ती बने तुम सारिखा ॥ 'प्रिय मित्र नाम वहां पायगा ॥ कुल ॥ ६ ॥ फिर भवान्तर में बनगा । इसही भरत के भाग्य ने ॥ तीर्थंकर चौवीसमां ॥ कुल ॥ ७ ॥ महा वीर नाम प्रकाश कर । सिद्धपद प्रापत करे ॥ पावेगा यों तीन पदी पद ॥ कुल ॥ ८ ॥

प्रभु वचन श्रवण करी। भरत आनन्दित मन गह गहे। अहो कूल दीपक प्राणी यह ॥ ९॥ उठ कर आए मरिचि कने। कहे अहो पुण्यात्म धन्य है ॥ सब जग विभूती प्राप्त की ॥ कूल ॥ १० ॥ मरिचि आश्चर्य पा कहे। क्या विभुति मैने प्राप्त की ॥ कैसे जानी तुमने कहो ॥ कूल ॥ ११ ॥ कहे भरत जी प्रभु ने कहा। तुम भविष्य भवों के माय ने। तीन उत्तम पद्वी पावोगे ॥ कूल ॥ १२ ॥ त्रिपृष्ठ वासुदेव यहां। चक्रवर्ती महा विदेह विषे। चरम जिन महावीर बनोगे ॥कुल॥१३॥ यों स्तुति कर भरतजी। आए अयोध्या में तदा ॥ मरिचि करे विचारना ॥कुल॥१४॥ अहो धन्य मै इस विश्वमे। मैरे जैसा कोइ नहीं ॥ भवों मेंः उत्तम मै बनूगा ॥ कुल ॥ १५ ॥ तीर्थंकर दादा हमारे। तात हैंगे चक्रवर्ती। पुत्र पोत में उन्हो का। कूल ॥ १६ ॥ भविष्य भव में मै अकेला। पद्वी तीनों पावूंगा। त्रिपृष्ट वासुदेव बनूगा ॥ कुल ॥ १७ ॥ प्रिय मित्र चक्रवर्ती होवूंगा। तीर्थंकर महावीर भी ॥ यों छका कुलमद अति। कुल ॥ १८ ॥ प्रथम जिनेश्वर पितामहा। तात प्रथम चक्रवर्ती। प्रथम वासुदेव मै बनूंगा ॥ कुल ॥ १९ ॥ पहाडों में मेरू गिरबडा। नागों में धरेणन्द्र है। त्यों सब से मैरा कुल बडा ॥ कुल ॥ २० ॥ ताली बजाता कूदता। थइ २ नाचन को लगा ॥ पूर चडा गर्व का बदन में ॥ कुल ॥ २१ ॥ मकडी फसे ज्यों जाल में। आपही उसे बनाय के। त्यों मरिचो फस गया ॥ कूल ॥ २२ ॥ नीच गौत्र बन्धन किया। भिक्षुक बनेगा कइ

मव । कोषा कोड सागर ससार भमेगा ॥ कुल ॥ २६ ॥ पन्चित कर्म यों भोगकर । करणी करेगा सूप फिर ॥ कर्म खपा मुक्ति आयगा ॥ कुल ॥ २४ ॥ छट्टे खण्डे ढाल सत्तमी । ख्यपम चारित्रे वरणवी ॥ ऋषि अमोलक कहे अहो मित्रों ॥ कुल ॥ २५ ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ पातित मिरिची जानीया । सयम से मुनिराय ॥ ताते परिचय तज दिया। सगत से गुण आय ॥ १ ॥ सयम से भृष्ट प्राणीया । पीडा जग में पाय ॥ शुभ पये अशुभ प्रगटे । भाव करणी के साथ ॥ २ ॥ ताते मारिचि बदन में । प्रगटा भयकर रोग ॥ अकेला ही भोगता । किए कर्म का भोग ॥ ३ ॥ सारयार करते नहीं । साधु कोइ गृहस्थी जान ॥ असमर्थ स्वय थया । बीती मुशकिल आन ॥ ४ ॥ एक स्थान रहा हुआ । कर ता मन में विचार ॥ कर्म गति विचित्र है । भोगे ही छुटकार ॥५॥❀॥ ढाल ८ मी ॥ चालो चालो मुगति गढ मांहि ॥ ए० ॥ जैस को तैसा जय मिल आइ । तवी मन मानो उसकी चाइ जी ॥ टेर ॥ मरिचि चिन्तव मन मांही । शुभ अशुभ कर्मोदय मयाइ जी ॥ जेसे ॥ ॥ १ ॥ किसी जन्म के सचित येह । निराधार थना भोगुं मेह जी ॥ जैसे ॥ २ ॥ कोइ साधु शुभ पास न आवे । क्योंकि सयम भृष्ट भभावे जी ॥ जैसे ॥ ३ ॥ साधु का निर्मय आचारा । कैसे कर सके मेरी सारा जी ॥ जैसे ॥ ४ ॥ उन से मुझे भी सेवा करानी । नहीं योग्य भे पाप की खानी जी ॥ जैसे ॥ ५ ॥ कोइ मिल आवे मेरे जैसा आइ ।

तो लेवूं मै चेला बनाइ जी ॥ जैसे ॥ ६ ॥ वक्त पे काम मेरे बह आवे । तो मैरी अच्छी बन जावे जी ॥ जैसे ॥ ७ ॥ जब वेदनिय कर्म उपशमावे । तब रोग रहित तन थावे जी ॥ जैसे ॥ ८ ॥ एक दिन किसी ग्राम मझारो । समोसरे प्रभु करत विहारो जी ॥ जैसे ॥ ९ ॥ तहां व्याख्यान के मांही । एक 'कपिल' नामे गृहस्थ आइ जी ॥ जैसे ॥ १० ॥ वह था राज कुमारो । भारी कर्मोदय उस वारो जी ॥ जैसे ॥ ११ ॥ रूची नहीं प्रभुजी की वाणी । असाध्य रोगी को औषधी वानी जी ॥ जैसे ॥ १२ ॥ पीछा फिरते समव सरण वारे । मरिचि प्रावर्जिक निहारे जी ॥ जैसे ॥ १३ ॥ यह भी कोइ साधु देखावे । देखे उपदेश कैसा सुनावे जी ॥ जैसे ॥ १४ ॥ करी बैठा तस नमस्कारो । कहे वह धर्म देशना उचारो जी ॥ जेसे ॥ १५ ॥ सुनी देशना वैराग्याज आया । तब शिष्य होने दरशाया जी ॥ जैसे ॥ १६ ॥ कहे मरिचि सुन भाई । मैरे पास धर्म कूछ नाइ जी ॥ जैसे ॥ १७ ॥ जो धर्म की इच्छा तुमारी । तो लेवो ऋषभ प्रभु शरणारी जी ॥ जैसे ॥ १८ ॥ तब कपिल यों प्रकाशे । मै तो होकर आया उन पासे जी ॥ जैसे ॥ १९ ॥ मुझे व्याख्यान पसंद नहीं आया । कपिल चिन्ते यह मुझ योग्य देखाया जी ॥ जैसे ॥ २० ॥ पूछे कपिल कुछ भी है तुम पास । जो होवे सोही लेने की आस जी ॥ जैसे ॥ २१ ॥ कहे मरिचि 'हां' कपिल भाइ । मैरे पास भी धर्म कूछ पाइ जी ॥ जैसे ॥ २२ ॥ यों

उत्सूत्र मरिचि सुनाया । कोटा कोटी सागर संसार, बढाया जी ॥ जैसे ॥ २३ ॥ कपिल को निज आचार बताया । सुन के कपिल मन भाया जी ॥ जैसे ॥ २४ ॥ लेइ दीक्षा बना सो चेला । दोनों फिर ने लग तप भेला जी ॥ जैसे ॥ २५ ॥ कालान्तर मरिचि मृत्यु पाया । ब्रह्म देव लोक सिधाया जी ॥ जैसे ॥ २६ ॥ पीछे कपिल हुआ बुद्धियान । फैलाया मत बहुस्थान जी ॥ जैसे ॥ २७ ॥ यह भी पंचम स्वर्ग गइया । पीछे शिष्य अज्ञानी रहिया जी ॥ जैसे ॥ २८ ॥ मत मोहोदय सुर आया । सांख्य शास्त्र सूत्र बताय जी ॥ जैसे ॥ २९ ॥ सांख्य मत तब से प्रगटाया । कपिल गुरू प्रसिद्ध जग माया जी ॥ जैसे ॥ ३० ॥ पट्ट खण्ड ढाल आठ माही । ऋषि अमोलक मत भेद बताइ जी ॥ जैसे ॥ ३१ ॥ ❁ ॥ दोहा ॥ श्री श्री प्रथम जिनेश्वर । पोंडरिक ज्येष्ठ गणधार ॥ अन्य सहस्रों साधु संग । करे जन पद में विहार ॥ १ ॥ लाख पूर्व दीक्षा तणा । कर्म क्षय धर्म वृद्धि काम ॥ बीताए शुद्ध योग में । किया मरन धर्म ठाम ॥ २ ॥ केवल ज्ञान में जानीयो । आयु अन्त नजीक ॥ मृत्यु भय काल आप सो । जाने प्रभुजी ठीक ॥ ३ ॥ निश्चय में स्पर्शना । जिस २ क्षेत्र की होय ॥ जिस काले जित ने काल की । योग मिले आ सोय ॥ ४ ॥ तैसे ही आदि जिनन्द का । बरणू निर्वान कल्याण ॥ ते अक्षणी मध्यात्मा । धरे ताही को ध्यान ॥ ५ ॥ * ॥

ढाल९ मी ॥ वीर जिन वंदन को आए ॥ दशारण भद्र बडे राय ॥ ए० ॥ प्रणमु श्रीऋषभ जिन निर्वाणी । जगतोद्धारक सारंग प्राणी ॥ टेर ॥ विचर के भूमंड जिनराया । विश्व सब धर्म मय बनाया ॥ अन्तिम अवसर निकट आया । पधारे अष्टापद गिरी ठाया ॥ दोहा ॥ सहश्रों मुनि संग परिवरे । चढे गिरी जिन राए ॥ सिलापट के ऊपरे । विराजे वृक्ष की छांय ॥ प्रणमु ॥ १ ॥ गणधर मुनिवर सब विराजे । संयम तप ज्ञानादि गुण साजे ॥ खबर भरतेश्वरजीने पाई । सपरिवार वदन को आई ॥ दोहा ॥ तीर्थंकर सब स-प्रभुने । करे सद्बोध उच्चार ॥ जिस से आत्म आपना । करे अन्तिम सुधार ॥ प्र ॥२॥ जन्म संयम प्राप्त का सार । अन्तिम आयुष्य मे होता लो धार ॥ शल्लेषणा व्रत उसे कहते। अनशन भी अवकाहिक है ते ॥दोहा॥ माया नियाणा मिथ्यात्वका । शल्य तीनो वोसीराय ॥ आलोइ प्रतिक्रमण । शुद्धात्म कराय ॥ प्रणमु ॥ ३ ॥ पच्चक्खे फिर चारों आहार तांइ । जहां लग तन मे जीव रहा ही । भक्त प्रत्याख्यान अनसन यही । गमनागमन छूट रेही ॥ दोहा ॥ शरीर और आहार दोनों को । त्यागे पादोप गमन मांय ॥ हलन चलन प्रतिक्रमण नहीं । निश्चल चित्त ध्यान ध्याय ॥ प्रणमु ॥ ४ ॥ यो अनसन अराधन कर । धर्म ध्यानी बने चित्त निश्चल ॥ विषय तज कषाय मंद करता । होवे शुक्लध्यान माहें दृढता ॥ दोहा ॥ क्षपक श्रेणि आरूढ हो । क्षीण मोहणी होय ॥ घन घातिक की घात कर । केवल ज्ञानी

बनें योग ॥ प्रणमु ॥ ५ ॥ अघातिक फिर सकल ही क्षय आवे । अयोगी हो मुक्ति में जावे । कृत कृतार्थ वहँ थावें । अजरामर अनन्त काल रहावें ॥ दोहा ॥ यही अवसर अप आर्यिका । करो पंचो चित्त जोड़ । हम भी निश्चल यों बने । पुद्गल स्पर्शना छोड़ ॥ प्र ॥६॥ दश हजार साधु जी उसवारे । मोक्ष वरेश उत्सुकता धार । अनशन व्रत का स्वीकार । पादोपगमन की वन सारे ॥ दोहा ॥ रचना सुन देख भरत जी । सेवाक्षर्य बने तत्काल ॥ निर्वाण काल जिनराज का । निकट लखी भए हाल ॥ प्रणमु ॥ ७ ॥ गमनागमन करने लगे हरबार । विक्षेप काल जिनजी पे गुजार ॥ वचन उदीर ना होवे जारे । जिनन्द साक्षानन्द उरधार ॥ दोहा ॥ देह गेह नेह रहित ते । चिद्घन सद्घिदानन्द ॥ व्याधि व्याधि उपाधी का । नहीं किञ्चित यहाँ द्वन्द्व ॥ प्रणमु ॥ ८ ॥ परमानन्द परमसुख अखण्ड । अनन्त स्थित अव्याबाध अखण्ड ॥ सिद्ध बुद्ध मुक्त निर्वाण रूप । निजानन्द अनोपम स्वरूप ॥ दोहा ॥ सभी सन्त परिवार से । बने गे अब अवसान ॥ आगया समय तहमी । होने का निर्वाण ॥ प्रणमु ॥ ९ ॥ माघ कृष्ण चतुर्दशी आइ । छै दिन अनशन के बीताईं । पूर्वाह्न में चन्द्र योग आया । अभिजीत नक्षत्र बरताया ॥ दोहा ॥ पर्यंकासन बैठे हुए । चौथा पाया शुक्ल ध्यान ॥ अयोगी बन अघातिक हन । पाय पद निर्वाण ॥ प्रणमु ॥ १० ॥ कर्म रहो नर्मि, रिपु घोरा । निर्व्याघात पक्ष । साक्षी क्योंरा ॥

आदिश्वर मोक्ष को पधारे । वर्तें रहा अब भी उपकारे ॥ दोहा ॥ ऋषभ जिनन्द के साथही । बाहुबली आदि कुमार ॥ निन्याण वे मुक्ति गए । जन्म मरण दु खटार ॥प्रणमु ॥ ११ ॥ पौंडरिकादि भरत पुत्र आठ । मोक्ष गए आठ कर्म काट ॥ उत्कृष्टी अवगहना सब जान । एक सो आठ पाए निर्वान ॥ दोहा ॥ अच्छेरा यह हो गया । इस सर्पिणी काल माय ॥ आगे पीछे और भी । दश हजार मुक्ति जाय ॥ प्रणमु ॥ १२ ॥ यों सहश्रों मुनि संघाते । पधारे शिवपुर जग नाथ ॥ पचास क्रोड सागरोपम तांइ । सासन रहेगा भरत माई ॥ दोहा ॥ परमोपकरी ऋषभ जी । बन गए सिद्ध महाराय ! षष्टम खण्ड ढाल नव विषे । अमोलक ऋषि प्रणमें ताय ॥ प्रणमु ॥ १३ ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ भरत नरेश्वर आदि दे । नरगम सुरगम जेय ॥ निर्वाण देख प्रभुजी तणा । मुरछा पाए तेय ॥१॥अन्धार हुआ लोक मे । द्रव्य भाव दो प्रकार ॥ द्रव्य ऋषभ सूर्य अस्त भए । भावे रूका ज्ञान प्रचार ॥२॥ यही अनादी रीत है।श्रीजिन होवे निर्वाण॥ता समए संसार में।अन्तर काल के म्यान ॥ ३ ॥ धर्म प्रचारक साधु हैं । कुछ केवली केइ छद्मस्त ॥ पुनः जिनवर उत्पन्न भए । होय शासन प्रवत ॥ ४ ॥ हिवे देव कृत वर्णवु । श्री जिन निर्वाण कल्यान ॥ जम्बुद्वीप प्रज्ञप्ती से । यथा मति प्रमान ॥ ५ ॥ * ॥ ढाल १० मी ॥ माधव इम बोले ॥ ए० ॥ प्रथम स्वर्ग शकेन्द्र का जी । आसन चला उसवार ॥ अवधि ज्ञान से जानीया । पधारे जिन मोक्ष

मझार जी ॥ १ ॥ श्री जिन मोक्ष पधारे ॥ टेर ॥ तीनों काल के शक्र का जी । अनादि
जीताचार ॥ निर्वाण महोत्सव करना आवि । चाला जम्बु के भरत मझार हा ॥ श्री ॥ २ ॥
सामानिक त्रयस्त्रिंशक । लोकपाल इन्द्राणि सग । बैठा विमाने सर्व हो । आया चित्त
दुआ अति भग जी ॥ श्री ॥ ३ ॥ आँखा से आँसू झरे । तीन प्रदक्षणा तन को देय ॥
स्वद रह देख भरत को । मूर्छा तलके भू लेहजी ॥ श्री ॥ अस्वासन दे बैठ किए । भरत
प्रभु पर अरडाय ॥ एक तात प्रभू के दर्शन बिना । सारा अन्धकार देखाय जी ॥ श्री ॥५॥
माइ भगि पुत्रादिक । सभी सुख को गए छिट काय ॥ सबही बिराजे मोक्ष में । मै अधम
एक रहायजी ॥ श्री ॥ ६ ॥ इन्द्र इन्द्राणी देवी दवता । और अनेक नरनार ॥ हृदय फाट
रुदन करे । मचा शोर गगन मझारजी ॥ श्री ॥ ७ ॥ शकन्द्र धैर्य धारन करी । पुछी सुख
भरत को समझाय ॥ यह नरेन्द्र अनादि रीत यह । चल न यहां किसी का उपाय जी ॥
॥ श्री ॥ ८ ॥ मोक्ष माग दर्शाय के । जिन तिरे तारे जीव अनक ॥
अगनमी उस मार्ग लगी । मिलें गे प्रभु से रखा टेक जी ॥ श्री ॥ ९ ॥
अजरामर परम पद लिया । जिन । जिन के लिए सन्ताप ॥ करना उचित नहीं अपन
का । विन हो सुखदी आप जी ॥ श्री ॥ १० ॥ और भी इन्द्र तहां मिले जी । सभी
परिवार के साथ ॥ चारों जाति के देव गण । शोक व्याप्त मोक्ष गए नाथ जी ॥ श्री ॥

११॥ चारों जाति के देव को। शक्रेन्द्र जी आज्ञा फरमाय ॥ गोशीषे चन्दन ले आईए। नन्दन वन से इस ठाय जी ॥ श्री ॥ १२ ॥ अभियोगी देव बोलय के। माघवं जी आज्ञा देय ॥ क्षीरोदक क्षीर समुद्र से। शीघ्र आवो यहां लेय जी ॥ श्री ॥ १३ ॥ चन्दन लाए देवता। तब इन्द आज्ञा फरमाए ॥ चित्ता तीन रचाविए। जिनजी गणधर मुनिवर तांय जी ॥ श्री ॥ १४ ॥ क्षीरोदके तीर्थंकर के। शरीर स्नान कराय ॥ श्रेष्ट गौशीर्ष चन्दन लेपन किया। अति श्वेत वस्त्र पहनाय जी ॥ श्री ॥ १५ ॥ कलेवर अलंकार अलंकृत कर। दीना पद्मासन बैठाय ॥ अन्य देव गणधर साधु को जी। उक्त परे साज सजाय जी ॥ श्री ॥ १६ ॥ सहस्त्र चक्षु आज्ञा करे। करो तीन शिवका तैयार ॥ चित्र विचित्रे चित्र के। देव वैक्रिय बनाई उसवार जी ॥ श्री ॥ १७ ॥ इन्द्र रूदन करते हुए। मोक्ष दाता प्रभु का वदन ॥ उठाइ शिवका में स्थापीया। विरह व्याकुल तस मन जी ॥ श्री ॥ १८ ॥ अन्य देवों गणधर साधु के जी। उक्त परे शरीर उठाय ॥ वैक्रय की शिबिका विषे। दीने ते पधराय जी ॥ श्री ॥ १९ ॥ श्रीजिन राज की शिबिका को जी। ली इन्द्रों ने उठाय ॥ गणधर साधु की शिबिका जी। अन्य देवों लेकर चाल्याय जी ॥ श्री ॥ २० ॥ चिताये स्थापन करी। दी गोशीर्ष चन्दने अच्छाद ॥ तैसेही अन्य देवों ने। गणधर साधु वदन ढके बाद जी ॥ श्री ॥ २१ ॥ सुरपति आज्ञा पाय के। अग्नि कूमार देव तत्काल ॥

साथ चक्र भिता पर करी। दीनी तत्क्षण मजाल जी॥ श्री॥ २२॥ वायु कुमार वायु वेकर्थी जी। हो गए झाड़ो झाड़॥ अन्य देव मधु घृतादि। दीना चिता पर डाल जी॥ ॥ श्री॥ २३॥ फिर मेघ कुमार वर्षा करी। दीनी चिता ठार॥ मांस नशा चर्म गया। हा हड्डी यों खुली उसवार जी॥ श्री॥ २४॥ शक्रन्द्र दाहिनी ऊपर की। लीनी दाढा निकाल। ईशान इन्द्र बायी ग्रही। चमर बलेन्द्र नीचे की दाढ जी॥ श्री॥ २५॥ और भी हड्डी यों अन्य देवने जी। लीनी जानो ओसाधार॥ फिर तिनों चिता ऊपरे। तिन स्तूप किए रत्न मझार जी॥ श्री॥ २६॥ चारों जाति के देव मिल। आए नन्दीश्वर द्वीप माय॥ निर्वाण महोत्सव मनाय के। निज२स्थान सिधाय जी॥श्री॥२७॥रहे जो गणधरादिको जी। साधु साध्वी सब॥ विहार किया जन पद विषे। कुछ काल में आर्त गए सब जी॥ श्री॥ ॥ २८॥ शासन दीप जिनराज का जी। सारे विश्व के माय॥ छह खण्ड धाल दशमी कही। निर्वाण महोत्सव अमोल सुणाय जी॥ श्री॥ २९॥ * ॥ दोहा॥ भरतेश्वर व्या कुल मने। आप आपेक्या माप॥ शून्य दीसे सब सायवी। बैठे एकान्त जाय॥ १॥ राज काज सबी तज करी। आर्त ध्यान दृढ ध्याय॥ स्नान पान स्वजनादिका। जरा न पास सुहाय॥ २॥ नरेश्वर शोका कुल लखी। सर्व स्थान शोक छाय॥ मंत्रीश्वर तब आप क। भरतेश्वर समझाय॥ ३॥ जो छुटे जग दुःख से। पाप सुख अपार॥ ऐसे

पूज्य पिता लिए। शोक न हो श्रेयकारं ॥ ४ ॥ इत्यादि से समझा के। प्रवृते राज के मांय ॥ कालान्तर शोक विसर के। सुख संम्पत्ती बिलसाय ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल ११ मी ॥ मुक्तिपद पावो रे। जिनेन्द्र गुण गावतां ॥ ए० ॥ धन्य भरतेश्वर जी। पिता ज्यों पाए सुख शाश्वता ॥ टेर ॥ सुख से राज करे भरतेश्वर। तात कृत नीति प्रसार ॥ धर्म लाभ सदा लेते उमंग धर। ऋक्ष वृती संसार ॥ धन्य ॥ १ ॥ प्रभु जी मोक्ष पधारे पीछे। पांच लाख पुर्व बीताए ॥ भोगोदए कर्म खूटे तब। उत्तम अवसर पाए ॥ धन्य ॥ २ ॥ स्नान बलीकर्म से तन शुद्ध कर। चन्दनादि चर्चाया ॥ उत्तम वस्त्र विविध भूषण से। नख शिख वपु सजाया ॥ धन्य ॥ ३ ॥ अन्तेपुर के मध्य सुशोभित। आदर्श ग्रह के मांए ॥ कद आदम आयने के माहीं। निरखन लागे काय ॥ धन्य ॥ ४ ॥ अङ्गोपाङ्ग निरक्षण करते। लुब्धे उस के मांही ॥ मुद्रिका पडी कनिष्टा अंगुली की। ता की खबर न पाइ ॥ धन्य ॥ ५ ॥ क्रमश वादी को पेखत्त देखी। करांगूली उसवार ॥ अन्य तो सब दीसे सुशोभीत। कनिष्टा लगी शुन्य कार ॥ धन्य ॥ ६ ॥ सोचते कारण देखा जमीपर। चींटी पडी देखाई ॥ तब तो आश्चर्य उपना मन में। क्या पर की है सोभाइ ॥ धन्य ॥ १७ ॥ देखुं अन्य अंग भी मैरा। भूषण सर्व निकाले ॥ कैसा यह लगता है वदन सुझ। लेकर भूं पर डाले ॥ धन्य ॥ ८ ॥ मुकुट उतारे सिरं लगा फिका। कुण्डल निकाले कान ॥

कली करोई फल पीमा शुन्य । हारे हरे पक्षस्पार्श ॥ धन्य ॥ ९ ॥ स्याजूबन्ध रतन फडे निकासे ऐराय आगेल सा देखाया ॥ मुद्रा निकाले पोंचा विन माणि । अर्धी कमी सा लम्बायो भी धन्य ॥ १० ॥ कन्दोरा रतन मोजडी त्यागी । (चक्षु) मी कर लिए दूर ॥ देम्ये पवन अनूपसे मन । विन पत्र वृक्ष सा नूर ॥ धन्य ॥ ११ ॥ अहो पहिले जो सामा दम्याती । पर पुरुष की सय ॥ पे सप सुर सुर से धीमे । पवन मेल सा अप ॥ धन्य ॥ १२ ॥ जो मी कुछ ए चमक देखाये । यह चमक की आण ॥ इस मं मी स्थान २ अशुची । अशुची की सप स्थान ॥ धन्य ॥ १३ ॥ कान में मली है गीड आँख में । घाणे सेडो सपडाय ॥ कफ दलपम सेती भरा मुख । मल मूत्र से उदर भराय ॥ धन्य ॥१४॥ रोम २ स्वेदामय हा । श्वास से गन्ध प्रगटावे ॥ धायोत्सर्ग अन्य भाक रुक । शोभित कछु नहीं पावे ॥ धन्य ॥ १५ ॥ यों ही जो कमी चमडा हरे तो । प्रगटे सप घाणिक ॥ मांस रक्त नश हड्डी चरपी । क्या है इस में ठीक ॥ धन्य ॥ १६ ॥ यों ही विचार ते उतरे ऊंचे । उत्पत्ती भूदी निहारे ॥ पीत्र पवन का रक्त शुक्र है । सो फल माके धिक्कारे ॥ धन्य ॥ १७ ॥ पयपान किया सो शरीराश्रय । खाया जो जो आहार ॥ ताम प्रणमा रस अशुची । तात बना तन असार ॥ धन्य ॥ १८ ॥ इस तन सम्बन्ध में जो जो आवे । सो सो सब मल थाय ॥ रम्य आहारादिक विष्ठा मुत्र बने । सुगन्धी द्रव्य गमावे ॥ धन्य ॥ १९ ॥ क्षणिक

घानिक नर वपु ओदारिक। कहा है इसही काज ॥ तप संयम आराध प्राप्त करे। मोक्ष पुरी का राज ॥ धन्य ॥ २१ ॥ धन्य मैरे तात भ्रात पुत्र वहिनं। तन पा निकाल सार ॥ मैं तो लुब्धा रूप विषय में। है अपार धिक्कार ॥ धन्य ॥ २१ ॥ यह नहीं मैरा मैंही हू मैरा। यह पुद्गल दल मुझ घेरा ॥ आत्म ज्योति अनन्त अक्षय मुझ। यह स्वरूप सूचेरा ॥ धन्य ॥ २२ ॥ यों अनित्यता तन की ध्याते। नित्यता आत्मिक पाए ॥ अनित्य प्रीति प्रणती छूटी। नित्य में नित्य रमाए ॥ ध ॥ २३ ॥ भावे गुण के स्थान चौथे से। सप्तम जा चढे आगे ॥ अपूर्व करण कर खपक श्रेणिवर। मोह क्षय करने लागे ॥ ध ॥ २४ ॥ क्षीण में वेद कषाय समूल क्षीण। क्षीण मोह क्षीण चउ कर्म ॥ बद्दल हटे प्रगटा केवल रवी। तत्क्षीण टला सब भर्म ॥ ध ॥ २५ ॥ लोकालोक प्रकाशा आत्मवत्। अपूर्वानन्द रमाये। सर्वज्ञ सर्वदर्शी होकर। सर्व गुणों प्रगटाये ॥ धन्य ॥ २६ ॥ ऊग ऊग ने ऊगे भरत जी। ठाणांग सूत्र मझार ॥ ढाल एकदश खण्ड छट्टे कही। अमोलक सुख दातार ॥ ध ॥२७॥

❀ ॥ दोहा ॥ डोला तत्क्षीण गगन में। इन्द्र का इन्द्रासन। अवधि ज्ञान से जान कर ॥ किया भरत दर्शन ॥ १ ॥ छूटे कर्म घन पुद्गले। देवी अवधि माय ॥ सर्वज्ञ जाने जान के। हर्षाश्चर्ये उमंगाय ॥ २ ॥ अयोध्या आए तदा। अदर्श भुवन मझार ॥ धन्य केवली भगवंत जी। द्रव्य लिंग करों स्वीकार ॥ ३ ॥ रवी

उपद्री सम्मुने । श्री केवली तन धार ॥ मुखपर बन्धी मुखपति । वस्त्र पात्र पुक प्रकार ॥ ४ ॥ फिर शक्रेन्द्र जी उन्हे । लली किया नमस्कार ॥ द्रव्यलिंग धारक पने । सोमे जग व्यवहार ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल १२ मी ॥ कमलीवाला का देशी ॥ दव्य भाव से कर्म करी । भरतेश्वरजी ऋषि राज ने ॥ निराबाध शिवपुरी वरी ॥ भरतेश्वरजी ऋषि राज न ॥ टेर ॥ भट साधु लिंग धारन कर । महल बाहिर पधारिए ॥ हटा को आश्चर्य उत्पन्न किया । भरते ॥ १ ॥ अनार्य देश की भ नगुरी । ताली पीट के हसन लगी । आज रूप क्या धारण किया ॥ भरते ॥ २ ॥ आर्य देशकी खोन हो कहे । जब हसने की मालम पड़े । आपना और सब त्यागन किया ॥ भरते ॥ ३ ॥ सीध पधारे स्वामी जी । राज सभा जहां भरी हुई ॥ आश्चर्य चाकेत मना किय ॥ भरते ॥ ४ ॥ बैठ आज्ञा लेकर वहां । किसी योग्य आसन ऊपर । उपदेश दिया सारी सभा को ॥ भरते ॥ ५ ॥ देव गण नरगण मिले । सभी लली लली वन्दन करे ॥ आन गए केवल लिया ॥ भरत ॥ ६ ॥ भो भा भव्यों । प्रमाद तजो । भजो श्री जिन धर्म को ॥ अवसर यह उत्तम मिला कहा । भरते ॥ ७ ॥ सब दुःखों का नाश करने । नहीं होवे राज सम्पदा । उपशम क्षय करे सभी दुःख कहा ॥ भरत ॥ ८ ॥ जैसे जगत् के अरी भगाए । तैसे कर्म रिपु को भगाइए ॥ ता परमानन्दी बनो कहा ॥ भरते ॥ ९ ॥ इत्यादि उपदेश सुन । वद्य

सहृश्र मुकुट बंद राजवी । खड़े हुए संयम दिया ॥ भरत ॥ १० ॥ सबी को अपने साथ में ले । जनपद देश फिर ने लगे ॥ मुल्कों में धर्म फेला दिया ॥भरत॥११॥भरत जी के पुत्र ' आदित्ययश ' का । इन्द्र ने राज अभिशेष किया । शिक्षण उन को वही दिया कहा ॥ भरते ॥ १२ ॥ श्रीऋषभ देव स्वामी परे । भरत ऋषि धर्म दीपावीया । विहार किया लक्ष पूर्व लग ॥ भरते ॥ १३ ॥ आया आयु अन्त निकट जब । आना भी सहज होगया ॥ अष्टापद गिरी स्पर्श्यन किया ॥ भरते ॥ १४ ॥सिलापट परि स्थित भए । आहार पानी कुछ ना लिया ॥ शुक्ल ध्यान मन रमा दिया ॥ भरते ॥ १५ ॥ एक महिना अनशन रहा । बाह्याभ्यन्तर खपी दहा ॥ ज्ञानादि गुण रूप बने ॥ भरते ॥ १६ ॥ श्रवण नक्षत्र चन्द्र आया । तब आघातिक कम भी भगे । अशुची तन छिटका दिया ॥ भरते ॥ १७ ॥ एक समय में सिद्धी वरी । आत्मज्योति स्थिर करी । कृत कृतार्थ कार्य किया॥भरते॥१८॥ सिद्ध स्थान में बिराजी गए । परस्पर एकमेक सब भये ॥ पिता पुत्र का भेद नही रहा ॥ भरते ॥ १९ ॥ सततर लाख पूर्व तंइ । रहे भरतजी कंवर पदे ॥ फिर प्रभु का दिया राज किया ॥ भरते ॥ २० ॥ एक सहृश्र वर्ष मांडालिक नृप । फिर चक्र रत्न उत्पन्न भया ॥ छे लाख पूर्व राज किया ॥ भरते ॥ २१ ॥ एक लाख पूर्व केवल दीक्षा । पालन कर मोक्ष को गए ॥ चैरासी लाख पूर्व आयु सर्व ॥ भरते ॥ २२ ॥ निर्वाण महोत्सब इन्द्रने किया ।

ढाल द्वादश मी अमोलक कहे ॥ वारम्वार नमस्कार मेरा ॥ भरते ॥ २१ ॥ ॐ ॥ दोहा ॥
भरत महाराज के पाट पे। बैठे ' सुर्यवंश कुमार ॥ सूर्यवंश तहांस चला। हुए नर केर सिरदार ॥१॥ ये भी भरतजी की परे।आरिसा भुवन के मांय ॥केवल ज्ञान प्रासज करी। मोक्ष विराजे जाय ॥ २ ॥ इन के पुत्र ' महायश " जी। जिन क " अतिबल " राय॥ " बलभद्र " इन के पाटविय। " बैलवीर्य " यस्य पटाय ॥३॥ " कीर्तिवीर्य " "जलवीर्य ' जी। और " दंडवीर्य " जान ॥ यह आठ पाट भरत जी धरे। पाये पद निर्वाण ॥४॥ इन्द्र कृत आदिनाथ के। मुकुट के धारक यह ॥ फिर मुकुट नहीं धर सके। लगा पवन अछेह ॥ ५ ॥ नव में पाट विषारेया। आरीसा भुवन के माय ॥ जो जावे सो पाया पने। केका तास खुशाय ॥ ६ ॥ भरत रचाए वद के। पाठक श्रावक महाण ॥ रहे तीर्थंकर नव लगे। फिर दोनों की हुइ हाण ॥ ७ ॥ सम तीर्थकर अन्तरे। जिन शाशन विच्छेद ॥ अनेक मत प्रगट भए। रचिए नूतन वेद ॥ ८ ॥ सुसल यज्ञवल्यक विक। किया हिंसा धर्म प्रसार ॥ तीर्थंकर प्रगट भए। रख्या धर्म स्थिर भरत मझार ॥ ९ ॥ * ॥
ढाल १३ मी ॥ बोल्या बोल्या ए सखी दादुर मोर ॥ एदेशी ॥ गाया गाया हो आदिनाथ चरित्र। भाया उत्तम मन विषे ॥पाया पाया हो हम परमानन्द। उमाया सुख उल्लसे॥१॥ रचिया रचिया हो, ऋषभ देव चरित्र। अचिया रसिया जनमने ॥ मिलिया मिलिया हो,

धुलिया नगर हो खानदेश केन्द्रस्थान।
हमने ज्यूना ग्रन्थ। तदनुसार कथन बने ॥ २ ॥ अखोडी जोडाभ्यास । विचित्र राग
सती श्रेयकंवर भण्डार में ॥ ढालों जोडो हो, सन्घाय मतानुसार सो ॥
आकार मे ॥ ३ ॥ पूर्व ज्यों मुग्वसे हो, सुनी वांची कथाय । रचता यस्य अधिकार सो ॥ ४ ॥ छद्मस्तज्ञान
जचता पचता हो, जिनाज्ञा अभग । कथन कथानो हो, जानो विज्ञ
जहो, चलित चित्त चल भान । जान अजाने विरूद्ध जे ॥ अल्प ज्ञानी हो, मै हूं भूल के पात्र । जिज्ञाना
विज्ञान । कृपा कर की जो शुद्ध जे ॥ ५ ॥ शुद्ध करन उपाय । वृद्ध प्रणित देता हूं यही
विपरीत बने सही ॥ मिच्छा दुष्कृत्य हो, प्रवर्तक आचार्य पथ में ॥ स्वामि सुधर्मा हो,
६ ॥ म्हारी मति हो, श्रीमद्दा वीर साशन । नन्तर पलटा हो, भस्मग्रह काल जोग ।
जम्बु प्रभवादिक । पाट सत्ताइस तथ में ॥ ७ ॥ हिंशा धर्म स्थापा अरथ
वुद्धि स्थिलता भरत में ॥ पाषंड फैले हो, जैन मे भी अनेक । उद्धार भया जिन साशन तणा ॥ लोंकाशाह
में ॥ ८ ॥ बीते बीते हो, बर्ष दोय हजार । पुन प्रकाशा हो, शुद्ध मार्ग
नेहो, पाया शास्त्र भण्डार । पढे मर्मज्ञ बन प्रकाशना ॥ ९ ॥ किया क्रिया उद्धार ।
जग मांय । ऋषि सम्प्रदाय फैला दिया ॥ लवजी ऋषि जी हो, पूज्य कहान जी ऋषि । तपी जपी
सनातन वेष प्रगट किया ॥ १० ॥ बने आचार्य हो, तस्य शिष्य उभय गुण
ज्ञान गुण सागरू ॥ पञ्चम पाटे हो । पुज्य धनजी ऋषि राज ।

ओम्रस ॥ ११ ॥ ऐयता ऋषि जी हो, खुबा ऋषि जी महाराज । विशेष विशुद्ध क्रिया करी ॥ तस्य सुशिष्य हो मम गुरू जी महाराज ॥ श्री 'चेना ऋषि जी शरणाचरी ॥ १२ ॥ ससारी पिता हो, महा तपस्वी गुणरत्न । केवल ऋषि जी उप कारीया ॥ सुम सग लेहो महा परिषद वठाय । हयरावाद धर्म में प्रसिद्ध किया ॥ १४ ॥ सुखदेव सहाय जी हो, लाला ज्वाला प्रशाद । राजा बहादुर लक्ष्मी पति ॥ शास्त्रोद्धारज हो, आदि मम क काम । सथ्यो रूप स्वरूपे शुभ मति ॥ १५ ॥ स्वर्ग सिधाया हो, तहां केवल ऋषि जी महाराज । दीक्षा धार हुइ तदा ॥ वो तिहांही हो गए स्वर्ग सिधाय । तीन ठाणा विचरे पेदा ॥ १६ ॥ करणाटक में हो, तहांसि कियो विहार । रायचूर बेंगलोर चौमास किया ॥ फिर आए हो, महाराष्ट देशमझार । पुने नगर घोड नदी चोमासे रिया ॥ १७ ॥ वो दीक्षा दुइ हो, बने ठाण पांच । अपूर्व चौमासे सब जग भए ॥ अब आए हो, खान देश मझार । धुलिया में सब सुख स रए ॥ १८ ॥ मोघोराज्य हो, चौवीस सो छप्पन । विक्रम उन्नी सो छियासि ए ॥ कार्तिक शुक्ला हो, पञ्चमी बुधवार । रास रचना पूर्ण किए ॥ १९ ॥ देव अरिहंत हो, गुरू निग्रंथ शुद्ध साधु । धर्म दया में सुख वाई है ॥ चारे चाले हो, चारो तीर्थ के मार्ग । आनन्द मङ्गल बरताइए ॥ २० ॥ वक्ता श्रोता ने हो, अमोलक ऋषि को सन्तोष । रिरी सिरी सुख सम्प दीजोग ॥ चन्द्र सूर्य हो, प्रकाशे जगमाय । तब लग

अखण्ड यशः री जीए ॥ २१ ॥ ❀ ॥ षष्टम खण्डम् उपसंहार । हरीगीत छन्द ॥ श्री ऋषभ जिनन्द भरत जी को । त्रिषट श्लाघ्य पुरुष दरशावीया ॥ मरिचि स्थिल पडी संयम से । त्री दडी पंथ चलाविया ॥ दश सहश्र मुनिवर संघाते । छे दिन अनशन आराधीया । कर्म खपा मुक्ति गए।सबी आत्म अर्थ ने साधीया॥१॥श्री भरतेश्वर आदर्श भुवने । केवली हो संयम लिया॥दश सहश्र नृप प्रतिबोधी के । मोक्ष गए सुखिया भया॥ आदि अन्त यह ग्रन्थ रस भर । दत्त चित्त श्रोता श्रवण किया । जिनेन्द्र गुण वर्णत् अमोलक । हिंगी सिरी परमानन्द लिया ॥ २ ॥ इति ॥ षष्टम् खडम् ॥ ग्रन्थ उपसंहार-

श्रीऋषभ देव भगवान के तेरे भवों का । संक्षिप्त अधिकार-अन्तिम मङ्गल-हरीगीत छन्द ॥ श्रीऋषभ देव भगवान । धन्ना सार्थ वाही प्रथम भवे । दे घृत दान उपदेश सुण । सम्यक्त्व प्राप्त तहां हुवे ॥ दूसरा भव युगलिया का । उत्तर कुरू क्षेत्रे किया ॥ तीसरे भव देवता हो कर । महाविदेह क्षेत्रे जन्म लिया ॥१॥ महाबल नृप तहां बने । स्वयंबुद्धि मंत्री सहाय से । ईशान स्वर्ग ललीतांग सुर बने । स्वयप्रभा देवी लोभाय के ॥ २ ॥ तहां से पुष्कलावती विजय मे । बज्रजंघ नृप सुत भए ॥ श्रीमति राणी संग धर्म कर । उत्तर कुरू में युगल थए ॥ ३ ॥ अष्टम भव स्वर्ग लोक का कर । जीवानन्द वैद्य पुत्र हुए ॥ पाञ्चों मंत्री मुनिरोग हर कर । दीक्षा ले अचूत स्वर्ग गए ॥ ४ ॥ वज्रनाभ चक्र-

धर्त्ती होयके। वीस स्थानक सर्वाया ॥ सर्वार्थ सिद्ध हो मने ऋषभ देव। तर भवका वर्णन किया ॥ ५ ॥ शांति वैराग्य वीरादि रस भर। कथा मध्य में है घणी ॥ वक्ता कथे श्रोता सुणे गुण ग्राहक सोभग्य भणी॥६॥ तीर्थंकर के गुण वर्णवते। सुण ते रसायण जो पके॥ यह पने जिनराज सब सिर ताज हो सिद्ध हो सके ॥ ७ ॥ करा श्रवण सार लो त्याग धार। ममत्व उतार शुभ मार्गे लग ॥ दुःख दो दुग सब नाश पावे। अमोलक को शुभ पगे पगे ॥८॥धि तीर्थंकर देव ध्यावो। निर्ग्रन्थ को सीस नमाइ ९ ॥ श्री जिन प्रणित दया धर्म धर। सदा यही शुभदाइ १ ॥ ० ॥

शास्त्रोद्धारक बालब्रह्मचारी श्री अमोलकऋषीजी महाराज प्रणित

श्री ऋषभदेव भगवान चरित्रस्य पंचम खण्डम् समाप्तम्

श्री ऋषभदेव भगवानका चरित्र समाप्तम्